Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chen

BHUGOL 1938 G.K.V.

dwar, Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113731

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
COMPILED

RF 72

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एकप्रति का ।=)

अप्रैल, १९३८

COMPILED

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देश-निर्माता-अंक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल-एटलस

मूल्य में भारी कमी !!!

११२ पृष्ठ, ३०० से ऊपर नक़्शे

भूगोल-एटलस को संयुक्त प्रान्त और मध्यप्रान्त के शिक्षा विभागों ने स्कूलों के लिये स्वीकार कर लिया है। इससे पहले भी इस एटलस की इतनी माँग बढ़ी कि हमने पहली जनवरी १९३६ से इसका दाम घटा कर केवल १।) कर दिया है। इससे लाभ उठाने के लिये आर्डर भेजिये !

मैनेजर, "भूगोल", इलाहाबाद

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—भारतवर्ष के महात्मा गांधी	१
२—चीन के च्यांग-काई-शेक	६
३—टर्की के मुस्तफा कमालपाशा	९
४—ईरान के रिजाशाह	१२
५—रूस के लेनिन	१५
६—अरब के इब्न सऊद	१९
७—इटली के मसोलिनी	२२
८—जर्मनी के हिटलर	२७
९—आयरलैंड के डी [illegible] ...	३०
१०—पोलैंड के पिल्सुड्स्की	३२
११—चेकोस्लोवेकिया के मसारिक	३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113731
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113731

निर्माता-अङ्क

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १४] बैशाख सं० १९९५, अप्रैल १९३८ [सं० १२

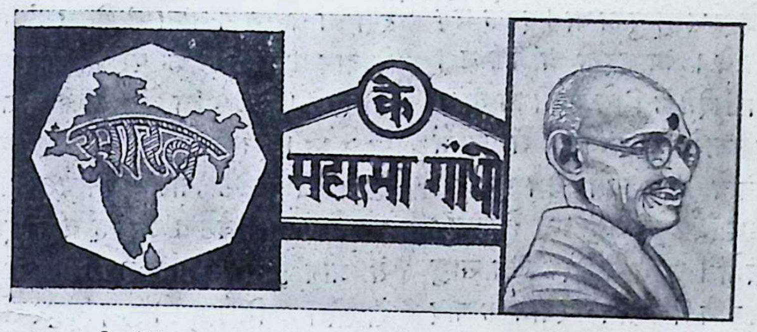

भारतवर्ष में नया युग लाने वाले महात्मा गांधी

महात्मा जी को आश्रम वासी और उनसे घनिष्ट सम्बन्ध रखने वाले बापू जी कहते हैं। पर उनका पूरा और पुराना नाम है मोहनदास कर्मचन्द गान्धी। गान्धी जी का जन्म १८६९ के अक्तूबर महीने की दूसरी तारीख को पोर बन्दर या सुदामापुरी में हुआ था। इनके पिता कर्मचन्द बड़े धार्मिक वैश्य थे। वे पोरबन्दर के राजा के यहाँ दीवान थे। गांधी जी के माता पिता का बहुत सा समय भजन पूजन में बीतता था।

गान्धी जी की शिक्षा पोर बन्दर में ही प्रारम्भ हुई। वहीं एक स्कूल में वे पढ़ने के लिये बिठाये गये। पहले पहल इनको गुजराती की शिक्षा मिली। कुछ ही समय में इनके पिता पोर बन्दर छोड़ कर राजकोट चले आये। अतः गांधी जी भी राज कोट के एक देशी भाषा के स्कूल में पढ़ने लगे। दस वर्ष की उम्र में वहाँ की पढ़ाई समाप्त कर ये काठियावाड़ हाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने के लिये भेजे गये। गान्धी जी ध्यान से पढ़ते थे और पूरा परिश्रम करते थे। ये अच्छे लड़के समझे जाते थे। इनके अध्यापक और घर वाले सभी इनसे प्रसन्न रहते थे। बारह वर्ष की उम्र में इनका विवाह हुआ। पोर बन्दर में विवाह कृत्य समाप्त होने के बाद वे फिर राज कोट में पढ़ने लगे। यहां फिर इनको बुरी संगति मिली। धर्म के प्रति इनके मन में तरह तरह की शंकायें उठने लगीं। इनके साथियों ने इन्हें मांस खाना सिखा दिया। लेकिन इनके कुटुम्ब वाले धार्मिक वैष्णव थे। इसलिये मांस खाने के लिये छिपकर बाहर प्रबन्ध करना पड़ता था। इसको छिपाने के लिये (जिस दिन घर पर ये भोजन न करते तो) इन्हें कोई न कोई बहाना करना पड़ता। पर गान्धी जी का हृदय गिरा हुआ नहीं था। केवल कुसंग का कुछ बुरा असर हो गया था। सत्य से प्रेम इन्हें पहले ही सिखाया गया था। इन्होंने सोचा मैं मांस खाने के लिये झूठ कैसे बोलूं? इनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांस से घृणा हो गई और इनका मांस खाना छूट गया।

स्कूल के काम से जो अवकाश मिलता था। उसे गान्धी जी धर्म ग्रन्थों को पढ़ने में लगाने लगे। इससे इनका पहला भ्रम दूर हो गया। सत्रह वर्ष की उम्र में गान्धी जी मेट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। आगे की पढ़ाई के बारे में तरह तरह के सवाल उठे। इसी समय विलायत से बारिस्टर बन कर एक ब्राह्मण राजकोट में आये हुए थे। इन्होंने बारिस्टरी पढ़ने की सम्मति दी। यही बात गान्धी जी को पसन्द आई। गान्धी जी के पिता का देहान्त हो चुका था। इनके बड़े भाई घर का काम चलाते थे। आमदनी अधिक नहीं थी। पर वे पढ़ाई का खर्च देने के लिये राजी हो गये।

उन दिनों विलायत जाने के सम्बन्ध में लोगों का अनुमान था कि वहां जाने वाले धर्म भ्रष्ट हो जाते हैं। अतः उनकी धार्मिक माता उन्हें विलायत भेजने में हिचकिचाने लगीं। अन्त में एक जैन साधु के सामने गान्धी जी से तीन प्रतिज्ञायें करवाने के बाद माता ने उन्हें विलायत जाने की आज्ञा दे दी। वे तीन प्रतिज्ञायें निम्नलिखित थीं :—

(१) मांस न खाना, (२) शराब न पीना, (३) पर-स्त्री-संसर्ग न करना। गांधी जी ने खुशी से ये तीन प्रतिज्ञायें कीं और १९ वर्ष की उम्र में माता से विदा हुए।

भारत से चलकर १८८८ के सितम्बर महीने में गांधी जी लन्दन पहुँचे। पहले वे वहां विक्टोरिया होटल में ठहरे। वे वहां के रहन सहन से परिचित न थे। कुछ लोग उन्हें बुरी तरह से चिढ़ाने लगे। इनका वहां रहना कठिन हो गया। एक मित्र की सहायता से गांधी जी ने किराये पर एक घर ठीक किया। धीरे धीरे वे विलायती सभ्यता की बातें सीखने लगे।

एक दिन इनके सहायक मित्र के यहाँ भोज था। गान्धी जी को भी निमन्त्रण मिला। जब इस भोज में मांस परोसा गया तब गान्धी ने अपनी प्रतिज्ञा को ध्यान में रख कर खाने से इनकार कर दिया इस से इनका मित्र बड़ा नाराज़ हुआ। इन के सामने दूसरा उपाय ही क्या था?

लन्दन के यूनिवर्सिटी कालेज में गान्धी जी तीन वर्ष तक पढ़े। बारिस्टरी के अध्ययन से जो अवकाश इन्हें मिलता था उसे वे उत्तम ग्रन्थों के पढ़ने में लगाते थे। यहीं एक पादरी ने इनको बाइबिल पढ़ने की राय दी। लेकिन भगवद् गीता से इन्हें पूरा सन्तोष हुआ। गीता के सम्बन्ध में गान्धी जी कहते हैं "गीता के उपदेशों के प्रकाश में मैंने अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित किया। गीता के उपदेशों के प्रकाश में मैंने ज्ञान भंडार देखे, मेरी शंकाओं का अन्त हो गया। इतने दिनों से जिस धर्म प्रकाश को मैं ढूंढ़ रहा था वह मुझे गीता में मिला।" तीन वर्ष की पढ़ाई के बाद बारिस्टरी की परीक्षा पास करके वे भारतवर्ष को लौटे। इसी बीच में इनकी माता का देहान्त हो चुका था। इनकी पढ़ाई में विघ्न न पड़े इस लिये इस खबर को इनके पास विलायत में नहीं भेजा था। लौटने पर इस घटना से इन्हें बड़ा दुःख हुआ। नासक में प्रायश्चित हुआ। इस भोज में जाति के बहुत से लोग शामिल हुए। कुछ कट्टर लोग नहीं आये।

गान्धी जी ने राजकोट में बारिस्टरी शुरू की। बारिस्टरी खूब चली। इनको बड़े बड़े मुक़द्दमे मिलने लगे। इनकी दलीलों के सामने न्यायाधीशों को विवश होकर इनकी बात माननी पड़ती थी। इस प्रकार बारिस्टरी करते हुये राजकोट में गान्धी जी के १८ महीने सुख से बीते। इसके बाद गान्धी जी को दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। पोर बन्दर के एक सेठ की दूकान ट्रान्सवाल की राजधानी प्रीटोरिया में थी। इसी दुकान का कोई मुक़द्दमा था। इस के लिये एक योग्य बारिस्टर की आवश्यता पड़ी। वह सेठ गान्धी जी का मुवक्किल था ही। इस लिये मुक़द्दमे की पैरवी करने के लिये गान्धी जी से अनुरोध किया गया। गान्धी जी ने वह मुकद्दमा अपने हाथ में ले लिया। उसी के लिये १८९३ में वे दक्षिण-अफ्रीका पहुँचे। यहाँ जो घटनायें हुईं उनसे गान्धी जी का जीवन ही बदल गया। किसी एक कुटुम्ब के बदले उनका जीवन समस्त भारतवर्ष वरन् संसार भर के लिये हो गया। दक्षिण अफ्रीका में पहले डच लोग बस गये थे जो बोअर कहलाते थे। जब यहाँ हीरा और सोना मिला तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे से अंग्रेज लोग भी आये। बहुत से गोरे लोग भी दक्षिण अफ्रीका में बस कर खेती करने लगे। खेती के लिये इन्हें सस्ते मजदूरों की ज़रूरत थी। अफ्रीका के मूल निवासी इस काम के लिये उपयुक्त न पड़े अतः उन्होंने हिन्दुस्तान, चीन और पूर्वी द्वीप समूह से मज़दूर बुलाये। हिन्दुस्तानी मज़दूर कुली प्रथा से बन्धकर जाते थे। नियत समय को पूरा करने के बाद कुछ मज़दूर लौट आये। जो हिन्दुस्तानी वहाँ बस गये उन से और वहाँ बसे हुये गोरों से आर्थिक होड़ होने लगी। स्वतन्त्र पेशों में लगे हुए हिन्दुस्तानी अधिक मेहनत करते थे और अपने रहन सहन पर कम खर्च करते थे। अत गोरे लोग उन से घबराने लगे। उनको अफ्रीका से निकालने के लिये वे तरह तरह के उपाय सोचने लगे।

गान्धी जी मुकद्दमे के सम्बन्ध में एक वर्ष के लिये गये थे। एक वर्ष पूरा होने पर उनकी विदाई के लिये डर्बन में एक सभा हुई। इसी समय गान्धी जी ने अखबारों में भारतीयों से मत देने के अधिकार छीनने और दूसरे घातक क़ानूनों के बारे में पढ़ा। अतः इस सभा में एकत्रित हिन्दुस्तानियों को उन्होंने संगठित और सावधान रहने के लिये कहा। एकत्रित सज्जनों ने गांधी जी को अगुआ बनने और वहीं ठहरने के लिये कहा। गांधी जी वहीं ठहर गये। कई हज़ार हिन्दुस्तानियों के हस्ताक्षर के साथ क़ानून के विरुद्ध सरकार को प्रार्थना पत्र भेजा गया। क़ानून पर विशेष प्रभाव न पड़ा। पर सरकार तक हिन्दुस्तानियों की आवाज़ पहुँचने लगी। जब गान्धी जी ने नैटाल में वकालत करने के लिये अरज़ी दी तब पहले गोरे वकीलों में सनसनी फैल गई। पर अन्त में गान्धी जी को वहाँ वकालत करने की आज्ञा मिल गई। वकालत के साथ साथ उनका बहुत सा समय सार्वजनिक कामों में बीतता था। तीन वर्ष के प्रवास के बाद १८९६ में गान्धी जी स्त्री और बच्चों को लाने के लिये भारतवर्ष आये।

भारतवर्ष में लौटने पर गान्धी जी ने बम्बई, कलकत्ता आदि प्रधान शहरों में उन असुविधाओं पर प्रकाश डाला जो दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतवासियों पर आ रही थीं। किसी ने इस प्रकार की झूठी खबर दक्षिण अफ्रीका में भेज दी। वहां के गोरे गांधी जी से बड़े नाराज़ हो गये दैव योग से जब गान्धी जी दक्षिण अफ्रीका को लौट रहे थे। उसी समय भारतवर्ष से ६०० हिन्दुस्तानी कुली अफ्रीका को जा रहे थे। गोरों ने समझा गान्धी जी लड़ने के लिये सिपाही ला रहे हैं पहले जहाज़ को अफ्रीका के तट पर आने से रोका गया। फिर किसी तरह मुसाफिर उतरे। गांधी जी की धर्म पत्नी और बच्चे पहले भेज दिये गये फिर गान्धी जी अपने एक पारसी मित्र के साथ चले। गोरों की भीड़ ने हमला किया। इस मारपीट में पारसी सज्जन का साथ छूट गया। पुलिस सुपरिटेंडेन्ट की स्त्री ने अपूर्व साहस करके गान्धी जी की जान बचाई और उन्हें पारसी मित्र के घर पर भेजवा दिया। रात को यहां फिर गोरों की भीड़ इकट्ठी होने लगी। आधी रात को भीड़ ने गान्धी जी के अतिथि का घर घेर लिया। गान्धी जी कान्स्टेबिल (पुलिस) का भेप धारण करके बाहर निकल आये। इस प्रकार गान्धी जी के बच्चों और अतिथि की जान बची। पीछे से जब गांधी जी की असली चिट्ठी अखबारों में छपी तब गोरों का रोष कुछ ठंडा हुआ।

भारतीय नौका के कर्णधार
महात्मा गान्धी

इसके कुछ ही समय बाद बोअर युद्ध शुरू हुआ। गाँधी जी ने सरकार की सहायता करने केलिये अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दूसरे हिन्दुस्तानियों की सेवायें अर्पण की। घायलों और पीड़ितों की सेवा इस हिन्दुस्तानी दल ने अपनी जान जोखों में डालकर की। इस का गोरों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस लड़ाई और आगे चल कर जुलू विद्रोह के अमानुषिक अत्याचारों को देखकर गाँधी जी का अहिंसा में और भी अधिक अटल विश्वास होगया।

बोअर लड़ाई के बाद ट्रान्सवाल में ब्रिटिश अधिकार होगया। ब्रिटिश सरकार ने एक नया एशियाटिक डिपार्टमेंट खोला। इसका उद्देश्य भारतीयों को योरुपीय लोगोंसे अलग रखने का था। इस संकट का सामना करने के लिये गान्धी जी को फिर अफ्रीका लौटाना पड़ा। १९०३ की पहली जनवरी को वे प्रीटोरिया पहुँचे। हिन्दुन्तानियों का कहना था कि डच शासन में रंग और जाति का भेदभाव न था। ब्रिटिश शासन में इसे स्थान ही न मिलना चाहिये। इसी सम्बन्ध में हिन्दुस्तानियों को अधिक संगठित और शिक्षित बनाने के लिये गान्धी जी ने इण्डियन ओपिनियन नाम का समाचार पत्र चलाया। पहले यह चार भाषाओं (अंग्रेजी, हिन्दी, तामिल, गुजराती) में निकलता था। इसके चलाने में गान्धी जी को बहुत घाटा सहना पड़ा। इसके बाद इन्होंने टालस्टाय के सिद्धान्तों के अनुसार एक आश्रम स्थापित किया।

१९०६ में जुलू विद्रोह हुआ। इस समय भी सुश्रूषा करने के लिये गान्धी जी ने हिन्दुस्तानियों की ओर से सरकार को सूचना दी। गान्धी जी इस सेवादल के अगुआ थे। जिन जुलू लोगों के कोड़े लगते थे उनको बुरा हाल हो जाता था। घाव बिगड़ जाते थे। कुछ मर भी जाते थे। मरहम पट्टी करना यहाँ मुख्य काम था। हिन्दुस्तानियों को छोड़कर कोई दूसरा यह काम करने को तैयार न था। इस बीच में भी यहाँ आये हुए एशियावासियों के विरूद्ध गोरों का अन्दोलन चल रहा था। उनका स्वच्छन्द आना रोकने के लिये रजिस्ट्रेशन कानून बना। इसके अनुसार हिन्दुस्तानियों को अपराधियों (मुजरिमों) की तरह रजिस्टर दर्ज कराना पड़ता। जब और उपाय विफल हुए तब गान्धी जी ने इसको रोकने के लिये निष्क्रिय प्रतिरोध (पैसिव रेजिस्टेंन्स) आरम्भ किया यदि हिन्दुस्तान स्वाधीन होता तो प्रवासी भारतीयों की रक्षा का शायद कुछ दूसरा उपाय हो सकता था। लेकिन पराधीन भारत के लिये गान्धी जी का सत्याग्रह या निष्क्रिय प्रतिरोध एक दैवी और अमोघ शस्त्र था। इसमें स्त्री, बच्चे, बुड्ढे सभी शामिल हो सकते थे। केवल निर्भयता और आत्म विश्वास की आवश्यकता थी। हुआ भी ऐसा ही। जिन स्थानों पर हिन्दुस्तानियों को जाने की मनाई थी उनमें दो हज़ार हिन्दुस्तानी पैदल चलकर गये। वे जेल भेजे गये। उन पर गोलियाँ चलीं। लेकिन आन्दोलन जारी रहा। कई वर्ष के आन्दोलन के बाद फल यह हुआ कि गान्धी-स्मट समझौता हो गया। हिन्दुस्तानियों की कई असुविधायें दूर हो गई। हिन्दुस्तानियों पर जो ३ पौंड (४५ रु०) का कर लगता था वह हट गया। उनका व्याह जायज़ मान लिया गया।

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी जी को सत्याग्रह आन्दोलन से जो अनुभव हुआ उससे उन्हें विश्वास हो गया कि अब उनके कार्य का क्षेत्र भारतवर्ष है। १९१४ में वे भारतवर्ष लौट आये। इसी वर्ष बड़ी लड़ाई आरम्भ हुई।

गान्धी जी श्री गोखले जी को अपना राजनैतिक गुरू मानते थे। उनके आदेशानुसार गान्धी जी एक वर्ष तक चुपचाप भारतवर्ष की राजनैतिक स्थिति का निरीक्षण करते रहे। व्याख्यान कहीं नहीं दिया। १९१६ में लखनऊ की कांग्रेस के अवसर पर गान्धी जी से विहार के निलहे गोरों के अत्याचारों के सम्बन्ध में बोलने के लिये कहा गया। विहार के नील उगाने वाले गोरे मालिक किसानों पर तरह तरह के अत्याचार करते थे। गान्धी जी बोलने के पहले वहां की हालत की स्वयं जांच पड़ताल करना चाहते थे। अतः कांग्रेस की ओर से यह भार गान्धी जी के सौंपा गया। जब गांधी जी मुजफ्फरपुर से मोतिहारी की ओर जा रहे थे तो मजिस्ट्रेट की आज्ञा से उनको रोक लिया गया। इन पर मुक़दमा चला। इससे सारे हिन्दुस्तान में सनसनी फैल गई। अन्त में मुक़दमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा लिया गया। गांधी जी जांच कमेटी में शामिल कर लिये गये। निलहों का प्रभुत्व जाता रहा। भारत वर्ष में सत्याग्रह की यह पहली विजय थी।

पहले गान्धी जी को ब्रिटिश सरकारी न्याय प्रियता और उद्देश्यों में पूरा भरोसा था। बड़ी लड़ाई में गांधी जी ने सरकार की यथा शक्ति सहायता की। अहिंसा व्रत होने पर भी लड़ने के लिये सिपाही भरती कराये। गांधी जी की अहिंसा में देश की कायरता को स्थान नहीं है। कायरता दूर करने के लिये लड़ाई में शामिल होना आवश्यक ही था। पर लड़ाई के समाप्त होने पर जब रौलट एक्ट बना तब गान्धी जी को ब्रिटिश सरकार पर सन्देह होने लगा। इस नये क़ानून का विरोध करने के लिये सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ हुआ। जगहजगह सभायें हुई। लेकिन पंजाब के जलियाना बाग़ के हत्याकांड स सारा देश दहल गया। जलियानावाला बाग़ वास्तव में बाग़ नहीं था। यह एक घेरा है। इस म आने जाने के लिये बहुत कम और तंग दरवाजे थे। यहाँ दस हज़ार से ऊपर एक दन शान्त स्त्री, पुरुष, बुड्ढे, बच्चे सभा कर रहे थे। बिना किसी तरह की सूचना दिये हुए जनरल डायर ने इनपर गोलियाँ चलवाई। लगभग पाँच सौ मनुष्य मरे। दो हज़ार घायल हुए। इस स गान्धी जी को विश्वास हो गया कि ब्रिटिश सरकार एक शैतानी सरकार है। उसको उखाड़ने के लिये सत्याग्रह जोरों से चलाया गया। इसी समय तुरकों और मुसलमानों के पवित्र स्थानों पर भी ब्रिटिश सरकार का दबाव पड़ रहा था। अतः स्वराज्य की माँग साथ साथ पंजाब और खिलाफत का प्रश्न भी शामिल कर लिया गया।

इस सम्बन्ध में लोगों से प्रार्थना की गई कि वे सरकारी उपाधियाँ त्याग दें, सरकारी दरबारों में शामिल न हों, सरकारी स्कूलों में अपने लड़कों को न पढ़ावें, सरकारी नौकरियाँ छोड़ दें, काउंसिलों और विदेशी माल का बहिष्कार करें।

सत्याग्रह आन्दोलन जोरों से चला। यद्यपि कहने के लिये साबरमती आश्रम महात्मा जी का निवास स्थान कहा जा सकता पर उन्हें साल में लगभग पाँच महीने गाड़ी में बिताने पड़ते थे। देश में अपूर्व जाग्रति फैलगई थी। १९२१ में जब वेल्सके राजकुमार यहाँ आये तो राजनैतिक कारणों से काँग्रेस ने उनके स्वागत का वाहिष्कार किया। सरकार ने इसके विरुद्ध पूरा ज़ोर लगाया लेकिन उसे सफलता न मिली। यदि देश इसी रफ़्तार से आगे बढ़ता तो एक वर्ष में स्वराज्य मिलजाने में कोई शक न था। लेकिन चौरी-चौरा कांड से गान्धी जी को आन्दोलन स्थगित करना पड़ा। इस से काँग्रेस में कुछ मतभेद हुआ। १९२२ में वे गिरफ़्तार कर लिये गये। उनको ६ वर्ष के लिये कैद हुई। १९२४ में उन के ऐसा आपरेशन हुआ कि उनकी जान बाल बाल बच गई। वे बिना किसी शर्त के छोड़ दिये गये। हिन्दू मुसलमानों के झगड़ों से देशका वातावरण कुछ बिगड़ गया था। हिन्दू मुसलमानों की एकता के लिये गाँधी जी ने २१ दिन तक उपवास किया था। कुछ समय के लिये वे तटस्थ रहे। स्वराज्य दल के लोग काउंसिलों में शामिल हुये। लेकिन शीघ्र ही काउंसिलों की निस्सारता का लोगों को पता लग गया था। साइमन कमीशन से नरमदल के लोग भी असन्तुष्ट हो गये थे। १९३० में असहयोग अन्दोलन और भी उग्ररूप से आरम्भ हुआ। जगह जगह नमक बनने लगा। हजारों की संख्या में सत्याग्रही जेल गये। गान्धी जी की डांडी यात्रा ने देश में अपूर्व उत्साह फैला दिया। गान्धी जी के कैद हो जाने पर भी आन्दोलन जोरों से चलता रहा। अन्त में इर्विन-गान्धी समझौता हो जाने पर देश (काँग्रेस) ने लन्दन की राउंडटेबिल कानफरेंस में गान्धी जी को अपना एक मात्र प्रतिनिधि बनाकर भेजा। दूसरे ऐसे लोग इस कानफरेंस में बुलाये गये कि इसका कोई फल न हुआ। गान्धी जी के लौटने पर सरकार की नीति बदल गई। लार्ड-विलिंगडन (वायसराय) ने गान्धी जी से भेंट करने से इनकार कर दिया। गान्धी जी ने देशको असहयोग आन्दोलन फिर जारी करने की राय दी। वे और

(शेष आठवें पृष्ठ पर देखिये।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

च्याँग–काई–शेक

बीसवीं शताब्दी का इतिहास चीन में डा० सनयात्सेन और मार्शल च्याँग-काई-शेक के अपूर्व साहस और राजनीतिकता का एक प्रशंसनीय उदाहरण है।

चीनी प्रजातन्त्र के संस्थापक ने चीनियों के राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन पर वह प्रभाव डाला है जिसकी तुलना विल्सन, लेनिन और महात्मा गाँधी के देशव्यापी प्रभाव से की जाती है। जिस योग्यता कार्यपटुता तथा महान शान्ति के साथ जनरल च्याँग-काई-शेक ने अपने देश की रक्षा की है वह अद्वितीय है। उसी की बदौलत वह आज चीन के समाज में अग्रगण्य हैं।

डा० सनयात्सेन की मृत्यु के पश्चात् जनरल च्याँग ने उनके कार्यक्रम को सँभाला और "जाति के तीन सिद्धान्त" और डा० सन की इच्छाओं की पूर्ति के लिये इन्होंने बीड़ा उठाया। उन स्वार्थी लोगों के चंगुल से, जो कि भिन्न भिन्न भागों में शासक बने बैठे थे और जिन्हें अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और किसी बात का ध्यान न था, अपने देश को उबारने का प्रयत्न करते हुये दस वर्ष में उन्होंने समस्त चीन को एक सूत्र में बाँध दिया। इन्होंने देश की आर्थिक तथा सामाजिक दशाओं को सुधारा और इन कार्यों की बदौलत वह न केवल जनता का विश्वासपात्र बना, बल्कि अन्य वाह्य शक्तियों के प्रशंसापात्र भी।

महान् व्यक्ति प्रायःमध्यम श्रेणी से आते हैं, इसका इतिहास साक्षी है। जनरल च्याँग-काई-शेक भी मध्यम श्रेणी से आते हैं। सन् १८८३ ई० के अक्तूबर महीने में चेक्याँग प्रान्त (Chekiang) के फेंगुवा (Fenghua) नामक स्थान पर एक मध्यम वर्ग के वंश में यह पैदा हुये थे। थोड़ी ही उम्र में इनके पिता का देहान्त हो गया, मगर इनकी माता ने जो एक सुयोग्य रमणी थीं, इनको उचित शिक्षा दी। माता ने ही इन्हें आत्मविश्वास, आत्मसमर्पण और देशसेवा का पाठ पढ़ाया। जैसा कि इन्होंने स्वयं ३ अक्तूबर सन् ३६ को अपनी पचासवीं साल गिरह के अवसर पर कहा था, "......मैं दो बातों पर सदैव विचार करता रहता हूँ और उन्हीं को सोचा करता हूँ—कि जब तक हमारे देशवासी आफत में फँसे हैं, तब तक मैंने अपनी माता की इच्छा की पूर्ति नहीं की। जब तक देश को मुक्ति नहीं मिल जाती तब तक अपने आप को मैं इसकेलिये जिम्मेदार समझता हूँ।"

सत्रह वर्ष की उम्र में यह फौज के इन्फैंट्री (पैदल सेना) स्कूल में भर्ती हुए और वहाँ से निकल कर टोकियो मिलिटरी एकेडेमी में चार वर्ष तक फौजी शिक्षा ग्रहण की। जापान ही में इन्होंने अपना जीवन क्रान्ति के लिये अर्पण कर दिया और डा० सन की स्थापित की हुई तुंगमेन्घुई (Tungmenghui) सोसाइटी के सदस्य हो गये और चीन में प्रजातन्त्र की स्थापना का स्वप्न तभी से देखने लगे।

इस तरह ज्योंही सन् १९११ ई० में क्रान्ति आरम्भ हुई यह चीन में आये और शघाई में सेनापति बने। इन्होंने शंघाई को मंचू लोगों (Manchus, से ले लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन विजयों के पश्चात् क्रान्ति सफल होने पर यह दस वर्ष तक इन सब कार्यों से अलग रहे और इस प्रकार सन् ९२३-२४ ई० से इनके जीवन का एक दूसरा अध्याय प्रारम्भ होता है और यह फिर कैन्टन के क्रान्तिकारी आन्दोलन में हिस्सा लेने लगे।

डा० सनयात सेन को इनकी योग्यता ने अपनी ओर आकर्षित किया और क्रमशः यह स्टाफ़ अफ़सर से ह्वाम्पोआ मिलिटरी एकेडेमी के सभापति नियुक्त हुये; और जब डा० सन के विरुद्ध उनके एक साथी ने बलवा किया तो मार्शल च्यांग ने अपनी एक छोटी सी फौज द्वारा उस बलवाई को हरा दिया और इस तरह अपनी योग्यता तथा वीरता का परिचय दिया। अपनी इस प्रकार की बहादुरी द्वारा सन् १९२५ तक इन्होंने क्वांगटंग (Kwangtung) को कोमिंटांग दल के अधीन कर लिया, और सन् १९२६ ई० में इन्होंने देश को छोटे छोटे टुकड़ों में विभाजित होने से बचाया। सारा देश स्वार्थी शासकों द्वारा चूसा जा रहा था, और बरबाद हो रहा था—उन सब से बचाने के लिये चीन का एक बहुत बड़ा हिस्सा इन्होंने अपने प्रयत्नों द्वारा कोमिंगटांग के आधीन किया। उसी समय से मार्शल च्यांग चीन देश के चतुर नाविक बने। वास्तव में चीन एकता पैदा करने का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है, तो चियांग-काई-शेक को।

च्यांग-काई-शेक।

इन्होंने फौज की शक्ति से देश को एकता के सूत्र में नहीं बाँधा, किन्तु न्याय और शान्ति की शक्ति से अपनी योग्यता तथा कार्यपटुता से। किसी ने कहा है, "केवल छः महीने फौज में काम करने से मनुष्य जंगली हो जाता है"। ठीक है, परन्तु उस मनुष्य को हम कितना बड़ा कहेंगे जिसको लड़कपन से ही फौजी शिक्षा मिली, फौजी काम ही जिस के जीवन का अधिकतर भाग रहा, और इस पर भी वह जंगली नहीं निकला, उसमें देश प्रेम तथा कर्तव्य शेष रहे। मार्शल चयांग-काई-शेक के मस्तिष्क का जो विकास हो रहा था वह उत्तरोत्ता बढ़ता रहा। उसने संसार को दिखा दिया कि यद्यपि वह एक फौजी आदमी है मगर उसने अन्य शक्तियों को तिलांजलि नहीं दिया है। उसने संसार को दिखा दिया कि ज़बान और शब्दों में वह शक्ति है कि वह इस्पात को भी मोम बना सकती है।

च्यांग-काई-शेक की बड़ाई इस बात में है कि इन्होंने चीन से गृहकलह दूर कर दी। सारे चीन को एकता के सूत्र में बाँधा। किसी ने ठीक कहा है, "जब चीन के इस काल का इतिहास लिखा जायगा तो उस में एक सुनहरा पृष्ठ होगा जिस में लिखा जायगा कि चीन की राजनैतिक एकता, आत्म शक्ति, वैयक्तिक योग्यता के बल पर हुई, फौज के बल पर नहीं।" वह पुरुष जो ऐसा करने में समर्थ हुआ, निस्सन्देह हमारी प्रशंसा का पात्र है। ये ही कारण हैं जिनकी वजह से च्यांग-काई-शेक के लिये चीन निवासियों के दिल में भक्ति है, श्रद्धा है और है प्रेम।

पूर्ण जातीय कार्यक्रम ने, जो कि आम जनता की शिक्षा के विषय में उनकी आर्थिकसमस्या के सुलझाने के विषय में, तथा उनकी एकता तथा संगठन के विषय में थे, चीन के अमन चैन का मार्ग साफ़ किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ के आर्थिक सुधार, स्वास्थ्य की उन्नति व्यापार मार्ग के सुधार और उन में वृद्धि और नये होने वाले आविष्कारों का प्रोत्साहन आदि कार्यों ने मार्शल च्यांग-काई-शेक के शासन को बहुत ही महत्त्व पूर्णबना दिया।

च्यांग-काई-शेक का एक शासन कर्ता तथा 'लोक सेवक' के रूप में बहुत नाम है, मगर एक साधारण मनुष्य की हैसियत से इन्हें लोग बहुत कम जानते हैं। वास्तव में इन्हों ने सिवा साहस भरे तथा देश सुधार के कामों के और किसी काम के बारे में सोचा भी नहीं। यही नहीं, जैसा कि हर एक शासक के लिते आवश्यक होता है कि वह निरन्तर अध्ययन करता रहे, च्यांग-काई-शेक भी डा० सनयात सेन की पुस्तकों तथा तर्क शास्त्र, फिलासफी राजनीति, भूगोल, सामाजिक और फौज सम्बन्धी पुस्तकों का बराबर अध्ययन करते रहे हैं।

उन्होंने कूमिंगटांग दल के लिए अपने को सदा के लिये समर्पित कर दिया है, साथ ही साथ अपने शिक्षा सम्बन्धी और सामाजिक कार्यक्रम में अपनी जातीयता और देश प्रेम का बहुत बड़ा ध्यान रक्खा है। वह लोगों की दैनिक आय को विस्तृत आर्थिक व्यापार मार्ग तथा सामाजिक सुधारों के बल पर बढ़ाना चाहते हैं।

१९२६ में नेशनल गवर्नमेण्ट कायम होने के बाद से देश का शासन सूत्र कूमिङ्गटांग पार्टी के हाथ में आया। इस पार्टी के सर्वेसर्वा च्यांग-काई-शेक हैं। खेद की बात है कि यह पार्टी क्रमशः चीन के धनिक वर्ग के प्रभाव में आ गई। नतीजा यह हुआ कि नेशनल गवर्नमेंट को यह बात बुरी मालूम हुई कि किसान और मजदूर अपना संगठन करें। किसानों के संगठन का समर्थक साम्यवादी दल नेशनलिस्ट सरकार की आखों में खटकने लगा। जेनरल च्यांग काई-शेक को अपने दल के निर्णय के अनुसार साम्यवादी दल का दमन करने के लिये बाध्य होना पड़ा। लगातार ८ वर्ष तक कोशिश करने पर भी साम्यवादी दल कुचला न जा सका। दिसम्बर १९३६ में शान्सी प्रान्त में साम्यवादियों के दमन के लिये स्वयं च्यांग-काई-शेक गये, किन्तु वहाँ आप साम्यवादियों के शिविर में बन्दी हो गये। फिर आप की पत्नी मैडम च्यांग-काई-शेक ने साम्यवादियों के साथ एक संयुक्त मोर्चा कायम करने की बात स्वीकार की। इस तरह देश के दो प्रभावशाली दलों ने जापान के विरुद्ध अपना मोर्चा दृढ़ किया। साम्यवादी दल ने अपनी सुसंगठित 'लाल सेना को' च्यांग-काई-शेक के नायकत्व में दी।

चीन-जापान के वर्तमान युद्ध में च्यांग-काई-शेक ने अपूर्व सैनिक योग्यत, धैर्य और राज नीतिज्ञता का परिचय दिया है।

—०:○:०—

(पांचवें पृष्ठ का शेष भाग)

दूसरे हजारों काँग्रेस कार्यकर्त्ता जेल में ठूंसदिये गये। देश में सरकार की ओर से घोर दमन होने लगा। पर देश में आज़ादी की जो लगन एक बार जाग्रत हो चुकी थी उसे सरकारी दमन भी न सुला सका। वैसे तो काँग्रेस नये शासन विधान के सादा से विरोध करती रही। लेकिन नये चुनाव ने सिद्ध कर दिया कि देश की जनता गान्धी जी और काँग्रेस के साथ है। नये विधान में हरिजनों को 'अलग करने के प्रयत्न को तो गान्धी जी ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर और आमरण उपवास घोषित कर के ठंडा कर दिया। काँग्रेस मंत्रिमंडल से आज़ादी की मन्द झलक लोगों को दिखाई देने लगी। लेकिन पूर्णस्वराज्य तक पहुँचने के लिये अभी देश को काफी आगे बढ़ना है। पर देश को अपने नेता पर पूरा भरोसा है। खद्दर, राष्ट्रभाषा, स्वालम्बी शिक्षा हिन्दू-मुस्लिम एकता, हरिजन उत्थान आदि आज़ादी के सभी साधनों पर गान्धी जो का ध्यान लगा है। यदि शान्ति के मार्ग से देश ने पूरा ज़ोर लगाकर स्वाधीनता प्राप्त कर ली तो सारे संसार में नया शान्ति का (गान्धी) युग आराम हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्की का मुस्तफा कमालपाशा

नवीन टर्की के निर्माता और राष्ट्रपति का जन्म १८७८ ई० में सेलोनिका नगर में हुआ था। उसका पिता पहले चुङ्गी का क्लर्क था। फिर उसने नौकरी छोड़ कर लकड़ो की दुकान कर ली। लेकिन वह कमाल के बचपन में ही मर गया। इस लिये कमाल के पढ़ाने लिखाने का भार उसकी माता के ऊपर आया जो एक किसान की लड़की थी। पहले मुस्तफा को अरबी पढ़ाई गई। लेकिन अरबी पढ़ाने वाले मास्टर से उसे असन्तोष हो गया। इसलिये अरबी मदरसे को छोड़कर वह चुपचाप (बिना अपनी माता को बतलाये हुए) फौजी स्कूल में भरती हो गया। फौजी स्कूल में उसने बड़ी उन्नति की। गणित में वह बहुत ही तेज़ था। इसी से उसके अध्यापक ने (जिसका नाम भी मुस्तफा था। अपने शागिर्द का नाम मुस्तफा कमाल (पूर्ण) रख दिया। मोनास्टीर के फौजी स्कूल से पास करने के बाद मुस्तफा कमाल कुस्तुन्तुनिया के फौजी कालेज में भरती हुआ। १९०५ में वह कप्तान हो गया। इसके बाद वह अपने देश की राजनीति में दिलचस्पी लेने लगा।

टर्की के सुल्तान अब्दुलहमीद का शासन बहुत निकम्मा था। साम्राज्य के बाहरी प्रान्त टर्की पर बोझ डाल कर उसे और भी कमजोर कर रहे थे। सभी विभागों में असन्तोष था। फौज में यह असन्तोष और भी अधिक था।

मुस्तफा कमाल को अपने देश की कमज़ोर सरकार से इतनी घृणा हो गई कि वह वतन (पितृभूमि) नाम की गुप्त संस्था का सदस्य हो गया। १९०४ में कमाल लेफ्टनेन्ट गज़ट हुआ। लेकिन उसी दिन कमाल गिरफ़तार कर लिया गया और सिरिया (दमश्क) के फौजी रिसाले में भेज दिया गया। दमश्क से वह जाफा भेजा गया। यहाँ से वह चुप चाप फिर सेलोनिका में वापस आ गया। तभी वह एकता और सुधार (Union and Progress) नाम की संस्था में शामिल हो गया।

इस संस्था पर अधिक तर यहूदियों का प्रभाव था। यह संस्था सारे टर्की में सुधार करना चाहती थी। मेसीडोनिया के विद्रोह से सुल्तान अब्दुल हमीद को झुकना पड़ा। "एकता और सुधार" संस्था के नामी सदस्यों और कमाल के साथियों (अनवर, तलत और जाविद) के हाथ में शक्ति आ गई। लेकिन कमाल को इससे कोई लाभ न हुआ। राजनैतिक क्षेत्र में कमाल को कोई विशेष सफलता न मिली। उसको कड़ा (खरी) जबान और रूखा चेहरा उसकी सफलता में बाधा डालते थे। इसलिये कमाल ने अपना सारा ध्यान फौज की योग्यता बढ़ाने में लगाया। फौज के नौजवान अफसर उस पर भरोसा करते थे और उसे प्यार करते थे। १९११ में इटेलियन लोगों से लड़ने के लिये वह ट्रिपालीटाना भेज दिया गया। यहाँ उसे तरक्की मिली और वह मेजर हो गया। पहला बल्कान युद्ध उसके लौटने के पहले ही समाप्त हो गया। लेकिन दूसरे बल्कान युद्ध (जुलाई ९१३) में गेली पोली प्रायद्वीप की फौज का वह सेनापति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया गया। यहाँ उसने डार्डेनेल्स (दर्रा दानियल) की रक्षा के प्रश्न को बारीकी से अध्ययन किया। सन्धि हो जाने पर वह सोफिया में फौजी अफसर बना दिया गया। बड़ी लड़ाई के सम्बन्ध में कमाल का विश्वास था कि जर्मनी की हार अवश्यम्भावी है, यह बात उसने जर्मनी में वान हिन्डन वर्ग से भेंट होने पर भी कह दी थी। फिर भी बड़ी लड़ाई में कमाल को अपनी योग्यता दिखाने का अवसर मिला।

अनवर पाशा से अनबन होने के कारण कमाल को कोई विशेष ऊँचा पद नहीं मिला। मैदोस की रिजर्व सेना में वह जनरल कमांडर के मातहत था। लेकिन कमाल के सत्वर निश्चय, साहसी चालों और अन्त तक लड़ने का फल यह हुआ कि ब्रिटिश फौज गेली पोली में सफल न हो सकी। सारी लड़ाई में कमाल ने जान की कुछ भी परवाह न की और अपूर्व उत्साह दिखलाया। दूसरी बार फिर ब्रिटिश फौज ने चढ़ाई की। इस बार टर्की को जीत की कोई आशा न रही। लेकिन कमाल ने सिपाहियों को ऐसा जोश दिलाया कि डार्डनेल्स की रक्षा हो गई। यदि अनवर से अनबन न होती तो पहली बार कमाल सेनापति बना दिया जाता। इस बार एक बम्ब का टुकड़ा कमाल के ठीक दिल पर लगा। यदि बीच में उसकी घड़ी न आजाती तो उसके बचने की कोई आशा न थी। इसके बाद कमाल—कमालपाशा बनाकर काकेशस प्रदेश में भेज दिया गया। यहाँ उसने रूसियों से बिटलिस और मूश वापस ले लिया।

ग़ाज़ी मुस्तफा कमाल पाशा।

१९१७ में कमाल हजाज भेजा गया। कमाल की राय थी कि हजाज़ से सारी तुर्की फौज बुला ली जाय और सिरिया में रख दी जाय। पर उसकी सुनवाई न हुई। इस समय जर्मन कमांडर वानफाकेन हार बग़दाद लेने की फिकर में था। कमाल को टर्की के घरेलू मामलों में विदेशी हस्तक्षेप बहुत खटकता था। कमाल ने विदेशियों का विरोध करना आरम्भ कर दिया। उसने बग़दाद के सम्बन्ध में तुर्की सरकार को चेतावनी दी। जब उसकी सुनवाई न हुई तब कमाल ने इस्तीफा दे दिया। जब वहीदुद्दीन सुल्तान हुआ तो उसके समझने से कमाल ने फिर सेना में नौकरी कर ली। इस बार जब पेलेस्टाइन में ब्रिटिश कमांडर एलनबी ने तुर्कों को बुरी तरह रहा दिया था और तुर्की फौज तितर बितर हो गई थी तब कमाल ने ही फौज को एकत्रित करने और शानदार ढंग से पीछे हटाने का काम किया। बड़ी लड़ाई में टर्की के हार जाने से कमाल को आश्चर्य न हुआ। हार के बाद टर्की के बाहरी प्रान्तों के छिन जाने से कमाल को दुःख भी न हुआ। वह जानता था कि बाहरी प्रान्त टर्की के लिये भार रूप हैं। लेकिन जब टर्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ऊपर लज्जाजनक शर्तें लादी गईं और स्मर्ना यूनानियों को दे दिया गया तब कमाल से न रहा गया। उसने सन्धि की निन्दा की और आवश्यकता पड़ने पर सन्धि को बदलने के लिये तलवार का सहारा लेने के लिये तय कर लिया। टर्की को बरबादी से बचाने के लिये अनातूलिया के नौजवान तुर्कों ने कमाल का साथ दिया। लेकिन बुड्ढा सुल्तान वहीदुद्दीन कुछ डरपोक था। उसे डर था कि सन्धि का विरोध करने से विजयी योरूपीय शक्तियां उस से गद्दी छीन लेंगी। इस लिये सुल्तान ने कमाल का घोर विरोध किया। और उसके साथियों की निन्दा की। इसका फल यह हुआ कि टर्की में गृह-कलह फैल गया।

कमाल ने कुस्तुन्तुनिया की कमज़ोर सरकार की परवाह न करके एकान्त में बसे हुये अंगोरा नगर में आज़ादी चाहने वाले तुर्कों की कांग्रेस की। यहीं से कमाल की राष्ट्रीय सेना का आरम्भ हुआ। सौभाग्य से तुर्की सरकार ने सन्धि की शर्तों को पूरा करने के लिये सेना के निःशस्त्रीकरण का काम कमाल को सौंप दिया। कमाल ने इस अवसर से लाभ उठाकर राष्ट्रीय सेना का संगठन किया। उसने समसुन, तोकात, सिवास आदि कई स्थानों में राष्ट्रीय आन्दोलन के केन्द्र स्थापित कर दिये।

तुर्की की सरकार को राष्ट्रीय आन्दोलन का देर से पता लगा। पता लगते ही उसने कमाल को कुस्तुन्तुनिया वापिस बुलाया। कमाल वापिस जाने के बदले इस्तीफा देकर अर्जरूम चला गया। कमाल ने एक राष्ट्रीय कांग्रेस जुलाई महीने में अर्जरूम में और दूसरी सितम्बर में सिवास में की। राष्ट्रीय अस्तित्व कायम रखने के लिये इन कांग्रेसों में उपस्थित तुर्की नौजवानों ने अन्त तक लड़ने का वचन दिया। कुस्तुन्तुनिया की सरकार ने कमाल की संस्था को ग़ैर कानूनी करार दिया और विदेशी शक्तियों से उसे मिटाने की भरसक कोशिश की। इसी बीच में उसने कमाल से लोहा लेने के लिये यूनान (ग्रीस) को उभाड़ा और ग्रीस को बहुत सा प्रदेश देने का वचन दिया। यूनानी फौजें स्मर्ना से पूर्व की ओर बढ़ीं। १९२१ में कमाल ने पश्चिमी अनातूलिया को छोड़कर सक्कारिया नदी की शरण ली। अंगोरा (अंकारा) को बचाने के लिये यूनानियों से कई भीषण लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। इनमें वीर तुर्कों की विजय हुई। सक्कारा की विजय के बाद कमाल ने एक वर्ष फौज को सुधारने में लगाया। १९२२ में कमाल ने यूनानियों को अनातूलिया से भगा दिया और स्मर्ना छीन लिया। यदि ब्रिटेन और फ्रांस की फौजें रुकावट न डालतीं तो कमाल के नौजवान तुर्क सिपाही कुस्तुन्तुनिया को छीन कर और अधिक पश्चिम की ओर बढ़ जाते।

तुर्कों की इस विजय से यूनानी साम्राज्य का स्वप्न एक दम दूर हो गया। नई सन्धि करने के लिये लासेन (स्विज़रलैण्ड) में कान्फरेन्स हुई। इस सन्धि ने १९१९ की सन्धि को बदल दिया। इस समय कमाल टर्की का निरंकुश स्वामी बन गया। आरम्भ में सुल्तान वहीदुद्दीन ने कमाल का घोर विरोध किया था और कमाल को दगाबाज देशद्रोही बतलाया। अपनी गद्दी को सुरक्षित रखने के लिये उसने ब्रिटेन की शरण ली। अब उसे इस विदेशी शरण का गहरा मूल्य देना पड़ा और वह गद्दी से उतार दिया गया। खिलाफत को पहले कुछ समय के लिये रहने दिया गया और वहीदुद्दीन का भतीजा अब्दुलमजीद खलीफा बनाया गया। नाम के लिये खलीफा दुनिया भर के दीनदार मुसलमानों का रूहानी सरदार था। लेकिन खिलाफत के रहने से विदेशी साजिशों को अवसर मिलता था। इससे तुर्की की आज़ादी को खतरा था। इसलिये कमाल ने खिलाफत ही को तोड़ दिया। टर्की में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। तुर्क लोगों ने देश को आज़ाद कराने वाले मुस्तफा कमालपाशा को गाजी या विजयी की उपाधि दी। कमाल ही टर्की का राष्ट्रपति और सेनाओं का प्रधान सेनापति चुना गया।

लड़ाई से छुट्टी पाने पर कमाल ने अपना सारा ध्यान सुधारों की ओर लगाया। कमाल के सुधारों ने योरुप के रोगी मनुष्य (टर्की) को एक शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया। जापान की तरह टर्की भी विदेशियों को शक की नज़र से देखता है। लेकिन उनके गुणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपनाने में टर्की ने जरा भी हिचकिचाहट नहीं की। पहले टर्की ने फेज़ या तुर्की टोपी की जगह योरुपीय हैट (टोप) पहनने का नियम बनाया। मज़हब को प्रधानता उड़ा दी गई। योरुपीय क़ानून टर्की में चलाये गये। विवाह की पुरानी प्रथा बन्द कर दी गई। व्याह करने के पहले तन्दुरुस्ती का प्रमाण पत्र पेश कराना पड़ता है। जो पुरुष तन्दुरुस्त नहीं होता है वह एक भी व्याह नहीं कर सकता। तुर्की स्त्रियों का परदा उड़ गया। वे सभी पेशों में भरती होने लगी। फौज और हवाई जहाज के काम में भी तुर्की स्त्रियां मिलेंगी। अरबी प्रभाव और अरबी भाषा उड़ा दी गई। कुरान का अनुवाद तुर्की भाषा में हो गया। तुर्की भाषा रोमन लिपि में लिखी जाने लगी। इस लिपि का प्रचार करने के लिये गाज़ी स्कूल मास्टर सा बन गया। उसने देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सफ़र किया। टर्की में विदेशियों के स्कूल बन्द कर दिये गये। राष्ट्रीय शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। कृषि का सुधार करने के लिये कमाल ने राजधानी के पास एक आदर्श खेत (फार्म) खोला है। वहां वह नियम पूर्वक काम करने जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान का रिज़ाशाह

ईरान के राजा रिज़ाखां (शाह) पहलवी का जन्म १८७७ ई० में कोह सवद में में हुआ था। रिजा खां का बाप मजन्दरान में एक किसान था। पीछे उसने फौज में नौकरी कर ली थी। रिजाखां ने नई उम्र में ही फौज में नौकरी कर ली थी। कुछ समय बाद वह कोसाक डिवीज़न (कज़्ज़ाकी फौज) का अफसर हो गया। यह फौज रूसियों को रोकने के लिये भेजी गई। रूसी लोग इस समय एंज़ीली बन्दर गाह (कास्पियन तट) पर गोलाबारी कर रहे थे। रूसियों ने एंज़ीली बन्दरगाह को छीन कर रश्त शहर पर अधिकार कर लिया था। इरानी फौज को रूसियों ने बुरी तरह से हराया। ईरानी फौज को भगाकर काज़्विन में पड़ी हुई ब्रिटिश फौज के पास आकर शरण लेनी पड़ी। इस समय ईरान के बहुत बड़े भाग में ब्रिटिश फौजों का जाल सा बिछा हुआ था। १९१७ में रिजाशाह हमदान से तहरान एक फौज लेकर आया। यहीं उसने एक सेना पति को हटाकर दूसरे सेनापति बनाया। १९२१ में ४००० सिपाही लाकर रिज़ाखां स्वयं प्रधान सेना पति और युद्ध मन्त्री बन गया।

इस समय से ईरान की सरकार की बागडोर वास्तव में रिज़ाखां के हाथ में आ गई। शाह नाम मात्र के लिये रह गया। रिज़ाखां ने अपने मन का मंत्रि मंडल बनाया और कई तरह के सुधार किये। १९२३ में रिज़ा खां प्रधान मन्त्री बना। जो जो प्रस्ताव उसने पेश किये उनको मजलिस ने एक मत होकर पास कर दिया। अर्थ विभाग को सुधारने के लिये अमरीकन अर्थ-मन्त्री को सभी तरह की सुविधा दी गई। शाह सुल्तान अहमद कद्जार को अपनी स्थिति से घोर असन्तोष था। उन्होंने १९२४ में योरुप जाने के लिये प्रस्थान किया। इधर मजलिस ने रिज़ाखां को सरकार का सर्वेसर्वा बना दिया। इसी समय ईरान का नया शासन विधान बना।

रिज़ाशाह पहलवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२५ में मजलिस ने रिज़ाखां पहलवी को बाद (याद) शाह बना दिया और उसके बाद बादशाहत पहलवी वंश में रहने का प्रस्ताव पास कर दिया। १९२६ में तहरान शहर के गुलिस्तां महल में ताजपोशी हुई।

रिज़ाशाह ने ईरान को उन्नत करने के लिये तरह तरह के सुधार किये। पुरानी पोशाक की जगह योरूपीय पोशाक पहनने के लिये कानून बन गया। शिक्षा का प्रचार बढ़ा। देश के कारबार को बढ़ाने के लिये देशी दस्तकारी को सरकारी सहायता दी जाने लगी। फौज में भी सुधार हुआ। फौजी शक्ति बढ़ाने से विदेशी हस्ताक्षेप बहुत कम हो गया।

नवम्बर में शाह ने एंग्लो पर्शियन आयल कम्पनी को मिले हुए कन्सेशन (रियायतें) रद कर दिये। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से हवाई जहाज़ और बारूद मंगाने का प्रबन्ध किया।

अभी हाल में ईरान में एक क़ानून बना है। इसके अनुसार ईरान में बैंक या दूसरी संस्थाओं को अपना सारा हिसाब और विवरण ईरानी भाषा और अक्षरों में रखना पड़ेगा। वे विदेशी भाषा और विदेशी लिपि का प्रयोग न कर सकेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

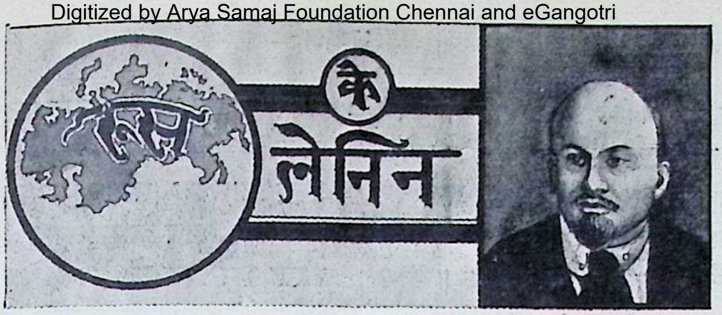

रूस का लेनिन

लेनिन का पूरा नाम व्लाडीमीर इल्यिच उल्यानोव लेनिन था। लेनिन का जन्म १८७० और मृत्यु १९२४ में हुई। लेनिन का जन्म रूस के मामूली अमीर घराने में हुआ था। जब १८९१ में उस के बड़े भाई को एलेग्जेंडर द्वितीय की हत्या के सम्बन्ध में प्राणदंड हुआ तब से वह जनता को जारशाही जुल्म से मुक्त करने के लिये क्रान्तिकारी हो गया। १८८७ ई० में २७ वर्ष की उम्र में ३ वर्ष तक लेनिन को साईबेरिया में रहने का दंड मिला। साईबेरिया की कठोर शीत में रहना प्राणदंड से भी अधिक दुःखदाई होता है।

१८८७ में लेनिन सिम्ब्रिस्क स्कूल से इतने उत्तम वर्ग में उत्तीर्ण हुआ कि उसे स्वर्ण पदक पुरस्कार में मिला। इसी वर्ष वकालत पढ़ने के लिये लेनिन कज़ान विश्वविद्यालय में भरती हुआ। लेकिन विद्यार्थियों की एक सभा में भाग लेने के कारण वह देहात भेज दिया गया। १८८९ में उसे फिर कज़ान विश्वविद्यालयं में आने की आज्ञा मिली। इस बार वह क़ानून (वकालत) पढ़ने के साथ-साथ कार्लमार्क्स के साम्यवादी सिद्धान्तों को ध्यान से पढ़ने लगा। १९८१ में लेनिन ने सेन्टपीटर्स वर्ग विश्वविद्यालय की वकालत की परीक्षा पास की। १८९३ में लेनिन ने समारा की अदालत में कई मुक़द्दमों की पैरवी की। लेकिन उसका मन पहले रूस और फिर समस्त संसार की राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में लगा था।

१८९४ में वह सेंट पीटर्स बर्ग आया और प्रचार-कार्य करने लगा। १८९५ में मार्क्स के अनुयायियां और मजदूरों का पक्ष लेने वाले नेताओं से मिलने के लिये लेनिन विदेश गया। लौटने पर लेनिन ने सेन्टपीटर्स वर्ग में मजदूरों को आजादी दिलानेवाला संघ स्थापित किया। मज़दूरों की यह संस्था शीघ्र ही प्रभावशाली हो गई। १८९५ में लेनिन और उस के घनिष्ट मित्र गिरफ़्तार कर लिये गये। १८९६ का वर्ष उसका जेल में बीता। १८९७ में उसे तीन वर्ष के लिये देश निकाले का दंड मिला। और वह पूर्वी साइबेरिया के यनोसी प्रान्त में भेज दिया गया। १८९८ में उसने सेन्टपीटर्स बर्ग की संस्था की सहयोगिनी क्रुप्सकाया से व्याह किया। लेनिन के जीवन के २६ वर्षों के अन्त तक इस पतिगामिनी स्त्री ने अपूर्व स्वामिभक्ति का परिचय दिया। निर्वास काल में लेनिन ने 'रूस को पूंजी वाद का विकास" अपना अर्थशास्त्र सम्बन्धी महत्व पूर्ण ग्रन्थ लिखा। १९०० में लेनिन इस्क्रा (चिनगारी) नाम के कान्तिकारी पत्र के छपाने का प्रवन्ध करने के लिये स्विजरलैंड गया। इस पत्र की प्रथम प्रति म्यूनिक से प्रकाशित हुई। साम्यवादियों की दूसरी सभा १९०३ में ब्रूसेल्स में हुई। इस सभा में प्लेखानोव और लेनिन का बनाया हुआ कार्यक्रम स्वीकार कर लिया गया। पर यहाँ साम्यवादियों के दो दल (बोल्शेविक और मेन्शेविक) हो गये। लेनिन बोल्शेविक या गरमदल का नेता बना। मेन्शेविक (या नरम) दल और लेनिन के दल में मतभेद बढ़ता ही गया। १९१४ में दोनों दलों का भेद एकदम स्पष्ट हो गया। १९०५ में रूसी-जापानी लड़ाई से रूस देश में क्रान्तिकारी स्थिति पैदा हो गई। किसानों के दंगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राजनैतिक हड़तालों के कारण रूसी कार्यकर्ताओं पर गोली चलाई गई। लेनिन का विचार था कि जनता को उभाड़ कर ज़ारशाही का सशस्त्र विरोध कया जावे। १९०५ के अक्तूबर महीने में रूसी बोल्शेविक लोगों ने किसानों के सम्बन्ध में एक नया कार्यक्रम तैयार किया जिस के अनुसार जागीरदारों की ज़मीन को जब्त करने का निश्चय किया गया था। ज़ार ने शासन में सुधार करने की घोषणा की। लेनिन स्विज़रलैंड से रूस लौट आया।

१९०५ के दिसम्बर में मास्को में जो विद्रोह उठा उस में फौज की सहायता न मिल सकी। दूसरे शहरों ने भी साथ न दिया। अतः यह विद्रोह एक दम कुचल दिया गया। इस से नरम दल वाले आगे बढ़े।

लेनिन ने अपने साथियों को आदेश दिया कि पार्ल्यामेन्ट की सहायता से वे अपने कार्य क्रम को आगे बढ़ावें। लेकिन १९०७ ई० में लेनिन को फिर रूस छोड़ना पड़ा। इस के बाद वह केवल १९१७ ई० में फिर रूस लौट सका। लेनिन के जीवन की विलक्षणता यह रही कि उसे अधिकतर समय रूस के बाहर ही बिताना पड़ा। फिर भी जितना उसे रूसी जनता से परिचय था उतना और किसी रूसी नेता को न था। १९१२ और १९१४ के बीच में रूसी क्रान्तिकारियों में नया जोश आगया। १९१२ में लेनिन ने प्रेग शहर में क्रान्तिकारियों की एक गुप्त सभा की। इसी समय मेन्शेविक या अल्प-संख्यक नरम दल के लोग अलग कर दिये गये। लेनिन ने अपने सिद्धान्तों का रूस में प्रचार करने के लिये प्रवदा नाम का समाचार पत्र सेन्ट पीटर्स बर्ग में चलवाया। पत्र के संचालन का काम वह बाहर से करता रहा। अपने देशवासियों से सम्पर्क रखने के लिये लेनिन ने पेरिस छोड़ कर अपना निवासस्थान क्रैकाओ में बनाया। लेनिन ने अपने प्रवास काल के कुछ वर्ष लन्दन में भी बिताये। लन्दन में वह १९०३ के पहले ब्रिटिश म्युज़ियम के पड़ोस में रहता था। यहाँ उसने एक ओर अत्यन्त गरीब और दूसरी ओर मालामाल लोग देखें। यहीं उसको कार्लमार्क्स की कब्र से गुज़रते समय नया प्रोत्साहन और ब्रिटिश म्यूज़ियम से पठनपाठन की अपार सामग्री मिलती थी। रूसी भाषा तो उस की मातृभाषा ही थी। वह इंगलिश, जर्मन और फ्रेंच भाषा का भी मास्टर था। वह इटेलियन, स्वेडिश और पोलिश भाषा भली भांति पढ़ और समझ लेता था। वह संसार की प्रायः सभी श्रमजीवी संस्थाओं से सम्पर्क रखता था।

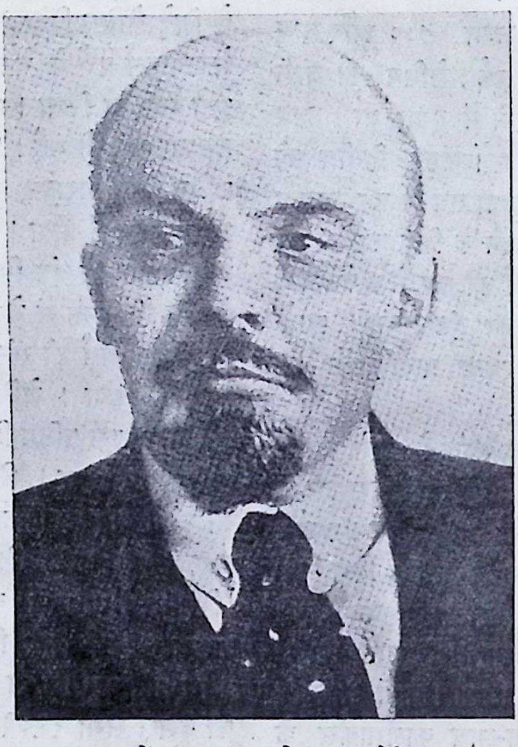

रूस में नया युग लाने वाला लेनिन।

१९१४ ई० में उसे एक नया अवसर मिला। उसने कहा कि बड़ी लड़ाई का मूलकारण साम्राज्यवादी हैं। मज़दूरों को उसने चेतावनी दी कि वे अपने देश की पूंजीपति सरकार का साथ न दें और देश में गृहकलह फैला दें।

१९१७ में रूसी लोग बड़ी लड़ाई से कुछ थकने लगे और ज़ारशाही से तंग आगये। इसी वर्ष उन्हों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्रोह खड़ा किया। इस समय लेनिन स्विजरलैंड में था। जब लेनिन ने रूस पहुँचने का प्रयत्न किया तो ब्रिटिश सरकार ने इसमें बाधा डाली। अतः लेनिन ने जर्मनी होकर यात्रा करने का निश्चय किया। इस ढंग से वह रूस पहुँच गया। लेकिन उस के शत्रुओं ने उसे बदनाम करने की कोशिश की कि वह जर्मनी का एजेन्ट हो कर आया है। इस अफ़वाह का कुछ भी असर न हुआ और लेनिन के हाथ में क्रान्ति का नेतृत्व आगया।

१९१७ के मार्च की क्रान्ति में राष्ट्र की पूरी सहायता न थी। केरेन्स्की की क्षणिक सरकार मध्यम श्रेणी के लोगों की संस्था थी। लेनिन ने क्षणिक सरकार की इस कमजोरी को ताड़ लिया। इस लिये उसने इस को किसी प्रकार का सहयोग नहीं दिया। रेलगाड़ी से उतरते ही सेन्टपीटर्स बर्ग के पहले भाषण में लेनिन ने कहा कि ज़ारशाही का पतन तो क्रान्ति की केवल पहली सीढ़ी है। पूंजीपतियों के आन्दोलन से जनता की सरकार का यह उद्देश्य होना चाहिये कि सोवीट या पंचायतों की शक्ति बढ़े और सरकार की रचना साम्यवादी ढंग पर हो। लेनिन का कार्यक्रम केरेन्स्की और उस के साथियों को पसन्द न आया। लेकिन कई कारणों से लेनिन को सफलता मिली।

जब ज़ार को गद्दी से उतारा गया तब किसानों को ज़मीन देने का वचन दिया गया था। लेकिन क्षणिक सरकार ने जर्मनी के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने का निश्चय किया। जब तक लड़ाई समाप्त न होती तब तक रूस के किसान-सिपाही ज़मीन पर अधिकार नहीं कर सकते थे। लेनिन ने घोषणा की कि ज्यों ही उसके (बोल्शेविक) दल ने शासन का भार अपने हाथ में लिया त्योंही सन्धि कर ली जावेगी और किसानों को ज़मीन बांट दी जावेगी। इस प्रकार लड़ाई से थके हुए और ज़मीन चाहने वाले रूसी किसानों को लेनिन की बात एकदम पसन्द आई। क्षणिक सरकार के समर्थक मध्यम श्रेणी के लोग नहीं के बराबर थे। अतः फौज और जन साधारण की सहायता न मिलने से क्षणिक सरकार लेनिन के सुसंगठित बोल्शेविक दल का सामना न कर सकी। इस प्रकार रूस देश का शासन लेनिन की अध्यक्षता में बोल्शेविक दल के हाथ में आगया। इस क्रान्ति में बोल्शेविक दल को अधिक खून बहाने की आवश्यकता न पड़ी। लेकिन इस सफल क्रान्ति के बाद रूस में गृहकलह का सूत्र पात हुआ। जनता की शक्ति को बढ़ता देखकर योरुप की पूंजीपति शक्तियाँ थर्राने लगीं। उन्होंने बोल्शेविक सरकार को नष्ट करने के लिये रूसी देशद्रोहियों को सहायता देकर रूस में गृहकलह फैला दी। ब्रिटेन ने दक्षिण में काकेशस की ओर से और उत्तर में आर्केञ्जल की ओर से रूस पर चढ़ाई कर दी। लेनिन ने जर्मनी से ब्रेस्टलिटोव्सक की सन्धि कर ली। जब ट्राट्स्की सन्धि की शर्तें तय कर रहा था तो उसे पूंजीपतियों की पोशाक में एक सभा में जाना पड़ रहा था। ट्राट्स्की ने लेनिन की राय मांगी। लेनिन ने तुरन्त उत्तर दिया कि शान्ति के लिये यदि लंहगा पहनना पड़े तो थोड़ी देर के लिये उसे भी पहन लो। इसी सन्धि से रूस में गृहकलह की नींव पड़ी और इसी से चिढ़ कर ब्रिटेन ने रूस के उत्तरी और दक्षिणी भाग पर चढ़ाई की। गृहकलह और बाहरी आक्रमण से रूस प्रायः बरबाद हो गया। मार्क्स का अनुयाई और कट्टर साम्यवादी होते हुए भी लेनिन ने पीड़ित लोगों को सहारा देने के लिये कुछ समय के लिये उन्हें निजी जायदाद रख लेने दी। रूसी क्रान्ति के साथ संसार भर में क्रान्ति फैलाना साम्यवाद का दूसरा सिद्धान्त था। लेकिन हंगरी के किसान और जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, लिथुएनिया, एस्थोनिया, लैटविया और फिनलैंड के मध्यम श्रेणी के लोग क्रान्ति के लिये तैयार न थे। अगर संसार भर के ग़रीब और मजदूर लोग एक साथ विद्रोह न करें तो एक देश में साम्यवादी विद्रोह का सफल होना कठिन था। लेनिन ने बाहरी शत्रुओं के आक्रमण और भीतरी गृहकलह के होते हुए भी रूस को स्वावलम्बी बनाने और बिजली फैलाने के लिये पंचवर्षीय योजना शुरू की। लेनिन का अनुमान था कि सामूहिक रूप से खेती, नये ढंग के यंत्रों की खेती से रूसी किसानों का रहन-सहन इतना अधिक ऊँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायगा कि उन्हें किसी बाहरी हमले का डर न रहेगा।

रूसी किसानों ने फौज से लौट कर जागीरदारों से जमीन छीन कर आपस में बाँट ली। राजधानी मास्को में बना ली गई। ब्रिटिश हस्तक्षेप और चेकोस्लोवैक लोगों का आक्रमण सफल न हो सका। लेनिन का प्रचार कार्य इस प्रकार बढ़ता रहा कि उस के सभी शत्रुओं को नीचा देखना पड़ा। पंचवर्षीय योजना ऐसी सफल हुई कि पहली योजना के बाद उस के अनुयाइयों ने दूसरी और फिर तीसरी पंचवर्षीय योजना शुरू की।

लेकिन काम की अधिकता का भार लेनिन के ऊपर इतना पड़ा कि उस का स्वास्थ बिगड़ गया। १९२२ में डाक्टरों ने उसे काम करनेकी मनाई करदी। पर वह काम से न बच सका। १९२४ में उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के अवसर पर रूस की जनता ने अभूतपूर्व प्रेम प्रदर्शन किया। सरदी की ऋतु ऐसी कड़ी थी कि रोते हुए किसानों और सिपाहियों के आँसू एकदम बरफ़ के कणों में बदल जाते थे। फिर भी अपार भीड़ थी। लेनिन ने अपने अपूर्व त्याग और बलिदान से न केवल रूस वरन् सारे संसार के लिये एक नया युग ला दिया। जो लोग कुचले जाते थे और अपनी मेहनत का उपयोग नहीं कर सकते थे उन में नया जीवन आ गया। वे अपने को मालिक समझने लगे। उन को चूसने वाले पूंजीपति लोग डरने और शरमाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इब्न सऊद

इब्न सऊद या अब्दुल अज़ीज़ इब्न अब्दुल रहमान इब्न फैसल इब्न सऊद नजद को राजधानी रियादह नगर में १८८० ई० में पैदा हुआ था। उसका पिता अब्दुल रहमान (जो १९२८ में मर गया) नजद के सुल्तान अमीर फैसल के चार लड़कों में सब से छोटा लड़का था। अमीर फैसल ने १८३४ से १८६७ तक शासन किया। उसके मरने पर मध्य अरब में गड़बड़ो और गृहकलह फैल गई। गद्दी के लिये उसके दो बड़े लड़के अब्दुल्ला और सऊद आपस में लड़ने लगे। १८७५ में तुर्कों ने हासा पर अधिकार कर लिया। उत्तरी नजद से इब्न रशीद प्रतिद्वन्द्वी के वेश में दक्षिण की ओर अपना राज्य फैला रहा था। अन्त में अमीर मुहम्मद ने रियादह को छीन कर वहवी राज्य ही समाप्त कर दिया। अब्दुल अज़ीज देश से बाहर निकल गया। कुछ समय बहरिन में रहने के बाद वह कुवैत आया। यहां उसे शेख मुहम्मद ने ब्रिटेन से मित्रता रखने और आगे बढ़ने की सलाह दी। अब्दुल रहमान ने १९०० ई० में बहवी राज्य को फिर से लेने की कोशिश की। सरीफ में उसकी हार होने पर उसने अपने सब अधिकार अपने बड़े लड़के अब्दुल अज़ीज़ को सौंप दिये। १९०१ में २०० सिपाहियों के साथ अब्दुल अज़ीज़ रेगिस्तान में बढ़ा।

जब राजधानी कुछ ही दूर रह गई तब उसने २०० में से १५ मनुष्यों को चुना। रात में वह इन साथियों को लेकर रियादह (राजधानी) में पहुँचा और किले के सामने वाले घर में घुस गया। किले में रशीदी हाकिम रहता था। रात में जो भीषण लड़ाई हुई उसमें इब्न सऊद की जीत हुई। इस प्रकार इब्न सऊद रियादह का मालिक बन गया और नजद का राजा घोषित कर दिया गया। कुछ वर्षों में इब्न सऊद ने अपने पड़ोस वाले प्रान्तों पर अधिकार कर लिया और इब्न रशीद का मुक़ाबिला करने लगा। इब्न रशीद को तुर्कों से सहायता मिलती थी। १९०६ में इब्न रशीद मर गया। इससे इब्न सऊद को उत्तर की ओर से कोई खटका न रहा।

बाहरी हमलों से मुक्त होने पर इब्न सऊद ने भीतरी सुधार की ओर अपना सारा ध्यान लगाया। अलग अलग फिरकों को मिला कर उसने १९ २ में एक कौम बनाने की कोशिश की। जहां पहले १०० रहने वाले थे, वहीं अरताविया में १०,००० मनुष्यों की अच्छी बस्ती बस गई। इसी तरह पिछले २० वर्ष में कई जगह बस्तियां बढ़ गई। घुमक्कड़ चरवाही की जगह पर खेती होने लगी। बद् रस्म की जगह शरह या धर्म ग्रन्थ के अनुसार काम होने लगा। हर एक बस्ती में कुछ न कुछ वहवी स्थायी सेना तैयार होगई। यह सेना भीतरी शान्ति रखने और बाहरी हमलों को रोकने के काम आती है। १९१३ में वहवी फौज ने अचानक हफ़ूफ पर छापा मारा। तुर्क लोग १८७५ से हासा में राज्य करते थे। इब्न सऊद की फौज इस प्रकार अचानक हफ़ूफ में पहुँची कि तुर्की फौज से कुछ भी करते न बन पड़ा। बिना लड़े ही हफ़ूफ पर इब्न सऊद का अधिकार हो गया। इसी तरह उक़ैर और क़ातिफ में इब्न सऊद का अधिकार हो गया और तुर्क लोगों ने पूर्वी अरब को छोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९१४ के अन्त में ब्रिटिश कैप्टेन शेक्सपियर तुर्कों के विरुद्ध सहायता लेने के लिये इब्न सऊद से मिलने गया। इब्न सऊद का पुराना दुश्मन इब्न रशीद तुर्कों से मिल गया था। इब्न सऊद ने एकदम फौज इकट्ठी की। जर्राब में लड़ाई हुई। लेकिन कैप्टेन शेक्सपियर मारा गया। इसलिये अंग्रेजों ने भीतरी अरब में बहुत छेड़खानी न की। १९१५ में इब्न सऊद ने अंग्रेजों से मित्रता सम्बन्धी सन्धि कर ली। लेकिन जब लारेंस की सहायता से राजा (शाह) हुसेन हजाज़ में बलवान होने लगा तब इब्न सऊद को चिन्ता होने लगी। १९१७ में ब्रिटिश मिशन फिर इब्न सऊद के दरबार में गया। १९१८ में इब्न सऊद ने इब्न रशीद पर चढ़ाई की। वह हैल की दीवारों के पास तक पहुँच गया। इसी बीच में बड़ी लड़ाई समाप्त हो गई। इस लिये इब्न सऊद की स्थिति में कोई अन्तर न पड़ा। बड़ी लड़ाई के पहले जो दो दुश्मन (इब्न रशीद और शाह हुसेन) थे वे ही बाद में भी बने रहे। १९१९ में ब्रिटिश सरकार की ओर से लार्ड कर्ज़न ने शाह हुसेन की तरफदारी की। ब्रिटिश सरकार ने शाह हुसेन को खुरमा पर अधिकार करने और इब्न सऊद को वहां से दूर रहने की आज्ञा दी। लेकिन इब्न सऊद ने इनकी परवाह न की। दो महीने बाद वहबी फौजों ने हश्मी फौजों को तुराबा के पास छापा मार कर नष्ट कर दिया। इसके बाद इब्न सऊद रियादह को लौट गया। १९२० में इब्न सऊद की वहबी फ़ौजों ने असीर जीत लिया। १९२१ में हैल को जीतने से सारा मध्य अरब इब्न सऊद के हाथों में आ गया। १९२१ में वहबी लोगों ने जौफ पर अपना अधिकार जमाया।

अरब के इब्नसऊद।

ब्रिटिश सरकार ने देर से दोनों के बीच में मध्यस्थ बनने की कोशिश की। अप्रैल १९२४ तक इसका कोई फल न हुआ। इसी समय वहबी लोगों ने हजाज़ पर चढ़ाई की और तैफ पर छापा मार कर उसे जीत लिया। वहां के निवासी मार डाले गये। शाह हुसेन को अपने बड़े लड़के अली के पक्ष में गद्दी छोड़नी पड़ी। अली ने शीघ्र ही मक्का ख़ाली कर दिया। वहां वहबी लोगों का अधिकार हो गया। १९२४ में इब्न सऊद ने पहली बार मक्का में प्रवेश किया। कुछ महीनों में मदीना, जद्दा और दूसरे जिलों पर भी वहबी लोगों का अधिकार हो गया। १९२६ में मक्का की बड़ी मस्जिद में इब्न सऊद हजाज का शाह घोषित किया गया। नजद और दूसरे भागों का सुल्तान वह पहले ही था।

१९२७ में ब्रिटेन से फिर मित्रता सम्बन्धी सन्धि हुई। लेकिन जब इराक के राजा ने अरब की सीमा के पास क़िले बनवाये तो दोनों में खट पट हो गई। इब्न सऊद की एक फौजी टोली ने किला बनाने वालों को मार डाला।

इब्न सऊद को नजद में राज्य करते लगभग ३५ वर्ष और हजाज़ में १० वर्ष हो गये हैं। जहां पहले अराजकता थी वहां अरब में इब्न सऊद ने अमन कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है। हज करने वालों के लिये मोटर मार्ग की सुविधा हो गई है। राज्य की आमदनी बढ़ गई है। साथ ही रिशवत खोरी कम हो गई है। उसका सब से बड़ा लड़का लगभग ३२ वर्ष का है और नजद का सूबेदार है। दूसरा लड़का कई बार योरुप हो आया है। वह मक्का का सूबेदार है। इन दो के अतिरिक्त इब्न सऊद के ११ लड़के और हैं। इब्न सऊद ने १५० शादियां की हैं। कई स्त्रियों को पीछे से तलाक भी दे दी। कुछ शादियां राजनैतिक कारणों से की गई। फिर भी हज़रत मुहम्मद के आरम्भ के अनुयाइयों के बाद इब्न सऊद ने सब से अधिक शक्तिशाली राज्य अरब में स्थापित कर दिया है।

—०:◌:०—

पुस्तकालय
113731
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसोलिनी

इटली का प्रसिद्ध तानाशाह बेनिटो मसोलिनी १८८२ ई० को २९ जुलाई को डोविया नगर में पैदा हुआ था। उसका बाप एक लुहार था। वह ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी और नास्तिक था कि उसका नाम दूर दूर तक फैल गया था। लेकिन मसोलिनी की माँ बड़ी धार्मिक थी। वह एक स्कूल में अध्यापिका थी। बालक-मसोलिनी पर भिन्न-भिन्न समयों पर आस्तिक माता और नास्तिक पिता दोनों ही का असर पड़ा।

मसोलिनी को फायेंज़ा के सेलसन कालिज में शिक्षा मिली थी। वहाँ विद्यार्थी मसोलिनो ने तीव्र बुद्धि का परिचय दिया। लेकिन वह शिक्षकों और दूसरे पदाधिकारियों का अक्सर विरोध करता था। इसके बाद वह फोर्लिम्पो पोली के नार्मल स्कूल में भेजा गया। वहाँ की पढ़ाई समाप्त करके वह एक देहाती स्कूल का शिक्षक बन गया। इस समय वह केवल १८ वर्ष का था। फिर भी वह खूब पढ़ता था। उसे इटली के साम्यवादी दल से दिलचस्पी हो गई। वह अध्यापक जीवन से थक सा गया। इधर उसके साम्यवादी विचार अधिकारियों को खटकने लगे। अतः उसे अध्यापकी छोड़नी पड़ी। कुछ समय बाद उसे सिविल सर्विस की एक छोटी नौकरी मिल रही थी। इस नौकरी से उसे खाने पीने की कमी न रहती। लेकिन वह अपने राजनैतिक उद्देश्यों को नहीं छोड़ना चाहता था।

पैसा पास न होने पर भी वह ऊँची पढ़ाई के लिये स्विजरलैंड गया। कभी स्टीमर (नाव) में मज़दूरी करके कभी पत्थर ढो कर वह अपनी गुज़र करता था। कहा जाता है कि यहीं वह एक बार जेनेवा और दूसरी बार लासेन की साम्यवादी सभा में लेनिन से मिला। एक रात को मसोलिनी लासेन के एक पुल पर सो रहा था। वहाँ की पुलिस ने उसे आवारा गर्दी में स्विज़रलैंड से निकाल दिया। हाल में जब मसोलिनी इटली का प्रधान मन्त्री और तानाशाह हो गया तब यहाँ एक विचित्र घटना हुई। जब प्रधान मन्त्री की स्पेशल गाड़ी स्विज़रलैंड की सीमा पर पहुँची तब एक पुलिसमैन गाड़ी पर चढ़ कर पूछने लगा। इस गाड़ी में कोई बेनिटो मसोलिनी है? कुछ वर्ष पहले उसको स्विजरलैंड से बाहर निकालने की जो आज्ञा हुई थी वह वापिस नहीं ली गई है। गाड़ी रोक ली गई। लेकिन जब पुलिस वालों को मालूम हुआ कि वही बेनिटो मसोलिनी इटली का प्रधान मन्त्री है तब टेलीफोन द्वारा बर्न (स्विज़रलैंड की सरकारी राजधानी) को विशेष आज्ञा लेने पर स्पेशल गाड़ी आगे बढ़ी।

स्विज़रलैंड से फ्रांसीसी भाषा का डिप्लोमा लेकर लौटने पर मसोलिनी साम्यवादी राजनीति में घुस गया। पहले वह लाआवेनाइर नाम के साम्यवादी समाचार पत्र के सम्पादन विभाग में रहा। फिर वह दूसरे साम्यवादी पत्रों में लेख लिखता रहा।

१९११ में मसोलिनी की उस समय की इटेलियन सरकार से खटपट हो गई। इटली की सरकार ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रिपली में फौज भेजने का निश्चय कर लिया। मसोलिनी लड़ाई का विरोधी न था। पर सरकारी दल से उसका मत भेद था। सरकारी दल इटेलियन साम्राज्य को बढ़ाने के पक्ष में था। मसोलिनी चाहता था कि पहले घर का सुधार हो। कृषि में उन्नति हो और लोगों में धन बढ़े। अतः उसने अधिकारी वर्ग का विरोध करने और ट्रिपली में फौज न भेजने के लिये लोगों में आन्दोलन आरम्भ किया। मसोलिनी गिरफ़ार कर लिया गया। उसे पाँच महीने की सज़ा हुई। छूटने पर भी वह साम्यवादी दल का कट्टर अनुयायी बना रहा। उसके सम्पादन काल में साम्यवादी पत्र अवन्टी की ग्राहक संख्या ४०००० से बढ़ कर १ लाख हो गई।

१९१४ में बड़ी लड़ाई के अवसर पर मसोलिनी के सामने बड़ी विकट समस्या उपस्थित हुई। साम्यवादी होने की हैसियत से वह चाहता था कि उसके देश वाले लड़ाई में शामिल हों और यह लड़ाई सदा के लिये शान्ति स्थापित कर दे। लेकिन देशभक्त इटेलियन होने की हैसियत से वह लड़ाई में शामिल होने से झिझकता था। वह समझता था कि उसके देश वासी लड़ाई में शामिल होने के लिये तैयार नहीं हैं।

नवीन इटली का बनाने वाला मसोलिनी।

इटली की सरकार ने आरम्भ में तटस्थ रहना ही उचित समझा। धीरे धीरे में मसोलिनी में परिवर्तन हुआ। उसके साम्यवादी साथियों और उसमें मतभेद हुआ। मसोलिनी ने देखा कि प्रायः सारा योरुप लड़ाई के लिये सुसज्जित है। ऐसी अवस्था में अकेले इटली को निहत्था रखना घातक होगा। उसने यह भी देखा कि लड़ाई में शामिल होने से देश की कायरता दूर हो जायगी। वीरता और एकता के भाव जागेंगे। अतः उसने साम्यवादी पत्र (अवंटी) के सम्पादक के पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उसके साथियों ने उसे विश्वासघाती, किराये का टट्टू और हत्यारा बतलाया। मसोलिनी ने अपनी सफाई देने के बदले उनको बेईमान बतलाया। मसोलिनी का अन्तिम वाक्य मर्मस्पर्शी था। उसने कहा कि तुम मुझसे इस लिये घृणा करते हो क्योंकि तुम्हें इस समय भी मुझसे प्रेम है। इस समय मसोलिनी ने इल पोपोलो डि इटेलिया (Il Popolo d Italia) अर्थात् "इटली के लोग" नाम का समाचार पत्र स्थापित किया। कुछ लोगों ने यह उड़ाया कि मित्र राष्ट्रों के पक्ष का प्रचार करवाने के लिये मसोलिनी को फ्रांस से धन मिला है। पहले लेख में मसोलिनी ने पूछा क्या हम जिल्लत की जिन्दगी से सन्तुष्ट रहना चाहते हैं अथवा साजिश और बुजदिली का अन्त करना चाहते हैं? इसी में उसने लोगों से लड़ाई में शामिल होने के लिये अपील की। जब इटली लड़ाई में शामिल हो गया तब मसोलिनी ने पोपोलो डि इटेलिया पत्र में लिखा "आज से सारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति को हथियार उठाना है। आज से हम याद रक्खें कि हम सब के सब इटेलियन हैं। चूं कि हमको लोहे से लोहा लेना है इस लिये हमारे दिलों से एक ही आवाज़ निकले। वह है विवा डि इटेलिया! (इटली जिन्दाबाद या इटली जीवित रहे!)

मसोलिनी ने भरती होने के लिये अपना नाम फौजी स्वयं सेवकों में लिखा लिया। पत्र का सम्पादक होने की हैसियत से वह सैनिक सेवा से मुक्त हो सकता था। लेकिन १९१५ के सितम्बतर मास में उसका बुलावा आया। इसोज़ो और कार्सो और कार्सो की खांइयों (ट्रेंचों) में मसोलिनी वहादुरी से लड़ा। १९१७ की फर्वरी में वह बुरी तरह से घायल हुआ। गोली निकालने के लिये डाक्टरों ने उसे वेहोश करना चाहा। पर मसोलिनी ने कहा मैं दर्द का अनुभव करना चाहता हूँ और जानना चाहता हूँ कि मैं उसे सह सकता हूँ या नहीं। इसलिये सारी चीर फाड़ विना नशा दिये ही की गई। उसे कई महीने अस्पताल में रहना पड़ा। अच्छे होने पर मसोलिनी ने लड़ाई के अपने अनुभवों को बहुत ही रोचक ढंग से लिखा।

क्षणिक सन्धि हो जाने पर मुसोलिनी ने सम्मान पूर्ण विदेशी नीति और लड़ाई से लौटे हुए सिपाहियों को पुरस्कार देने के सम्वन्ध में आन्दोलन शुरू किया। मुसोलिनी का विश्वास था कि बड़ी लड़ाई के अवसर पर (१९१५ और १९१७ में) ब्रिटेन और फ्रांस ने इटली के राज्य को योरूप और अफ्रीका में बढ़ाने के लिये जो वचन दिये थे वे सब पूरे होंगे। लेकिन फ्रांस, ब्रिटेन, जापान, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को सभी मेंडेटरी प्रदेश मिल गये। इटली को उसकी कमज़ोरी के कारण एक भी मेंडेटरी प्रदेश न मिला। योरुप में भी उसे बहुत कम भाग मिला।

योरुप की बड़ी शक्तियों में इटली इस समय भी सब से अधिक ग़रीब देश है। बड़ी लड़ाई के समाप्त होने पर इटली वासियों की आर्थिक दशा और भी अधिक शोचनीय थी। पीड़ित लोग अपने कष्टों को दूर करने के लिये रूसी बोल्शेविक ढंगों की ओर झुकने लगे। वोल्शेविक लोगों का मुक़ाविला करने के लिये मुसोलिनी ने २३ मार्च १९१९ को मिलान नगर में फेसिओ कम्बैटीमेन्ट नाम की प्रथम फेसिस्ट संस्था स्थापित की। जब इटली की फौजों ने फयूम नगर ले लिया तब मुसोलिनी ने अपने पोपोलो अखबार में समर्थन किया। इन सब बातों से मुसोलिनी को इटली के साम्यवादी नेता घृणा की दृष्टि से देखने लगे। १९१९ के चुनाव में जब मसोलिनी मिलान शहर की ओर से उम्मेद वार होकर खड़ा हुआ तब उसे बहुत कम वोट (मत) मिले। साम्यवादी पत्र अवन्टी ने मुसोलिनी को एक मुर्दा लाश (जो खाई में गाड़ने के योग्य है) वतलाया। कुछ समय बाद सशस्त्र साजिश के अपराध में मुसोलिनी गिरफ़ार कर लिया गया। लेकिन पीछे से छोड़ दिया गया। छूटने पर अपने पत्र को उन्नत करने के लिये मुसोलिनी और भी अधिक कड़ी मेहनत करने लगा। ग्राहक संख्या तेजी से बढ़ने लगी। मनोविनोद के लिये मुसोलिनी नाटक लिखता था। और वाओलिन बाजा बजाता था। मसोलिनी को हवाई जहाज उड़ाने और मोटर चलाने का भी शौक रहा। इसमें उसने अपनी जान की कुछ भी परवाह न की।

१९२० ई० में मजदूरों ने क़ारखानों पर अधिकार करना शुरू कर दिया। इसको मसोलिनी ने पसन्द न किया। जब बोलोग्ना, मोडेना और फेरारा में राजनैतिक हत्यायें हुईं। तब मसोलिनी ने खुल्लमखुल्ला साम्यवादियों का विरोध किया। साम्यवादियों के विरोधी लोग मसोलिनी के फेसिस्ट दल में शामिल होने लगे। पहले पो घाटी में उसने साम्यवादियों को हराया। फिर इटली भर में जहाँ जहाँ फेसिस्टों और साम्यवादियों की मुठभेड़ हुई वहाँ वहाँ मसोलिनी का फेसिस्ट दल विजयी रहा। मसोलिनी ने इस सफलता से यह फल निकाला कि वर्तमान डरपोक सरकार को भगा कर शक्तिशाली नौजवानों का शासन स्थापित होना चाहिये। अतः उसने अपने फेसिस्ट दल को राजनैतिक रूप दिया। १९२१ के मई महीने में जो चुनाव हुआ। उसमें मसोलिनी और उसके ३५ फेसिस्ट साथी चुने गये। अगले वर्ष मसोलिनी और उसके फेसिस्ट दल का प्रभाव और भी अधिक बढ़ गया। १९२२ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हड़ताल हुई उसे उसने अपने फेसिस्ट साथियों की सहायता से बन्द करा दिया। इसके बाद उसे साहस हो गया कि सरकार की बागडोर फेसिस्ट दल के हाथों में सौंपी जा सकती है। गैर फेसिस्ट लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये उसने अपने दल को राजा का समर्थक बतलाया। इसके बाद मसोलिनी ने रोम पर चढ़ाई की। उस समय की सरकार ने अस्तीफा दिया। राजा ने मसोलिनी को प्रधान मंत्री बनाया। इस प्रकार देश के शासन की बागडोर फेसिस्ट दल के हाथों में आ गई। मसोलिनी ने सात घंटे के भीतर अपना मंत्रि मंडल बना लिया। इस से पहले इटली में मन्त्रिमंडल बनाने में हफ़्ते लग जाते थे। मसोलिनी के मन्त्रि मंडल में कुछ ऐसे भी सदस्य थे जो फेसिस्ट दल के नहीं थे। लेकिन मसोलिनी ने दूसरे दलों के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। पहले मसोलिनी ने गृहसचिव और विदेश सचिव का भार अपने ऊपर लिया।

शासन में कई प्रकार के सुधार हुए। पीछे से मसोलिनी ने हवाई, जल और स्थल सेना का प्रबन्ध अपने हाथ में लिया। मसोलिनी ने प्रधान मन्त्री का काम बड़ी लगन से किया। जब वह बीमार पड़ा तो भी बिस्तर पर पड़े-पड़े काम करता रहा। उसने रोम के पोप से भी समझौता कर लिया। गृह प्रबन्ध में मसोलिनी का यह उद्देश्य रहा कि इटली शक्तिशाली और सम्पन्न बने। अतः उसने मजदूरों और मिल मालिकों (दोनों) का नियन्त्रण किया। एक ओर हड़ताल दूसरी ओर मिलबन्दी (कारखाने बन्द करने) को रोक दिया। आपस के झगड़ों को पंचायती ढंग से तय करने का आदेश था। उसकी नीति मैंचेस्टर और मास्को के बीच की थी। उसने कई बार घोषित किया कि इटली पूँजीपति राष्ट्र नहीं है। सचमुच योरुप के प्रबल राष्ट्रों में इटली अत्यन्त निर्धन देश है। लेकिन साम्यवादी रूस की तरह इटली में देश सम्पत्ति का सम विभाग भी नहीं है।

राष्ट्र संघ या लीग आफ नेशन्स का मसोलिनी ने आरम्भ से विरोध किया है। मसोलिनी का विश्वास है कि राष्ट्रसंघ उन बड़े राष्ट्रों (ब्रिटेन, फ्रांस और रूस) की गुटबन्दी है। जिनके पास आवश्यकता से अधिक साम्राज्य है। कुछ छोटे छोटे कमजोर राज्य विवश होकर इस गुटबन्दी में इस लिये शामिल हैं। क्योंकि वे कमजोरी के कारण अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं कर सकते। इटली जैसे बने बसे हुए और साम्राज्य बढ़ाने की इच्छा रखने वाले देश को लीग में शामिल होने से कोई लाभ नहीं है। मसोलिनी की धारणा है कि लीग एक ऐसी संस्था है जो सम्पन्न साम्राज्यों को सुरक्षित रखने और नये राज्यों (जिनके पास राज्य की कमी है) को बढ़ने से रोकती है।

एबीसीनिया के सम्बन्ध में मसोलिनी का कहना है कि इटली एक निर्धन देश है। वह जमीन जिसमें भली भांति खेती हो सकती है फ्रांस से आधी है। लेकिन इटली की आबादी फ्रांस से कहीं अधिक है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि स्वराज्य-प्राप्त राज्यों ने कड़े नियम बना कर इटली के लोगों को वहां जाने से रोक दिया है। खनिज पदार्थों की कमी होने से इटली अपना माल बाहर नहीं भेज सकता है। मसोलनी का विश्वास है कि एबीसीनियां में खनिज सम्पत्ति है। वहां की जमीन उपजाऊ है। वहां की जलवायु इटेलियन लोगों के रहने योग्य है। इसीलिये इटली ने विषैले गैस और दूसरे घृणित उपायों से वीर एबीसीनिय देश पर फौजी अधिकार जमाया।

इटली को प्राचीन रोमन साम्राज्य के समान शक्तिशाली बनाने के लिये मसोलिनी पहले भूमध्य सागर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इसीलिये उसने स्पेन की गृहकलह में हस्तक्षेप किया और छिपे छिपे वहां की सरकार का विरोध करने और विद्रोहियों की सहायता करने के लिये हजारों स्वयं सेवक और सैकड़ों हवाई जहाज भेज दिये। पूर्व की ओर लाल सागर, पेलेस्टाइन (फिलिस्तीन) और सिरिया के अरबी लोगों को भड़काने के लिये रेडियो द्वारा अरबी भाषा के गीत, व्याख्यान और समाचार भेज कर उन लोगों में ब्रिटेन के विरुद्ध घोर अन्दोलन आरम्भ कर दिया। ब्रिटेन के विदेश मंत्री महाशय एडन ने इसका विरोध करना चाहा। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश मन्त्रिमंडल ने इटली को खुश रखने के लिये और जर्मनी से अलग रखने के लिये एडन महाशय को इस्तीफा देने के लिये वाध्य किया। इस समय इटली, जर्मनी और जापान की मित्रता है। वे रूस और फ्रांस के विरोधी हैं। ब्रिटिश साम्राज्य की ओर भो उनकी आंख लगी हुई है। लेकिन कुछ समय के के लिये वे खुल्लम खुल्ला लड़ाई बचाना चाहते हैं।

अभी हाल में इटली और ब्रिटेन में मित्रता सम्बन्धो सन्धि हो गई है। इसके अनुसार ब्रिटेन ने इटलो की एबीसीनिया विजय को स्वीकार कर लिया है इटली ब्रिटेन के पैसे से पूरा लाभ उठाना चाहता है लेकिन वह जर्मनी से भी मित्रता करना चाहता है।

मुसोलिनी के देश प्रेम में किसी को सन्देह नहीं हो सकता। उसने इटली में ऐसी एकता और जान फूंक दी है जिसका वहां सदियों से नाम न था। लेकिन उसकी साम्राज्यवादी नीति इटलो को कहां ले जायगी यह नहीं कहा जा सकता। कई बार उसकी जान पर हमला किया गया। लेकिन यह निर्विवाद है कि इस समय उसका इटलीवासियों पर जादू का सा असर है। जिधर उसका इशारा होता है उधर इटली वाले चलते हैं। वह इटली का तानाशाह है।

मुसोलिनी के जीवन पर कई बार हमले हुये। सन् १९२६ में उस पर जो हमला हुआ था उसके बाद वह और भो सतर्कता से रहने लगा। इस समय उसकी रक्षा के लिये ३०० विशेष सैनिक पुलिस हैं जो ओवेरा के नाम से मशहूर हैं। मुसोलिनी अपने मकान से दफ़्तर में आने का रास्ता रोज बदल देता है वह कभी भी एक रास्ते से नहीं आता। और रास्ते में यदि छोटा सा भी सूराख़ मिलता है तो उसका निरीक्षण कर भर दिया जाता है जिसमें वहाँ बम आदि विस्फोटक चीज़ न रक्खी जा सके। वह जैसे ही अपने मकान से निकलता है एक विशेष प्रकार की आवाज़ से सूचना हो जाती है और साधारण पुलिस रास्ते के दोनों ओर खड़ी हो जाती है तथा उसकी विशेष पुलिस आकर सारे रास्तों को देख जाती है।

टर्की के मुस्तफा कमालपाशा की रक्षा का यद्यपि इतना विशद प्रबन्ध नहीं है फिर भी लोगों का कहना है कि उनके अंग रक्षक जितने जवांमर्द एवं फुर्तीले हैं उतने शायद ही किसी और तानाशाह के हैं। एक बार वे अपने कुछ दोस्तों के साथ बैठकर ताश खेल रहे थे अचानक अली नामक एक व्यक्ति उसके सामने आ खड़ा हुआ और उनसे सरकारी नौकरी मांगने लगा। दूसरे ही क्षण उसने अपना हाथ अपनी जेब में डाला जिस पर मुस्तफा को सन्देह हुआ। और उन्होंने दो वाक्य कहे। इन दोनों वाक्यों का पूरा होना था कि उनके अंग-रक्षक पहुँच गये। और जो हाथ जेब में जा रहे थे वे वहाँ पहुँच भी नहीं पाये कि हथकड़ियों से जकड़ गये उस समय अली ने यदि तनिक भी फुर्ती दिखलाई होती तो तुर्की में अब तक कुछ और ही बात हुई होती। हाँ मुस्तफा के भोजन की जाँच में अवश्य विशेष मुस्तैदी रहती है इसके लिये उनका एक विश्वासी आदमी है जो हर क्षण भोजन को चखता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

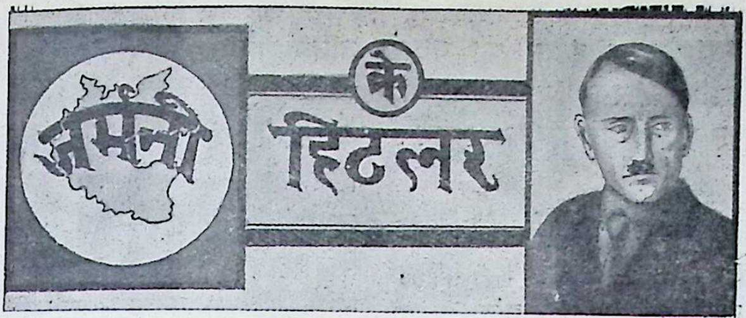

जर्मनी का एडोल्फ हिटलर

जर्मनी का तानाशाह एडोल्फ १८८९ ई० के अप्रैल महीने में ब्रौनाओ नगर में पैदा हुआ था। यह नगर इन नदी के किनारे ऊपरी आस्ट्रिया में स्थित है। जर्मन और आस्ट्रिया की सीमा के पास जन्म भूमि होने से दो प्रदेशों में स्थित जर्मन जाति को मिलाने के भाव हिटलर के हृदय में बचपन में ही पैदा हो गये थे। हिटलर के माता पिता बहुत ग़रीब थे। माता की लम्बी बीमारी में घर का बचा हुआ धन सब खर्च हो गया। अनाथ होने की हैसियत से हिटलर को वज़ीफा या पेन्शन मिलती थी। वह काफी न था इसलिये हिटलर को बचपन में ही कमाने की फिकर पड़ी। मामूली कपड़े लेकर जीविका कमाने की आशा से हिटलर आस्ट्रिया की राजधानी वियना नगर में आया। वियना में एक ओर घोर ग़रीबी और दूसरी ओर विलक्षण अमीरी थी। एक तरफ राज्य के बड़े वड़े आलीशान अफसर थे दूसरी ओर काम की खोज में आये हुए मज़दूर थे। जो घर न होने के कारण नाले के पड़ोस में ही पड़े रहते थे। हिटलर की दशा इन मज़दूरों से अधिक अच्छी न थी। उसे भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। १९०९-१० में उसकी हालत कुछ सुधर गई। उसे रोज़ मज़दूरी नहीं करनी पड़ती थी। उसने नक़शा नवीसी और वाटर कलर की पेंटिंग करके स्वतंत्र जीविका कमानी आरम्भ कर दी थी।

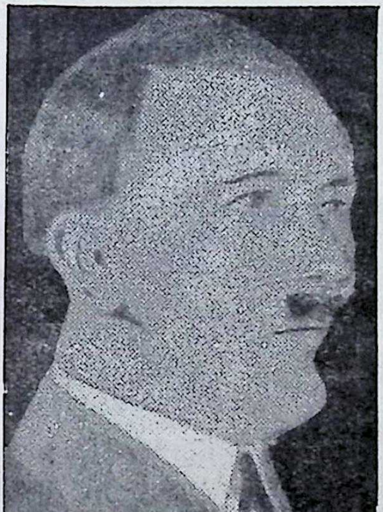

जमनी का तानाशाह एडोल्फ हिटलर।

आरम्भ में ही हिटलर को जर्मन सम्राट के प्रति श्रद्धा और पार्ल्यामेन्ट के सदस्यों के प्रति उदासीनता हो गई। लेकिन वह यहूदियों से जलने लगा। वह उनको राष्ट्रद्रोही समझता था। वियना में हिटलर को जाति और धर्म की समस्याओं पर सोचने के लिये काफी सामग्री मिली।

१९१२ में हिटलर म्यूनिक चला गया। यहाँ आ कर वह बहुत प्रसन्न हुआ। यह एक दम जर्मन नगर था। यहाँ जातियों की खिचड़ी या धर्मों की भीड़ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। यहाँ हिटलर का पूरा विकास हुआ। यह नगर हिटलर को अत्यन्त प्रिय लगने लगा। यहाँ भाषा धर्म और जाति की विलक्षण एकता थी। प्रत्येक पर जर्मन मुहर लगी हुई थी।

हिटलर का रहन सहन इस समय भी सीधा सादा है। वह शराब या सिगरेट नहीं पीता है। वह दूध, मक्खन में तली हुई तरकारी, फल और अंडा बहुत खाता है। कभी कभी वह मछली और मुर्गी का मांस भी खाता है। उसे नियमित कसरत करने का समय नहीं मिलता है। लेकिन वह टहलने रोज़ जाता है।

आरम्भ में घोर संकट और चिन्ता का जीवन विताने के बाद अब वह पर्याप्त भोजन और बेफिकरी की पूरी नींद सोता है। इससे उसे डर लगने लगा है। कि कहीं उसका तोंद न बढ़ जावे।

१९१४ की बड़ी लड़ाई में हिटलर को आगे बढ़ने का अवसर मिला। ३ अगस्त को उसने राजा को प्रार्थना पत्र भेजा कि उसे बेवेरिया की फौज में भरती होकर लड़ने के लिये अवसर दिया जावे। उसका प्रार्थना पत्र उसी दिन स्वीकार कर लिया गया। इससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। दूसरे नवयुवकों की तरह कुछ समय हिटलर के मन में भी लड़ाई की भीषणता ने उत्साह को कम कर दिया। लेकिन दृढ़ निश्चय बराबर बना रहा। १९१६ के अक्टूबर में हिटलर लड़ाई में घायल हो गया। एम्बुलेन्स ट्रेन द्वारा वह घर भेज दिया गया। पहले बर्लिन के पास एक अस्पताल में रक्खा गया। अच्छा होने पर हिटलर पहले बर्लिन और फिर म्यूनिक पहुँचा। इसके बाद वह सुरक्षित (रिज़र्व) सेना में रक्खा गया। लड़ाई समाप्त होने पर १९१८ के नवम्बर मास में हिटलर फिर रिज़र्व सेना में शामिल हो गया। अब तक हिटलर राजनीति से अलग रहा।

बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी की दशा कुछ शोचनीय हो गई। लोगों में निराशा सी छा गई। यद्यपि वहां प्रजातन्त्र स्थापित हो गया था। तथापि वहाँ के लोग इसे विदेशियों का बोया हुआ शासन समझते थे।

इसी निराशा के समय हिटलर ने जर्मनी में नई जान डालने का काम किया। १९१९ में हिटलर ने नाज़ी (राष्ट्रीय साम्यवादी) दल का संगठन किया। हिटलर ने जर्मन जाति के नाम से एक हो जाने के लिये लोगों से अपील की। जर्मन जाति के लोग जर्मनी की वर्तमान राजनैतिक सीमा के बाहर भी फैले हुये हैं। इसलिये उनको मिलाने के साथ साथ जर्मनी की राजनैतिक सीमा को बढ़ाने का काम भी इसी में शामिल है। जर्मन लोगों को सैनिक जीवन स्वभाव से ही प्यारा है। बड़ी लड़ाई के बाद प्रजातन्त्र स्थापित होने और सन्धि की कड़ी शर्तों के कारण जर्मनी में फौजी शक्ति का संचार कुछ समय के लिये रुक गया। हिटलर ने जर्मनी की फौजी शक्ति को बढ़ाने की ओर पूरा ध्यान दिया। कुछ लोगों ने आक्षेप किया। कि बड़ी लड़ाई के पहले जर्मनी की सैनिक शक्ति योरुप भर में बढ़ी चढ़ी थी। फिर जर्मनी लड़ाई में क्यों हारा। हिटलर ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया कि जर्मनी की फौज कभी नहीं हारी। लड़ाई समाप्त होने के पहले ही यहूदियों और साम्यवादियों ने क्रान्ति मचा दी। इससे जर्मन फौजों को लौटना पड़ा। प्रजातन्त्र के स्थापित होने पर यहूदियों को अभूतपूर्व शक्ति मिल गई थी। हिटलर की योजना से एक ओर जर्मनी की फौजी शक्ति बढ़ने लगी दूसरी ओर यहूदियों का बहिष्कार और साम्यवादियों का दमन शुरू हुआ। जर्मनी की एकता में केवल जर्मन लोग (जो अपने को आर्य कहते हैं) हैं। यहूदियों को जो अनार्य या सेमायटिक हैं इसमें कोई स्थान नहीं है। न वे कोई प्रभावशाली पद ग्रहण कर सकते इसी प्रकार साम्यवादियों से भी नाज़ी दल को कट्टर दुश्मनी है।

जैसे जैसे जर्मनी की सैनिक शक्ति बढ़ती गई वैसे वैसे हिटलर ने इसका प्रदर्शन किया। पहले राइनलैंड और सार में जर्मनी की सैनिक शक्ति का प्रदर्शन हुआ। अभी हाल में आस्ट्रिया का स्वतन्त्र राज्य जर्मनी का अंग बना लिया गया। इसके बाद चेकोस्लोवेकिया के २५ लाख जर्मनों को मिलाने के लिये वहां मुठभेड़ होने की आशा है। लेकिन चेकोस्लोवेकिया ने वहाँ के निवासी नाज़ी जर्मनों को एक प्रकार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य दे दिया। इसके साथ ही साथ पोलैंड और यूक्रेन (रूस) में भी कुछ जर्मन हैं। इनको ज़ोर से जीत कर मिलाना टेढ़ी खीर है। स्पेन में नाज़ी हस्तक्षेप उपनिवेशों को वापिस लेने की पहिली सीढ़ी है। इसके बाद फ्रांस, ब्रिटेन और रूस से उपनिवेशों और कच्चेमाल के लिये नये प्रदेशों को छीनने के लिये खुल्लमखुल्ला मुठभेड़ हो सकती है। इस आक्रमणकारी योजना में जर्मनी, इटली और जापान की मित्रता है। संसार की शांति भंग करने वाली आक्रमणकारी जर्मन योजना से कोई भला मनुष्य सहमत नहीं हो सकता। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिटलर ने अपने ओजस्वी भाषण, अपूर्व संगठन, शक्ति और त्याग से एक पराजित और निर्बल राष्ट्र को अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया है।

हिटलर के अंग-रक्षकों की टुकड़ी में राजनैतिक वातावरण के अनुकूल कमीवेशी होती रहती है और यही बात सिन्योर मसोलिनी के साथ भी है। सवारियाँ यों तो सभी खतरनाक हो सकती हैं पर तानाशाहों ने मोटर और हवाई जहाज़ को ही अपनी सवारी बनाया है। और उनकी मोटरें तथा हवाई जहाज़ काफ़ी मज़बूत एवं नये से नये ढंग के बने होते हैं। हिटलर के हवाई जहाज़ का आकार-प्रकार ठीक युद्ध के हवाई जहाज़ जैसा है और उसके चारों ओर बम बरसाने वाली मशीन लगी हुई है। उसकी मोटर-गाड़ी खास कर बनाई गई थी। श्रेक नामक उसका ड्राइवर मोटर चलाने में चतुर था ही, जर्मनी के सभी छोटे बड़े रास्तों का भी पूरा ज्ञान था। उसकी आकृति भी ठीक हर हिटलर जैसी थी। आल्प्स पहाड़ पर वर्चेसगाडेन में हिटलर का जो निवास स्थान है उसके चारों ओर आधुनिक सामरिक सामग्रियां इतनी बहुतायत एवं इतने अच्छे ढंग से रक्खी गई हैं कि उनसे बचकर उसके निवास तक पहुँचना बहुत कठिन है। स्थान २ पर उसके चारों ओर तारों के घेरे लगे हुये हैं, ज़मीन के भीतर हवाई हमले से बचने के लिये बहुत से तहख़ाने बने हुये हैं। मकान से १८-१९ मील की दूरी पर दो प्राइवेट सड़कें हैं जिन पर बिना पास के कोई चल नहीं सकता सड़क पर जगह जगह गार्ड रहते हैं। इस प्रकार काफी सतर्कता से काम लिया जाता है।

जिस समय मसोलिनी हिटलर से मिलने के लिये पिछले वर्ष जर्मनी गये थे उस समय जिस प्रकार की कड़ी चौकसी रक्खी गई थी वह चिरस्मरणीय रहेगी। मुसोलिनी के लिये जो गाड़ी तैयार की गई थी उसकी विशेषता यह थी कि उस पर बन्दूक की गोली का असर नहीं हो सकता था। जिस रास्ते से गाड़ी जाती थी उस रास्ते के सभी मकानों की तलाशी २४ घंटे पहले ही ली जा चुकी थी। रोम से म्यूनिच तक हर एक मील पर सैनिकों का कठिन पहरा था और जिस मकान पर ज़रा भी सन्देह होता था उसकी फिर से तलाशी ली जाती थी। गाड़ी के आगे आगे कुछ दूर एक एञ्जिन जाता था।

—०:○:०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

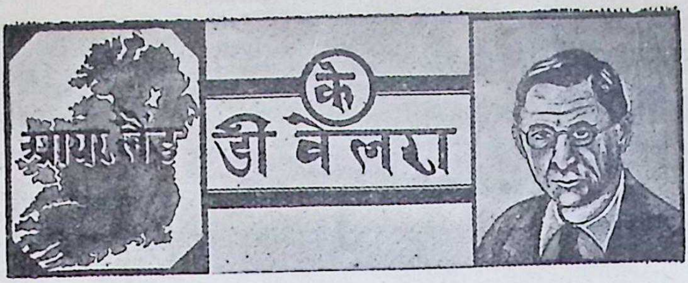

आयरलैंड का डि वेलरा

आयरलैंड के निर्माता ईमन डि वेलरा का जन्म १८८२ ई० में न्यूयार्क शहर में हुआ था। उसकी माता आयरिश और पिता स्पेनवासी था। माता ने अपने बालक को पढ़ने के लिये अपने (आयर लैंड) घर के पास कार्क जिले के चार्लविली नगर में भेज दिया। आगे डि वेलरा को ब्लैकराक कालेज और डब्लिन विश्व विद्यालय में शिक्षा मिली। १९१३ में वह आयरिश स्वयं सेवक नाम की नई स्थापित संस्था का बड़ा ही उत्साही सदस्य हो गया १९१६ के ईस्टर में आयरलैंड में जो विद्रोह हुआ उसमें डि वेलरा विद्रोहियों की एक टोली का नेता था। लेकिन अधिक संगठित ब्रिटिश सेना के सामने उसे आत्म समर्पण करना पड़ा। ३० अप्रैल को उसे मृत्यु दंड हुआ। पीछे से मौत की सजा रद करके आजन्म कैद की सजा दी गई। १९१७ में १५ जून को सब कैदी छोड़ दिये गये। इसमें डि वेलरा भी छोड़ दिया गया। छूटते ही डि वेलरा ने तुरन्त सिनफीन या प्रजातन्त्र दल का सङ्गठन किया। यह दल आयरिश रिपबलिकन सेना को पूरी सहायता देता था।

जिस महीने डि वेलरा कैद से छूटा उसी महीने ईस्टक्लेर की ओर से ब्रिटिश (वेस्ट मिनिस्टर), पार्ल्यामेंट का सदस्य चुना गया। पार्ल्यामेंट में उसने अड़ंगा डालने की नीति का अनुसरण किया। जिसका अनुमोदन आर्थर ग्रीफिथ ने किया था। इसके बाद वह आयरिश रिपबलिक का प्रधान चुना गया। इसकी डेल या पार्ल्यामेंट की बैठक डबलिन में होती थी। १९१८ के मई महीने में विद्रोह के अभियोग में वह फिर गिरफ़्तार कर लिया गया। और लिंकन जेल में रक्खा गया। ३ फर्वरी को वह जेल से भाग निकला और छिपकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका जा पहुँचा।

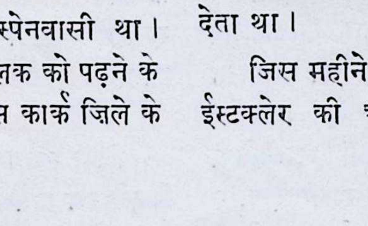

आयरलैंड को स्वाधीनता दिलाने वाला डि वेलरा।

लिंकन जेल से डी वेलरा का छुटकारा

लिंकन जेल में सिविल और फौजी सन्तरियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कड़ा पहरा रहता था इस से डि वेलरा का छूट निकलना बड़ा आश्चर्यजनक था। इस से सारे इंगलैंड और योरुप में हलचल मच गई। लेकिन इस काम में आयरलैंड के देशभक्तों को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा।

डि वेलरा से कोई बाहरी मनुष्य जेल में नहीं मिलने पाता था। ९ महीने उसकी स्त्री भी उससे नहीं मिल सकी थी। इतना होने पर भी डि वेलरा जेल से बाहर निकलने में सफल हो गया। एक जेल के दरवाजे की चाबी की छाप डि वेलरा ने मोमबत्ती पर ले ली। इन दिनों कैदी अपने मित्रों को व्यंग चित्र वाले पोस्टकार्ड बनाकर भेज सकते थे। एक कार्ड में एक शराबी एक दरवाजे में चाबी भिड़ा रहा था। चित्र के नीचे लिखा था। "मैं अन्दर नहीं जा सकता" दूसरे कार्ड में एक मनुष्य जेल के ताले में चाबी लगा रहा था। इसका शीर्षक था "मैं बाहर नहीं जासकता"। यह असली चाबियों के चित्र थे। ब्रिटिश अफसर व्यंग चित्रों का आनन्द लेने में इतने मग्न हो गये कि उन्हों ने इन कार्डों के असली भावों की ओर ध्यान न दिया। आयरलैंड में डी वेलरा के साथी एक दम इनका भाव ताड़ गये। तुरन्त एक मास्टर "की" (मास्टर चाबी) तैयार कराई गइ। पकने से पहले यह चाबी रोटी के भीतर रख दी गई। इस तरह यह चाबी जेल के भीतर डी वेलरा के पास पहुँच गई। उपयुक्त समय पर डी वेलरा के मित्र मोटर लेकर उचित स्थान पर पहुँच गये। डी वेलरा चाबी की सहायता से अपने कुछ साथियों को लेकर पिछाड़ी के दरवाजे से निकल आया। कुछ समय बाद सारे इंगलैंड में हाहाकार मच गया। लिंकन शहर के प्रत्येक घर की तलाशी ली गई। लेकिन ब्रिटिश अफसरों के सब प्रयत्न विफल हुये। डी वेलरा आयरलैंड पहुँच गया। उसने एक संक्षिप्त सन्देश अपने लोगों को निकाला मैं देश के काम से जेल से बाहर आगया हूँ और देश का ही काम कर रहा हूँ।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में डि वेलरा ने आयरिश रिपबलिक के प्रधान होने की हैसियत से प्रजातन्त्र बांडों की ज़मानत पर क्रान्तिकारी आन्दोलन को बढ़ाने के लिय बहुत सा धन इकट्ठा किया। आयरलैंड के लोगों ने हिंसात्मक असहयोग का अनुसरण किया। जिन जहाज़ों पर फौज़ी सामान आता था। उसे आयरिश कुली नहीं उतारते थे। जिन रेलगाड़ियों पर अंग्रेज़ी फौज होती थी उनको आयरिश इंजन ड्राइवर नहीं चलाते थे। और स्वयंसेवक सेना छिप छिप कर अंग्रेज़ी फौज पर अचानक छापा मारती थी।

१९२१ में इंगलैंड और आयरलैंड के बीच में क्षणिक सन्धि हुई। ब्रिटिश सरकार से सन्धि की शर्तों को तय करने के लिये आयरलैंड की ओर से डि वेलरा को पूरा अधिकार दिया गया। नरम दल के दो नेताओं (आर्थर ग्रीफिथ और कर्नल कालिन्स) ने जो सन्धि तय की थी। डि वेलरा ने उसे मानने से इन्कार कर दिया। जब डेल (पार्ल्यामेंट) ने डि वेलरा की उग्र नीति का समर्थन न किया (यद्यपि उसके विपक्षियों की संख्या कुछ ही अधिक थी) तब उसने प्रधान पद से अस्तीफा दे दिया और फिर से प्रजातन्त्र दल के साथ लड़ने के लिये तैयार हो गया।

१९२३ के अगस्त में वह फिर पकड़ लिया गया। १९२४ के जुलाई मास में छूटने पर उसने फिर राजनैतिक आन्दोलन आरम्भ किया। वह पूर्ववत सिनफीन दल का नेता बना। रिपबलिकन (प्रजातन्त्र) दल की ओर से डेल (पार्ल्यामेंट) में फिर अड़ंगे की नीति का अनुसरण किया गया। दो वर्ष बाद उनके कुछ साथी टूट गये। १९२७ में उसने फियना फेल नाम का ४४ सदस्यों का नया दल स्थापित किया। इस दल ने आयरलैंड में ब्रिटिश पार्ल्यामेंट द्वारा स्थापित फ्रीस्टेट में शामिल होने के लिये स्वामिभक्ति की शपथ तो ले ली लेकिन पीछे से विज्ञप्ति निकाल दी कि यह शपथ केवल कोरी (छूछी) राजनैतिक रस्म है। इस में सचाई का नाम नहीं है। आगे चलकर डि वेलरा की अध्यक्षता में एक ऐसा क़ानून बना जिससे ब्रिटिश सम्राट के प्रति स्वामिभक्ति सम्बन्धी शपथ लेने की प्रथा ही तोड़ दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोलैंड का पिल्सुड्स्की

नेपोलियन के समय में पोलैंड का पुराना देश तीन भागों में बट गया था। रूस, जर्मनी आस्ट्रिया इन पर राज्य करते थे। वर्तमान पोलैंड के निर्माता और सेनापति जोज़फ पिल्सुड्स्की का जन्म १८६२ में विल्नो ज़िले के ज़ूलोवो नगर में हुआ था। पिल्सुड्स्की का वंश बहुत पुराना और प्रतिष्ठित था। लिथुएनिया के राज्यवंश से इसका सम्बन्ध था। पिल्सुड्स्की ने विल्नो और खारकोव में शिक्षा पाई थी। पिल्सुड्स्की के समय में पोलैंड की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। विल्नो की सड़कों पर पोलिश भाषा का बोलना जुर्म समझा जाता था। पिल्सुड्स्की ने अपने देश को आज़ाद करने की ठानी। उच्च वंश के लोगों में कायरता आ गई थी। इस लिये उसने सर्वसाधारण वर्ग के साम्यवादी लोगों से नाता जोड़ा। १८८७ में पिल्सुडस्की ज़ार के विरुद्ध एक साजिश में फंस गया। उसको पांच वर्ष का कड़ा दंड मिला और वह पूर्वी साइबेरिया में भेज दिया गया। १८९२ में वह विल्नो वापिस आया और आज़ादी प्राप्त करने के लिये उसने पोलैंड में साम्यवादी दल स्थापित किया। १८९४ में उसने "रोबोतनिक" (मज़दूर) नाम का गुप्त पत्र चलाया। इस पत्र के सम्पादन करने, छापने और बाँटने का काम पिल्सुड्स्की स्वयं करता था। अखबार का कुछ भाग एक जगह और कुछ भाग दूसरी जगह छपता था। अखबार के ऊपर सरकार की कड़ी नजर थी। जिसके पास अखबार मिलता उसको ४ वर्ष की कड़ी सज़ा होती। फिर भी अखबार की १६०० प्रतियां हाथों हाथ सदस्यों में बिक जाती थीं। कभी कभी एक एक अखबार के लिये कई पढ़ने वालों के बीच में छीना झपटी होती। एक एक प्रति कई पढ़ने वालों के पास बारी बारी से पहुँचती। अखबार छपने की आवाज़ किसी को न सुनाई दे इसलिये छपते समय पिल्सुडस्की

आधुनिक पोलैंड का निर्माता पिल्सुड्स्की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की धर्मपत्नी बड़े ज़ोर से पियानों बजाती थी। कुछ ही समय में पिल्सुड्स्की का रोबोतनिक समाचार पत्र एक शक्तिशाली संस्था बन गया।

आगे चलकर पिल्सुड्स्की का कार्यक्रम हिंसात्मक बन गया। उसने ज़ारशाही का सशस्त्र मुक़ाबिला करने का निश्चय कर लिया। शस्त्रों से सुसज्जित मज़दूरों की टोलियाँ सभाओं और जलूसों की रक्षा करतीं। ज़ार की पुलिस और फौज से मुठभेड़ हो जाती और अक्सर खून खराबी होती। १९०० में पिल्सुड्स्की और उसकी स्त्री मेरी तुस्ज़ कीविकज़ (जिसके साथ उसने १८९४ में व्याह किया था) दोनों ही रोबोतनिक के दफ़्तर में लोड्ज़ शहर में गिरफ़ार कर लिये गये। पिल्सुड्स्की वारसा की कालकोठरी में रक्खा गया। यहाँ जो पेशी हुई उसमें उसने अपनी रक्षा पागल बन कर की। आरम्भ में यह पागलपन वास्तव में उसका आज़ादिना ढंग था। पूछताछ होने पर उसने रूसी भाषा बोलने से इनकार कर दिया। उसने केवल पोलिश भाषा में लिखित बयान दिया और गुलामी के कानूनों का पालन न किया। उन दिनों पागल होने के लिये इतना ही काफी था। पिल्सुड्स्की को ८ वर्ष की कड़ी सज़ा और उसके बाद आजन्म क़ैद का दंड मिला। वह वार्सा के क़िले की एक कोठरी में रक्खा गया। वहाँ उसके साम्यवादी मित्रों ने उसके पास पत्र भेजना आरम्भ किया। लेकिन वारसा के किले से उसे निकलना असम्भव सा था। अतः उसे ऐसे स्थान में भिजवाने का तय किया गया जहाँ से उसे निकलने में आसानी हो। इन दिनों जो राजनैतिक क़ैदी पागल हो जाते थे वे सेन्ट पीटर्सवर्ग भेज दिये जाते थे। पिल्सुड्स्की ने पागल बनने में अपूर्व सफलता दिखलाई वह साबुन के टुकड़े की सहायता से मुँह से झाग निकालता और सिपाहियों पर टूट सा पड़ता। साथ ही वह ऐसा चिल्लाता मानों लोग उसे ज़हर देना चाहते हैं। अतः उसने केवल अंडे और चाकोलेट का खाना आरम्भ कर दिया। अन्त में वह सेन्टपीटर्स वर्ग के पागल खाने में भेज दिया गया। वहीं उसके एक साम्यवादी मित्र डाक्टर ने अपनी बदली करवा ली। एक दिन भेष बदलवा कर पिल्सुड्स्की को डाक्टर बाहर ले आया। बाहर मोटर तैयार था। डाक्टर मोटर को तेज़ हकवाना चाहता था। लेकिन पिल्सुड्स्की ने कहा ऐसी भूल न करो धीरे धीरे चलो। इस प्रकार वह वहाँ से बाहर आया। १९०२ में पिल्सुड्स्की क्रेकाओ जाकर रहने लगा।

रूसी-जापानी युद्ध के समय पिल्सुड्स्की ने पोलैंड में विद्रोह करवाने की सोची। लेकिन उसके अनुयाइयों के पास गोला बारूद की कमी थी। सहायता लेने के लिये पिल्सुड्स्की जापान पहुँचा। लेकिन इसमें उसे कोई सफलता न मिली। रूसी विद्रोह और डूमा के शासन सम्बन्धी सुधार हो जाने पर पिल्सुड्स्की ने क्रान्तिकारी आन्दोलन स्थगित कर दिया।

आज़ादी की एक प्राइवेट फौज तैयार करने के लिये पिल्सुड्स्की ने एक सैनिक स्कूल खोला। इससे उसे फौजी अफसर मिलने लगे। कुछ ही समय में उसकी सेना में लगभग १०,००० सिपाही शामिल हो गये।

बड़ी लड़ाई के समय उसने बड़ी दूर दर्शिता से काम लिया। वह ताड़ गया कि रूस देश जर्मनी से हार जायगा। वह यह भी जान गया कि अन्त में फ्रांस जर्मनी को हरा देगा। अतः उसने पहले अपनी प्राइवेट सेना रूस के विरुद्ध लड़ने के लिये आस्ट्रिया और जर्मनी की सहायता के लिये भेजी। लेकिन उसने अपनी फौज जर्मनी या आस्ट्रिया की फौज में नहीं मिलने दी। रूसी क्रान्ति के बाद पिल्सुड्स्की ने अपने मित्रों द्वारा फ्राँस से समझौता किया और आस्ट्रिया के विरुद्ध लड़ने का निश्चय कर लिया। जब पिल्सुड्स्की ने जर्मन स्वामिभक्ति की शपथ लेने से इन्कार कर दी तब वह मागडेबर्ग की जेल में ठूँस दिया गया। उसकी फौज छिन्न भिन्न कर दी गई। ऊपर से तो उसकी फौज तितर बितर हो गई। लेकिन भीतर ही भीतर (छिपे छिपे) उसका संगठन प्रबल होता गया। १९१८ में पिल्सुड्स्की छोड़ दिया गया। इस समय पूर्वी योरुप में और सब कहीं अराजकता थी। लेकिन पिल्सुड्स्की की गुप्त फ़ौज अब प्रगट होकर शान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित करने और पोलैंड को आजाद करने के लिये एकदम तैयार थी।

बड़ी लड़ाई के पहले पोलैंड तीन भागों में बटा हुआ था। प्रत्येक भाग की आर्थिक समस्याओं में भेद था। प्रत्येक की दलबन्दी भी अलग अलग थी। प्रत्येक में नेता भी थे। लेकिन पिल्सुड्स्की सर्वमान्य था। इसी से पिल्सुड्स्की तीनों को मिलाने में सफल हुआ।

मेमल और विश्चुला में पिल्सुड्स्की को वोल्शेविक लोगों से गहरा सामना करना पड़ा। पर इस में पिल्सुड्स्की ने बड़ी सैनिक योग्यता दिखलाई। कुछ ही समय में दोनों में सन्धि हो गई। १९२३ में भीतरी गड़बड़ी से क्षुब्ध होकर पिल्सुड्स्की फौज से बिल्कुल अलग हो गया। १९२६ में पिल्सुड्स्की को फिर आना पड़ा। उसकी फौजों ने शान्ति स्थापित कर दी। १९२८ में पिल्सुड्स्की के दल की प्रधानता थी। लेकिन उसने राष्ट्रपति होने से इन्कार कर दिया। केवल सेना का नेतृत्व अपने हाथ में रक्खा। पर हर हालत में देश की जटिल समस्याओं को सुलझाने में पिल्सुड्स्की का हाथ रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेकोस्लोवेकिया के मसारिक

चेकोस्लोवेकिया को आज़ाद कराने वाले और प्रथम राष्ट्रपति टामस गेरीग मसारिक का जन्म १८५० की ७ मार्च को मोरोविया की सीमा के पास होडोनिन नगर में हुआ था। मसारिक का बाप एक आस्ट्रियन जागीरदार के यहाँ सईस था। बचपन में मसारिक को कुछ चेक भाषा और टूटी फूटी जर्मन भाषा सिखाई गई थी। पहले चेकस्कूल में पढ़ाने के बाद मसारिक एक दो वर्ष के लिये जर्मन स्कूल में भेजा गया उसके माता पिता उसे शिक्षक बनाना चाहते थे। पीछे से उन्होंने एक ताला बनाने वाले के पास काम सीखने के लिये मसारिक को लगा दिया। इसके बाद मसारिक वियना में एक लुहार के यहां काम करने लगा १८६५ में मसारिक के एक पुराने अध्यापक ने उसके माता पिता को पढ़ाई जारी रखने के लिये समझाया। मसारिक ने एक वर्ष में इन्ट्रेन्स परीक्षा पास कर ली। फिर वह ब्रुन नगर में ऊँची पढ़ाई की तैयारी करने लगा। पढ़ाई का खर्च वह ट्यूशन करके पूरा करता था। यहीं वह क्रान्ति की ओर झुकने लगा। अन्ध परम्परा में उसे अविश्वास हो गया। कनफेशन न करने के कारण उसे पढ़ाई के लिये वियना जाना पड़ा। उत्तम ढंग से उत्तीर्ण होने पर वियना के विश्व विद्यालय में वह फिलासफी (दर्शन शास्त्र) पढ़ाने के लिये नियुक्त हुआ।

चेको स्लोवेकिया को आज़ाद कराने वाले और प्रथम राष्ट्रपति मसारिक।

मसारिक के काम को समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि सातवीं सदी में बोहेमिया और आठवीं सदी में मोरेविया स्वतन्त्र राज्य थे। स्लोवेकिया को विजयी मेगापर लोगों ने हंगारी में मिला लिया था। इसके बाद आस्ट्रिया के सम्राट ने बोहेमिया को अपने साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया।

मसारिक सत्य का अनुयाई था। एक बार कुछ बनावटी हस्त लिखित प्रतियाँ मिलीं जो बोहेमिया का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरव बढ़ाने वाली थीं। मसारिक ने निर्भय होकर उनकी पोल खोली। इससे उसके कुछ देश वासी उससे नाराज़ हो गये। उसका उद्देश्य था कि गौरव सच्चाई में है। १८९१ में नवयुवक चेक दल ने मसारिक को शाही धारा सभा का सदस्य चुना। १९०८ में मसारिक ने आस्ट्रिया-हँगारी की जालसाज़ो का भेद खोल कर कई देश भक्त स्लैव लोगों को बचाया। इस से सरकार बहुत नाराज हो गई। लेकिन उसके देश वासियों में उसका मान बहुत बढ़ गया।

१९१० में न केवल चेक वरन् दक्षिणी स्लैव लोग भी मसारिक को अपना नेता मानने लगे। जब १९१४ में बड़ी लड़ाई छिड़ी तब मसारिक ने अपना कर्तव्य एक दम निश्चित कर लिया। उसे यह आशा न थी की आस्ट्रिया हंगारी की शाही सरकार अल्पसंख्यक लोगों के साथ न्याय का व्यवहार करेगी। अतः वह आस्ट्रिया-हंगारी के साम्राज्य को नष्ट करने और मित्र राष्ट्रों को सहायता करने में लग गया।

दूसरी राष्ट्रीय कौन्सिल का संगठन करने के बाद मसारिक ने आस्ट्रिया का राज्य छोड़ दिया। पहले वह कुछ समय तक स्विजरलैंड में रहा। फिर वह पेरिस चला गया। वहीं उसने चेक लोगों की ओर से आस्ट्रिया पर युद्ध घोषित कर दिया। पहले पेरिस में फिर वह लन्दन के किंग्स कालेज में अध्यापक नियुक्त हुआ। यहीं से वह आस्ट्रिया के साम्राज्य को नष्ट करने का प्रयत्न लगातार करता रहा।

१९१७ में रूसी क्रान्ति के बाद जो कैदी छूटे उनको संगठित करके मसारिक ने ९२,००० सिपाहियों की एक चेक सेना तैयार की। यह फौज रूसी सीमा के पास मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ती रही। जब बोल्शेविक लोगों ने जर्मनी से ब्रेस्टलिटोव्स्क की सन्धि कर ली तब मसारिक के लिये रूसी सीमा के पास लड़ना असम्भव हो गया। योरुप से साइबेरिया होकर मसारिक इस सेना को प्रशान्त महासागर तट पर व्लाडो वोस्टक को ले गया। यहां से वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका गया। मई १९१८ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जहां जहां चेक लोग अधिक संख्या में थे वहां वहां उसने सभा की, व्याख्यान दिये और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिये चन्दा इकट्ठा किया। इस बीच में १९१८ के अक्तूबर में आस्ट्रिया का राज्य लड़खड़ाने लगा। संयुक्त राष्ट्र अमरीका और मित्र राष्ट्रों ने मसारिक की राष्ट्रीय काउंसिल को चेकोस्लोवेकिया की सरकार के रूप में स्वीकृत कर लिया। इस प्रकार मसारिक ने अपने लगातार प्रयत्न से एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर दिया। १९२० में वह वहाँ का राष्ट्रपति चुना गया।

सारे राष्ट्र की शक्ति अपने हाथ में आ जाने पर भी मसारिक बड़ा नम्र रहा। उसने अल्पसंख्यक जातियों के हितों की सदा रक्षा की। उसका कहना था कि अपने देश, भाषा और जाति को प्यार करो। अपने सभी देशवासियों से मित्रता का व्यवहार करो चाहे उनमें और तुम में भाषा और धर्म का भेद भले ही हो। विद्यार्थियों में वह बहुत ही प्रिय था। गांवों की सामूहिक ड्रिल उसकी एक अनोखी और उपयोगी सूझ थी। मसारिक इतना लोकप्रिय रहा कि १९२७ में दूसरी बार फिर वह ७ वर्ष के लिये राष्ट्रपति चुना गया। लेकिन १९३४ में तीसरा बार उसने राष्ट्र पति चुने जाने से इनकार कर दिया। अतः उसके स्थान पर उसका मित्र और पुराना साथी बेन्स राष्ट्र पति चुना गया। मसारिक ने वर्षों के परिश्रम के बाद एकान्त वास लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति

पृष्ठ-संख्या लगभग १२० रायल साइज़, कई चित्र और नक़शे

मूल्य १)

लेखक

पंडित निरंजनलाल शर्मा एम० एस-सी० (बनारस)

लेक्चरर, डिमांस्ट्रेटर ज्यालोजी डिपार्टमेण्ट, इण्डियन स्कूल आव माइन्स, धानबाद

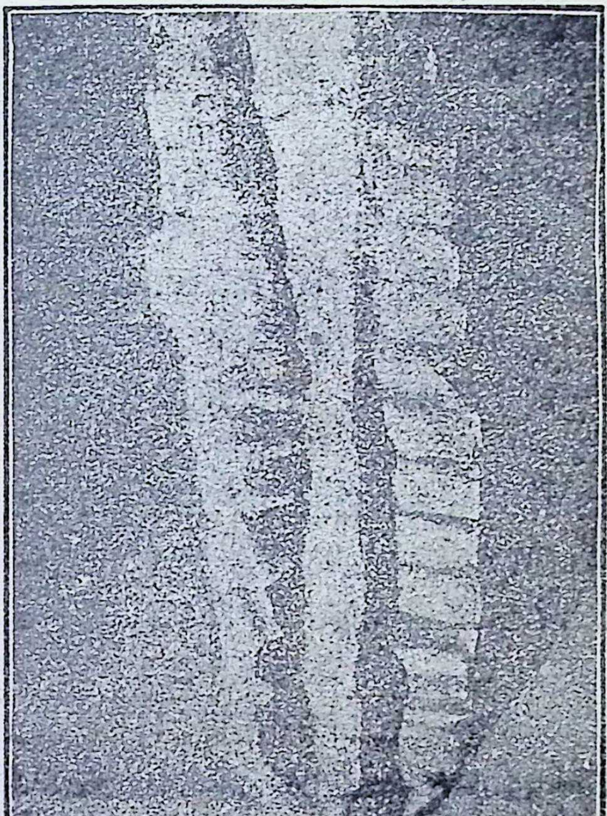

विद्वान् लेखक ने इस विषय की विशेष और उच्च शिक्षा कुछ समय पहले लिवरपूल (इङ्गलैंड) में प्राप्त की है। पुस्तकों के ज्ञान के साथ साथ भारतवर्ष के आवश्यक स्थानों की भौगर्भिक पैमाइश भी की है। जटिल विषय को रोचक बनाने में लेखक को पूरी सफलता मिली है। यह पुस्तक हिन्दी में एकदम निराली है। विद्यार्थियों, शिक्षकों, व्यापारियों और अपने देश की सम्पत्ति की जानकारी रखने वाले सभी शिक्षित लोगों के बड़े काम की चीज़ है।

प्रकाशक—भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

नोट—गङ्गा तट के किसी नये या पुराने स्थान के सम्बन्ध में जो सज्जन चित्र या वर्णन भेज सकें उनका भूगोल कार्यालय पर बड़ा उपकार होगा। मैनेजर "भूगोल" इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" का गंगा-अंक

आगामी जुलाई में "भूगोल" का गंगाङ्क प्रकाशित होगा। इस अंक में गंगोत्री से गंगासागर तक गंगा जी का सचित्र वर्णन रहेगा। प्रोफेसर दयाशंकर (प्रयाग विश्वविद्यालय) इस अंक के सहकारी सम्पादक रहेंगे। वर्षों से उन्होंने जो सामग्री इकट्ठी की है वह उन्होंने इस अंक को सम्पादित करने के लिये भूगोल-कार्यालय को दे दी है। इसमें ३५ बड़े बड़े (पूरे पृष्ट के) नक़शे, कुछ छोटे नक़शे और सौ से ऊपर चित्र रहेंगे। इस अंक के लिये गंगा के प्रायः समस्त मार्ग की यात्रा की जा चुकी है। सम्भवतः दूसरी यात्रा नाव द्वारा ("भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर) प्रयाग से गंगासागर तक मई में फिर की जायगी।

वास्तव में गंगा भारतवर्ष का प्राण है। इसकी गोद में संसार की महत्व पूर्ण घटनायें हुई हैं। इस अंक को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। गंगाङ्क हिन्दी में एक अद्वितीय ग्रन्थ होगा। फिर भी इसका मूल्य केवल १) रु० होगा। डाय व्यय ।) "भूगोल" के जिन ग्राहकों का चन्दा मई १९३८ से अप्रैल १९३९ तक आ गया है या आगामी जुलाई तक आ जावेगा। उनको गंगाङ्क चन्दे में ही मिलेगा।

केवल परिमित संख्या में यह अंक छापा जा रहा है। अतः शीघ्र ही इसका मूल्य १।) अथवा "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित कर लीजिये।

मैनेजर, "भूगोल",
इलाहाबाद।

Published by the Editor ... and Printed by Sheopal at the Bhugol Press, 306, Jamuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
बिदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अगस्त, १९३८

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१९२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १५ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १५ बर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुये सूचो पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक़, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बल्गेरिया, युगोस्लैविया, हङ्गरी, आस्ट्रिया, चेकोस्लैविया, जर्मनी, डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फिनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आजादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देश वासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका भूगोल कार्यालय भूगोल सम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नकशों का संग्रह कर रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेजी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें।

आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्रा क्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों का बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तयार हुई हैं उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तकमाला का आयोजन किया है। इसमें २००पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। कागज कवर, छपाई सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थ माला का केवल ५०) रुपया होगा। इस सम्बन्ध में मध्य प्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशंकर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप साथ के आर्डर फार्म को भर कर लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—
रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय				पृष्ठ
संसार की जलसेना	...	...	...	१
कलिदास का वर्णित भूगोल	...	...	...	५
भारत का पिट्सबर्ग-जमशेदपुर		...	...	८
जिराफ का पकड़ना	...	...	...	११
रेलगाड़ी	...	...	...	१३
लक्सेम बर्ग			...	२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, विहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १५] भाद्रपद सं० १९९५, अगस्त १९३८ [सं० ४

संसार की जलसेना

संसार के जिन देशों की जल-सेना शक्तिशाली है। उनमें सात प्रधान देश ये हैं:—ब्रिटेन, संयुक्त-राष्ट्र अमरीका, जापान, फ्रांस, इटली, जर्मनी और रूस। सभी सातों देश अपनी जलसेना को तेज़ी के साथ बढ़ा रहे हैं। छोटे-छोटे देश भी इन्हीं का अनुकरण कर रहे हैं। उनके केपिटल जहाज बढ़ रहे हैं। इटली को छोड़कर शेष छः देश हवाई जहाज़ों को शरण देने वाले एअरक्राफ्ट केरियर नाम के जहाज़ बना रहे हैं। इन पर दुश्मनों के हवाई जहाज़ बड़ी आसानी से निशाना लगा सकते हैं। इसलिये बहुत से लोगों का विचार है कि एअरक्राफ्ट केरियर (जहाज़ों) के दिन इने गिने हैं। लेकिन केपिटल जहाज़ों और भारी गश्ती जहाज़ों (क्रूज़रों) से टारपोडोट्यूब अलग किये जा रहे हैं। सभी नये जहाज़ इस ढंग से बनाये जा रहे हैं कि उनके डेक (फ़र्श) पर आग लगने और हवाई जहाज़ के हमले का कम से कम ख़तरा रहे। इनमें हवाई जहाज़ों को गिराने वाली तोपें भी लगाई जा रही हैं। साथ ही इनमें हवाई जहाज और केटापुल्ट (गोली छोड़ने वाला अंजन) रखने का भी प्रबन्ध किया गया है। इनमें अधिक स्टीम प्रेशर (भाप का दबाव और नये ढंग के बाइलर लगाने का प्रबन्ध किया गया है।

लड़ाई में पनडुब्बी नावों (सब मरीन) से काम न लिया जावे इस बात के लिये घोर प्रयत्न किया गया। लेकिन सारे प्रयत्न बेकार हुए। उल्टे लोग सबमेरीनों (पनडुब्बी नावों) की संख्या बढ़ाने में लग गये। तटीय प्रदेश की रक्षा के लिये मोटर टारपेडो की संख्या बढ़ रही है। मोटर टारपेडो से सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह बहुत जल्द और सस्ते दामों में बन जाता है। यह दुश्मनों के जहाज़ों को डुबाने में बड़े काम का होता है।

डेस्ट्रायर नामी विध्वंसक जहाज़ों में बहुत कम परिवर्तन हुआ है।

ब्रिटिश जलसेना की शक्ति १९२२ से १९३० तक लगातार घटती रही। इसका पता ब्रिटेन को १९३५ में एबीसीनिया और इटली की लड़ाई के समय लगा इस समय दबने के सिवा ब्रिटेन से और कुछ करते न बन पड़ा। उसके बाद ब्रिटेन अपनी जहाज़ी शक्ति बराबर बढ़ा रहा है। १९३७ के अन्त में ब्रिटेन के पास १२ बैटिल शिप (लड़ने वाले जहाज़) ३ बैटिल क्रूज़र (जंगी गश्ती जहाज) १५ हेवी क्रूज़र (भारी गश्ती जहाज़ जिन पर ८ इंच व्यास वाली तोपें लगाई जा सकती हैं।) ४२ क्रूज़र गश्ती जहाज़ ऐसे हैं जिन पर ६ इंच व्यास वाली तोपें रक्खी रहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ एएटी एअर क्राफ्ट क्रूज़र (ऐसे गश्ती जहाज़ जो गोला छोड़ कर उड़ते हुये जहाज़ को नीचे गिरा देते हैं। १ गश्ती जहाज़ माइनलेअर (बाम्ब लगे हुए जाल बिछाने वाला) है। ५ एअर क्राफ़्टकेरियर (हवाई जहाज़ को ढोने वाले जहाज़) हैं। १६२ डेस्ट्रायेर (विध्वंसक जहाज़) हैं। ५२ पनडुब्बी नावें और ३३ एस्कर्ट (सौदागरों के जहाज़ों को हमले से बचाने वाले जहाज़ हैं। ३३ माइन स्वीपर या बाम्ब लगे हुए लोहे के जालों को समेटने वाले जहाज़ हैं। ये जहाज़ इस तरह बनाये जाते हैं कि इन पर साधारण बाम्ब के फटने का असर नहीं होता है। इसी से वे बाम्ब लगे हुए जालों को समेट लेते हैं। ६ पेट्रोल (पहरा देने वाले जहाज़) हैं ३ एअर क्राफ़्टटेंडर, २ नेटलेअर जाल डालने वाले हैं। १८ नदियों में चलने वाले हथियार बन्द जहाज़ या गन बोट हैं। ५ तटपर बाम्ब लगे हुए जाल बिछाने वाले हैं। अगर दुश्मन का जहाज़ अचानक इनके बीच से गुज़रता है तो हिलने से बाम्ब फटते हैं और फूटकर जहाज़ को डुबो देते हैं। १० मोटर टारपेडो बोट जो अपना बड़ा फौलादी सींग जहाज़ों में भोंक कर उन्हें डुबो देते हैं। ३ मानीटर हैं।

इनके अतिरिक्त ५ बेटिलशिप, १७ क्रूज़र, ५ एअर-क्राफ़्टकेरियर, ४० डेस्ट्रायर, १८ सबमेरीन, ४ एस्कर्ट जहाज़ ७ माइनस्वीपर, ५ पेट्रोल जहाज़, ३ नदी की गन बोट, २ तट के माइनलेअर और १३ मोटर टारपेडो बोट बन रहे हैं। इन बढ़े हुए जहाज़ों का संचालन करने के लिए नये अफसर भी भरती किये जा रहे हैं। इस समय इनकी संख्या लगभग सवा लाख है। १९४०-४१ में अधिकतर नये जहाज़ बन कर तयार होंगे। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत भारतवर्ष में रायल इंडियन नेवी में पांच एस्कर्ट जहाज़, एक पेट्रोल जहाज़ और कुछ छोटे छोटे जहाज़ हैं। रायल आस्ट्रेलियन नेवी में ४ क्रूज़र, १ फ्लोटिला लीडर, ४ डेस्ट्रायर, २ एस्कर्ट जहाज़, १ सीप्लेन (वह हवाई जहाज़ जो पानी पर उतरता है और पानी पर ही तैरते तैरते उड़ना आरम्भ करता है) को ले जाने वाला जहाज़ और ४ दूसरे छोटे जहाज़ हैं। रायल कनेडियन नेवी में ४ डेस्ट्रायर और ४ दूसरे छोटे जहाज़ हैं। न्यूज़ीलैंड में दो-तीन छोटे छोटे जहाज़ विद्यार्थियों को सिखाने के लिये हैं। रायल नेवी की ओर से दो एस्कर्ट जहाज़ और दो क्रूज़र मिले हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जलसेना—संयुक्त राष्ट्र की जलसेना भी तेज़ी के साथ बढ़ रही है। १९३७ के अन्त में यहां १५ बेटिलशिप, ३ एअर क्राफ़्टकेरियर, ८ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित १७ जहाज, ६ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित १२ जहाज़, १९६ डेस्ट्रायर, ८४ सबमेरीन, ११ गनबोट ३३ पेट्रोल वेसिल, ३ एअर क्राफ़्ट टेंडर १० माइन लेअर, ४३ माइन स्वीपर हैं। इनके अतिरिक्त ४ बैटिलशिप, ३ एअरक्राफ़्टकेरियर, ८ क्रूज़र, ३८ डेस्ट्रायर, २२ सब मेरीन, १ एअर क्राफ़्ट टंडर, २ मोटर टारपेडो बोट बन रहे हैं। इनमें लगभग सवा लाख अफसर और काम करने वाले हैं।

जापान—जहाज़ी बेड़े की शक्ति के अनुसार संसार में जापान का तीसरा नम्बर है। जापान की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि कोई विदेशी शक्ति जापान के पड़ोस में जापानी बेड़े को नहीं हरा सकती। १९३७ के अन्त में जापान में ९ बैटिलशिप ५ एअर क्राफ्टकेरियर, ८ इंच व्यासवाली तोपों से सुसज्जित १८ गश्ती जहाज़, ६ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित २३ गश्ती जहाज़, ५ पुराने गश्ती जहाज़, १०५ डेस्ट्रायर, १२ टारपेडो बोट, ६० सबमेरीन (पनडुब्बी नावें) ३ सबमेरीन चेज़र (पनडुब्बी नावों को खदेड़ने वाली नावें) ३ एअर क्राफ़्टटेंडर, ११ माइनलेअर (बाम्ब लगे हुए जाल बिछाने वाली नावें और ९ गन बोट हैं। लगभग १ लाख से कुछ ऊपर अफ़सर और दूसरे काम करने वाले जापानी बेड़े में लगे हुए हैं। अभी हाल में जापान ने कितने और किस किस तरह के जहाज़ बनाने की योजना की है यह बात एक दम गुप्त रक्खी गई है। लेकिन कुछ लोगों का अनुमान है कि जापान में कम से कम १ एअर क्राफ़्टकेरियर, २ क्रूज़र, १० डेस्ट्रायर, ८ टारपेडो बोट, ३ सबमेरीन चेज़र, २ सब मेरीन और २ एअरक्राफ्ट टेंडर बन रहे हैं।

फ्रांस—बड़ी लड़ाई के अन्त में फ्रांस की जहाज़ी ताक़त बहुत घट गई थी। हाल में फ्रांस ने इसको पूरा करने की कोशिश की। इस समय फ्रांस में ६ बैटिल शिप, १ एअरक्राफ्ट केरियर, ७ ऐसे गश्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाज़ जिन पर ८ इंच व्यास वाली तोपें लगी हैं। १२ क्रूज़र छोटी तोपों वाली हैं। ६० डेस्ट्रायर ११ टारपेडो बोट, ७३ सब मेरीन, २ माइन लेअर, १ नेटलेयर एअरक्राफ़्ट टेंडर, ४४ एस्कर्ट और पेट्रोल जहाज़, ४ माइन स्वीपर, १३ सब मेरीन चेज़र ९ नदी के गन बोट हैं।

फ्रांस में ३ बैटिलशिप, १ क्रूज़र, १६ डेस्ट्रायर ६ टारपेडो बोट १६ सब मेरीन ४ एअरक्राफ़्ट टेंडर १९ एस्कर्ट और पेट्रोल जहाज़ १८ सब मेरीन चेज़र और एक गन बोट बनाने का काम चल रहा है। ६९,००० अफ़सर और कर्मचारी हैं।

इटली—जब से इटली में फेसिस्ट दल का राज्य हुआ है तब से यहाँ की जहाज़ी शक्ति बढ़ गई है। आज कल इटली के पास ४ बैटिल शिप, ७ क्रूज़र जिनमें ८ इंच व्यास वाली तोपें लगी हैं। १५ हलकी तोपों वाले क्रूज़र १ पुराना क्रूज़र जो सिखाने के काम आता है। ६४ डेस्ट्रायर, ६० टारपेडो बोट ८६ सब मेरीन, १०० मोटर टारपेडो बोट, १ एस्कर्ट जहाज़, १ एअरक्राफ़्ट टेंडर, १५ माइन लेअर, ३८ माइन स्वीपर, १४ गनबोट, और ५ मानीटर हैं। ४ बैटिल शिप, २४ डेस्ट्रायर, १६ टारपेडो, २० मोटर टारपेडो और २० सब मेरीन बनाये जा रहे हैं। भविष्य में और भी अधिक सब मेरीन बनाने का विचार हो रहा है। ६७,८०३ अफ़सर और कर्म चारी हैं।

जर्मनी—जब से जर्मनी ने बड़ी लड़ाई की शर्तों की पाबन्दी तोड़ दी तब से जर्मनी की जलसेना बड़ी तेज़ी से बढ़ी। जर्मनी की जलसेना एक दम नये ढंग से बनी है। जर्मन जलसेना में ३ छोटे बैटिल शिप, ६ क्रूज़र; ८ डेस्ट्रायर, १८ टारपेडो बोट, १४ मोटर टारपेडो बोट, ३६ सब मेरीन, २ गनरी ट्रेनिंग शिप, १० पेट्रोल वेसिल और २३ माइन स्वीपर हैं। ५ बैटिल शिप २ एअरक्राफ़्ट केरियर, तीन ८ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित गश्ती जहाज़ ४ छः इंच व्यास वाली तोपों के जहाज़, १४ डेस्ट्रायर, १८ टारपेडो बोट, ६ मोटर टारपेडो बोट, २५ सब मेरीन और १४ माइन स्वीपर बन रहे हैं। इन में लगभग ४६००० अफ़सर और काम करने वाले हैं।

रूस—रूस में ३ बैटिल शिप, ३ गश्ती जहाज़, १ क्रूज़र माइन लेअर, २० डेस्ट्रायर, १८ टारपेडो बोट, १३० मोटर टारपेडो बोट, ११३ सबमेरीन, कुछ माइन लेअर, और माइन स्वीपर हैं।

१ एअर क्राफ़्टकेरियर २ क्रूज़र, ५ बड़े डेस्ट्रायर, ३६ सब मेरीन, और कई मोटर टारपेडो बोट बन रही हैं। लगभग २३६०० अफ़सर और कर्मचारी हैं।

शान्ति प्रिय हालैंड में ३ गश्ती जहाज़, २ पुराने तट की रक्षा करने वाले जहाज़, ८ डेस्ट्रायर १८ टारपेडो बोट, २२ सबमेरीन, ३ एस्कर्ट जहाज़ १० माइन लेअर १६ माइन स्वीपर हैं। २ क्रूज़र, ४ डेस्ट्रायर, ९ सब मेरीन, ३ एस्कर्ट जहाज़ १ माइन लेअर कुछ टारपेडो बोट तयार हो रहे हैं।

स्कैंडीनेविया और भी लड़ाई के विरुद्ध है। फिर भी स्वीडन में ३ जंगी क्रूज़र ४ टारपेडो बोट; ३ सब मेरीन, और १२ मोटर टारपेडो बोट नये बन रहे हैं। नार्वे तट की रक्षा करने वाले आयरनक्लेड, २१ टारपेडो बोट, १ सब मेरीन और ४ माइन लेअर हैं। ४ टारपेडो बोट और २ माइन स्वीपर बन रहे हैं।

डेन्मार्क और नार्वे का प्रायः एक सा हाल है। यहां २ तट की रक्षा करने वाले जहाज़ २० टारपेडो बोट और ८ सबमेरीन हैं। १ माइन लेअर, ३ सब मेरीन और ३ माइन स्वीपर शीघ्र ही बनने वाले हैं।

फ़िनलैंड नया और छोटा देश है। इसी से इसका जहाज़ी बेड़ा भी नया है। यहां तट की रक्षा करने वाले २ जहाज़, ५ सब मेरीन, ४ गनबोट, कुछ छोटे टारपेडो बोट और माइन स्वीपर हैं।

पोलैंड भी नया देश है। यहां ४ डेस्ट्रायर, ३ सब मेरीन, ५ टारपेडो बोट. २ गनबोट और ४ माइन स्वीपर हैं। एक माइन लेअर और २ सबमेरीन बन रहे हैं। क्रूज़र और बड़े जहाज़ बनाने का विचार हो रहा है।

एस्टोनिया की जल सेना छोटी लेकिन योग्य है। यहां २ सबमेरीन, १ टारपेडो, ४ माइन लेअर हैं। कुछ और बन रहे हैं।

लैटविया में १ सबमेरीन, २ माइन स्वीपर और १ गनबोट है। लिथुएनिया में केवल एक पेट्रोल (पहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ एएटी एअर क्राफ्ट क्रूज़र (ऐसे गश्ती जहाज़ जो गोला छोड़ कर उड़ते हुये जहाज को नीचे गिरा देते हैं। १ गश्ती जहाज माइनलेअर (बाम्ब लगे हुए जाल बिछाने वाला) है। ५ एअर क्राफ्टकेरियर (हवाई जहाज को ढोने वाले जहाज) हैं। १६२ डेस्ट्रायेर (विध्वंसक जहाज) हैं। ५२ पनडुब्बी नावें और ३३ एस्कर्ट (सौदागरों के जहाजों को हमले से बचाने वाले जहाज़ हैं। ३३ माइन स्वीपर या बाम्ब लगे हुए लोहे के जालों को समेटने वाले जहाज़ हैं। ये जहाज़ इस तरह बनाये जाते हैं कि इन पर साधारण बाम्ब के फटने का असर नहीं होता है। इसी से वे बाम्ब लगे हुए जालों को समेट लेते हैं। ६ पेट्रोल (पहरा देने वाले जहाज) हैं ३ एअर क्राफ्टटेंडर, २ नेटलेअर जाल डालने वाले हैं। १८ नदियों में चलने वाले हथियार बन्द जहाज़ या गन बोट हैं। ५ तटपर बाम्ब लगे हुए जाल बिछाने वाले हैं। अगर दुश्मन का जहाज अचानक इनके बीच से गुजरता है तो हिलने से बाम्ब फटते हैं और फूटकर जहाज़ को डुबो देते हैं। १० मोटर टारपेडो बोट जो अपना बड़ा फौलादी सींग जहाजों में भोंक कर उन्हें डुबो देते हैं। ३ मानीटर हैं।

इनके अतिरिक्त ५ वेटिलशिप, १७ क्रूजर, ५ एअर-क्राफ्टकेरियर, ४० डेस्ट्रायर, १८ सबमेरीन, ४ एस्कर्ट जहाज़ ७ माइनस्वीपर, ५ पेट्रोल जहाज़, ३ नदी की गन बोट, २ तट के माइनलेअर और १३ मोटर टारपेडो बोट बन रहे हैं। इन बढ़े हुए जहाज़ों का संचालन करने के लिए नये अफसर भी भरती किये जा रहे हैं। इस समय इनकी संख्या लगभग सवा लाख है। १९४०-४१ में अधिकतर नये जहाज़ बन कर तयार होंगे। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत भारतवर्ष में रायल इंडियन नेवी में पांच एस्कर्ट जहाज़, एक पेट्रोल जहाज़ और कुछ छोटे छोटे जहाज़ हैं। रायल आस्ट्रेलियन नेवी में ४ क्रूजर, १ फ्लोटिला लीडर, ४ डेस्ट्रायर, २ एस्कर्ट जहाज़, १ सीप्लेन (वह हवाई जहाज़ जो पानी पर उतरता है और पानी पर ही तैरते तैरते उड़ना आरम्भ करता है) को ले जाने वाला जहाज़ और ४ दूसरे छोटे जहाज हैं। रायल कनेडियन नेवी में ४ डेस्ट्रायर और ४ दूसरे छोटे जहाज़ हैं। न्यूज़ीलैंड में दो-तीन छोटे छोटे जहाज़ विद्यार्थियों को सिखाने के लिये हैं। रायल नेवी की ओर से दो एस्कर्ट जहाज़ और दो क्रूज़र मिले हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जलसेना—संयुक्त राष्ट्र की जलसेना भी तेज़ी के साथ बढ़ रही है। १९३७ के अन्त में यहां १५ बेटिलशिप, ३ एअर क्राफ्टकेरियर, ८ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित १७ जहाज, ६ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित १२ जहाज, १९६ डेस्ट्रायर, ८४ सबमेरीन, ११ गनबोट ३३ पेट्रोल वेसिल, ३ एअर क्राफ्ट टेंडर १० माइन लेअर, ४३ माइन स्वीपर हैं। इनके अतिरिक्त ४ बैटिलशिप, ३ एअरक्राफ्टकेरियर, ८ क्रूजर, ३८ डेस्ट्रायर, २२ सब मेरीन, १ एअर क्राफ्ट टेंडर, २ मोटर टारपेडो बोट बन रहे हैं। इनमें लगभग सवा लाख अफसर और काम करने वाले हैं।

जापान—जहाजी बेड़े की शक्ति के अनुसार संसार में जापान का तीसरा नम्बर है। जापान की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि कोई विदेशी शक्ति जापान के पड़ोस में जापानी बेड़े को नहीं हरा सकती। १९३७ के अन्त में जापान में ९ बैटिलशिप ५ एअर क्राफ्टकेरियर, ८ इंच व्यासवाली तोपों से सुसज्जित १८ गश्ती जहाज, ६ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित २३ गश्ती जहाज, ५ पुराने गश्ती जहाज़, १०५ डेस्ट्रायर, १२ टारपेडो बोट, ६० सबमेरीन (पनडुब्बी नावें) ३ सबमेरीन चेज़र (पनडुब्बी नावों को खदेड़ने वाली नावें) ३ एअर क्राफ्टटेंडर, ११ माइनलेअर (बाम्ब लगे हुए जाल बिछाने वाली नावें और ९ गन बोट हैं। लगभग १ लाख से कुछ ऊपर अफसर और दूसरे काम करने वाले जापानी बेड़े में लगे हुए हैं। अभी हाल में जापान ने कितने और किस किस तरह के जहाज़ बनाने की योजना की है यह बात एक दम गुप्त रक्खी गई है। लेकिन कुछ लोगों का अनुमान है कि जापान में कम से कम १ एअर क्राफ्टकेरियर, २ क्रूजर, १० डेस्ट्रायर, ८ टारपेडो बोट, ३ सबमेरीन चेज़र, २ सब मेरीन और २ एअरक्राफ्ट टेंडर बन रहे हैं।

फ्रांस—बड़ी लड़ाई के अन्त में फ्रांस की जहाजी ताक़त बहुत घट गई थी। हाल में फ्रांस ने इसको पूरा करने की कोशिश की। इस समय फ्रांस में ६ बैटिल शिप, १ एअरक्राफ्ट केरियर, ७ ऐसे गश्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाज़ जिन पर ८ इंच व्यास वाली तोपें लगी हैं। १२ क्रूज़र छोटी तोपों वाली हैं। ६० डेस्ट्रायर ११ टारपेडो बोट, ७३ सब मेरीन, २ माइन लेअर, १ नेटलेयर एअरक्राफ्ट टेंडर, ४४ एस्कर्ट और पेट्रोल जहाज़, ४ माइन स्वीपर, १३ सब मेरीन चेज़र ९ नदी के गन बोट हैं।

फ्रांस में ३ बैटिलशिप, १ क्रूज़र, १६ डेस्ट्रायर ६ टारपेडो बोट १६ सब मेरीन ४ एअरक्राफ्ट टेंडर १९ एस्कर्ट और पेट्रोल जहाज़ १८ सब मेरीन चेज़र और एक गन बोट बनाने का काम चल रहा है। ६९,००० अफसर और कर्मचारी हैं।

इटली—जब से इटली में फेसिस्ट दल का राज्य हुआ है तब से यहाँ की जहाज़ी शक्ति बढ़ गई है। आज कल इटली के पास ४ बैटिल शिप, ७ क्रूज़र जिनमें ८ इंच व्यास वाली तोपें लगी हैं। १५ हलकी तोपों वाले क्रूज़र १ पुराना क्रूज़र जो सिखाने के काम आता है। ६४ डेस्ट्रायर, ६० टारपेडो बोट ८६ सब मेरीन, १०० मोटर टारपेडो बोट, १ एस्कर्ट जहाज, १ एअरक्राफ्ट टेंडर, १५ माइन लेअर, ३८ माइन स्वीपर, १४ गनबोट, और ५ मार्नीटर हैं। ४ बैटिल शिप, २४ डेस्ट्रायर, १६ टारपेडो, २० मोटर टारपेडो और २० सब मेरीन बनाये जा रहे हैं। भविष्य में और भी अधिक सब मेरीन बनाने का विचार हो रहा है। ६७,८०३ अफसर और कर्म चारी हैं।

जर्मनी—जब से जर्मनी ने बड़ी लड़ाई को शर्तों की पावन्दी तोड़ दी तब से जर्मनी की जलसेना बड़ी तेज़ी से बढ़ी। जर्मनी की जलसेना एक दम नये ढंग से बनी है। जर्मन जलसेना में ३ छोटे बैटिल शिप, ६ क्रूज़र; ८ डेस्ट्रायर, १८ टारपेडो बोट, १४ मोटर टारपेडो बोट, ३६ सब मेरीन, २ गनरी ट्रेनिंग शिप, १० पेट्रोल वेसिल और २३ माइन स्वीपर हैं। ५ बैटिल शिप २ एअरक्राफ्ट केरियर, तीन ८ इंच व्यास वाली तोपों से सुसज्जित गश्ती जहाज़ ४ छः इंच व्यास वाली तोपों के जहाज़, १४ डेस्ट्रायर, १८ टारपेडो बोट, ६ मोटर टारपेडो बोट, २५ सब मेरीन और १४ माइन स्वीपर बन रहे हैं। इन में लगभग ४६००० अफसर और काम करने वाले हैं।

रूस—रूस में ३ बैटिल शिप, ३ गश्ती जहाज़, १ क्रूज़र माइन लेअर, २० डेस्ट्रायर, १८ टारपेडो बोट, १३० मोटर टारपेडो बोट, ११३ सबमेरीन, कुछ माइन लेअर, और माइन स्वीपर हैं।

१ एअर क्राफ्टकेरियर २ क्रूज़र, ५ बड़े डेस्ट्रायर, ३६ सब मेरीन, और कई मोटर टारपेडो बोट बन रही हैं। लगभग २३६०० अफसर और कर्मचारी हैं।

शान्ति प्रिय हालैंड में ३ गश्ती जहाज़, २ पुराने तट की रक्षा करने वाले जहाज़, ८ डेस्ट्रायर १८ टारपेडो बोट, २२ सबमेरीन, ३ एस्कर्ट जहाज १० माइन लेअर १६ माइन स्वीपर हैं। २ क्रूज़र, ४ डेस्ट्रायर, ९ सब मेरीन, ३ एस्कर्ट जहाज़ १ माइन लेअर कुछ टारपेडो बोट तयार हो रहे हैं।

स्कैंडोनेविया और भी लड़ाई के विरुद्ध है। फिर भी स्वीडन में ३ जंगी क्रूज़र ४ टारपेडो बोट; ३ सब मेरीन, और १२ मोटर टारपेडो बोट नये बन रहे हैं। नार्वे तट की रक्षा करने वाले आयरनक्लेड, २१ टारपेडो बोट, १ सब मेरीन और ४ माइन लेअर हैं। ४ टारपेडो बोट और २ माइन स्वीपर बन रहे हैं।

डेन्मार्क और नार्वे का प्रायः एक सा हाल है। यहां २ तट की रक्षा करने वाले जहाज़ २० टारपेडो बोट और ८ सबमेरीन हैं। १ माइन लेअर, ३ सब मेरीन और ३ माइन स्वीपर शीघ्र ही बनने वाले हैं।

फ़िनलैंड नया और छोटा देश है। इसी से इसका जहाज़ी बेड़ा भी नया है। यहां तट की रक्षा करने वाले २ जहाज़, ५ सब मेरीन, ४ गनबोट, कुछ छोटे टारपेडो बोट और माइन स्वीपर हैं।

पोलैंड भी नया देश है। यहां ४ डेस्ट्रायर, ३ सब मेरीन, ५ टारपेडो बोट. २ गनबोट और ४ माइन स्वीपर हैं। एक माइन लेअर और २ सबमेरीन बन रहे हैं। क्रूज़र और बड़े जहाज़ बनाने का विचार हो रहा है।

एस्टोनिया की जल सेना छोटी लेकिन योग्य है। यहां २ सबमेरीन, १ टारपेडो, ४ माइन लेअर हैं। कुछ और बन रहे हैं।

लैटविया में १ सबमेरीन, २ माइन स्वीपर और १ गनबोट है। लिथुएनिया में केवल एक पेट्रोल (पहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने वाला) जहाज़ है। स्पेन में इस समय गृह कलह है। फेसिस्ट और प्रजातन्त्रवादी दल एक दूसरे से लड़ रहे हैं। वैसे यहां ७ क्रूज़र, १५ डेस्ट्रायर, १२ टारपेडो बोट ११ सब मेरीन, २ माइन लेअर, ५ गनबोट और कई छोटी नावें हैं। २ डेस्ट्रायर, ३ सबमेरीन और ४ माइन लेअर बन रहे हैं।

पुर्चगाल की छोटी जल सेना हाल में नये ढंग की बना ली गई है। यहां ६ डेस्ट्रायर ८ एस्कर्ट जहाज़ २ टारपेडो बोट, ३ सबमेरीन और ३ गनबोट हैं। ग्रीस ने एक पुराना क्रूज़र, १ क्रूज़र माइन लेअर ८ डेस्ट्रायर, १३ टारपेडो बोट, ६ सब मेरीन और ४ छोटे माइन लेअर हैं। ग्रीस वाले २ डेस्ट्रायर ब्रिटेन में बनवा रहे हैं। शीघ्र ही ग्रीस के पास १० डेस्ट्रायर और २ सब मेरीन और बढ़ जायेंगे।

टर्की का सबसे बड़ा जहाज़ यावूज़ है जो पहले जर्मनी का गोबेन नाम का गश्ती लड़ाका जहाज़ था। इस समय टर्की में ४ डेस्ट्रायर, ५ सब मेरीन, २ पुराने क्रूज़र, ११ मोटर टारपेडो बोट और कुछ छोटे जहाज़ हैं। ४ सब मेरीन, २ क्रूज़र, ४ डेस्ट्रायर और कुछ छोटे जहाज़ नये बन रहे हैं।

रोमानिया में ४ डेस्ट्रायर, १ सब मेरीन, ३ पुराने टारपेडो बोट और कुछ छोटे जहाज़ हैं। बल्गेरिया में ४ पुराने और छोटे टारपेडो बोट को छोड़ कर और कुछ नहीं है।

यूगोस्लेविया की जल सेना बढ़ रही है। यहाँ ४ सब मेरीन ६ टारपेडो बोट, १० मोटर टारपेडो बोट, १ पुराना क्रूज़र, १ एअर क्राफ्ट टेंडर, और ११ माइन लेअर हैं। ३ डेस्ट्रायर बन रहे हैं। चेकोस्लोवेकिया और हंगारी में कुछ नदी की गन बोट हैं। आस्ट्रिया की गन बोटें जर्मनी के हाथ में आ गई हैं। दक्षिणी अमरीका में बहुत दिनों तक जलसेना के बढ़ाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। हाल में वहाँ की जलसेना को उन्नत करने का प्रयत्न किया जा रहा है। अर्जेण्टाइना की जल सेना में इस समय २ बैटिल शिप, ५ क्रूज़र, ४ तट की रक्षा करने वाले जहाज़ ९ डेस्ट्रायर, ३ सब मेरीन, और ९ पेट्रोल जहाज़ हैं। यहाँ की सरकार ७ डेस्ट्रायर इंगलैंड में बनवा रही है। ७ पेट्रोल जहाज़ वहीं बनवा रहे हैं।

ब्रेज़ील में २ बैटिलशिप, २ क्रूज़र, ८ डेस्ट्रायर और ४ सब मेरीन हैं। ९ डेस्ट्रायर, ६ माइन लेअर बनवाये जा रहे हैं।

चिली की जलसेना बड़ी उन्नत है। यहाँ का एक लड़ाई का जहाज़ ब्रिटिश जलसेना के साथ बड़ी लड़ाई में लड़ चुका है। यहाँ ३ क्रूज़र, १ तट की रक्षा करने वाला जहाज़ ८ डेस्ट्रायर और ९ सब मेरीन हैं। पीरू में २ क्रूज़र, २ डेस्ट्रायर, ४ सबमेरीन, और १ टारपेडो बोट, है। इक्वेडार में केवल एक गन बोट है।

कोलम्बिया ने ब्रिटेन की सहायता से अपने को बढ़ा लिया है। यहाँ २ डेस्ट्रायर, १ माइनस्वीपर कुछ गन बोट और पेट्रोल जहाज़ हैं। यूरूग्वे में ३ पेट्रोल जहाज़ और कुछ छोटी नावें हैं। पेरेग्वे में ४ नदी की गन बोट हैं।

मेक्सिको में ५ नये एस्कर्ट जहाज़ और २ पुराने हैं। यहाँ एक तट की रक्षा करने वाला जहाज़, १० गन बोट और ४ पेट्रोल जहाज़ हैं। क्यूबा में २ एस्कर्ट जहाज़ ५ गनबोट, ७ पेट्रोल जहाज़ हैं। हेइटी में २ छोटे-छोटे पेट्रोल जहाज़ हैं।

दक्षिणी अमरीका मध्य अमरीका और पश्चिमी द्वीप समूह अपने जहाज़ बाहर बनवाते हैं। केवल अर्जेन्टाइना और ब्रेज़ील में कुछ जहाज़ बन सकते हैं।

मंचूकुओ की जल सेना वास्तव में जापानी जल सेना है। वहां अधिकतर नदी में चलने वाले जहाज़ हैं। यहां १५ गनबोट, ६ पेट्रोल जहाज़, १ डेस्ट्रायर और कुछ नावें हैं।

स्याम की जल सेना भी अधिकतर जापान की सहायता से बनी है। यहाँ २ तट की रक्षा करने वाले जहाज़, १८ टारपेडो बोट, ४ सबमेरीन, २ एस्कर्ट जहाज़, ३ गनबोट, ३ माइन लेअर और ८ मोटर टारपेडो बोट हैं। कुछ नये जहाज़ बन रहे हैं।

ईरान की जल सेना नई है। यहां ७ गनबोट, ६ मोटर टारपेडो बोट हैं। यह जल सेना इटली की सहायता से बनी है। इराक में इंगलैंड के बने हुए ४ पेट्रोल जहाज़ हैं।

चीन की जल सेना को जापानी हमले से भारी धक्का पहुँचा है। इससे पहले चीन में ८ क्रूज़र,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ एस्कर्ट जहाज़, २० गनबोट, ६ पुराने टारपेडो बोट, १० नये टारपेडो बोट १६ नदी के गनबोट और पेट्रोल जहाज़, २ पानी में उतरने वाले हवाई जहाज़ों को ले जाने वाले जहाज थे। इन में कुछ को जापान ने नष्ट कर दिया कुछ को छीन लिया कुछ ही शेष बचे हैं।

कालीदास का वर्णित भूगोल

यद्यपि प्राचीन हिन्दू ग्रन्थकारों ने कोई स्वतंत्र भौगोलिक ग्रंथ की रचना नहीं की तथापि उनके रचित पुस्तकों; धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों तथा तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों के अवलोकन से पता चलता है कि उन ग्रन्थों में अनेक भौगोलिक बातें भरी पड़ी हैं। पुराणों में अनेक द्वीप, सागर तथा पर्वतों के वर्णन मिलते हैं। महाभारत में पाण्डवों के दिग्विजय के सिलसिले में चारों दिशाओं में स्थित पर्वत, नदी, नगर तथा भिन्न भिन्न देशों का वर्णन किया गया है। संस्कृत कवियों के काव्यों की महत्ता कुछ कम नहीं है। उनके कल्पना के साथ ऐतिहासिक तथा भौगोलिक बातों का भी समावेश पाया जाता है जिससे उस कवि की इन बातों के ज्ञान का परिचय मिलता है। आधुनिक समय में विद्वानों का ध्यान इस तरफ बहुत कम दिखलाई पड़ता है। उन प्राचीन कवियों में से केवल कालिदास के ग्रंथों में वर्णित भौगोलिक बातों पर विचार किया जायगा। अधिकतर वर्णन रघुवंश आदि काव्यों में पाया जाता है। कालिदास ने किसी विशेष कारण से या भौगोलिक परिस्थिती पर विचार करने के निमित्त, नगर, नदी अथवा पर्वतों का वर्णन नहीं किया है। परन्तु कवि ने रघु के दिग्विजय का वर्णन करते हुए विभिन्न स्थानों का उल्लेख किया है। उस मार्ग में स्थित स्थानों के निवासियों का वर्णन भी मिलता है। इस प्रकार यह वर्णन किसी प्रान्त विशेष का नहीं है परन्तु समस्त भारत अर्थात् पश्चिम में अफ़गानिस्तान से लेकर पूरब में बंगाल तथा दक्षिण में केरल से लेकर उत्तर में कैलाश तक, का है। इतने बड़े क्षेत्रफल में स्थित स्थानों का ठीक ठीक वर्णन करना, कवि के भौगोलिक ज्ञान का विशेषरूप से परिचय मिलता है।

रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में वर्णन मिलता है कि रघु ने विभिन्न देशों के नरेशों को परास्त किया। कालिदास ने वर्णन किया है कि राजा ने अपने दिग्विजय के निमित्त भारतवर्ष के पूर्वी समुद्र तट की ओर प्रस्थान किया। वह समुद्रतट ताड़ के वृक्षों की सघनता के कारण काला दिखलाई पड़ता था [प्राप्त तालो वन श्यामं उपकण्ठं महोदधेः] आधुनिक काल में ताड़ अधिक तर समुद्र तट पर ही पाये जाते हैं। वहाँ की जलवायु ताड़ के लिए उचित होती है; यही कारण है कि ताड़ समुद्र तट की एक विशेष वनस्पति है। कवि का ध्यान वनस्पति ही की तरफ नहीं रह जाता वरन् वहाँ के निवासियों को मुख्य धंधा का भी उल्लेख करता है। पूर्वी बंगाल के मनुष्यों का धंधा नाव चलाना भी है जिसमें वे बहुत निपुण समझे जाते हैं। आज कल भी अधिक संख्या में मल्लाही का काम वे लोग करते हैं। इसी का वर्णन कालिदास ने भी किया है—वंङ्गाय नुत खाय तरसा नेता नौसाधनाद्यतान—इसका मुख्य कारण यह है कि बंगाल में मानसून से बहुत अधिक वर्षा होती है। अतएव सारी छोटी छोटी नदियाँ पानी से भर जाती हैं। ऐसी परिस्थिति में वहाँ के निवासियों का मल्लाही में प्रवीण होना नितांत आवश्यक है। बंगाल में जहाज़ों पर विशेषतया ढाका के मुसलमान नाविक ही मिलते हैं।

बंगाल की मिट्टी अधिक उपजाऊ है। गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की लाई हुई मिट्टी तथा अधिक वर्षा के कारण यहाँ धान की विशेष पैदावार होती है। कवि ने इसका वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। इसके वर्णन से विदित होता है कि धान के खेतों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनारे बैठे हुए बालक, वृद्ध सभी रघु के यश का गान कर रहे हैं।

इक्षुच्छाया निषादिन्य । तस्यं गोप्तुं गुणोदयम्
आकुमारकथोद्धातं शालि गोप्यो जगुर्थशः ।

पूर्वी प्रान्तों पर विजय प्राप्त कर राजा रघु० ने दक्षिण की तरफ अपनी दृष्टि डाली। सब से प्रथम दक्षिण में कलिङ्ग देश पर आक्रमण किया और उस युद्ध में विजय लक्ष्मी रघु के हाथ लगी। उस देश में सैनिकों ने जी भर कर गरी के रस का पान किया। प्राचीन भारत में कलिङ्ग देश एक प्रधान प्रांत था। यह उत्कल के दक्षिण तथा आधुनिक मद्रास के उत्तर में स्थित था। आजकल इसकी समता उत्तरी सरकार (मद्रास प्रान्त का एक विभाग) से कर सकते हैं। इस प्रान्त के समुद्र तट पर गरी की पैदावार बहुत अधिक होती है। यही नहीं वर्तमान समय में इस प्रांत में गरी का कारबार बहुलता से हो रहा है। इसी बात को कालिदास ने बतलाया है कि रघु के सैनिक कलिङ्ग में गरी का रस पान किए।

इसके पश्चात् रघु के यात्रा का वर्णन पूर्वी तट से होकर किया गया है। इस दक्षिणी प्रान्त में पैदा होने वाले अनेक प्रकार के मसालों का वर्णन कवि ने किया है। जो आज कल भी वहाँ पाये जाते हैं। कालिदास के वर्णन से पता लगता है कि मलय (आधुनिक नील गिरि) के समीप बहुत मसाले पैदा होते थे जो भूगोल के विद्यार्थियों से छिपा नहीं है। मलय होते रघु का मार्ग पाण्डय देश से होकर जाता है। ज्यों ही राजा उस देश के समीप पहुँचा कि पाण्डय नरेश ने रघु को मोती आदि अमूल्य रत्न भेट में दिया। कवि के वर्णन से पता चलता है कि यह मोती ताम्रपर्णी नदी के मुहाने के समुद्र तट से एकत्रित किए गये थे।

'ताम्रपर्णी समेतस्य मुक्तासारं महोदधेः।

यह वर्णन उस स्थान पर मोती एकत्रित करने के व्यापार को याद दिलाता है। आजकल भी मनार की खाड़ी में ट्यूटिकोरीन स्थान से मोती एकत्रित की जाती है। कवि का विशेष ज्ञान का अधिक परिचय मिलता है। यदि उस स्थान के स्थिति पर विचार करें तो आज कल भी एक छोटी तमवरवरी नामक नदी तिनेवेली जिले (मद्रास प्रान्त) से होकर समुद्र में गिरती है। इसकी समता कवि के ताम्रपर्णी नदी से की जाती है। इसी तमवरवरी के मुहाने पर मोती इकट्ठी की जाती है।

कवि ने दक्षिणी हिस्से में स्थित तीन पर्वतों का वर्णन किया है—मलय, दरदर तथा सह्य। कालिदास ने अत्यन्त शृंगारिक रूप से उनका उल्लेख किया है। उनके कथनानुसार प्रथम दोनों (मलय तथा दरदर) पर्वत युवती के स्तन की तरह प्रतीत होते हैं। इन दोनों पर्वतों की समता क्रमशः दक्षिणी भारत के नीलगिरि (मलयाचल) तथा पूर्वी घाट के दक्षिण में स्थित पर्वतमाला से की जाती है। सह्य की समता पश्चिमी घाट के पर्वतमाला की सबसे दक्षिणी हिस्से से किया जाता है। इन सब वर्णन से कालिदास के विस्तृत भौगोलिक ज्ञान का पता चलता है।

दक्षिण पश्चिमी भाग का वर्णन कवि ने अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है। आधुनिक मालाबार का प्राचीन नाम केरल था। इस प्रान्त में ताड़ तथा तमाल की पैदावार अधिक होती है जिसका वर्णन कवि ने किया है। यहाँ की जलवायु इस प्रकार की वनस्पति के लिये लाभकारी है। यही कारण है कि आजकल भी मालाबार की जलवायु की प्रशंसा प्रत्येक यात्री से सुनी जाती है।

इस प्रकार दक्षिणी तथा पश्चिमी भारत को विजय कर रघु ने उत्तरी-पश्चिमी देशों की ओर प्रस्थान किया। कवि के वर्णन से पता चलता है कि उस प्रान्त में शराब पीने का प्रचार था तथा वहाँ की युवतियों का मुख कमल के समान सुन्दर था। उस देश को आधुनिक अफ़गानिस्तान बतलाया जाता है; जहाँ की काबुल नगरी अंगूर के लिये प्रसिद्ध है। कवि के कथनानुसार वहाँ की भूमि अंगूर की लताओं से आच्छादित थी (द्राक्षा वलय भूमिषु)। उमर खैयाम ने भी इसी वर्णन को अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है। भौगोलिक स्थिति के कारण अफ़ग़ानिस्तान में अंगूर तथा शराब की बाहुल्यता सर्वथा सम्भव है। पहाड़ी प्रदेशों की जलवायु ठंडी होती है, अतएव वहाँ सेब, अंगूर आदि फल अधिकता से पैदा होते हैं। जलवायु के कारण ही मनुष्यों का रंग सफेद होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यही कारण है कि काश्मीरी-गोरे तथा मद्रासी या लंका के निवासी काले होते हैं। अफ़ग़ानिस्तान होते हुए रघु ने वाह्लीक तक आक्रमण किया था। वाह्लीक की आधुनिक वलख़ से समता की गई है। इस प्रकार रघुवंश में कालिदास ने समस्त भारत के प्रदेशों में स्थित नगर, नदी, पर्वत तथा निवासियों का वर्णन किया है।

रघुवंश के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में भी भौगोलिक बातों का उल्लेख पाया जाता है। रघुवंश तथा कुमारसम्भव के वर्णनों को मिलाने से हिमालय का विस्तृत विवरण मिल जाता है। कवि ने वर्णन किया है कि कस्तूरी से सुगंधित प्रस्तरों पर रघु के सैनिकों ने विश्राम किया। हिमालय में कस्तूरी वाले मृग अधिकतर पाये जाते हैं। जिसको कवि ने संकेत किया है। हिमालय में लकड़ी पैदा होने का वर्णन किया गया है। आज कल भी उन्हीं स्थानों से देवदार, वर्च, चीड़ तथा शीशम आदि वृक्ष पाए जाते हैं जिनकी लकड़ियाँ मनुष्यों के काम आती हैं। यहीं तक नहीं, परन्तु कवि ने अत्यन्त ही सूक्ष्म पदार्थों का भी वर्णन किया है। हिमालय पर कुछ ज्वाला युक्त औषधि (Phosphorescent herbs) पाई जाती हैं जिनकी स्थिति वनस्पति विद्या के ज्ञाताओं ने भी मान ली है। कालिदास ने इसका उल्लेख कुमारसम्भव में किया है।

भवन्ति यभोषधयो रजन्यां अतैलदीपाः सुरत प्रदीपाः

कवि ने मेघदूत में एक कल्पिता कथानक का वर्णन किया है जिससे कुछ भौगोलिक बातों का भी पता चलता है। उस कथानक में यक्ष तथा उनकी पत्नी के वियोग का वर्णन मिलता है। यक्षिणी कैलाश पर्वत के समीप अलकापुरी में रहती थी तथा उससे अलग होकर यक्ष रामगिरि पर्वत पर निवास करता था। रामगिरि की आधुनिक रामटेक (मध्य प्रान्त) से समता की जाती है। विरही यक्ष अपनी प्रिया के पास संदेशा भेजना चाहता था। अतएव उसने इस कार्य के लिए मेघ को भेजना उचित समझा। वह समय वर्षा का प्रारम्भ था जब कि बादल यक्ष का संदेशा लेकर रामगिरि से अलकापुरी को प्रस्थान कर रहे थे। भूगोल के विद्यार्थियों को यह भली भांत विदित है कि वर्षा के प्रारम्भ में मानसून हवाएँ चलती हैं। बंगाल की खाड़ी से होकर आसाम के पर्वतों से टकराती हैं और पानी बरसाती हैं। उसके बाद उनका रास्ता पश्चिम की तरफ हो जाता है। ऊँचे उठते उठते हिमालय पर चली जाती हैं जहाँ ठंडा होने से संयुक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त आदि प्रान्तों में पानी बरसाती हैं। इस यात्रा में उनका रास्ता बंगाल, विहार, मध्यप्रान्त, संयुक्त प्रान्त से होते हुये हिमालय की तरफ जाता है। यही कारण है कि कालिदास ने मेघ [धूमो ज्योति सलिल मरुतां सन्निपातः क्मेघः] को संदेशा लेकर रामगिरि से अलकापुरी को भेजा था; क्योंकि वर्षा के प्रारम्भ में मेघ (मानसूनी) दक्षिण से उत्तर की ओर [कैलाश के समीप] जाता है। कवि ने कहा है—

गन्तव्याते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्।

उस समय (वर्षा के प्रारम्भ में) मेघ के सिवाय कोई भी उपाय नहीं था जो दक्षिण से उत्तर की तरफ जाकर कैलाश (हिमालय) में संदेशा पहुँचाता इन बातों से पता चलता है कि कवि की इतनी जानकारी थी कि मानसून (मेघ) वर्षा के प्रारम्भ में दक्षिण से हिमालय की तरफ चलती है। अन्यथा मेघ को संदेशा ले जाने की कल्पना कभी की नहीं जाती।

इन्हीं उपर्युक्त शब्दों में कालिदास के ग्रंथों में उल्लिखित संदर्भों से भौगोलिक बातों का पता चलता है। यह वर्णन अत्यन्त ही संक्षेप में किया गया है। स्थानाभाव के कारण उसका विस्तृत वर्णन नहीं दिया गया है। ऐसे सूक्ष्म तथा सत्य भौगोलिक बातों का वर्णन करना साधारण ज्ञान का काम नहीं है। जैसा कहा गया है कि प्राचीन विद्वानों द्वारा लिखित कोई भौगोलिक पुस्तक प्राप्त नहीं हुई है, परन्तु कालिदास के ऐसे वर्णनों से हमें विस्तृत बातों का पता लगता है। नगर, नदी तथा पर्वतों आदि का वर्णन, जलवायु, वनस्पति तथा उस स्थान के निवासियों का वर्णन पढ़ कर कोई भी विद्यार्थी आधुनिक भौगोलिक पठन पाठन प्रणाली का पूर्व रूप देख सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का पिट्सबर्ग-जमशेदपुर

[शान्ति शरण-आज़मगढ़]

कारखाने और फैक्टरियों की दृष्टि से जमशेदपुर भारत का सब से बड़ा नगर है। चौबीस घण्टे मशीनों की गड़गड़ाहट में आदमी वहां खो सा जाता है। विशालकाय चिमनियां धुएँ और आग की लपटें निरन्तर उगला करती हैं-भट्ठियों के धुंधले प्रकाश में मीलों दूर की पहाड़ियाँ रात को मानों सुनहले रंग की चादरें ओढ़ लेती हैं।

आधुनिक सभ्यता लोहे और स्टील की नींव पर खड़ी है इसमें किसी भी विचार शील व्यक्ति को सन्देह हो ही नहीं सकता। अतएव भारत और एशिया की सभ्य दुनिया में जमशेदपुर का एक विशिष्ट स्थान है। सुवर्ण रेखा और खरकार्ड नदी के बीच, विहार में श्रृंगभूमि जिले में जमशेदपुर का कारोबारी शहर बसा है। जमशेदपुर से कलकत्ता १५६ मील की दूरी पर है। जमशेदपुर की टाटा ने आज से ३० वर्ष पहले कारखानों का निर्माण के लिये इस स्थान को चुना था। हिन्दुस्तान में लोहे के कारखानों के लिये इससे बढ़ कर अच्छा स्थान अन्यत्र कहीं मिल भी नहीं सकता। आज से बहुत दिनों पूर्व १८८७ में प्रसिद्ध भूतत्व वेत्ता श्री प्रमथनाथ बसु ने गुरु महासिनी पहाड़ी के समीप लोहे की खान का पता लगाया था। यह खान मयूरभंज रियासत के अन्दर पड़ती है। जमशेद जी ताता ने इन खान को मोल ले लिया। पास ही विहार में रानीगंज की कोयले की खानें भी हैं। निदाद जमशेद जी ने फैक्टरी बनाने के लिये बंगाल नागपुर रेलवे के स्टेशन कालीमति के पास काञ्ची गांव को चुना। स्टेशन का नाम अब ताता-नगर है और गांव भी जमशेदपुर का शहर हो गया। इस तरह हम देखते हैं कि लोहा और कोयला दोनों ही जमशेदपुर के नजदीक हैं और कलकत्ते का बन्दर-गाह भी कुछ दूर अधिक दूर नहीं।

टाटा स्टील कम्पनी का काम १९०७ में शुरू किया गया। प्रारम्भिक मूलधन २ करोड़ रुपये का था। १९११ में फैक्टरी में सुचारू रूप से काम जारी हो गया। धीरे धीरे कारखाने की वृद्धि होती गई और आज तो जमशेदपुर की फैक्टरियों में लोहे की चादरें रेल की पटरी, गार्डर, हर तरह के लोहे के सामान लाखों टन तैयार हो रहे हैं। कारखाने के अन्दर २५००० कर्मचारी मय मजदूरों और कारीगरों को लेकर हैं। प्रति मास ६०००० टन का पक्का लोहा (Steel) तैयार होता है। संसार के सबसे बड़े बारह कारखानों में जमशेदपुर का भी नाम आता है।

कलकत्ते से रात को पैसेन्जर गाड़ी में रवाना होइये प्रातः के झिलमिले प्रकाश में आप की नींद खुलती है-एकाएक लम्बे चौड़े मैदान और धान के हरे हरे खेतों के बजाय आप को ऊँची नीची भूरे रंग की पहाड़ियां दिखाई पड़ती हैं-टाटा नगर का स्टेशन आ रहा है। कुछ और आगे बढ़ने पर ट्रेन के दोनों ओर झाड़ियों से ढकी हुई काले पत्थर वाली पहाड़ियां नज़र आती हैं। ट्रेन की चाल धीमी हो गयी-शायद सिगनल दिखाई दे रहा है। आप खिड़की से सिर निकाल कर झांकते है-आप चकित रह जाते हैं मानो जादू की सहायता से किसी ने सामने का दृश्य बदल दिया हो-झाड़ियों और नीची पहाड़ियों के बीच से यकायक लम्बी लम्बी चिमनियों वाला शहर सामने आता है-बड़ी बड़ी विशालकाय भट्ठियों की आंच जान पड़ता है ट्रेन के डब्बो तक पहुँचती हैं। नसों में एक बिजली सी दौड़ जाती है-देहाती दुनिया से विलायत में कहां आ गये।

साफ सुथरी सड़कें और लता गुल्म और वाटिकाओं से सुसज्जित छोटे छोटे बंगले देख कर तबियत प्रसन्न हो उठती हैं। गोरे वर्ण के अमरीकन तथा पारसी बच्चे इधर उधर किलकते हुए जीवन का आनन्द ले रहे हैं-लेकिन कुछ दूर आगे बढ़ने पर बस्ती में वही गरीबी और लाचारी नजर आती है जो समूचे भारत में हम देखते हैं। तेल की बनी हुई चीजें, पराठे और उनके ऊपर जमशेदपुर कोयले के कण-यही वहां के मजदूरों का दिन का खाना है जमशेदपुर में चौबीस घंटे चहल पहल रहती है। बराबर मशीनो में गड़गड़ाहट इंजनों की तेज चीखों की आवाज, फैक्टरी के भोंपू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाई देंगे। गगन चुम्बी चिमनियां रात दिन काला धुंवा, आग की लपट और चिनगारियां उगला करती हैं। मतलब जमशेदपुर कभी सोता नहीं है। फैक्टरियों में एकदम काम तो कभी बन्द हो नहीं होता। विशालकाय भट्ठियां कभी ठण्ढी नहीं पड़ने पातीं। आठ आठ घण्टे की ड्यूटी बना कर लोग फैक्टरी का काम निरन्तर जारी रखते हैं। इस प्रकार भारत की लोहे की मांग पूरी करने का प्रयत्न जमशेदपुर का शहर दिन रात जग कर करता है।

रात को फैक्टरी की सर्चलाइट और भट्ठियों की तेज़ और लाल रंग की रोशनी की वजह से चारों ओर चांदनी सी छाई रहती है मीलों दूर से चिमनियों से निकलती हुई आग की लपटें दिखाई पड़ती हैं।

कारख़ाने की भट्ठियाँ दिन रात जलती रहती हैं अतएव काम कभी बन्द नहीं होता। आठ आठ घण्टे की ड्यूटी लगती है—कारीगरों की पारी बदलती रहती है। आंखों पर काले शीशे का चश्मा लगाये और हाथ में लोहे की सलाखें लिए हुये ये मजदूर आठ आठ घण्टे भट्ठियों की तेज आंच के सामने काम करते हैं।

अमेरिकन इन्जीनियर साफ़ कपड़े पहने हुए चाय टोस्ट से छुट्टी पाकर काम की देख रेख करते दिन में दो एक बार चक्कर लगा जाता है, और इसके बदले में लम्बी सी तन्ख्वाह उसको जेब में डाली जाती है। हां कभी कभी जब कम्पनी को ख़ूब मुनाफ़ा होता है, तब आंसू पोछने के लिये इन मजदूरों को बोनस के रुप में कुछ ज्यादा वेतन मिल जाता है। और ये नादान मजदूर अपने मालिक की दानशीलता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। कहा जाता है कि हिन्दुस्तान भर में ताता फैक्टरी में मजदूरी की दर सबसे ऊँची है, लेकिन उसका जिक्र करना लोग भूल जाते हैं कि ताता कम्पनी को मुनाफ़ा कितना होता है। जमशेदपुर के कारबार की विशालता का अन्दाज दर्शक गण दो चार दिन में नहीं लगा सकते। इतने बड़े पैमाने पर बनी हुई फैक्टरियाँ बेशुमार मजदूर और कारीगर देख कर तबियत हैरान रह जाती है। आप हाल में खड़े देख रहे हैं कि किस आसानी से विद्युत शक्ति से संचालित आरे की मदद से मोटे मोटे गार्डर काटे जा रहे हैं मानों वे लकड़ी के हों—इतने में ऊपर टन टन करता हुआ 'क्रेन' अपने पंजे में रक्तवर्ण का गर्म लोहा दबोचे हुए आप की ओर बढ़ता है। फौरन् ही सब लोग एक तरफ़ हट जाते हैं क्योंकि कभी कभी अधिक पिघल जाने पर गर्म लोहे के टुकड़े टूट कर नीचे गिर जाते हैं। वर्कशाप के भीतर बड़ी सतर्कता से चलना फिरना होता है। दहिने बाएँ, ऊपर नीचे सब ओर से आप को खतरे का भय रहता है। कभी तो आप लाइन पार कर रहे हैं, बगल से कच्चे लोहे और कोयले से भरी गाड़ियाँ खींचता हुआ एंजिन तेजी के साथ चला आ रहा है, तो कहीं भट्ठी की आंच से आप झुलसे जा रहे हैं।

टाटा स्टील कम्पनी में एंजिन और मशीन में प्रति दिन २० करोड़ गैलन पानी खर्च होता है। और टाटानगर स्टेशन से प्रतिदिन १७०० मालगाड़ी के डब्बे तरह तरह के सामान फैक्टरी के अन्दर ले आते हैं। खान से प्रति वर्ष ११ लाख टन कच्चा लोहा (Iron Ove) और १३ लाख टन कोयला फैक्टरी में आता है।

कम्पनी की ओर से एक टेक्निकल इन्स्टीच्यूट भी खोला गया है। लगभग १०० विद्यार्थियों को प्रति वर्ष लोहा और स्टील तैय्यार करने की कला में शिक्षा दी जाती है। इनको फैक्टरी में काम करने का भी अवसर दिया जाता है। ताकि उनकी शिक्षा अधूरी न रह जाये। हृष्ट पुष्ट शरीर वाले विद्यार्थी ही उस इन्स्टीच्यूट में भर्ती किये जाते हैं। परीक्षा पास कर लेने पर यहाँ के विद्यार्थियों को कम्पनी नौकर भी रख लेती है।

जमशेदपुर का शहर टाटा कम्पनी की खरीदी हुई जमीन पर बसा है। जमशेद पुर में म्यूनिसिपल्टी नहीं है, वरन् शहर का इन्तजाम टाटा कम्पनी के कर्मचारी लोगों के हाथ में है। और उसमें संदेह नहीं कि शहर का इन्तजाम बहुत ही उत्तम है। टाटा कम्पनी लोहे के कारबार के अलावा जमीन्दारी का काम भी संभालती है। सारे शहर में एक आना फ़ी यूनिट के हिसाब से बिजली बनती है। तथा पीने के लिये पाइप द्वारा जल पहुँचाने का भी अति उत्तम प्रबन्ध है। चिकनी और पक्की सड़कें चारों ओर हैं। शहर के अन्दर मकान बड़े ढंग से बने हुए हैं क्योंकि मकान बनाने के पहले कम्पनी के अधिकारियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इजाजत लेनी होती है। ज्यादा से ज्यादा प्रति एकड़ जमीन में १२ घर बनाने की इजाज़त मिल सकती है। खुद कम्पनी ने इस तरह लगभग ६००० माडल घर बनवाए हैं। कम्पनी की ओर से कर्मचारियों को घर बनवाने के लिये सस्ते दर पर रुपये भी उधार मिल जाते हैं। जमशेद पुर प्रति दिन तरक्की ही करता रहा है।

टाटा कम्पनी की ओर से शिक्षा और औषधि का भी अच्छा प्रबन्ध है। एक हाई स्कूल, तीन मिडिल स्कूल तथा लगभग ४० प्रायमरी पाठशालाएँ जमशेदपुर में हैं। उन स्कूलों में ६००० लड़के शिक्षा पाते हैं। वयस्क व्यक्तियों के लिये रात्रिपाठशालाएँ भी खोली गई हैं। इस तरह बड़े बूढ़े सभी शिक्षा से लाभ उठा सकते हैं।

औषधि पर कम्पनी ४॥ लाख रुपया प्रति वर्ष खर्च करती है। जगह जगह खैराती अस्पताल बने हुए हैं। कम्पनी के कर्मचारियों को मुफ़्त दवा मिलती है, तथा उनकी देखभाल के लिये २५ डाक्टर कम्पनी की तरफ से नौकर रक्खे गये हैं। फैक्टरी के भीतर भी मजदूरों और कारीगरों के आराम का पूरा ख्याल रक्खा जाता है। स्त्रियों के लिये विश्राम गृह फैक्टरी के हाते के भीतर ही बने हुए हैं। यहाँ पर बच्चों को झुलाने के लिये विजली के पालने लगे हुए हैं। वर्फ़ और सोडा की बोतलें भट्टियों पर काम करने वालों को बराबर पहुँचाई जाती हैं। फैक्टरी में घूमते घूमते थक जाने पर लेखक को भी सोडा और वर्फ़ कम्पनी के भंडारे से मिला था। हर एक स्त्री को, जो फैक्टरी में काम करती है, शाम को साबुन की एक बट्टी कपड़े साफ करने के लिये दी जाती है। इस तरह हम देखते हैं कि टाटा कम्पनी ने अपने श्रमजीवियों को आराम पहुँचाने की हर तरह से कोशिश की है। इनके अतिरिक्त शहर में सिनेमा, क्लब आदि मन बहलाने के अनेक साधन इन कर्मचारियों के लिये लभ्य हैं।

जमशेदपुर की एक खास विशेषता जो इसे अन्य कारबारी शहरों से ऊँचा स्थान दे सकती है, यह है कि धुएँ और विषैली गैसों की आफत इस शहर में नहीं है। अनेक विषैली गैसों को फैक्टरी के भीतर ही अन्य पदार्थों में परिवर्तन कर दिया जाता है। धुएँ को भी ऊँची चिमनियों द्वारा आसमान में पहुँचा देते हैं। फैक्टरियों से दूर हट कर शहर के बाहर नदी के किनारे बड़ी रमणीक जगह मिलती है। शहर के लिये इसी नदी से पानी लिया जाता है।

शहर के अन्दर हिन्दुस्तान के प्रत्येक सूबे के निवासी आपको मिलेंगे। पंजाबी मिस्त्री, गुर्खा दर्बान, छोटा नागपुर और उड़ीसा के मज़दूर और कुली सभी वहाँ मिलते हैं। मद्रास और बंगाल के बाबू लोग भी यहाँ मौजूद हैं। अंग्रेज़ और अमेरिकन कर्मचारी भी यहाँ काफी तादाद में हैं, लेकिन ये लोग अपने को उच्च श्रेणी के जीव समझते हैं और हिन्दुस्तानियों से मिलने में इन्हें हेठी का ख्याल होता है। ये प्रायः इंजीनियर, फ़ोरमैन वग़ैरह की जगह पर काम करते हैं। अधगोरे भी अपने को साहब हो गिनते हैं और बंगाली क्लर्कों को अपने क्लब में नहीं आने देते। हाँ पारसियों की बात दूसरी है। उनकी तो मानो कम्पनी ही है, इसलिये उनके प्रति अमेरिकन या अंग्रेज कभी रुखाई दिखाने का साहस नहीं करते। पारसियों को जमशेद जी टाटा का गर्व है, और ऐसा होना वाजिब भी है, क्योंकि राजनीति के क्षेत्र में जो स्थान दादा भाई नौरोजी का है, वही स्थान आजकल कारखाने की वृद्धि में जमशेद जी का भी है।

टाटा कम्पनी अपना कारबार फैला कर उसे एक और भी वृहत् पैमाने पर लाना चाहती है। भारत की लोहे की माँग का ५० प्रतिशत भी अभी टाटा कम्पनी पूरा नहीं कर पाती! अब इस नई स्कीम के अनुसार १९३९ में टाटा स्टील कम्पनी ७०,००० टन लोहा प्रति वर्ष तैयार कर सकेगी। फिर भी भारत की आवश्यकता का $\frac{३}{४}$ अंश ही पूरा हो सकेगा।

जमशेदपुर की समृद्धि के पीछे उड़ीसा की लोहे की खानें हैं। अतएव थोड़ी बातें इन खानों के बारे में जानना जरूरी है। मयूरभंज की ये खानें ५० वर्ष से निरन्तर टाटा कम्पनी को कच्चा लोहा दे रही हैं। और धीरे धीरे उक्त कम्पनी ने रुपया भी खूब कमाया है, किन्तु मयूरभंज की ग़रीब जनता को टाटा की अतुल धनराशि से क्या लाभ पहुँचा?

टाटानगर से गुरुमोहिसनी को एक ब्राञ्च रेलवे लाइन है। खुदाई का काम यहीं पर होता है। खान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में काम करने वाले मज़दूरों की सूरत निरी करुणा-जनक दीख पड़ती है। चमकते हुए मुखड़े तो यहाँ देखने को ही नहीं मिले। ऐसा जान पड़ता है खान में कठिन परिश्रम के बोझ से पिस से गये हैं। स्त्री और पुरुष, मन मार कर बिल्कुल मशीन की तरह काम कर रहे थे। विशेषज्ञों का ख्याल है कि गुरुमोहिसनी की खानें २० वर्ष के अन्दर खाली हो जाएँगी। अतएव २० वर्ष के बाद कम्पनी यहाँ से अपना सब कारबार समेट कर अन्यत्र चली जायगी (कोयन्भोर रियासत में लोहे की खानों का पता चला है। सैकड़ों वर्ष तक लोहा निकालने पर भी यह खान खाली नहीं होगी) और तब इन बेचारे मज़दूरों का क्या हश्र होगा? ये ४००० मज़दूर यकायक बेकार हो जायँगे? क्या ये भूखों मरेंगे या चोरी डाका अपनाएँगे? किन्तु इन समस्याओं को टाटा कम्पनी क्यों हल करे, उसके लिये तो वही स्कीम श्रेयस्कर है, जो उसे अधिक से अधिक मुनाफ़ा दिलाये।

जिराफ का पकड़ना

जिराफ कई अजायब घरों में मिलते हैं। लेकिन जिराफ़ का असली घर अफ्रीका के कीनिया देश में है। वहीं से पकड़ कर वे अजायब घरों में लाये गये हैं। वे कीनिया के तट से आठ सौ मील भीतर वाले भाग में यूगांडा की सीमा के पास पकड़े गये। उनको पकड़ने के लिये कांटेदार झाड़ियों के बड़े बड़े बाड़े चिमटे की सूरत के बनाये गये। इनमें एक ओर से जाने का रास्ता था। शेष तीनों ओर वे घिरे हुए थे। इन्हीं में जिराफ़ों के झुंड हाँक दिये गये। इनमें से अच्छे अच्छे जानवर छाँट लिये गये। शेष को जाने दिया गया। जिराफ को पकड़ने के लिये कीनिया-सरकार के गेम डिपार्टमेंट की आज्ञा लेनी पड़ती है।

साधारणतः जिराफ खेत की फसलों को बहुत नुक़सान नहीं पहुँचाते हैं। उन्हें ऐसा चारा खाने की आदत नहीं है जो उनके सिर के ऊपर बहुत ऊँचा न लटकता हो। लेकिन जब उनकी संख्या बहुत बढ़ जाती है और उनके नियत स्थानों में उन्हें चारा नहीं मिलता है, तब वे खेतों और बग़ीचों में भी भटक जाते हैं। जब जिराफ का छोटा झुंड डर कर भागता है तब वह रास्ते के क़हवे के बग़ीचों को कुचल डालता है।

क़हवा के बग़ीचों के गोरे मालिक एक बार जिराफ़ों से हैरान थे। ऐसे ही समय में अजायबघर के प्रतिनिधि जिराफ़ की तलाश में यहाँ आये अतः उन्हें बड़ी सहायता मिली। गोरे मालिकों ने जिराफ़ हँकवाने के लिये अपने काले मज़दूर भेज दिये। कुछ गोरे लोग भी मदद देने आये। एक स्थान पर लगभग ४०० मूलनिवासी इकट्ठे हुए। कुछ लोग जिराफों के झुंड का पता लगाने गये। उन्होंने लौट कर खबर दी कि बोमा (बाड़े) से ५ मील की दूरी पर २५ जिराफ़ों का एक झुंड है।

झुंड को फँसाने की तयारी होने लगी। एक होशियार लड़का बाड़े के दरवाजे से २५ गज की दूरी पर एक झाड़ी की आड़ में बिठा दिया गया। इस छिपने की जगह पर एक बड़े रस्से का सिरा पहुँचाया गया। पहले यह रस्सा एक भारी लट्ठे में दुहरा लपेट दिया गया था। रस्से का दूर वाला दूसरा सिरा दस गज ऊँचे दो खम्भों की चोटी से बाँधा गया था। खम्भों के निचले भाग दरवाज़े पर अटका दिये गये थे। इस पर छिपा हुआ लड़का रस्से के सिरे को खींच कर बड़ी आसानी से इन खम्भों को दरवाज़े पर गिरा सकता था। एक गोरा बहुत ऊँचे पेड़ पर बिठा दिया गया था। उसका काम यह था कि वह ऊपर से सब कुछ देखता रहे। जब सब जिराफ दरवाज़े के भीतर आ जावें तब वह सीटी बजाकर छिपे हुए लड़के को खम्भा गिराने का इशारा करे।

इसी प्रकार दूसरे लोगों को अलग अलग काम सौंपा गया। उन्हें इस बात की कड़ी चेतावनी दी गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे किसी जिराफ को गोली न मारे। वे अपनी क़तार बनाये रहें। अगर जिराफ लौट कर मज़दूरों की क़तार तोड़ने की कोशिश करें तो छोटे लड़के ताली बजाकर और चिल्ला कर जिराफों को डरावें। वैसे सब लोग चुपचाप रहें।

जब सब ठीक हो गया तो एक पिस्तौल दाग़ी गई और आदमियों की क़तार (जिराफों के पीछे पीछे) धीरे धीरे आगे बढ़ी। अफ्रीका के हबशी मजदूरों को क़तार बनी रखने में बड़ी मुश्किल पड़ती थी। वे छः सात की टोली में बट जाते। एक टोली और दूसरी टोली में काफी जगह खाली छूट जाती। घुड़सवार गोरे मालिक उनको अक्सर घुड़कते थे।

एक दो मील चलने के बाद झुंड दिखाई दिया। दो बच्चे वाली मादा जिराफ कभी कभी चौकन्नी हो जाती। दूसरे बड़े जिराफ निश्चिन्त चरते थे। एक मील और बढ़ने पर दूसरे बड़े जिराफ भी सतर्क होने लगे। उनका नेता एक बुड्ढा जिराफ जो कम से कम ६ गज़ ऊँचा था बड़े ध्यान से मजदूरों की लाइन (क़तारा) की ओर देखने लगा। मजदूरों की लाइन धीरे धीरे चुप चाप आगे बढ़ती ही रही। तब तो इस बुड्ढे जिराफ नेता से न रहा गया। क्रोध में भरकर वह बड़े जोर से रंभाया। अपनी शानदार पूंछ को अपनी चौड़ी पीठ पर मोड़ कर वह दूसरे के पीछे दौड़ा। कुछ ही समय में ज़िराफ़ों का सारा झुंड चुप चाप खड़ा हो गया और आगे ताकने लगा। अधिक ऊँचे होने के कारण जिराफों ने दस गज़ चौड़े दरवाज़े को देख लिया उन्हें यह पसन्द न आया। अतः वे मजदूरों की लाइन तोड़ने के लिये बढ़े। पूर्व आदेश के अनुसार लड़कों ने ताली बजाई इस से उनकी चाल कुछ धीमी पड़ी। उन्हें यह नहीं जान पड़ा कि क्या करें। वे दूसरी ओर बढ़े। इस ओर भी उन्हें मज़दूरों की लाइन मिली। कभी वे आदमियों की कतार की ओर बढ़ते कभी वे झाड़ियों की दीवार की ओर जाते। धीरे धीरे वे बोमा (बाड़े) के दरवाजे की ओर आ रहे थे। बच्चों की मातायें बड़ी चिंतित थीं। अन्त में वे बाड़े के भीतर घुसे और सीटी बजी। सीटी के बजते ही दरवाज़ा बन्द हुआ और झुंड बाड़े में क़ैद हो गया।

फिर भी अभी बहुत काम था। बच्चों को बुड्ढों से अलग करने, उनको चारा-पानी देने और गाड़ी पर लादकर लाने में तरह तरह की कठिनाइयां पड़ीं।

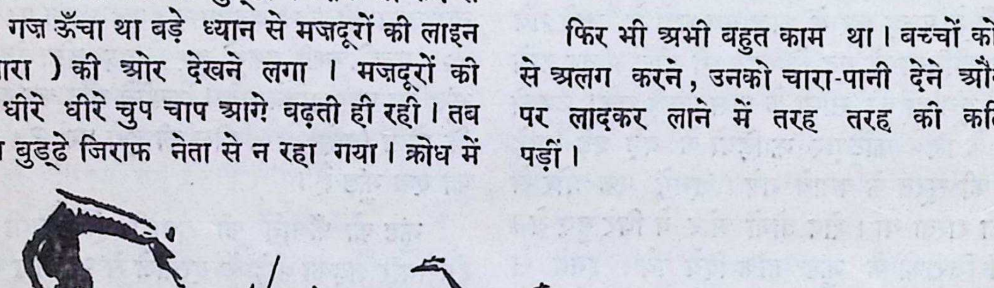

जिराफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलगाड़ी

रेल गाड़ी का आरम्भ इङ्गलैण्ड में हुआ। लेकिन वहाँ रेलगाड़ी बनने के बहुत पहले रेल की पटरियाँ बिछ गयी थीं। वहाँ कोयले की खानें बन्दरगाहों से कुछ दूर थीं। कोयले की भरी हुई बड़ी-बड़ी गाड़ियों में घोड़ा जोता जाता था।

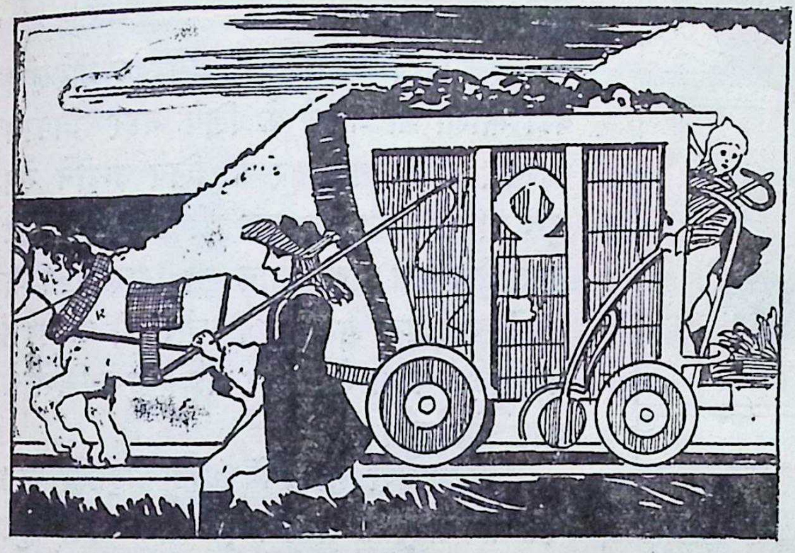

कोयला ढोने की गाड़ी।

खान से बन्दरगाह और बन्दरगाह से खान को घोड़ा गाड़ियाँ बार-बार आती-जाती थीं। इससे कच्ची सड़कों पर गहरी लीक (खाई) बन गई। इनकी कीचड़ में पहिये अक्सर फँस जाते थे। इसलिये उनके रास्ते में लकड़ी के तख़्ते बिछा दिये गये।

कोयले से भरी हुई भारी गाड़ियों ने लकड़ी के तख़्तों को भी बहुत जल्द घिस डाला। लकड़ी को शीघ्र घिसने से बचाने के लिये उसके ऊपर लोहे की पत्तियाँ जड़ दी गईं। वर्षों तक घोड़े गाड़ियाँ इसी तरह के रास्तों पर चलती रहीं।

कुछ समय बाद ज़िन्दा घोड़े की जगह लोहे का घोड़ा गाड़ी खींचने लगा। यह बात बहुत पहले ही से लोगों को मालूम थी कि जो भाप खौलते हुए पानी से बनती है उसमें बहुत बड़ी शक्ति होती है। इस शक्ति से कैसे काम लें यह उन्हें मालूम न था। फिर भाप के जोर से चलने वाले इञ्जिनों से काम लिया जाने लगा।

कगनार नामी एक फ्रांसीसी फौजी सरदार ने भाप के इञ्जिन से अपनी तीन पहिये की गाड़ी चलाई। उसका इञ्जिन बहुत छोटा था। उसने भारी तोपों को रोकने के लिए यह इञ्जिन बनाया था। यह गाड़ी कच्ची सड़क पर चलती थी। एक बार पेरिस की सड़क पर उसकी गाड़ी उलट गई। तब से लोग उसकी गाड़ी को खतरनाक समझने लगे।

एक अंग्रेज ने रेल की पटरियों पर चलने वाला इञ्जिन बनाया। लेकिन जार्ज स्टीवेन्सन नामी एक अंग्रेज नौजवान ने सब से अच्छा इञ्जिन बनाया। पहले उसने घड़ी साज़ी का काम सीखा था। फिर वह इञ्जन बनाने का काम करने लगा। उसने अपने इञ्जिन का बाइलर बहुत लम्बा बनाया। इञ्जिन की चिमनी भी बहुत ऊँची थी। इससे भाप बहुत जल्द बनती थी। और इञ्जिन तेज़ चलता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयला ढोने के लिये पहली रेलगाड़ी को स्टीवेन्सन ने अपने आप चलाया था। उन

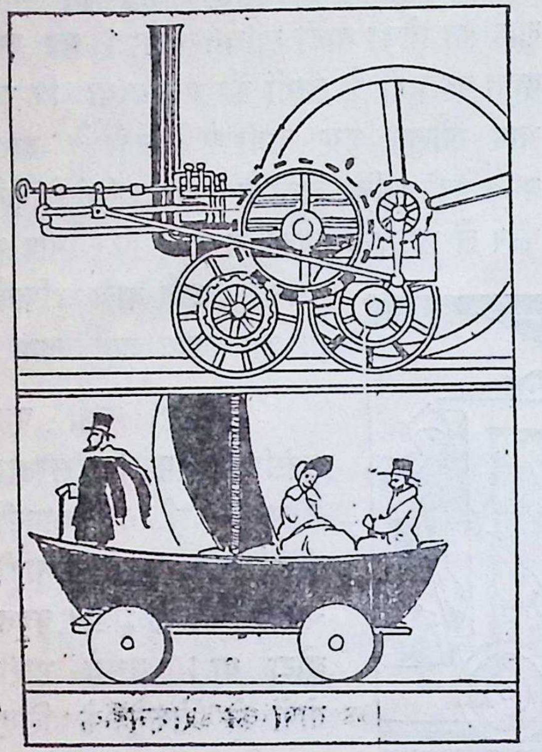

ऊपर तीन पहिये की गाड़ी है। नीचे बादवान वाली गाड़ी है। यह कुछ दिन के लिये अमरीका में चलीथी।

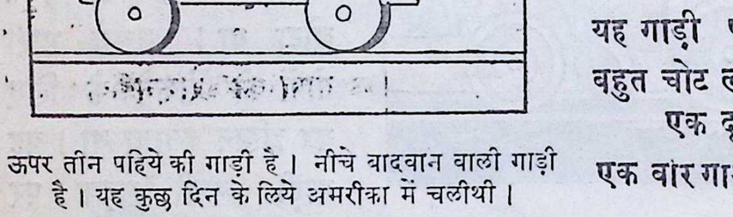

पहली रेलगाड़ी।

दिनों फक-फक धुआँ निकालने वाले लोहे के घोड़े या इञ्जिन से अंग्रेज लोग बहुत डरते थे। इसलिये इञ्जिन के आगे-आगे लाल झण्डा लेकर एक आदमी असली घोड़े पर चढ़ कर चलता था। पहले अंग्रेज लोग इस इञ्जिन से खिंचने वाली गाड़ी पर चढ़ने से डरते थे। वे सोचते थे कि कहीं पहिये उड़ न जावें पड़ोस वाले अंग्रेज किसान समझते थे कि इञ्जिन के धुँआ से उनकी मुर्ग़ियाँ मर जायंगी।

इन दिनों अमरीका में बसे हुए गोरे लोग बड़ी झीलों को जोड़ने के लिये नहर निकाल रहे थे। थोड़ी-थोड़ी दूर के लिये उन्होंने रेल शुरू की थी। उनकी शुरू की गाड़ी में घोड़े जुतते थे। एक गाड़ी नाव की सूरत की थी उसमें बादवान लगा था। ज़ोर की आँधी में यह गाड़ी पटरी से उलट गई। मुसाफिरों के बहुत चोट लगी।

एक दूसरी गाड़ी में घोड़ा जुतता था। एक बार गाड़ी के रास्ते में एक गाय आगई बहुत हाँकने पर भी गाय रास्ते से न टली। इससे घोड़ा भड़का और गाड़ी खाई में जा गिरी।

अब से लगभग सौ वर्ष पहले अमरीका में घोड़ा गाड़ी और रेल गाड़ी की दौड़ हुई। मज़बूत घोड़ा एक दम पूरी चाल से दौड़ने लगा। इञ्जिन ड्राइवर को आग में लकड़ी डालने में कुछ देर हुई लेकिन जब भाप तेज हुई तो रेल गाड़ी ने बढ़ कर घोड़े को पीछे कर दिया। फिर दैव योग से रेल के इञ्जिन की एक पेटी फिसल गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको ठीक करने में ड्राइवर को काफ़ी देर लगी। इतने में घोड़ा गाड़ी ने बढ़ कर रेल को पीछे कर दिया और दौड़ जीत ली।

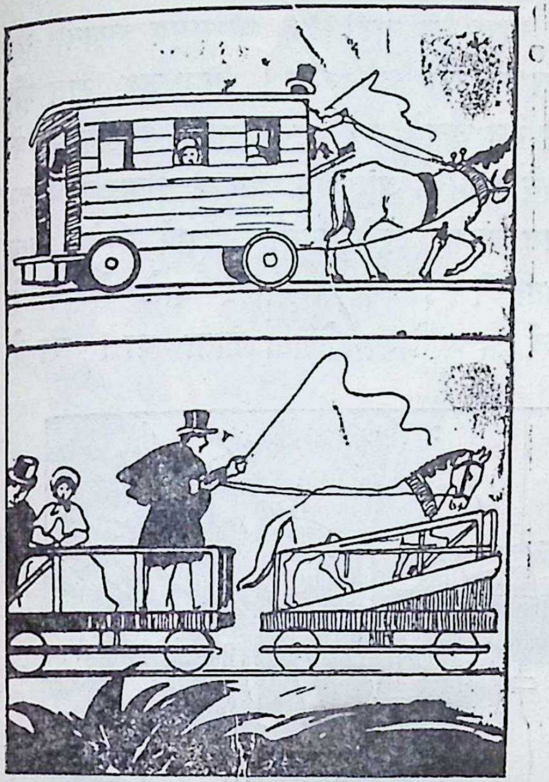

घोड़ागाड़ी और रेलगाड़ी की दौड़।

एक दो वर्ष तक घोड़े रेल के साथ दौड़ने की हिम्मत करते रहे। पर अन्त में रेल गाड़ी का बोल बाला हुआ।

अमरीका की एक रेलगाड़ी के इञ्जिन में भाप निकलने का स्थान न था। अतः भाप के वेग से बाइलर फट गया और गाड़ी रुक गई।

पहली रेल गाड़ी में डब्बे छोटी जञ्जीरों से जुड़े रहते थे। इससे मुसाफिरों को बहुत झटके लगते थे। पीछे से वे तार से बांधे गये।

पहले के इञ्जिनों में गाड़ी की तरह पहिये होते थे। वे केवल समूचे इञ्जिन के साथ घूमते थे। वे अलग से नहीं मुड़ सकते थे। इससे डब्बे अक्सर पटरी से अलग गिर पड़ते थे। इससे इञ्जिन के अगले भाग के नीचे एक ऐसा छोटा डब्बा रख दिया गया जिसमें छोटे-छोटे पहिये पास-पास लगे रहते थे। इस तरह से सारा इञ्जिन आसानी से रेल गाड़ी के रास्ते पर मुड़ सकता था।

फिर लोगों ने ऐसा सुधार किया जिससे इञ्जिन का चिकना पहिया पटरी को पकड़ कर चले। इङ्गलैण्ड के डब्बे भारी होते थे। इससे उनके डब्बे बोझ के कारण पटरी पर ही रहते थे। शुरू में अमरीका के डब्बे हलके होते थे। उनके चलने वाले पहिये सलाख से जोड़ दिये गये। इससे बोझ बट जाता था। पहले इञ्जिन में लकड़ी जलती थी। इंजिन बहुत सी चिनगारियाँ फेंकता था। उसका धुआँ बहुत अधिक और काला होता था। चिनगारियों को पकड़ने के लिये इंजन की टोंटी का ऊपरी सिरा चौड़ा कर दिया गया। अगर लकड़ी कम हो जाती थी तो मुसाफिर उतर कर इंजिन के लिये इधर-उधर से लकड़ी इकट्ठी कर लेते थे। कुछ मुसाफिर इंजिन के लिये पानी ले आते थे।

इंजिनों में नम्बर डालने के बदले उनका नाम रक्खा जाता था। कुछ इंजिनों में तस्वीरें बनी रहती थीं। कुछ इंजिन लाल पीले रङ्ग से रङ्गे जाते थे।

रेल की पटरी के दोनों ओर घेरा नहीं रहता था। धीरे-धीरे जानवर रेल की आवाज के इतने आदी हो गये कि वे रेल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते में चरते रहते और रेल के आने पर भी नहीं हटते थे। गाय को पकड़ने के लिये इंजिन के आगे एक लम्बा और नीचा कांटा सा लगाया गया। कभी कभी गाड़ी हांकने वाला सूखी मटर का झोला और बन्दूक ले कर इस पर बैठता था। वह सूखी मटर के छर्रे (दाने) बन्दूक में भर कर गायों को मारता था। उन दिनों रेल थोड़ी दूर तक जाती थी। लम्बे सफर के मुसाफिरों को रेल से सामान उतार कर पैदल, नाव या घोड़ा गाड़ी पर बचा हुआ सफर पूरा करना पड़ता था।

अमरीका में एक किनारे से दूसरे किनारे (अटलाँटिक महासागर से प्रशान्त महासागर तक) रेल बनने लगी। रेलका बनाना दो तरफ से शुरू हुआ। प्रशान्त महासागर की ओर मज़दूर, रसद पटरी और दूसरा सामान नाव के द्वारा दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी सिरे से हो कर भेजा जाता था। वहां पहुँचने में कई महीने लग जाते थे। मज़दूरों को बन्दूक पास रख कर काम करना पड़ता था। अक्सर रेड इंडियन लोगों से लड़ाई हो जाती थी। फिर भी छः वर्ष में रेल पूरी हो गई। इस रास्ते में रेडइंडियन पहले तीर कमान से बिसन का शिकार करते थे। अब गोरे लोग बन्दूकों से शिकार करने लगे। पहले यहाँ बिसन का कोई कोई झुंड ३५ मील लम्बा था। गोरों के आने जाने के बाद कुछ ही समय में शिकार और शिकारी दोनों प्रायः नष्ट हो गये।

रेल की पटरी पहले लकड़ी फिर पत्थर की बनी। अन्त में वह फौलाद की बनने लगी। रेल के रास्ते से नदियों में पुल और पहाड़ों में सुरंग बन गये। रेल को पहाड़ के ऊपर चढ़ाने में कठिनाई होती है। पहाड़ के भीतर से बड़ा सूराख (सुरंग) बनाकर रेल का रस्ता तयार करना अधिक आसान है।

पहले रेल गाड़ी दिन के समय चलती थी रात को ठहर जाती थी। फिर जब रात को भी रेल चलने लगी तब रस्ता दिखलाने के लिये इंजन के आगे एक लोहे के चौकटे के भीतर आग जलाई जाने लगी। इसके नीचे बालू रहती थी। इंजिन इस चौकठे वाले रोशनी के डब्बे को आगे आगे ठेलता जाता था। इस के

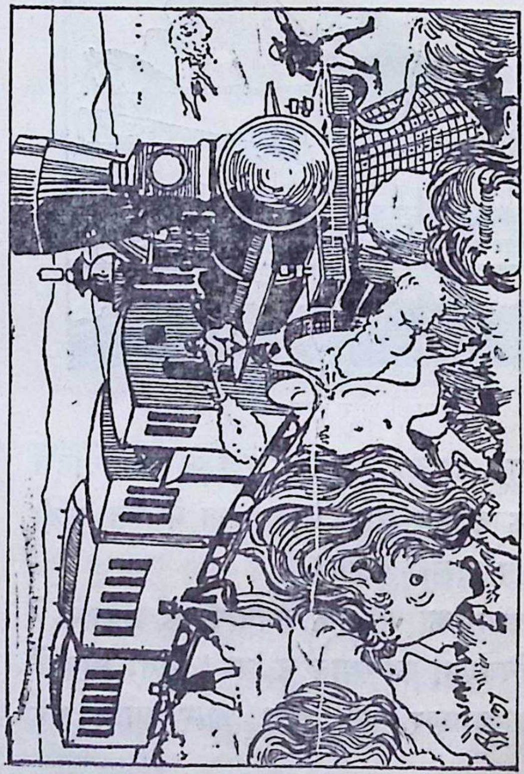
बिसन का शिकार

बाद मोम बत्ती वाली लालटीन से रोशनी होने लगी। इसकी रोशनी बहुत कम होती थी। फिर असली तेल जलाने वाली लालटीन जलाई जाने लगी। आजकल इंजिन के आगे बिजली की तेज रोशनी होती है कि लग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भग एक मील आगे का रास्ता दिखाई देने लगता है।

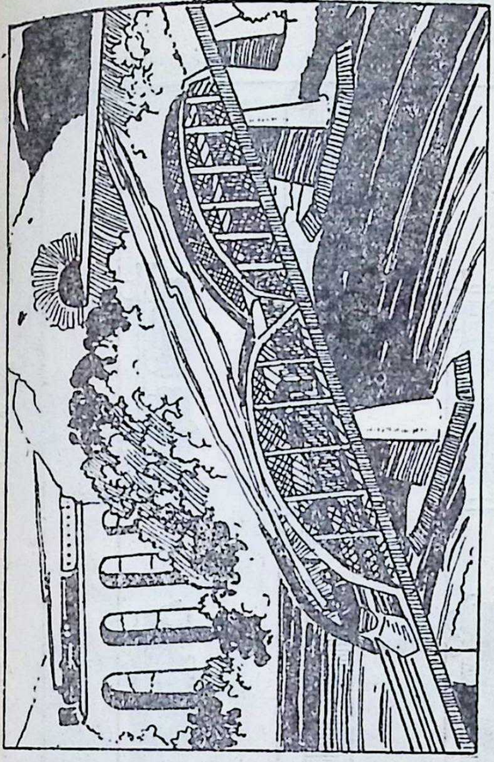

१—रेल का पुल।

(सिगनल) जब रेल में पहले घोड़ा जुतता था तो दो तरफ से आने वाले घोड़ों को मुड़ने और ठहरने के लिये स्थान नियत होते थे। नियत स्थानों पर एक घोड़ा ठहर जाता और दूसरा चला जाता। जब रेल को लोहे के घोड़े या इंजिन खीचने लगे तब सिगनल या इशारों की आवश्यकता पड़ने लगी। स्टेशन पर ऊँचे लट्ठ के ऊपर एक बड़ा टाल होता था। जब गाड़ी आने का समय होता तब स्टेशन मास्टर इस पर चढ़ जाता। जहाँ दूर से गाड़ी का धुआँ दिखाई देता वह लोगों को खबर देने के लिये नीचे उतर कर घंटी बजाता। आजकल इंजिन ड्राइवर को आगाह करने के लिये ठहरने, चलने, धीमा करने, तेज़ करने, सीटी बजाने आदि कई तरह के सिगनल या इशारे हैं। बहुत से इशारे लाल टीनों से किये जाते हैं।

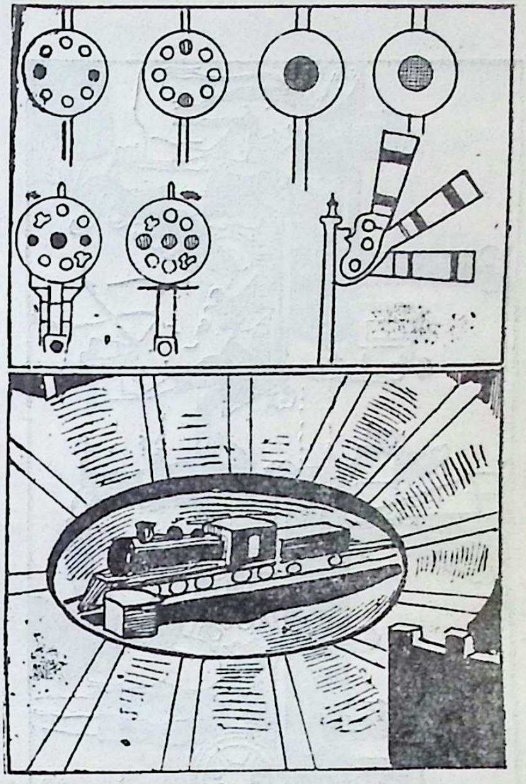

२—रेल के सिगनल।

इंजिन के छोटे कमरे में ड्राइवर और कोयला झोंकने के लिये खलासी रहते हैं। एक तरफ ड्राइवर रहता है वह रोशनी के इशारे को देखता है। उसका हाथ सामने के हत्थे वाले लेवर पर रहता है। उस के पास ही इंजिन रोकने और उल्टी ओर ले जाने की टोंटी होती है। खलासी रास्ता देखता है और दूसरी ओर से इशारा करता है।

कहीं दो या अधिक रेलवे लाइनें मिलती हैं। इसे जंकशन स्टेशन कहते हैं। किसी २ जंकशन स्टेशन के पास एक गोल घेरा या चक्कर होता है। इसपर इंजन को चढ़ाकर सफ़ाई या मरम्मत करने के लिये इंजिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदाम में भेजते हैं। यहां कई पटरियां मिलती हैं। चक्के को घुमाकर इंजन को जिस पटरी पर चाहें उस पर उतार देते हैं। रेलगाड़ी में

हैं। चलते समय दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। लेकिन मुसाफिर खिड़कियों को खुला रख सकते हैं।

३—दो तरफ़ से आने वाली गाड़ी

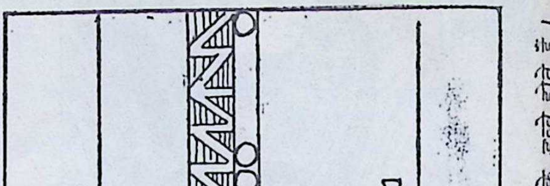

४—कोयला ढोने की गाड़ी। रेलगाड़ी में कई तरह के डब्बे होते हैं।

कई तरह के डब्बे होते हैं। मालगाड़ी के डब्बों में बड़े सन्दूक की तरह ताला बन्द रहता है। स्टेशन आने पर केवल माल उतारने के लिये ताला खोला जाता है। जानवरों वाले डब्बों में सींकचे लगे रहते हैं। इससे उन्हें हवा मिलती रहती है। तेल ढोने के लिये लम्बी गोल टङ्की रहती है। पानी ढोने के लिये चौकोर टङ्की रहती है।

मुसाफिर सवारी गाड़ी में बैठते हैं। इनमें बैठने के लिये नीचे तख्ते या चौकी और ऊपर सामान रखने के लिये जगह होती है। इनमें बहुत सी खिड़कियाँ और दरवाज़े होते

जिस भाप के ज़ोर से इंजिन चलता है और रेलगाड़ी खींचता है वह इंजिन के भीतर बनती है। एक बाइलर होता है। इसमें बहुत से लम्बे ट्यूब (नल) लगे रहते हैं। यह सब पानी से घिरे रहते हैं। जब इंजिन की भट्टी में आग या कोयला जलता है तब गरम गरम गैसें इन लम्बे नलों से गुज़र कर पानी को गरम कर देती हैं। पानी इतना गरम हो जाता है कि उससे भाप बनने लगती है। गैस इंजन की चिमनी द्वारा बाहर निकल जाती है। गरम होते होते इंजिन में बड़ी ताक़त आ जाती है। इंजिन ड्राइवर इसी ताक़त से काम लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंजिन और गाड़ी को चलाता है। इंजिन के दोनों ओर दो ओर सिलिंडर होते हैं।

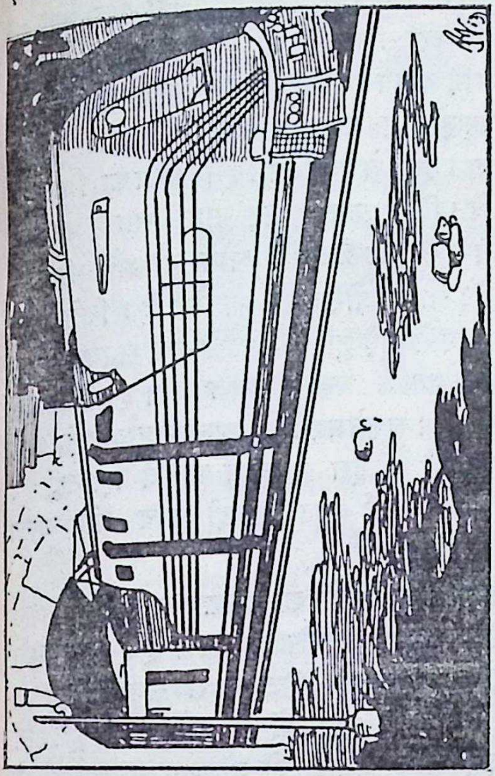

५—नये ढंग की गाड़ी।

हर एक सिलिंडर के अन्दर एक पिस्टन होता है। यह आगे पीछे होता रहता है। छड़ों के द्वारा पिस्टन पहियों से जुड़ा रहता है। पिस्टन छड़ों को चलाते हैं और छड़ इंजिन के पहियों को चलाते हैं। इसी से फिर भारी भारी डब्बे चलते हैं। कुछ इंजिनों को अधिक तेज़ चलाने के लिये भाप को फिर से गरम करते हैं। कुछ इंजिनों में कोयला जलता है। कुछ इंजिन में मिट्टी का तेल जलाते हैं। कुछ इंजिन अब भी लकड़ी जलाते हैं। कुछ इंजिन बिजली के ज़ोर से चलते हैं। उनमें धुआं बिलकुल नहीं होता।

कई देशों की रेलगाड़ियों में मुसाफिरों को आराम कुरसी, मुलायम गद्दे बैठने और लेटने के लिये मिलते हैं। उनमें भोजन करने, पढ़ने और रेडिओ का गाना सुनने के कमरे होते हैं। इन में मुसाफिर अपनी सुविधा अनुसार हवा को गरम और ठंडा कर सकते हैं। नये ढंग की रेलगाड़ियां फौलाद और अल्मोनियम के मेल से सुन्दर और मज़बूत बनाई जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्सेमबर्ग

अब से चार पांच सौ वर्ष पहले योरुप छोटे छोटे राज्यों में बटा हुआ था। आज कल वे सब लुप्त हो गये हैं। इन में केवल लक्सेमबर्ग बचा है।

अगर हम बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स शहर से वाल इक्सप्रेस (गाड़ी) पर सवार हों तो हम ३ घंटे में लक्सेमबर्ग की सीमा के पास पहुँच जायँगे। यहाँ इस जेबी रियासत के चुंगी के अफसर नीली वर्दी पहने हुए मुसाफिरों के सामान की जांच करेंगे। लक्सेमबर्ग का राज्य बहुत छोटा है। इसका क्षेत्रफल केवल १००० वर्ग मील है। इसका अर्थ है कि यदि हम मोटरकार द्वारा एक या सवा घंटा किसी दिशा में यात्रा करें तो हम लक्सेमबर्ग की बाहरी सीमा पर पहुँच जायेंगे और हमको अपना पास पोर्ट दिखलाना पड़ेगा। लक्सेमबर्ग में लगभग ३ लाख आदमी रहते हैं। अधिकतर लोग फौलाद तयार करते हैं और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हाथ बेच देते हैं। इसी से लक्सेम वर्ग के लोग इतने मालदार और स्वाधीन हैं। पर वे बहुत बलवान नहीं हैं। वह फ्रांस बेल्जियम और जर्मनी के बीच में घिरा हुआ है। इन तीनों में जो लड़ाई में विजयी होता है लक्सेमबर्ग उसी के साथ मिल जाता है। पिछली बार लक्सेमबर्ग जर्मनी से मिल गया।

लक्सेमबर्ग में बेकारी का नाम नहीं है। १९२९-३१ में कुछ समय के लिये १०० आदमी बेकार हो गये थे फिर उन्हें भी काम मिल गया था। अब तो वे इनकम टैक्स देते हैं। स्टेशन से बाहर आते ही लक्सेम वर्ग की दौलत के निशान दिखाई देने लगते हैं। पहले बढ़िया मोटर कार सामने पड़ते हैं। वे किराये पर चलते हैं। लेकिन अगर एक गाड़ी वाले से तुम इनकार कर दो तो दूसरा गाड़ी वाला अपने कार पर तुम्हें कभी नहीं बिठायेगा। लक्सेमबर्ग के बहुत थोड़े लोग घरों में मजदूरी करने को तयार होते हैं। अगर कोई लड़की घरेलू नौकरी करती भी है तो वह लन्दन, पेरिस या बर्लिन को जाती है। लक्सेमबर्ग के लोग फ्रांस वालों से जलते हैं। बेल्जियम और जर्मनी से उनका सम्बन्ध बहुत अच्छा है। जर्मनी वाले अपनी सीमा के पास लक्सेमबर्ग वालों से बहुत अच्छा बर्ताव करते हैं। मर्क्स (जर्मन) सिक्का लाने की अवश्य मनाई है। इसके सिवा यात्री वहाँ जो चाहे सो कर सकता है।

पुराने समय में लक्सेमबर्ग बहुत बलवान था। नगर पहाड़ी पर बसा था और चारों ओर किलों से घिरा था। इसी से कुछ लोग इसे योरुप का जिब्राल्टर कहते थे। जिस पहाड़ी पर नगर बसा है वह तीन ओर से १५० फुट ऊँची है। चौथी भी ओर भी काफी ढालू है। चारों ओर किलों का घेरा है। किले सुरंग द्वारा शहर से जुड़े हुए हैं। पहले कुछ समय तक इन सुरंगों का पता न चला। आज कल इनमें बिजली लग गई है। लक्सेमबर्ग में अन्त राष्ट्रीयता के भाव बहुत बढ़ रहे हैं। इस राज्य में कोई बे पढ़ा नहीं है। स्कूलों में विद्यार्थी बहुत अच्छी फ्रेंच और जर्मन भाषा बोल सकते हैं।

लक्सेमबर्ग वालों का सिक्का अलग है। लेकिन वहाँ बेल्जियम का भी सिक्का चलता है। लक्सेमबर्ग का फ्रैंक (सिक्का) बेल्जियम से सवाया है। इस लिये लोग हिसाब लगाने में बड़े पक्के हो गये हैं। हाल में हज़ारों यहूदी जर्मनो को छोड़कर लक्सेम वर्ग में आ गये हैं। इससे यहाँ की पुलिस का काम बढ़ गया है।

लक्सेमबर्ग में स्वयं सेवकों की छोटी सेना भी है। इस में २३० अफसर और सिपाही हैं। वे ऊँची टोपी और हरियाली मायल खाकी वर्दी पहनते हैं। ड्रिल के समय वे फ्रेंच भाषा में आर्डर देते हैं। उनकी राइफिलें जर्मनी की बनी हैं बड़ी लड़ाई के समय उन्हों ने इन राइफिलों को छीन लिया था। उनके यहाँ सिर्फ दो तोपें हैं। पर उनको इस्तैमाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। लक्सेमबर्ग के लोग कई तरह का भोजन करते और बनाते हैं। उन्हें जंगली सुअर का मांस बहुत अच्छा लगता है। वह अक्सर जर्मनी की ओर से आता है। हाल में जनरल गोयरिंग ने इसकी मनाई कर दी है। लक्सेमबर्ग वालों को अपने देश के ऊँचे पुलों पर बड़ा अभिमान है। उनका प्रधान शहर इन्हीं पुलों द्वारा पड़ोस के नीचे भागों से जुड़ा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिलकुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० × ७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १।।) सजिल्द १।।।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन-अंक के दो भाग हैं। पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें। मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद्, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है। इसमें कई नक़शे और चित्र हैं। बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ॥)।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है। प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे। चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर)। इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं। अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं। मूल्य ॥) दोनों भागों का एक साथ मूल्य ॥।)।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ़्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, भील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ़) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार रेखाओं, धाराओं, गल्फ़ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारख़ानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

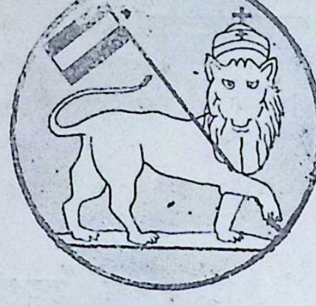

एबिसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ।।) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

भूगोल एटलस

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११९ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल का गंगा-अंक

आगामी जनवरी में "भूगोल" का गंगाङ्क प्रकाशित होगा। इस अंक में गंगोत्री से गंगासागर तक गंगा जी का सचित्र वर्णन रहेगा। प्रोफ़ेसर दयाशंकर (प्रयाग विश्वविद्यालय) इस अंक के सहकारी सम्पादक रहेंगे। वर्षों से उन्होंने जो सामग्री इकट्ठी की है वह उन्होंने इस अंक को सम्पादित करने के लिये भूगोल-कार्यालय को दे दी है। इसमें ३५ बड़े बड़े (पूरे पृष्ठ के) नक़्शे, कुछ छोटे नक़्शे और सौ से ऊपर चित्र रहेंगे। इस अंक के लिये गंगा के प्रायः समस्त मार्ग की यात्रा की जा चुकी है।

वास्तव में गंगा भारतवर्ष का प्राण है। इसकी गोदी में संसार की महत्व पूर्ण घटनायें हुई हैं। इस अंक को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। गंगाङ्क हिन्दी में एक अद्वितीय ग्रन्थ होगा। फिर भी इसका मूल्य केवल १) रु० होगा। डाक व्यय ।) "भूगोल" के जिन ग्राहकों का चन्दा मई १९३८ से अप्रैल १९३९ तक आ गया है या आगामी दिसम्बर तक आ जावेगा। उनको गंगाङ्क चन्दे में ही मिलेगा।

वर्नाक्यूलर फ़ाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्नपत्र और उनके आदर्श उत्तर

यह पुस्तक दो भागों में है। प्रथम भाग (१९२१-३०) का मूल्य ॥) और द्वितीय भाग (१९३१-३८) का मूल्य ॥)। ३१ दिसम्बर १९३८ तक आर्डर देने वालों को दोनों भाग ।≈) में ही मिलेगा। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिये हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति

ले० श्री निरंजन लाल शर्मा एम० एस० सी० लिवर पूल (इंगलैंड) और बनारस एफ० ए० एस-सी लेक्चरर-डिमांस्ट्रेटर, ज्योलाजी डिपार्ट मेन्ट इण्डियन स्कूल आव माइन्स धनबाद। प्रकाशक भूगोल कार्यालय प्रयाग। रायल साइज की पृष्ठ संख्या १२०, इस पुस्तक में भूगर्भ विद्या के विद्वान लेखक ने सोना, चांदी, तांबा, लोहा कोयला आदि भारतवर्ष की समस्त खनिज सम्पत्ति का बहुत ही रोचक ढंग से वर्णन किया है। स्थान स्थान पर चुने हुए चित्र और नक्शे दिये गये हैं। अपने देश की सम्पत्ति को पहचानने और बढ़ाने वाले सभी व्यापारियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के बड़े काम की है। मूल्य केवल ६)

"भूगोल"--कार्यालय इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" की नई योजना

देश-दर्शन

के सम्बन्ध में मध्य प्रान्त के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री और वर्तमान प्रधान मंत्री माननीय पंडित रविशंकर शुक्ल जी का शुभ सन्देश

MINISTER CENTRAL PROVINCES AND BERAR

कैम्प-पचमढ़ी
८.६.३८

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद से
श्री पंडित रामनारायण जी मिश्र
'देशदर्शन' नामक ग्रंथावली
प्रतिमास निकाल रहे हैं। आधुनिक
जनता में संसार के देशों का ज्ञान
फैलाना वर्तमान परिस्थिति में
विशेष महत्व की बात है। इस
का लाभ प्रत्येक व्यक्ति व
संस्था को उठाना चाहिये।
मैं पंडित जी को कई वर्षों से
जानता हूं और मेरा विश्वास है
कि यह ग्रन्थमाला उपयोगी
होगी।

रविशंकर शुक्ल
शिक्षामंत्री

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by Sheopal at the Bhugol Press; 306, Jumuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र
सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

सितम्बर १९३८

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल-कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१९२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १५ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १५ वर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुए सूची-पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक़, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बल्गेरिया, यूगोस्लेविया, हङ्गरी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, जर्मनी, डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फ़िनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देशवासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका "भूगोल" कार्यालय, भूगोलसम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नक़्शों का संग्रह करता रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेज़ी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें।

आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्राक्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों की बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तैयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तैयार हैं। आप उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तक-माला का आयोजन किया है। इसमें २०० पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी। पुस्तक चित्रों और नक़्शों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। काग़ज़ कवर, छपाई सफ़ाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ४०) होगा। इस सम्बन्ध में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशङ्कर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—
रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—संसार की हवाई फौज	१
२—दक्षिण दिशा में (विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.) ...	४
३—गुप्त कालीन व्यापार	८
४—पाताल प्रवेश (ठा० कर्ण सिंह सब० डि० इं० बांदा) ...	१२
५—मध्य भारत की भौगोलिक परिस्थिति एवं उसका प्रभाव (लाल भानु सिंह बाघेल) ...	१३
६—आस्ट्रेलिया की लोमड़ियाँ	१५
७—जातियों का कोष	१६
८—लोहा और फौलाद	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १६] आश्विन सं० १९९५, सितम्बर १९३८ [सं० ५

संसार की हवाई फौज

लड़ाई छिड़ जाने पर हवाई जहाज बनाने वाले कारखाने शायद उतनी तेज़ी से तयार न कर सक्के जितनी तेज़ी से वे नष्ट होवे हैं। इस लिये हर एक देश इस बात का प्रबन्ध करता है कि हर एक लड़ने वाले हवाई जहाज के पीछे तीन चार दूसरे जहाज जरूरत के लिये तयार रहें।

इस प्रकार यदि किसी देश में १००० सैनिक हवाई जहाज़ घोषित किये जाते हैं तो इसका अर्थ यह होता है कि वहाँ तीन या चार हज़ार हवाई जहाज और तयार रहते हैं। इस लिये किसी देश के सैनिक हवाई जहाज़ों का ठीक ठीक पता लगना कठिन हो जाता है। जर्मनी ने अपनी हवाई शक्ति और भी गुप्त रक्खा। इस लिये जर्मनी के हवाई जहाज़ों की संख्या किसी ने २५,००० किसी ने ३७००, किसी ने १०,००० बतलाई पर इसमें संदेह नहीं कि इस समय जर्मनी के सैनिक हवाई जहाजों की संख्या १५०० से कम नहीं है। जर्मनी में हवाई जहाज तो तेज़ी से बने लेकिन उनके चलाने वाले उड़ाके उतनी तेज़ी से तयार न किये जा सके। इनको सिखाने में अक्सर दुर्घटनायें हुई जिन्हें जर्मन सरकार को अक्सर छिपाना पड़ा। जर्मनी के सैनिक हवाई जहाज़ों में बाम्ब गिराने वाले कई प्रकार के हवाई जहाज़ों की अधिकता है। लगभग आधे जहाज़ बाम्ब गिराने वाले हैं। इन में आधे से अधिक बड़े बड़े जहाज़ हैं जो एक टन (२७ मन) से अधिक बाम्ब एक बार में ले जा सकते हैं। इनका रेडियस या अर्द्ध व्यास जाकर लौट आने का फासला ४०० मील से ऊपर है। इस पर जर्मनी के सैनिक हवाई जहाज़ योरुप की बड़ी बड़ी राजधानियों में बाम्ब गिराकर बड़ी आसानी से लौट आ सकते हैं। जर्मन मशीनें अच्छी अवश्य गिनी जाती हैं लेकिन स्पेन में जिन जर्मन हवाई जहाजों का प्रयोग हुआ। उनकी रफ़्तार रूसी इटेलियन और अमरीकन हवाई जहाजों के मुकाबिले में कम रही। उनकी संहारक शक्ति भी कम थी। १२००० फुट से अधिक ऊँचाई पर इन जहाज़ों की योग्यता में और भी कमी हो गई। लेकिन जर्मनी में जो नये ढंग के हवाई जहाज़ बन रहे हैं उनकी रफ्तार फी घंटे २०० मील है। जर्मनी में हवाई जहाज़ों की संख्या भी बढ़ रही है। शीघ्र ही यह संख्या ढाई या तीन हज़ार हो जायगी। इतने ही हवाई जहाज़ रिजर्व रहेंगे।

बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी में लड़ाई के हवाई जहाज खुल्लम खुल्ला न बन सके। अतः जर्मनी ने सिविल (जन साधारण के काम वाले) हवाई जहाज तयार करने में अपनी योग्यता बढ़ाई। लेकिन सिविल हवाई जहाज इस प्रकार बनाये जाते थे कि वे शीघ्र ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फौजी जहाजों में बदले जा सकते थे। इस तरह के २०० सिविल हवाई जहाज बाम्ब गिराने वाले जहाजों में बदले जा सकते हैं। पर अब जर्मनी में खुल्लम खुल्ला फौजी तैयारी हो रही है। इस लिये इस प्रकार के अर्द्ध सैनिक हवाई जहाजों के बढ़ाने की आवश्यकता न रही। फिर भी इस तरह के जहाज शान्ति के समय सिखाने और लड़ाई के समय लड़ने के काम आ सकते हैं। जर्मनी में हवाई जहाज और खेल की कई संस्थायें हैं। इनमें ५००० जर्मन हवाई जहाज उड़ाने की शिक्षा पा रहे हैं। वे रिजर्व का काम दे सकते हैं और लड़ाई के समय कमसे कम ५०० पाइलट (उड़ाके) सेना के लिये दे सकते हैं। इटली ने भी बड़ी गुप्तरीति से अपनी हवाई सेना बढ़ाई। एबीसीनिया की लड़ाई के बाद इटली ने बड़ी तेज़ी से हवाई जहाज़ों की फौज बढ़ाई। इस समय वहां लगभग १५०० हवाई जहाज़ हैं और वर्ष के अन्त में २००० हो जायँगे। इनमें एक तिहाई जहाज़ बाम्ब गिराने वाले हैं। वे ज़मीन की चीज़ों (फ़ौज, शहर आदि) पर निशाना लगाकर बाम्ब गिराने वाले हैं। एबीसीनिया की नाजुक स्थिति को सँभालने के लिये लगभग २०० हवाई जहाज़ इरीट्रिया और इटेलियन सुमालीलैंड में हैं। इतने ही जहाज़ लिबिया और डोडेकनीज़ (द्वीप समूह) में हैं। जब से इटली ने स्पेन की गृहकलह में हस्तक्षेप करने का निश्चय किया तब से बहुत से हवाई जहाज़ इटली ने स्पेन में भेज दिये हैं इटली अपने हवाई जहाज़ों को शांति के समय सिखाने के लिये और लड़ाई के समय लिबिया और एबीसीनिया भेज सकती है। खतरे के समय दूर दूर बिखरे हुए हवाई जहाज़ बड़ी आसानी से फिर इटली में इकट्ठे किये जा सकते हैं। योरुप की दूसरी शक्तियों के हवाई जहाज इतनी तेज़ी से उपनिवेशों से खतरे के समय घर नहीं लौट सकते हैं। इटली में २२० मील प्रति घंटे की चाल से उड़ने वाले ऐसे नये जहाज़ बन रहे हैं जिनका अर्द्ध व्यास ५०० मील है अर्थात् वे ५०० मील उड़ा कर बाम्ब गिराने के बाद फिर वापिस लौट सकते हैं। इस प्रकार ये जहाज लिबिया से उड़ कर सिकन्दरिया पोर्ट सईद और दक्षिणी ग्रीस यूनन में बाम्ब गिराकर लौट सकते हैं। भूमध्यसागर के अत्यन्त दूर के सिरे इन हवाई जहाजों की पहुँच के बाहर कहे जा सकते हैं। लेकिन इटली की भौगोलिक स्थिति खतरे से खाली नहीं है। इटली एक तंग और लम्बा देश है। तट बहुत लम्बा है। तट या स्थल सीमा के पास बसे हुए नगरों पर बड़ी आसानी से बाम्ब गिराये जा सकते हैं।

फ्रांस में कुछ समय तक हवाई जहाज़ों का बेड़ा सब से अधिक था, फ़िर फ्रांस पिछड़ गया। १९३७ में फ्रांस में लगभग ३४०० हवाई जहाज़ थे। इनमें १००० हवाई जहाज घर पर रहते थे, शेष उत्तरी अफ्रीका, लेवांट (सिरिया) फ्रेञ्च इण्डो चीन आदि उपनिवेशों में बँटे हुए थे। फ्रांस के पुराने जहाज नये ढंग के नहीं हैं। फ्रांस में बाम्ब गिराने वाले हवाई जहाज़ जर्मनी से कम हैं। लेकिन इस समय फ्रांस अपने हवाई जहाज़ों की संख्या को ड्योढ़ा कर रहा है। नये ढंग के जहाज कहीं अधिक भारी बाम्ब ले जा सकेंगे। ब्रिटेन में कुछ समय पहले केवल ८८० लड़ाका जहाज़ थे। लेकिन योरुप की स्थिति बिगड़ने लगी। एबीसीनिया की लड़ाई ने ब्रिटेन को चौकन्ना कर दिया। भूमध्यसागर की दुर्घटनाओं ने उसे डरा दिया। १९३६ में यहाँ ११०० सैनिक हवाई जहाज थे। इनमें २०० भारतवर्ष और ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे भागों में थे। घर पर केवल ९०० हवाई जहाज रह गये। लेकिन हवाई जहाज़ों की संख्या तेज़ी से बढ़ाई जा रही है। कुछ समय में २००० हो जायगी। २२० बढ़िया मशीनें हैं। ५ नये एअरक्राफ्ट केरियर बन रहे हैं। इनसे ७०० लड़ाका जहाज उपनिवेशों में पहुँचाये जा सकते हैं। ब्रिटेन के सिंगिल सीट फाइटर (हवाई जहाज़) दुनिया भर में सब से तेज़ हैं। वे एक घंटे में २८० मील की चाल से उड़ते हैं। कुछ जहाज़ ३०० मील फी घंटे की चाल से उड़ते हैं। बाम्ब गिराने वाले भारी हवाई जहाज़ २२० मील फी घंटे की चाल से उड़ते हैं। वे २००० मील तक धावा मार सकते हैं।

रूस का हवाई बेड़ा योरुप भर में सब से अधिक बड़ा है। यहाँ लगभग ४००० सैनिक हवाई जहाज़ हैं। इनमें लगभग तीन चौथाई लड़ने वाले जहाज़ हैं। ४०० बाम्ब गिराने वाले भारी हवाई जहाज़ हैं जो बहुत दूर जाकर बाम्ब गिराकर लौट सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूँकि रूस का राष्ट्र कई हजार मील तक फैला हुआ है इसलिये रूस ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया कि उसके लड़ाका जहाज़ बहुत दूर जाकर लौट सकें। स्पेन की गृह-कलह में रूस के हवाई जहाज़ जर्मनी और इटली के जहाज़ों से बहुत बढ़िया सिद्ध हुए। रूस के उड़ाका लोगों को बहुत अच्छी शिक्षा दी जाती है।

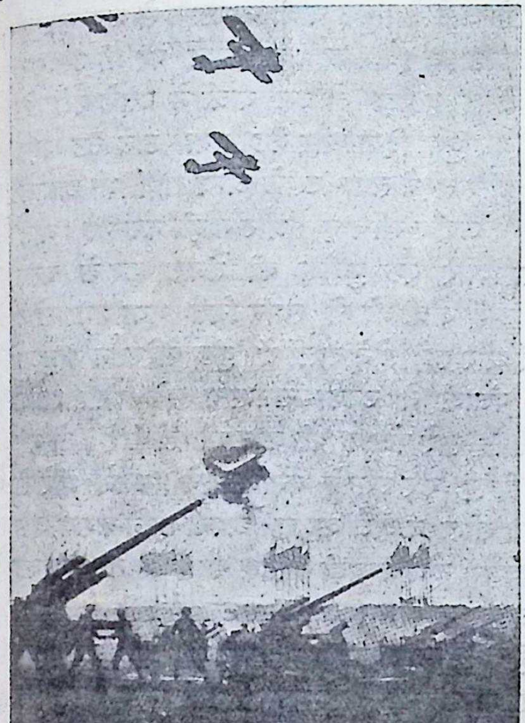

जर्मनी में हवाई जहाज़ उड़ाने वाली (एण्टी एअर क्रफ़्ट तोपों) और हवाई जहाज़ों की बनावटी लड़ाई।

जापान में १९३६ के अन्त में ८६० हवाई जहाज थे। इनमें आधे से अधिक हवाई जहाज़ जल-सेना को सहायता देने वाले थे। वे नये ढंग के नहीं थे। बाम्ब गिराने वाले हवाई जहाज़ बहुत कम थे। इसके बाद जापान ने अपने हवाई जहाज़ तेज़ी से बढ़ाये। लगभग एक तिहाई जहाज़ बाम्ब गिराने वाले बन गये। इनकी रेंज (गश्त लगाने की सीमा) १००० मील है। सैनिक जहाज़ों की संख्या इस समय १४०० से अधिक है। इनमें ८०० हवाई जहाज़ जलसेना की सहायता करने वाले हैं। १९३८ के जनवरी महीने में संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ११०० सैनिक हवाई

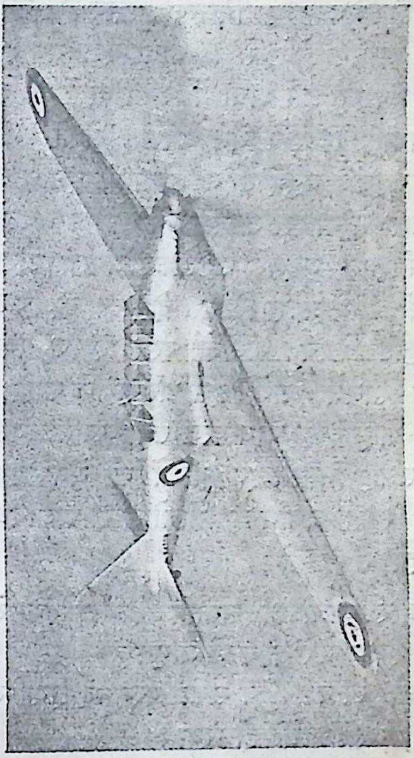

बम्ब गिराने वाला एक जहाज़

जहाज़ थे। ८०० बन रहे थे। १९४० में इनकी संख्या बढ़ कर २३२० हो जायगी। १९४१ में वहाँ जलसेना की सहायता करने वाले २०७० हवाई जहाज तैयार हो जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण दिशा में

[विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.]

सिन्धवाद जहाज़ी की यात्रा बड़ी विचित्र है। उसमें नये-नये देशों की अद्भुत बातों का वर्णन ऐसे अनोखे ढंग से किया गया है कि शुरू करने के बाद छोड़ने को जी नहीं चाहता। सचाई के साथ साथ उसमें मिथ्या का मिश्रण विशेष है। कल्पना की मात्रा अधिक होने से वह यात्रा बड़ी मनोरञ्जक हो गई है। परन्तु इस यात्रा में उन्हीं बातों का वर्णन किया जायगा जिनको मैंने अपनी आँखों से देखा है। यह कहना अनुचित न होगा कि इस यात्रा में मैंने आकाश से पाताल तक की चीजों का अवलोकन किया। विशाल महलों से लेकर जंगली टोडों की झोपड़ियों तक में प्रवेश किया। देश देश के चित्ताकर्षक प्राकृतिक दृश्य, अनोखे रस्म रिवाज़, विचित्र वेश-भूषा सामने आये। इस भ्रमण के साथ साथ मैंने कुछ सामुद्रिक, वानस्पत्य तथा खनिज वस्तुओं का भी संग्रह किया। इन चीज़ों को मैंने डी० ए० वी० हाई स्कूल प्रयाग के भौगोलिक अजायब घर में रख दिया है।

काश्मीर यात्रा को समाप्ति के बाद लंका देखने की प्रबल इच्छा मेरे हृदय में जागृत हुई। कई कारणों से कोलम्बो तो न पहुँच सका परन्तु दक्षिणी भारत का भ्रमण भली भाँति हो गया।

तारीख़ ६ जून सन् १९३८ को आगरा कैंट स्टेशन से २१॥।-) का टिकट मद्रास के लिये ख़रीदा और रात के दस बजे (Peshawar Madras Grand Express) से रवाना हुआ। भीड़ काफी थी जैसे तैसे बैठने को जगह मिली। बाहर अँधेरे का राज था इससे कोई चीज़ दिखाई नहीं देती थी। गाड़ी के अन्दर भी अन्धेर नगरी थी कुछ पंजाबी पठान तो लम्बी तान कर सो रहे थे। लेकिन कुछ यात्री स्थान न पाकर खड़े ही थे अगर कोई उनको जगाने की हिम्मत करता था तो वे उससे लड़ने लगते थे। स्टेशनों पर चीज़ बेचने वालों को ख़ूब तंग करते थे, पाँच सरदे लेकर एक छिपा दिया और चार का दाम दिया। जूते बेचने वाले से जूते लेकर एक ने पहन लिये न कीमत देता था और न जूते ही वापस करता था। वह बेचारा सिपाही को बुलाकर लाया और उसने बहुत धमकाकर उसके जूते दिला दिये। शिकायत भी बेकार थी क्यों कि टिकट बाबू उठकर बैठो कहते हुए चले जाते थे। एक यात्री ने पठान से कहा साहब उठकर बैठ जाइये, कई बार कहने पर भी उस पर कोई असर न पड़ा तो उस यात्री ने उसके पैरों को पकड़ कर घुमा दिया और बैठ गया पठान उठ खड़ा हुआ और लड़ने लगा उसके अन्य साथी भी आगये यात्री ने जंज़ीर खींच दी और गाड़ी रुक गई। गार्ड आया और एक पुलीस को तैनात कर के चला गया उस यात्री को तो स्थान मिल गया मगर सोने वालों और खड़े होने वालों में कुछ परिवर्तन न हुआ एक पंजाबी ने उनको समझाया कि ऐसा बर्ताव करने से सारे पंजाब की बदनामी होती है। तो वह सब विगड़ कर उसको बनाने लगे। उसने धीरे से कहा। सीख न दीजै बानरा अपनी हानि कराय, इस उपद्रव से ट्रेन में बड़ी चहल पहल रहती थी। वह सिकन्दराबाद में सरकारी पलटन के सिपाही थे। काज़ी पेट जंकशन पर उन्होंने गाड़ी बदल ली और शान्ति स्थापित हो गई। हमारी गाड़ी ग्वालियर झाँसी होती हुई बीना पहुँची। बीना सुनते ही अंधेरा भागने लगा और ऊषा की लालिमा दिखलाई पड़ने लगी। मेरी भी आंख खुल गई।

७ जून को ७ बजे भोपाल के स्टेशन पर पहुँचे वर्षा आरम्भ हो गई। ऐसा प्रतीत होता था कि गर्मी को हटाने के लिये भूपाल ताल से जल लाकर छिड़काव किया गया है। हवा, गाड़ी दोनों ही ठंडी हो गईं। इटारसी जंकशन से सुरंगें शुरू हो गईं तीसरे पहर के बाद नागपुर पहुँचे यहाँ बाग की चर्चा शुरू हो गई। पंजाबी महाशय ने कहा "सी० पी० में साँप बहुत पाये जाते हैं"। मुझे चाँदा जाना है वहाँ ठहरने का कैसा प्रबन्ध है। एक सज्जन ने कहा "किसी धर्मशाला अथवा सराय में ठहर जाइयेगा"। एक छोटे से स्टेशन पर एक विचित्र घटना हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। एक मुसलमान के साथ बहुत सा सामान और कई बच्चे थे। वह बीबी और बच्चों को गाड़ी में बिठाकर स्वयं ही सामान रखने लगा। आधा सामान ही रखने पाया था कि गाड़ी छूट गई और वह बेचारा स्टेशन पर ही रह गया। अकेली बीबी रेल में घबराने लगी। लोगों ने उसे समझाया। एक पंजाबी ने उठकर उसके लिये चंदा इकट्ठा किया। हिंदू मुसलिम का यहाँ कोई भेद न था। सब ने कुछ न कुछ दिया। शहर की गन्दी जातीयता का यहाँ नाम तक न था। एक हिन्दू बालक मुसलमान की दाढ़ी से खेल रहा था। सिक्ख फलों के टुकड़े काट काट कर सब के बच्चों को दे रहे थे। यह देख कर मुझे केसव दास के भारद्वाज आश्रम की याद आगई।

'केशव दास' मृगज-बछेरु चोषैं बाघनीन, चाटत सुरभिबाघ बालक बदन हैं।

सिंहन की सटा ऐंचैं कलभ करनि करि,
सिंहन को आसन गयंद को रदन है।
फणी के फणन पर नाचत मुदित मोर,
क्रोध न विरोध जहां मदन मदन हैं।
बानर फिरत डोरे डोरे अंध तापसीन,
शिव को समाज कैधौं ऋषिको सदन हैं।

वर्धा से गाड़ी चाँदा पहुँची, दिल्ली के मि० भटनागर यहाँ पर उतर पड़े। ये महाशय व्यापार कुशल मालूम होते थे इन्होंने मुझे छोटे २ व्यापार की कई युक्तियां बताईं। चांदा के कमिश्नर ने कुछ व्यापार सम्बन्धी सलाह लेने के लिये बुलाया था।

८ जून को सुबह द्विनकाल पर आंख खुली तो सफेद लुंगी बाँधे हुये लोग दिखलाई देने लगे। इस मदरासी लिवास को देखकर हमारे तरफ का एक आदमी धीरे से बोला "क्या इस स्टेशन पर सभी मुसलमान हैं। बेचने वाला कोई हिन्दू नहीं है"? और यह जानकर कि ये सब हिन्दू हैं उसे बड़ा आश्चर्य्य हुआ।

९ बजे के लगभग बैजवाड़ा का जंकशन आ गया पूड़ी कचौड़ी का स्थान इटली, उपमा, तोश, (चीला) मुरुक और बड़ों ने ले लिया। काफ़ी काफी की पुकार सुनाई पड़ने लगी। चावल साँभर (इमली का पना) रसम् के राज्य में प्रविष्ट हो गये। मैंने भी इस अनुपम उपमा का आस्वादन किया।

तिनाली का स्टेशन आते ही मुझे तिनाली राम की याद आ गई। वह दक्षिण के 'बीरबल' कहलाते थे। उनके लतीफे और चुटकुले बड़े मनोरंजक हैं।

शाम को ५॥ बजे हमारी गाड़ी मदरास आ पहुँची। मैं मोतीराम गुजराती के हिन्दूलाज साहूकार पेट में ठहरा।=) प्रति ख़ुराक ॥) प्रति दिन एक कोठरी के तय हुए। शहर पर एक सरसरी दृष्टि डालने के लिये मैं रात को निकला। मदरासी लिवास बहुत ही सीधा सादा है। बंगालियों ने तो सिर्फ टोपी ही छोड़ी परन्तु इन्होंने टोपी जूते दोनो का त्याग कर दिया। लुंगी की तरह श्वेत धोती लपेटे हुए बहुत ही मामूली कमीज़ में नंगे सिर और नंगे पैर, विखरे हुए बाल, मद्रास की सड़क पर आपको बहुत से लोग मिलेंगे। इस सरल मूर्तियों की तुलना बंबई के नख-शिख भूषित उन फैशनेबुल बाबुओं से कीजिये। भारतवर्ष के तीन बड़े बड़े नगरों में पृथक पृथक तीन निराली धारा बहती हैं।

नया देश-नया-वेष-नई बोली। न मैं उनकी बात समझता न वे मेरी। न किसो से जान न पहचान अकेला ही सड़क पर घूमने लगा बाबुओं से तो अंगरेजी में बात कर लेता था। परन्तु कुली आदि से संकेत द्वारा ही काम लिया जाता था। घूमते घूमते थक गया तो होटल में आकर सो गया।

९ बजे सुबह उठ कर आर्य समाज मंदिर में गया। वहां ठहरने के लिये कोई विशेष प्रबन्ध न था इस लिये महाशय समुद्रम् ने पास की धर्मशाला में मुझे ठहरा दिया। महाराज छठवें जार्ज का जन्मदिवस होने के कारण चार आने के दिन भर के लिये ट्राम का रियायती टिकट मिल गया। मैं ट्राम में बैठ कर समुद्र स्थान को चल दिया।

मद्रास भारत का तीसरे नम्बर का शहर और पांचवें नम्बर का बन्दरगाह है। स्नान के बाद मैं समुद्र के किनारे किनारे बन्दरगाह की ओर चलने लगा। मार्ग में एक मछुवे का बालक मिला वह भी साथ हो लिया। आपस में हम दोनों केवल संकेत से ही बात कर सकते थे। कुछ मछुये के बालक तट समुद्र से खाने के लिये केकड़े निकालने का प्रयत्न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे। एक गोरा लहरों में उछल उछल कर बड़े आनन्द से नहा रहा था। थोड़ी दूर चलने पर बन्दरगाह आ गया यह कृत्रिम बन्दरगाह बांध से समुद्र का पानी घेर कर बनाया गया है। यहाँ समुद्र बिल्कुल शान्त है। इसके विपरीत दूसरी ओर पानी बल्लियों उछल रहा था। मैंने पहले पहल स्पंज (Sponge) इसी बन्दर में देखे। वे शान्त जल में बड़ी सुस्ती से तैर रहे थे। उनमें कुछ रंगीन भी थे। जो बहुत भले मालूम होते थे। समुद्र फेन की तरह स्पंज के विषय में भी लोगों की मिथ्या धारणा है। जिस तरह समुद्र फेन समुद्र का झाग नहीं बलिक एक जल जीव है। उसी प्रकार स्पंज भी एक जल जीव है। मैं पामवन (Pamban) से बहुत से समुद्रफेन लाया हूँ। समुद्र के झाग सूख कर कैसा रूप धारण कर लेते हैं इसके नमूने भो मेरे पास हैं। लौटते हुए पुराने लोहे का एक ढेर मिला एक सज्जन ने बतलाया कि यह विलायत भेज दिया जाता है। और वहाँ से नया रूप लेकर फिर यहाँ आ जाता है।

मद्रास का चिड़िया घर (Zoo) कलकत्ते की अपेक्षा छोटा है। सफेद मोर रङ्गीन मोर की तरह नाचता था परन्तु रङ्गीन मोर सौन्दर्य्य में अधिक चित्ताकर्षक था। दक्षिण अमरीका का लामा ऊँट की तरह गर्दन उठाये खड़ा हुआ था।

Aquarium (मछली घर) मद्रास की एक विशेष वस्तु है। इसमें अनेक प्रकार की जिन्दा मछलियाँ हैं। इस प्रकार की विचित्र मछलियाँ मैंने आज तक नहीं देखी थीं। शीशे के बड़े बड़े टैंकों (tanks) में वे किलोल कर रही थीं। आक्सीजन जल के अन्दर बराबर जा रही थी। (scorpion fish) बीछू मछली का खेल मुझे बहुत पसन्द आया। यह सेई (porcupine) की तरह अपने असंख्य कांटों को फैला कर मोर की तरह नाचती थी। star fish के दो नमूने ले कर आगे चल दिया।

Triplicane beacg समुद्र तट शाम को वायु सेवन के लिये सुन्दर स्थान है। हजारों स्त्री पुरुष बालू पर बैठ कर रेडियो सुनते हैं तरह तरह की चहल पहल रहती है।

३० जून को मैंने अदियार (Adyar) की सम पकड़ी अदियार थियासेफी का केन्द्र है। इसका क्षेत्रफल २६२ एकड़ है। यहाँ के पुस्तकालय में सैकड़ों भोजपत्र पर हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकें देखीं। प्राचीन लेखनी भी वहीं पर रक्खी हुई थी। इसे स्याही में डुबाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक विशाल वट वृक्ष यहाँ पर सैकड़ों वर्ष से खड़ा हुआ है। संसार के वट वृक्षों में इसका तीसरा नम्बर है। यह उत्तर से दक्षिण २०० .फुट और पूर्व से पश्चिम १६० .फुट है। कलकत्ते का वट वृक्ष इससे अधिक बड़ा है। लेकिन इसमें यह विशेषता है कि इसका मुख्य तना अभी तक मौजूद है। एनीबीसेंट की समाधि भी दर्शनीय है। नारियल का बाग और खिले हुए गुलमुहर के पेड़ अदियार की शोभा बढ़ाते हैं।

मद्रास का light house (दीप स्तंभ) समुद्र के कुछ दूर law college के पास स्थित है। दो आने का टिकट ले कर उसकी २५० फुट ऊँची चोटी पर चढ़ गया। यहाँ से कुल शहर का दृश्य अत्यंत मनोरम दिखलाई देता है। सायंकाल में उसमें रोशनी होती है। और गुम्बद घूमता रहता है। वहाँ से लौट कर वाला जी आदि कई मन्दिर देखे।

२१ जून को प्रसिद्ध किला St. George को देखा वह किला अंग्रेजों का भारत में सबसे पहला settlement है। इसे अंगरेजी राज्य की नीव कहना चाहिये, एक खाईं से घिरा हुआ है, और उसमें तीन फाटक है। अंदर जाने के लिये पास (Pass) का झंझट था। पहरेदार से बिना पूछे मैं जल्दी से अन्दर जा कर एक दूकान दार से बातचीत करने लगा। और आगे बढ़ा तो एक आदमी खड़ा हुआ मिला। मैंने उससे अंग्रेजी में पूछा "क्या मैं किला देख सकता हूँ।" उसने उत्तर दिया "क्या आपके पास पास (Pass) है।" मैंने कहा "नहीं"। मैं उत्तरी भारत से आया हूँ क्या आप मेरी मदद करेंगे। उसने मुझे डरा दिया कि वह गोरा आ रहा है। वह बिना पास न जाने देगा। अगर उसे मालूम हो गया तो वह आपको जरूर लौटा देगा। आप इस रास्ते से सीधे चले जाइये और दूसरे फाटक से निकल जाइये। Thanks (धन्यवाद) देकर मैं आगे बढ़ा। एक ओर गोरों की ड्रिल हो रही थी दूसरी ओर सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दफ्तर थे। एक गिरजा घर भी था। मैं दूसरे फाटक पर आगया पहरेदार ऊँघ रहा था मैं बाहर निकल आया और सड़क के दूसरी ओर चाँदमारी देखने लगा।

शंख के अंडे का खोल

समुद्री घोड़ा

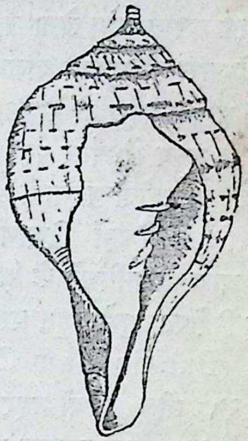

शंख

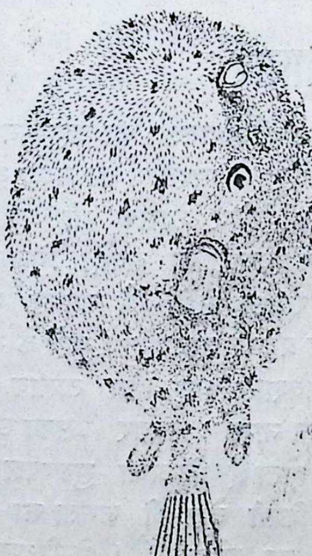

मद्रास मत्स्यागार की फूली हुई पफर नाम की विचित्र मछली

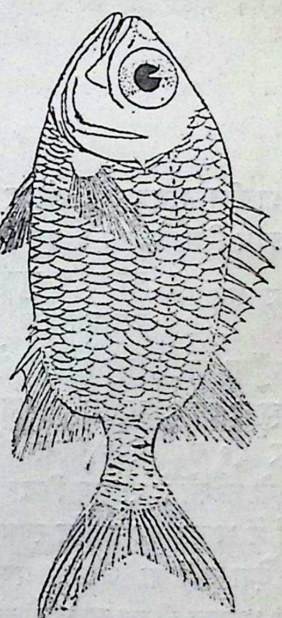

ब्लोच आंख वाली मछली

मरीना रोड समुद्र से कुछ हट कर कई मील तक गई है। सड़क के एक तरफ़ समुद्र की ओर फूल पत्तियों की एक कतार है। दूर दूर पर बेंच मिलती जाती हैं। दूसरी तरफ़ बड़ी बड़ी इमारतें हैं। प्रातः काल वायुसेवन के लिये बड़ा रमणीक स्थान है।

यह (Pride of Madras) (मद्रास की शान) कहलाता है।

सड़क को छोड़कर मैं फिर समुद्र के पास आया। तट पर से कुछ सीपियाँ इकट्ठी कीं। (Aquarium) के पास गौरी शंख, सुब्रह्मराय शङ्ख (शिव), गणेष शङ्ख, विष्णु शङ्ख, दूध शङ्ख, मान शङ्ख, अभिषेक शङ्ख, रावण किरीट, सीता गर्भ, काल वाहन तथा (sea horse) समुद्री घोड़ा आदि वस्तुयें मोल लीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल को मूर मारकेट (moore market) देखने गया। बम्बई के क्राफर्ड मारकेट तथा कलकत्ते की ह्यूलेट मारकेट की तरह यह बाजार भी अपनी सजधज के लिये मशहूर है। दुकानों की जगमगाती चीजें मन को सहसा मोह लेती हैं। एक पैसे की चीज का एक रुपया मांग लेना यहाँ बुरा नहीं माना जाता। इसके पास ही गुदड़ी बाजार है। श्मशान की भांति यहाँ भी ज्ञानोदय हो सकता है। समय और स्थान के भेद से मूल्य में अंतर पड़ जाता है। दुनिया भर की चीजें आपबीती वतलाती हैं। इसी लिये गुदड़ी वहुत प्यारी है। सैकड़ों विद्यार्थी अपनी पुरानी पुस्तकों को अन्य विद्यार्थियों के हाथ बेच रहे थे। यहाँ की यह विशेषता मुझे बहुत पसंद आई।

(Buckingham Canal) यह खारी पानी की २५० मील लम्बी नहर मद्रास के उत्तर दक्षिण गई है। बहुत सा व्यापार इसके द्वारा होता है। उत्तर में बैजवाड़ा और दक्षिण में ६० मील तक जाती है।

मदरास के म्यूजियम में मैंने कई चीजें देखी यह अजायब घर कई विभागों में विभाजित है। पुरातत्व विभाग में बौद्ध कालीन मूर्ति आदि वस्तुयें हैं। भूगर्भ विभाग में खनिज पदार्थ और वनस्पति विभाग में पेड़ पौधों के अंग और उनसे उत्पन्न हुई वस्तुओं का संग्रह था। प्राणि विभाग में नाना प्रकार के मृत पक्षी देखे गये। चैचू हट का नमूना, अमरावती स्तूप, तारों के तीन टुकड़े (Metiorite) १६००-१९०० शताब्दी का वृक्ष कार्नवालिस तथा नील की बृहत् मूर्तियाँ, कनेम्बरी पुस्तकालय विशेष उल्लेखनीय हैं। मुझे ठीक स्मरण नहीं कि अर्जेंटाइन (S. America की पम्पा घास (Pumpa Grass) इस म्यूजियम में देखी या बंगलोर में। यह कास के सफेद फूल की तरह सुन्दर मालूम देती थी। (असमाप्त)

गुप्त-कालीन व्यापार

उपक्रम

प्राचीन समय में संसार के सभ्य देशों का भारतवर्ष शिरमौर था। इसकी सभ्यता चरम सीमा को पहुँच चुकी थी। भारत न केवल आध्यात्मिक उन्नत्ति की पराकाष्ठा को पहुँचा था, परन्तु भौतिक क्षेत्र में भी पर्याप्त वृद्धि कर चुका था। प्राचीन भारत में ई० स० ३०० से लेकर ई० स० ६०० यानी तीन सौ वर्षों तक गुप्त वंश के नरेशों ने शासन किया था। उस समय सभी क्षेत्रों में भारत का सर्वोच्च स्थान था। संसार में ऐसा कोई देश नहीं था जो इस प्रकार की उन्नति अवस्था में हो। भारत ही का सर्वत्र बोलबाला था। इन्हीं कारणों से इन तीन सौ वर्षों को 'स्वर्ण-युग' के नाम से पुकारते हैं। इस लेख में तत्कालीन व्यापार की अवस्था, सामग्री तथा साधन का संक्षेप रीति से वर्णन किया जायगा।

गुप्त काल में प्रजा धन धान्य से पूर्ण थी। राजा तथा प्रजा बहुत धन पुन्य में व्यय करते थे। संक्षेपतया तत्कालीन समृद्धि का दिग्दर्शन कराने से व्यापार की महानता का अनुमान किया जा सकता है। सर्वदा से भारतवर्ष का मुख्य व्यवसाय कृषि रहा है। इसी लिए शासक भी प्रजा के हित के लिए कृषि की उन्नति का सर्वदा चिन्तन करते रहे हैं। राजा समस्त भूमि को नापकर उसके सिचाई का सुन्दर प्रबन्ध करता था। गुप्तों के समय में भी इसके लिए विशाल नहर तथा तालाब बनवाए गए थे। सुदर्शन नामक कासार उसका उदाहरण था। इससे प्रगट होता है कि प्रजा सुसम्पन्न तथा समृद्धशाली थी। किसी देश की जनता का सुखी रहना उसके उन्नति का द्योतक है। ऐसी दशा में प्रजा अच्छी तरह व्यापार में भी सहयोग कर सकती है। आधुनिक समय में सभी व्यापार में उन्नत देशों की जनता सुखी तथा सम्पन्न हैं। दुखी तथा निर्धन मनुष्य व्यापार के लिए उपयुक्त नहीं होते। गुप्तों की समृद्धशाली राज्य में व्यापार की उन्नति पर्याप्त अवस्था तक पहुँची थी।

प्राचीन समय में व्यापार मुख्यतः छोटे छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितियों के हाथ में था जिसको श्रेणी कहते थे।

व्यापारिक संस्थाएँ

श्रेणी आधुनिक व्यापारिक व्यापारिक संस्थाओं के समान थी जो व्यापार का नियम तथा नीति निर्धारित करती थी गुप्तकालीन श्रेणियों का वर्णन अधिकता से स्मृति ग्रन्थों तथा राजाओं के मुहरों में पाया जाता है। याज्ञवल्क स्मृति में श्रेणियों के नियमों का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। समिति के कितने सदस्य थे, उनका आपस में क्या सम्बन्ध था तथा सभापति आदि के अधिकारों का वर्णन मिलता है। गुप्तकालीन मुहरों में 'श्रेणी सार्थवाह' 'कुलिक निगम' तथा 'श्रेणी सार्थवाह कुलिक निगम' आदि वाक्य मिलते हैं। इन मुहरों की अधिकता से यह तात्पर्य निकलता है कि उस समय अनेक संस्थाएँ थीं जो व्यापार का काम करती थीं। ऐसी संस्थाएँ पाटलिपुत्र, वैसाली, उज्जैन भरौंच तथा दशेपुर आदि स्थानों में विद्यमान थीं जिसके कारण वे स्थान व्यापारिक केन्द्र बन गए थे। इन स्थानों का सजीव तथा अत्यन्त सुन्दर वर्णन गुप्त लेखों में मिलता है जिसका वर्णन स्थानाभाव के कारण नहीं किया जा सकता। गुरवों की राजधानी पाटलिपुत्र एक विशाल नगर था। मध्य देश में यह सब से बड़ा नगर था। वैसाली की शोभा अकथनीय थी। नगर के शोभा के साथ यहां की व्यापारिक संस्थाओं का कार्य मनुष्यों के दिल में एक कौतूहल पैदा कर देता था। यह एक मुख्य केन्द्र था जिसका आर्थिक उन्नति में बहुत बड़ा हाथ था [आ० स० रि० १९०३-४] गुप्तकाल में मालवा की उज्जैनी नगरी मध्यस्थ का काम करती थी। उत्तरी भारत तथा भरौंच के बीच का मार्ग दसी नगर से होकर जाता था। उज्जैनी के सदृश दशपुर भी एक समृद्धशाली नगर था। बम्बई प्रांत का भरौंच (भृगुकच्छ) नगर व्यापारिक दृष्टि से एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। यह एक मुख्य बन्दरगाह था जहाँ से फारस, मिश्र तथा पश्चिम के देशों में भारत का माल जाता था। इसी प्रकार अनेक स्थान वैभव तथा व्यापार के लिए प्रसिद्ध थे जहां पर श्रेणी स्थापित की गई थी।

गुप्तकालीन व्यापार दोनों स्थल तथा जल-मार्गों से होता था। भारत का व्यापार विश्व व्यापी हो

व्यापारिक मार्ग

गया था। पूर्व तथा पश्चिमी देशों में भारत की बनी हुई वस्तुएँ प्रयोग में लाई जाती थीं। आधुनिक काल के समान भारत की दुखद अवस्था नहीं थी, परन्तु वे समस्त देश अपने आवश्यकीय पदार्थों के लिए भारत का मुख देखते थे। यानी भारतीय व्यापार सर्वोन्नत था। अरब, फारस, रोम, मिश्र देशों से भारत का व्यापार होता था।

भारतीय व्यापारियों के सुविधा के लिए बड़ी बड़ी सड़कें बनाई गई थीं। गुप्तकाल से पूर्व भी

स्थल-मार्ग

पाटलिपुत्र से अफ़गानिस्तान तक १०० मील लम्बी सड़क बनाई गई थी। साधारण सड़कें भी बहुत स्थानों में बनी हुई थीं। [सरकार-पोलिटिकल इन्स्टीट्यूशन एण्ड थियरी आफ हिन्दू पृ० १०२-३] गुप्त राजाओं ने इनका प्रयोग युद्ध मार्ग के लिए भी आवश्यक समझा था, अतएव चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पारसियों को विजय करने के लिए पर्याप्त संख्या में सड़कें बनवाया था [पारसिकान् ततो जेतुं प्रतस्थे स्थल वर्त्मना-रघु०] उस समय का भारतीय चीनी यात्री फ़ाहियान ने अपनी पूरी यात्रा स्थल से समाप्त की थी। उसकी सकुशल यात्रा से ज्ञात होता है कि गुप्तों के राज्य में स्थलमार्ग अत्यन्त सुरक्षित थे। ठगों तथा डाकुओं का नामोनिशान तक न था। व्यापार में बड़ी सुविधा थी। भड़ौच से पाटलिपुत्र तक व्यापार चलता था। पेरिप्लस ने लिखा है कि भरौंच से व्यापारिक सामग्रियाँ विभक्त की जाती थीं जो विभिन्न मार्ग से होकर सारे देश में भेजी जाती थीं। स्थलमार्ग से स्वदेश ही नहीं परन्तु विदेश से भी व्यापार होता था। अरब, फारस, चीन बैबिलोनियां आदि से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध था। योरप तक स्थल से व्यापार होता था। एक मार्ग पालमारा होते रोम तथा सीरिया की ओर तथा दूसरा आक्सस कैसिपयन सागर से मध्य योरप तक पहुँचता था [इनसाइक्लोपिडिया ब्रूटेनिका भा० २ पृ० २५९]।

स्थल मार्ग के अतिरिक्त गुप्तकाल में जलमार्ग से भी व्यापार पर्याप्त मात्रा में होता था। इसके लिए

जल-मार्ग

बड़े बड़े जहाजी बेड़े बनाए गए थे। उस समय पूरब में चीन तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम में अफ्रिका और योरप तक भारतीय जहाज व्यापार की सामग्री लेकर जाते थे। इन सूदूरदेशों के सिवाय व्यापार भारत के किनारे तथा समीपवर्ती टापुओं से भी होता था। गुप्तकाल से पूर्व ही रोम तथा भारत का व्यापार वृद्धि पर था। कुषाण काल में भारतीय रेशमी, रंग मसाले तथा मोती आदि के विनिमय में रोमन सिक्के (सोने के) आते थे। रोम के सोने की मुद्राओं की संख्या बहुत मिलती है। इसी कारण से प्लीनी ने (ई० स० ८) में रोमन लोगों की विलासिता की निन्दा की है। क्योंकि यदि वे लोग भारत से सुख और विलास की सामग्री न मँगाते तो रोमन सिक्के भारत में न जाते। उसने लिखा है कि करोड़ों रुपयों के सुगन्धित पदार्थ, आभूषण, वस्त्र आदि प्रत्येक वर्ष भारत से खरीदे [जे० आर० ए० एस० १९०४ पृ० ५९४] इतना नहीं; रोमन निवासी भारत में व्यापार के लिए आते, परन्तु तामिल तथा पाण्ड्य नरेशों के यहाँ नौकरी करने लगते प्राचीन तामिल तथा संस्कृत साहित्य में यवन और रोमन शब्द का प्रयोग मिलता है। रोमक से रोम नगर तथा यवन से ग्रीक और रोमन लोगों का तात्पर्य है। इस कथन से ज्ञात होता है कि ईसा की प्रथम शताब्दी से भारत का पश्चिमी देशों से व्यापारिक सम्बन्ध था। भारत के समीप जावा, सुमात्रा कम्बोडिया, स्याम आदि देशों से भी बराबर व्यापार होता था। वहां भारतीयों ने अपना निवास-स्थान बनाया था।

जलमार्गीय व्यापार की पुष्टि जावा के बारोडुडुर नामक मन्दिर पर अंकित चित्रों से होती है। इनमें बड़े बड़े जहाजों का यात्रा तथा व्यापारिक नावों के चित्र हैं। इन चित्रों से ज्ञात होता है कि भारतीय नावों पर सामग्री लेकर व्यापार निमित्त अन्यत्र जा रहे हैं। गुप्त शासकों ने व्यापार विनिमय में सुविधा के लिये अपने सिक्कों को तौल रोमन सिक्कों के बराबर तैयार कराया था। रोमन सिक्के देनेरियस (Danerius) के नाम से पुकारे जाते थे और गुप्त सिक्के दीनार के नाम से प्रसिद्ध थे। पश्चिमी देशों से आफ्रिका आदि के समीप टापुओं में गुप्तों के सिक्के मिले हैं जो विनिमय की प्रामाणिकता सिद्ध करता है। (मुकर्जी-इंडियन शिपिंग पृ० १८०) पश्चिम देशों के लिये सुपारा तथा भरौंच बन्दरगाहों से भारतीय माल बाहर जाता था। वराहमिहिर (ई० स० ६००) भरुकच्छ का उल्लेख किया है (गिरि सलिल दुर्ग कोसल भरुकच्छ समुद्र रोमक तुषाराः) पूरब में मलाया द्वीपों से होते व्यापारी लोग चीन तक चले जाते थे। चीनी इतिहास में भारतीय व्यापार का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने चीनी रेशमी वस्त्रों का वर्णन किया है—

चीनां शुकमिव केतो प्रतिवातं नीयमानस्य।

—शकुं० १।३२

संतान काकीर्ण महायथं त-
चीना शुकैः कल्पित केतुमालम्।

—कुमार० ७।३

जिससे गुप्तकालीन व्यापार की पुष्टि होती है। इस प्रकार पश्चिम तथा पूरब में एक स्थायी जलमार्ग स्थापित हो गया था।

इन जलमार्गीय व्यापार से ज्ञात होता है कि गुप्त काल में समुद्र यात्रा के लिये जहाज तथा बड़े बड़े नाव तैयार किये गये थे। साहित्य तथा चित्रकला के प्रमाणों से उपर्युक्त कथन की पुष्टि होती है। कालिदास ने बंग निवासियों तथा धनमित्र को जहाजो कला में निपुण बतलाया है।

पोत निर्माण

वङ्गायनुत्खाय तरसानेता नौसाधनाद्यतान।

—रघु० ४।३६

समुद्र व्यवहारी सार्थवाहो धनमित्रो नाम
नौ व्यसने विपन्नः।

—शकुं० ६

गुप्तकाल में शकों का उत्क्रमय तथा जावा के उपनिवेश का उल्लेख मिलता है। ईसा की पाँचवीं सदी के प्रारम्भ में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सौराष्ट्र तथा मालवा पर विजय प्राप्त की थी तथा शकों को परास्त किया था। इसी युद्ध के पश्चात् शकों ने निरापद भूमि को खोज कर जावा को उपनिवेश बनाया। इसकी पुष्टि एक लेख (इ० ए० भा० ५ पृ० ३१४) और जावा के एक जनश्रुति से होती है। इस जनश्रुति में ई० स० ६०० के लगभग किसी गुजरात नरेश की जावा यात्रा का वर्णन मिलता है। (हिस्ट्री ऑफ जावा भा० २ पृ० ८२) उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौराष्ट्र के निवासी जलमार्गीय व्यापार में अत्यन्त निपुण समझे जाते थे (बील-बुधिस्टीक रेकर्ड भा० २ पृ० २६९) व्यापार ही एक मुख्य कारण था जिसकी वजह से भारतीयों ने भिन्न भिन्न देशों ने उपनिवेश बनाया था। गुप्तों ने अपना राज्य विस्तार के लिये द्वीपों पर भी आक्रमण किया था। प्रयाग की प्रशस्ति में समुद्रगुप्त द्वारा 'सर्व द्वीय वासिभिः' पर आक्रमण करने का वर्णन मिलता है। कालिदास ने भी जावा सुमात्रा आदि द्वीपों का वर्णन मम्नासा द्वीप के नाम से किया है। (रघु० ६।५७) गुप्तकालीन चीनी यात्री फाहियान ने अपनी अन्तिम यात्रा (ताम्रलिप्ती से सिंहल तथा स्वदेश) जहाजों द्वारा ही समाप्त की थी। उसने वर्णन किया है—"फिर व्यापारियों के एक वृहत्पोत पर चढ़ा; समुद्र में दक्षिण-पश्चिम ओर चला। संस्कृत प्रतियों को पाकर वह एक व्यापारी के बड़े पोत पर चढ़ा। उसमें २०० से अधिक मनुष्य थे। एक छोटी नौका समुद्र-यात्रा के क्षति के रक्षार्थ बड़े पोत से बँधी हुई थी।" (फाहियान की यात्रा)

इन सब विवरणों से ज्ञात होता है कि गुप्तकाल में भारत रोम, चीन तथा अन्य द्वीपों से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सम्बन्ध था। इतने विस्तीर्ण जलमार्ग के लिये सुदृढ़ जहाज़ तथा बड़ी नौकाएँ अवश्य बनती होंगी। भारत में अजंता तथा बोरोडुडुर के चित्रों में जहाज और नावों के समावेश से सिद्ध होता था कि भारतीय पोतकला में निपुण अवश्य होंगे। अन्यथा चित्रों से उनका समावेश होना सहज न था। इन्हीं पोतों द्वारा गुप्तकाल में जलमार्गीय व्यापार होता था।

व्यापारिक सामग्री

भारत से अधिकतर रेशम, ऊन, मलमल आदि भिन्न भिन्न प्रकारों के सूक्ष्म वस्त्र, मणि, मोती, हीरे, हाथीदाँत, मोर-पंख, सुगन्धित द्रव्य तथा मसाले विदेशों में जाया करते थे। मिश्र का आधुनिक खोज में वहाँ की ममियों की पुरानी कबरों से बारीक भारतीय मलमल भी मिली है (ओझा-मध्यकालीन भारत पृ० १६७)। ये भारतीय मलमल उस समय से लेकर १८वीं सदी यानी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय तक तैयार होते थे। ढाके का मलमल उसका एक उदाहरण है। विदेशी व्यापार के कारण भारत समृद्धिशाली तथा अतुलनीय वैभवयुक्त हो गया था। जैसा कहा गया है कि प्लीनी ने लिखा है कि प्रति वर्ष रोमन राज्य से करोड़ों रुपया भारत में आता था जिसके बदले सुख की सामग्री और वस्त्र आदि वहाँ जाता था। प्राचीन समय में भारत में व्यवसाय तथा उद्योग धन्धों की अवस्था बहुत ही उच्च कोटि की थी। सब से सुन्दर व्यवसाय वस्त्रों का होता था। नाना प्रकार के वस्त्र तैयार किये जाते जिस प्रकार के वस्त्र तैयार करना आजकल अत्यन्त कठिन है। भारत में सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रकार के छींट,-मलमल तथा शाल बनते थे। कपड़े रँगने की भी कला बहुत उन्नत थी। इस प्रकार अनेक रसायनिक क्रिया प्रचलित थीं। (फाहियान की यात्रा विवरण)

बैंक

जैसा कहा गया है कि प्राचीन भारत में व्यापार पूँजीपतियों के हाथ में नहीं था परन्तु इसका संचालन छोटे छोटे गण या श्रेणी करते थे। गण की प्रथा बहुत समय से प्रचलित थी। गुप्तकालीन गणों या श्रेणी का वर्णन किया जा चुका है। व्यापार के अतिरिक्त श्रेणी सिक्के के शुद्धता पर भी ध्यान खूब देते थे। इनकी सुव्यवस्था तथा समुचित नियमों के कारण बैंक का काम भी श्रेणियों के जिम्मे कर दिया गया था। यदि उन नियमों को कोई उल्लंघन करता तो व्यापार की हानि उसी व्यक्ति को पूरी करनी पड़ती।

प्रमादा नासितं दाप्यं प्रतिषिद्धं कृतं च यत्।

—नारदः

सारी जनता अपना धन श्रेणी के पास जमा करती। श्रेणी से समयानुसार कर्ज भी लेती थी। परोपकारार्थ जितना धन संग्रह किया जाता वह श्रेणी के पास रख दिया जाता था। कुछ नियम बनाये जाते थे जिसके अनुसार श्रेणी उस धन के सूद से मन्दिर में राग भोग की सामग्री, धूप दीप तथा मरम्मत किया जाता था। कभी कभी सर्वसाधारण के व्यवहार के लिये तालाब और कूप भी खोदवाये जाते थे। इस प्रकार संग्रहित धन श्रेणी के बैंक में जमा किया जाता था। शासक भी इन कारणों से श्रेणी के नियमों का आदर करता था। उनके नियमों को ध्यान में रखते हुए अपना नियम बनाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति जनपदान् धर्मान् श्रेणी धर्मान्श्च धर्मवित्।
समीक्ष कुल धर्मान्श्च स्वधर्म प्रतिपादयेत्॥

—मनु० ८।४१

इन सब कारणों से साधारण जनता भी व्यापार में भाग लेती थी। आजकल की तरह थोड़े से धनी मानी मनुष्य न थे परन्तु श्रेणी के कारण सर्वसाधारण के पास सम्पत्ति थी। गुप्तकालीन सिक्कों की असंख्य गणना से यह प्रगट होता है कि सर्वसाधारण भी समृद्धिशाली तथा वैभव सम्पन्न थे। आधुनिक काल की अचर परिस्थिति में रह कर प्राचीन भारत के अतुल वैभव, व्यापार में सर्वोच्च स्थान तथा तत्कालीन भारतीय महत्ता का अनुमान करना अत्यन्त कठिन काम है। इस संक्षेप वर्णन से उसकी महानता का आभास मात्र मिल सकता है।

—वासुदेव उपाध्याय, एम० ए०

पाताल प्रवेश

(अनुवादक ठा० कर्ण सिंह सब० डि० इं० बांदा)

(२) भेदिया कागज़

काका जी का अभ्यास-गृह एक छोटा सा संग्रहालय था। नाना प्रकार के पत्थर के टुकड़े पृथक २ अलमारियों में रक्खे थे। प्रति दिन शाम को नये सिरे से संभाल कर रखना होता था। कारण यह कि प्रोफ़ेसर साहब एक स्थान से किसी वस्तु को उठा कर पुनः वहाँ रखना न जानते थे। मुझे भी उसे संभालने में बड़ा आनन्द आता था। अमुक मूल्यवान खनिज वस्तुओं को तो प्रतिदिन संभाल कर साफ़ रखना ही पड़ता था। ग्रेफ़ायट ऐंथ्रेसाइट लिग्नाइट, पीट, बीटयुमेन, रेसीन पर तो मैं कभी धूल की एक कनी भी न पड़ने देता था।

परन्तु इस समय मेरा ध्यान इस प्रदर्शन की ओर न था मेरा ध्यान तो काका की ओर था। वह एक आराम कुर्सी पर किसी फटी पुरानी रुमाल को हाथ में लिये बैठे थे। बीच बीच में चश्मा में से आंखें चमक जाती थी।

"आहा! क्या आनन्द की पुस्तक है!!

कितनी उत्तम! वह बोल उठे। निश्चय ही पुस्तकों के पीछे काका पागल तो थे ही। परन्तु आज असाधारण आनन्द विभोर थे।

"क्यों देखा, देखा? इधर देख, मैं आज एक गुप्त खज़ाना पुरानी पुस्तकें बेचने वाले के पास से सवेरे खोज लाया!"

"खूब"! मैं उत्साह से बोल उठा। प्रोफ़ेसर साहब मेरे ऊपरी मन को न देख सके वह अपनी पुस्तक में मस्त थे।

'देख; कितनी उत्तम? जिल्द कैसी अच्छी बनी है? बिल्कुल ठीक खुलती है न? देख; चाहे जिस पन्ना को खोल लो, ठीक खुल जाता ठीक बन्द हो जाता है? नहीं? वाह! बन्द हो जाने पर तनिक भी सन्धि नहीं रह जाती है! ७ शताब्दियाँ वीत जाने पर भी पुस्तक का कुछ भी नहीं बिगड़ता। "यह कहते हुये काका जी ने कई बार पुस्तक खोली और बन्द किया।

साहस करके मैं बोला: "किस की लिखी है?"

काका उत्साहित हो गये "यह पुस्तक १२वीं सदी में आइसलेण्ड निवासी एक विख्यात विद्वान ने लिखी है।"

"जर्मन भाषा में यह उसका अनुवाद है?" मैंने पूछा,

"भाषान्तर! मैं उसे अवश्य खरीदूंगा; यह तो मूल पुस्तक आइसलेण्ड की भाषा में ही लिखी हुई है।"

"यह बात? छपाई भी बड़ी सुन्दर है?" प्रशंसा करते हुये मैंने कहा।

"मूर्ख! यह छपी हुई है? दिखलाई नहीं देता? यह तो हाथ की लिखी है! रूनिका लिपि में लिखी है! क्या रूनिक का अर्थ भी तुम्हें समझाना होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं" !

"तब ठीक, काका आगे बोले, अत्यन्त प्राचीन काल में यह लिपि आइसलेण्ड में प्रचलित थी। किंवदन्ती है कि 'ओडीन' देव ने इस लिपि का आविष्कार किया था।

उनका व्याख्यान न मालूम कितना और चलता; इतने में पुस्तक में से एक काग़ज़ का टुकड़ा निकल पड़ा आगे हम दोनों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया।

"अरे यह क्या ?" प्रोफ़ेसर साहब ने सावधानी से उस काग़ज़ के टुकड़े को उठा लिया। न मालूम कब से यों ही इस पुस्तक में पड़ा होगा। पांच इंच लम्बे, तीन इंच चौड़े इस टुकड़े का मूल्य अब एक श्वान के मूल्य से बढ़कर था। 'रूनिक' लिपि में उस पर एक विचित्र रीति से—ऊपर से नीचे को लिखा था।

प्रोफ़ेसर साहब बड़बड़ाते हुये बार २ उस काग़ज़ को देखते रहे। मुंह पर बार २ क्रोध और आवेग के चिन्ह प्रकट हो रहे थे।

दो का घण्टा बजा, और नौकरानी तुरन्त ही कमरे में आ दाखिल हुई। "प्रोफ़ेसर साहब ! भोजन तैयार है ?"

"भाड़ में डाल अपने भोजन को !"

नौकरानी आगे का वाक्य सुनने के लिये खड़ी न रह सकी !" मैं भी साथ ही भोजनालय में चला गया। भोजन की मेज़ पर सारा सामान परोसा हुआ रक्खा था। मैंने थोड़ी देर प्रोफ़ेसर साहब की प्रतीक्षा की। पर परसी थाली रखी होने पर अधिक प्रतीक्षा करना जरा मुश्किल है, वह भी भूखे पेट; यह समझने की बात है। अन्ततोगत्वा मैंने भोजन करना आरम्भ कर दिया। अरे आज कुछ अधिक भी खा गया।

"प्रोफ़ेसर साहब को आज क्या हो गया है ?" नौकरानी ने पूछा।

"आज की गरज तो ऐसी है कि बिना बरसे न रहेगा !!" मैंने कहा।

इतने में अभ्यास गृह में से काका जी की आवाज़ आ पहुँची। मैं अधखुला किये ही दौड़ गया।

मध्य भारत की भौगोलिक परिस्थिति एवं उसका प्रभाव

(लेखक लाल भानुसिंह बाघेल)

पर्वतराज हिमालय की नन्दादेवी, धवलागिरि तथा गौरीशंकर चोटियों एवं उनकी अधित्यकाओं से सीधे दक्षिण की यात्रा में गंगा के विस्तृत मैदान के अनन्तर पैरों को धीरे धीरे पुनः ऊँचाई का अनुभव होने लगता है कि एकाएक एक ओर भूधर का दर्शन होता है। यह ऊँचाई एवं विस्तार में पर्वतराज का बच्चा भी नहीं, किन्तु अवस्था में उसका पिता हो सकता है। इसकी श्रेणियां पूर्व-पश्चिम बिहार से बंबई प्रान्त तक दण्डायमान उत्तर एवं दक्षिण भारत को अलग करती हैं यही विन्ध्याचल है। इस की अधित्यका एवं उपत्यकाएँ समतल, पठार का रूप धारण करती हैं। वे सैकड़ो मील विस्तृत हैं। यही विन्ध्यपृष्ठ है बघेल खण्ड (रीवा राज्य) के पूर्व से इसकी पूर्वी सीमा प्रारम्भ होती है। यहां इस पर्वत की एक और भुजा उत्तर पश्चिम की ओर बढ़ कर गंगा के मैदान से इसे अलग ही नहीं करती किन्तु अपनी खड़ी दीवार से एकदम इसे ऊपर उठा कर मध्यभारत की माल भूमि का श्रीगणेश भी करती है। बुन्देलखण्ड में यही श्रेणी छिन्न-भिन्न होकर वहाँ के वृहत् तालाबों का आधार बनती है। ग्वालियर में इस श्रेणी की न्यूनता के कारण ही मध्यभारत की पश्चिमोत्तरी सीमा यमुना-चम्बल तक पहुँच जाती है। दक्षिणी श्रेणी बघेलखण्ड से मालवा तक समान रूप से खड़ी हुई पश्चिम की ओर ढाल होकर नर्मदा जल-धारा उत्पन्न करती है। विन्ध्याचल के इस प्रकार विस्तार एवं आकार के कारण ही जो प्रान्त रीवा राज्य के उत्तरी भाग में एक सकीर्ण उच्चसम भूमि (प्लेटो) देख पड़ता है। वही पश्चिम की ओर क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौड़ा होता हुआ चम्बल के बराबर हो जाता है। इसके उत्तर में अत्यन्त उपजाऊ और विस्तृत गंगा का मैदान है। पश्चिम में गुजरात का सुन्दर प्रान्त और पश्चिमोत्तर में राजपूताना का अगम्य रेगिस्तान है। पूर्व में छोटा नागपुर का जंगली प्रान्त और दक्षिण में विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वत की अगम्य श्रेणियाँ तथा नर्मदा एवं ताप्ती की जलधाराएं बहती हैं।

सारा प्रान्त एक हजार से तीन हजार फुट की उंचाई में कर्क रेखा के उत्तर-दक्षिण विस्तृत है। नर्मदा की घाटी को छोड़कर प्रान्त भर का ढाल गंगा की ओर है। इसमें कई बड़ी २ नदियाँ बहती हैं। वर्षा में वे उमड़ पड़ती हैं। पर ग्रीष्म में उनका पानी पाताल पहुँचने का प्रयत्न करता है। उनके दोनों किनारे प्रायः ऐसे ऊँचे, जैसे कि पहाड़ी नदियों के होते हैं। न उनमें नावें चल सकती हैं न उनसे नहरें निकल सकती हैं। इस प्रकार सजल होने पर भी प्रान्त शुष्क है। किन्तु सारी भूमि पर्वतों की अधित्यका, उपत्यका एवं नदियों के बेसिन से बनी होने के कारण उपजाऊ है। उँचाई के कारण समशीतोष्ण एवं उष्ण कटिबन्ध के ताप के उत्ताप का दुःख नहीं है। अगम श्रेणियों, घाटियों और रक्षित बनों के अतिरिक्त शेष भाग का जल-वायु (मालवा का तो बहुत ही) उत्तम है। औसत आबादी १२० प्रति वर्ग मील पड़ती है।

मध्यभारत की ऐसी भौगोलिक परिस्थिति के कारण स्थल मार्ग भारतवर्ष की तरह मध्यभारत में भी प्राचीन काल से पश्चिमोत्तर से ही आने-जाने का मार्ग प्रशस्त रहा है। अतएव, गंगा का उपजाऊ मैदान, राजपूताना का अगम्य रेगिस्तान, एवं गुजरात का सुन्दर प्रदेश विदेशी लुटेरे डाकुओं के रोकने में मध्यभारत के लिये ढाल-का काम करते आये हैं।; किन्तु अपने उन्मुक्त मार्ग एवं अपनी उर्वरता के कारण मालवा उतना सुरक्षित नहीं रह सका जितना बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड सुरक्षित रहे हैं।

पर्वतीय प्रदेश होने के कारण ही प्राचीन काल से उत्तर और दक्षिण भारत के मार्ग में होने पर भी आवागमन का यहाँ से कोई प्रशस्त मार्ग नहीं रहा। मालवा से पश्चिम समुद्र निकट होने के कारण वहाँ का व्यापार यद्यपि गुजरात से कुछ होता था, पर शेष प्रान्त अपनी परिस्थिति के कारण कभी व्यापारिक नहीं रहा। किन्तु मनुष्य-जीवनोपयोगी वस्तुओं के लिये उसे कभी परमुखापेक्षी भी नहीं रहना पड़ा। २० से ४० इंच की औसत वर्षा अल्पजलापेक्षी (कपास, गेहूँ इत्यादि) एवं बहुजलापेक्षी (धान इत्यादि) पौधों को पर्याप्त प्रमाण में उत्पन्न करती है। चरखों के समय में बुन्देलखण्ड एवं चन्देरी (ग्वालियर) अपने वस्त्रों के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। बुन्देलखण्ड के अस्त्र अब भी प्रसिद्ध हैं।* साहित्य (धारानगरी) संगीत (ग्वालियर) एवं कला-कौशल (सांची, भिलसा, भरहुत, खजुराहो कालिंजर इत्यादि) की यहाँ उत्तरोत्तर उन्नति होती गई है।

स्वाधीन-जीवी प्रदेश होने के कारण ही यहाँ के शासकगण सदा से स्वतन्त्र होते आये हैं और शुष्क किन्तु अधिक उष्ण प्रान्त न होने के कारण यहाँ की मनुष्य जाति सदा से बहादुर जाति रही है। कछवाहा, प्रगार, चन्देल, बुन्देला एवं बाथेला वीर सदैव से स्वतन्त्रता के लिये लड़ते रहे हैं। मनुष्य जीवनोपयोगी सब सामग्री सम्पन्न होने पर भी व्यापारिक प्रान्त न होने के कारण ही आबादी १२० प्रति वर्गमील से अधिक नहीं बढ़ी है। उज्जैन आदि में जहाँ कहीं प्रान्तीय व्यापार होता था। वहाँ की आबादी भी अधिक थी; किन्तु आज कल रेलों के समय में अब वह दशा नहीं रही। अब किसी देश की भौगोलिक परिस्थिति में रेल मार्ग का भी पर्याप्त भाग होता है। यद्यपि मध्यभारत की प्रान्तीय परिस्थिति रेलमार्ग में भी बाधक हुई है; किन्तु रेलों की रेलापेली में इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, ग्वालियर, भोपाल और सतना यहाँ के व्यापार के केन्द्र हो रहे हैं। इनमें इन्दौर ही सबसे प्रमुख है; क्यों कि एक तो मध्यभारत के सब से उपजाऊ प्रान्त मालवा में इसकी स्थिति है, दूसरे भारत के फाटक बम्बई से इटारसी द्वारा, यह जुड़ा हुआ है और प्रान्त की राजधानी भी है।

---

* स्वाधीन भारत के समय में यहां भी उत्तमोत्तम शस्त्रास्त्र बनाये जाते थे। उनमें तलवारें विशेष उत्तम होती थीं। और वे खास खास स्थानों की अपने अपने ढंग की होती थीं, जैसे सूरत की सुखी, गुजरात की तलवार, हुगली और बर्दवान (बङ्गाल) का तेगा, बूँदी की कटार इत्यादि। किन्तु बुन्देलखण्ड इन सब प्रकारों की नकल कर के अपने यहाँ सब प्रकार की तलवारें तैयार करता था।

—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्ट्रेलिया की लोमड़ियाँ

किसी समय डिंगो या आस्ट्रेलिया का जंगली कुत्ता वहाँ के स्क्वेटरों (मेष-वालों) या भेड़ों के मालिकों का जानी दुश्मन था। वह उनके भेड़ों को मारकर खा डालने में बड़ा होशियार हो गया था। इसी से डिंगों को नष्ट करने में लाखों रुपये खर्च किये गये और असीम प्रयत्न किये गये। फल यह हुआ कि आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की तरह डिंगों आस्ट्रेलिये के किसी किसी भाग में केवल इनी गिनी संख्या में शेष रह गये हैं। जिन भागों में भेड़ें पाली जाती हैं उनमें डिंगों का प्रायः बिल्कुल भय नहीं रह गया है। दुर्भाग्य से बहुत से भागों में डिंगों का स्थान लोमड़ी ने ले लिया है।

जैसे रेविट (बड़े जंगली चूहों) को लाने वाले लोगों को यह ध्यान न आया कि इनसे आस्ट्रेलिया में कितनी हानि होगी इसी तरह लोमड़ी लाने वालों ने भी इस बात पर विचार न किया कि लोमड़ी से वहाँ क्या क्या हानि होगी। कुछ वर्षों पहले अंग्रेज लोग इंगलैंड से आस्ट्रेलिया में लोमड़ी इस लिये लाये थे कि आस्ट्रेलिया में भी उन्हें लोमड़ी का शिकार करने का अवसर मिले। मेलबोर्न को छोड़ कर आस्ट्रेलिया के और किसी भाग में लोमड़ी का शिकार लोकप्रिय न हो सका। लेकिन आस्ट्रेलिया में लोमड़ियों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी। आस्ट्रेलिया को ज़मीन और जलवायु लोमड़ियों को विशेष रूप से अनुकूल सिद्ध हुई। उनकी संख्या तो तेज़ी से बढ़ी ही उनका क़द भी बढ़ गया। आस्ट्रेलिया की लोमड़ियाँ इंगलैंड की लोमड़ियों से क़द में कहीं अधिक बड़ी हो गई हैं। क़द के बढ़ने के साथ साथ लोमड़ियों की चालाकी में किसी तरह की कमी नहीं हुई। अंग्रेजी लोमड़ी बन्दूक वाले आदमी से कम डरती है। वह जानती है कि उस पर गोली नहीं छोड़ी जायगी। इस लिये कभी कभी बन्दूक लिये मनुष्य लोमड़ी के निकट पहुँच जाता है। लेकिन आस्ट्रेलिया की लोमड़ी जानती है कि बन्दूक वाला मनुष्य उसके ऊपर गोली छोड़े बिना नहीं रह सकता इस लिये वह बन्दूक वाले के पास नहीं फटकती है। हाँ निहत्थे आदमी को देख कर कभी कभी वह चुपचाप खड़ी रहती है। इंगलैंड की लोमड़ी तो भेड़ के बच्चों पर हो हमला करती है। उन्हें बचाने के लिये इंगलैंड के गड़रिये तरह तरह की तरकीबें करते हैं। लेकिन आस्ट्रेलिया की लोमड़ी क़द में इतनी बढ़ गई है कि वह भेड़ों पर भी हमला करने में नहीं हिचकिचाती मेमने (भेड़ के बच्चे) इतने अधिक होते हैं कि उनको लोमड़ो से बचाना असम्भव सा हो जाता है। इसी से भेड़ पालने वाले लोमड़ी को मारने की ताक में रहते हैं। आस्ट्रेलिया में जो लोग रैबिट (सफेद बड़े चूहे) फँसाते हैं वे भी लोमड़ो को पसन्द नहीं करते हैं। आस्ट्रेलिया के किसान रेविट को नष्ट करने के लिये रैबिट फँसाने वालों की सहायता लेते हैं। इसके बदले में वे उन्हें खाने पीने की चीजें दे देते हैं। उनको इन रैबिटों से बड़ी आमदनी होती है वे उन्हें बेचकर काफी धन कमाते हैं। रैबिट फंसाने वाले लोग एक साथ प्रायः तीन सौ जाल लगाते हैं। इस लिये एक दिन में वे एक जाल को एक बार से अधिक नहीं देख सकते। फिर भी जब फँसाने वाले लोग जाल को देखने आते हैं तो उन्हें अक्सर एक एक जाल में समूचे रैबिट की जगह रैबिट की एक एक टांग फंसी मिलती है। उसके शेष भाग को लोमड़ियां खा जाती हैं। इससे रैबिट फंसाने वाले लोग नाराज़ होकर लोमड़ियों को मारने की कोशिश करते हैं। एक लोमड़ी को खाल से भी उन्हें आठ दस शिलिंग (६ या सात रुपये) मिल जाते हैं।

लोमड़ी वैसे तो बड़ी होशियार होती है। लेकिन जब वह फंसे हुए रैबिट की आवाज सुनती है तो वह सब सावधानी छोड़ कर रैबिट को खाने के लिये सीधी जाती है। वह जानती है कि यदि उसने देर की तो कोई दूसरी लोमड़ी आकर उस रैबिट को चट कर जायगी। शिकारी जाल के पास छिपा रहता है और नजदीक आने पर लोमड़ी का शिकार करता है। कभी कभी वह रैबिट की बनावटी आवाज़ करता है। लोमड़ी धोखे में आकर नज़दीक आती है और मारी जाती है। अब तो एक कम्पनी ने ऐसी सीटी तयार की है जिसकी आवाज़ फंसे हुए रैबिट की तरह होती है। इस से लोमड़ियों को मारने में बड़ी सहायता मिल रही है। लेकिन लोमड़ियों की हिम्मत बढ़ती जा रही है। एक बार एक लोमड़ी ने शिकारी के कन्धे पर चढ़ कर उसके गाल में काट खाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियों का कोष

अ

अकवोई—गायना इन्डियन की एक उपजाति। ये लोग केरिब भाषा बोलते हैं। पर ये लोग केरिब लोगों से क़द में कुछ छोटे होते हैं। ये लोग बिना दीवारों के घर बनाते हैं और मुर्दों को खड़ा गाड़ते हैं।

अवघासी—ये लोग काकेशस के सिरकेशियन की एक उपजाति हैं। ये लोग छोटे पर मज़बूत होते हैं और बूनेट भाषा बोलते हैं।

अवराम्वो—ये वेली प्रदेश में रहते हैं और माड़ी से मिलते जुलते हैं।

अकम्वा—पूर्वी अफ़्रीक़ा के बान्टू भाषा भाषी लोग। ये अपर ताना के दक्षिण में ऊँचे ढालों पर रहते हैं। वे ऊपरी दाँतों को कुछ तोड़ लेते हैं और बीच वाले निचले दाँतों को निकाल डालते हैं। वे अपने बच्चों को बड़ा प्यार करते हैं।

अफ़ग़ान—अफ़ग़ान, गिल्ज़ई, पठान, दुर्रानी, हज़ारा, ताजिक और ऐमक आदि लोग हैं। ये लोग ईरानी हैं। पर इन में मन्गोलियन की मिलावट है। ये परवतो बोलते हैं।

अयमर—बोलिविया के पठार पर रहने वाले मूल निवासी। ये लोग बड़े मज़बूत होते हैं और लामा (जानवर) पालते हैं। ये ऊपर से ईसाई हैं। लेकिन इनका विश्वास है कि असली देवता हिम प्रदेश में रहते हैं।

अरब लोग—अरब देश के लोग जो उत्तरी अफ़्रीका और एशिया के कुछ भागों में भी मिलते हैं।

अलफचूर—मलय प्रायद्वीप की एक जाति।

अमरीकन इन्डियन—ये लोग उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के रक्षित स्थानों में रक्खे जाते हैं। इन की संख्या घट कर प्रायः ४ लाख रह गई है। उत्तरी और मध्य अमरीका में वे एथेबास्कन अलगोन्क्वियन इरोकोई, सिऊोन सेलीशन, शोशोन-नअआटलन भाषा बोलते हैं। दक्षिणी अमरीका के इन्डियन लोग अरावक, केरिब, तूपी, तपुय्या, य्यूलची और सोने का भाषा बोलते हैं।

अलगोंक्विन—उत्तरी अमरीका की एक जाति।

अरवा—याका लोग ब्रह्मा में रहते हैं। उन के गाँवों में दो बड़े फाटक दुष्टात्माओं को निकालने के लिये रहते हैं।

अन्टानोसी—मेडेगास्कर के दक्षिण और मध्य में रहने वाले लोग।

अन्टान्करान—मेडागास्कर के उत्तरी सिरे पर रहने वाले लोग।

अन्टाइमोरो—मेडेगास्कर के धुर दक्षिणी सिरे पर रहने वाले लोग। वे एक प्रकार के हब्शी हैं।

अज़टेक—मेक्सिको के प्राचीन लोग। इन के घरों के तीन भाग होते हैं। देवालय, भोजनालय और अन्न रखने का घर।

अनामी—अनाम में रहने वाले लोग। यह श्याम देश की थाई भाषा बोलते हैं। इनके दाढ़ी कम होती है। ये बड़े चालाक होते हैं।

अबाबुआ—वेली-बोमो-कौंड़ी प्रदेश के बाँटू भाषा भाषी लोग। ये बेल्जियनकाँगो में रहते हैं। इन का क़द मामूली होता है। ये लोग चतुर शिकारी होते हैं और हाथियों को विषैले भालों से मारते हैं। वे बड़े हँसमुख होते हैं और अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

अमाम्बे—टैंगनिका के पठार व न्यासा की एक बाँटू जाति। ये लोग निचले भाग के दो दाँत निकाल डालते हैं।

अत्न—अचिन की एक जाति।

अटायल—फारमूसा द्वीप के उत्तरी भाग में रहने वाले लोग। ये लोग ज्वार, बाजरा, चावल, सुअर और हिरण का गोश्त खाते हैं।

अज़ान्डी—नील-बेल के जल विभाजक के पास मध्य अफ़्रीका में रहने वाले मूल निवासी। पहले मनुष्याहारी होने के कारण ये नियाम-नियाम कहलाते थे। पहले ये लोग बड़े लड़का होते थे।

अपाची—उत्तरी अमरीका के वे लोग जो एथेबास्कन भाषा बोलते हैं। ये लोग बहुत बात करते हैं।

अराकन—चिली देश के मूल निवासी।

अल्पायन जाति—यह छोटे सिर के लिये प्रसिद्ध हैं।

अरावक—दक्षिणी अमरीका के मूल निवासी जो ऊपरी पेरेग्वे से लेकर वेनिज़्वेला तक फैले हुये हैं।

अवाटवा—(बाटवा) मध्य अफ़्रीका में बेंगव्यूलो झील के दक्षिण में लुआपूला नदी के दलदलों में रहने वाले हब्शी लोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवार—काकेशस के लेसघियन लोग। वे बड़े लड़ाका होते हैं। छठीं सदी में वे डेन्यूब नदी के समीप आ बसे।

अशान्टी—गोल्ड कोस्ट के लड़ाका लोग।

अटिओ—बेल्जियन काँगो में स्टेनले पूल के उत्तर में रहने वाले बटेके लोग। बटेके का अर्थ बौना है।

अदिघी—सिरकेशियन लोग।

अन्टी—अरावाकन लोग जो काम्पा भी कहलाते हैं। ये लोग ऊपरी यूकेयाली के बनों में रहते हैं।

अचीनी—सुमात्रा के लोग। ये बड़े लड़ाका होते हैं और खेती करते हैं। वे मलय लोगों से अधिक काले तथा अधिक लम्बे होते हैं।

अफ्रीदी—पेशावर के पास वाले पठान लोग।

असीनी बोइन—मानटाना के रक्षित स्थानों में रहने वाले रेड इन्डियन लोग।

अम्बुन्दू—सैन पाल डि लोअंडा के पृष्ठ प्रदेश में रहने वाले बान्टू भाषा भाषी लोग।

अरून्टा या अरूँडा—मध्य आस्ट्रेलिया के लोग जो माकुम्बा नदी से मेकडोनल पर्वत तक फैले हुये हैं।

अनेटोलियन भाषायें—इन्डयूरोपियन भाषायें जिन में आर्मेनियन और विलोन फ्रिजियन और सिदियन भाषायें भी शामिल हैं।

अरेकूना—गायना के केरिब भाषा भाषी लोग। ये लोग सवन्ना प्रदेश में रहते हैं और मिट्टी के घर बनाते हैं।

अल्बेनियन—अलबेनिया के रहने वाले।

अबोर—ब्रह्मपुत्र की घाटी के उत्तर पूर्व की ओर वाली पहाड़ियों में रहते हैं और तिब्बती-बरमी भाषा बोलते हैं जो आसाम के उत्तर में बोली जाती है।

अशाँगो—विषुवत् रेखा के फ्राँसी सी प्रदेश के बाँटू भाषा भाषी लोग।

आ

आर्य द्राविड़—संयुक्त प्राँत, बिहार लंका आदि के रहने वाले।

आइबेरियन—इतिहास के पूर्व दक्षिणी-पश्चिमी योरुप के रहने वाले।

आइसलैंडर—आइसलैंड द्वीप में रहने वाले स्केंडनेवियन लोग।

आइरिश—आयर लैंड के निवासी।

आर्मेनियन—आर्मेनिया देश (पठार) के रहने वाले लोग।

आस्ट्रेलियन—आस्ट्रेलिया के मूल निवासी लोग बड़े दयालु होते हैं। लेकिन ये प्रायः नष्ट हो रहे हैं।

इ

इजो—नाइजर-डेल्टा के लोग ये लोग बड़े मज़बूत होते हैं और पाम आयल (तेल) के कारबार में दलाली का काम करते हैं।

इलोंगोट—फिलीपाइन के लोग। ये लोग नाटे लेकिन मज़बूत होते हैं। इनके यहाँ विवाह तब होता है जब दूल्हा किसी को मारकर उसका सिर ले आता है। नौ दिन के बाद यह सिर दुलहिन के घर में गाड़ दिया जाता है।

इमेरेशियन—अपर और मध्य रिओन घाटी में रहने वाले जार्जियन लोग।

इन्का—बोलिविया के लोग। पहले ये लोग पीरू देश में राज्य करते थे।

इन्डोनेशियन—पूर्वी द्वीप समूह के निवासी।

इटटू—हारा ज़िले में बोली जाने वाली भाषा।

इरूला—नीलगिरी के काले लोग।

इरोकाई—पूर्वी बन में रहते हैं। ये लोग उत्तरी अमरीका के केवल रक्षित स्थानों में रहते हैं।

इन्गुशा—काकेशस के लोग। कहा जाता है कि ये लोग बड़े चोर होते हैं।

ईडो या बीनी—बेनिन तथा उसके निकटस्थ देश प्राचीन काल में एक महान् राज्य का केन्द्र होने से सुविख्यात थे जो सत्रहवीं शताब्दी में गोल्ड कोस्ट तक विस्तृत था। बेनिन मानव बलिदान के कारण कलुपित था। राजा सुव्यवस्थित था तथा श्रेणीबद्ध कर्मचारियों द्वारा घिरा रहता था। वह अपने कुल का निर्धारण किसी योरब के द्वारा करता था। लगभग ७२० वर्ष पूर्व योरुब ने किसी निकटस्थ राजा के कुल को अपने अधीन करके (उस कुल के कुछ लोग अब तक बेनिन में थोड़े बहुत अधिकार का उपभोग कर रहे हैं) एक राज कुल की नींव दिया था। ईडो लोग लोअर नाइजर की भाषा का प्रयोग करते हैं जो टोगोलैंड के ईव तथा कककक से समानता रखती हैं। ईडो लोग शूरबीर तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिमानी होते हैं। उनके नेता अपने को योरुप के निवासियों से उत्तम समझते थे। हाँ; वे लोग अपने पड़ोसियों से अधिक समझदार तथा कम स्वच्छन्द रहते हैं। उनके घरों में सच्ची छत नहीं रहती। प्रत्येक कोठरी के मध्य में एक खुला स्थान रहता है। जिससे ख़राब ऋतु में जल-वृष्टि से बचाव नहीं रहता।

इजिप्शियन (मिस्री)—इजिप्ट देश के निवासी हैं। सात हजार वर्ष पहले से लेकर अब तक यहाँ की जन संख्या मिश्रित हो गई है जो चिपटी नाक वाले हेमिटिक लोगों के दो भिन्न समुदाय का सम्मिश्रण है। दो हज़ार वर्ष पश्चात् मेडिटरैनियन (भूमध्यसागर) के लम्बे सिर वाले मनुष्य हेमिटिक लोगों के स्थान में बसने लगे। वे रोम राज्य के पूर्व अठारहवीं शताब्दी में बहुत बलवान हो गये। उसी समय अल्पाइन के गोल सिर वाले मनुष्य सुविख्यात शक्ति धारण किये। देश की जनसंख्या में अब भी लम्बे सिर वालों का बाहुल्य है। किन्तु प्रान्तानुसार उनमें कुछ विभिन्नता है। एस्यूट के ऊपर मुसलमान लोग अधिकतर लम्बे सिर वाले तथा चौड़ी नाक वाले हैं। और उसके नीचे वाले डेल्टा में योरुप के अल्पाइन तथा मेडिटरेरियन लोगों की बढ़ती है।

इँगलिश—इँग्लैंड के रहने वाले लोग।

इथिओपियन—गाला आदि पूर्वी अफ़्रीका के लोग।

इगाबो—नाइजर नदी के पूर्व के सोम्बो लोग।

इगोरोट—फिलीपाइन द्वीप समूह के लोग। ये लोग बड़े अच्छे किसान होते हैं कभी कभी वे किसी पहाड़ो के पूरे ढाल को सींच लेते हैं। इनका रंग हल्का पीला या भूरा होता है। इनकी नाक चपटी और क़द नाटा होता है। टिंगुयान, इटनेग, बनयान, नीलयान आदि इनकी उपजातियाँ हैं।

ई

ईकोई—क्रास नदी से कुछ दूर नाइजीरिया की बान्टू बोलने वाली एक जाति है।

ईबो—नाइजर नदी के निचले भाग में रहने वाले हब्शी लोग। इनकी संख्या लगभग ४० लाख है। ये लोग बड़े खुले दिल और उदार होते हैं।

ईबीबिओ—नाइजीरिया के दक्षिण-पूर्व में रहने वाले हबशी लोग।

उ

उज़बेग—समरक़न्द, बुख़ारा आदि के तुर्की लोग। जो फ़रग़ाना के किपचक लोगों से मिलते हैं। १४ वीं सदी में उज़बेग ख़ाँ इनका नेता था। इसीसे इनका भी यह नाम पड़ गया। अब ये लोग बद्दू जीवन छोड़कर धीरे २ बसने लगे हैं। लकड़ी और मिट्टी के घर बन जाने पर भी इनके यहाँ गर्मियों में फेल्ट के डेरे अब भी दिखाई देते हैं। ये लोग कज्ज़ाक और किरगीज़ लोगों से बहुत कुछ मिलते हैं।

ए

एन्टलीज़ प्रदेश—पश्चिमी द्वीप समूह जहाँ अरावक और केरिब लोग रहते थे।

एबिसीनियन—ये लोग एबीसीनिया के रहने वाले हैं यह शब्द हबशी से बिगड़ कर बना है। ये लोग ईसाई हैं। अमहारिक और टिग्नी भाषा बोलते हैं।

एन्टीमेटिना—या होवा। ये लोग मेडेगास्कर में रहते हैं।

एलुन्डा—अंगोला की बाँटू भाषा बोलने वाली एक जाति।

एल्यूट—एस्किमो की एक उपशाखा जो एल्यूशियन द्वीप और अलास्का में रहती है।

एमेज़ान—ओरिनीको जातियाँ। ये लोग एक समय में आधे दक्षिणी अमरीका को घेरे हुए थे। उत्तर-पश्चिम के लोग अरावक और केरिब भाषा बोलते थे। दक्षिण-पूर्व के लोग तूपी और तपुय्या भाषा बोलते थे। ये लोग मछली मारते हैं और शिकार तथा खेती करते हैं। ये लम्बे लम्बे घरों में रहते हैं। ये लोग कम कपड़े पहनते हैं और ढोल से ख़बरें (सिगनल) पहुँचाते हैं। गायना के रहने वाले सूती कपड़े भी बुनते हैं।

ऐ

ऐटा—फिलीपाइन द्वीप के हबशी लोग जो पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं। इनके बाल ऊन के समान घूँघरदार और काले होते हैं। इनकी नाक कम लम्बी लेकिन अधिक चौड़ी होती है। होठ मोटे होते हैं। ये लोग मछली मार कर, शिकार करके और वन से खाद्य पदार्थ एकत्रित करके निर्वाह करते हैं। ये लोग बड़े ईमानदार होते हैं।

ऐनू—जापान और दक्षिणी साखालियन के लोग। ये लोग छोटे पर मज़बूत होते हैं। इनका चेहरा कुछ चौड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। नौ सदियों तक उन्होंने सारे जापान को घेर रक्खा। वे भालू के सम्मानार्थ बड़ा त्योहार मनाते हैं।

अं

अंडमानी—इनका क़द लगभग ४ फुट १० इञ्च होता है। ये लोग बहुत कम कपड़ा पहनते हैं और मछली मार कर गुज़ारा करते हैं।

अंडी—यहूदी ढंग के काकेशस लोग। ये अखार भाषा बोलते हैं।

अंगोनी—इन लोगों की उत्पत्ति ज़ुलू लोगों से हुई है। वे न्यासा झील के पश्चिम में रहते हैं और बाँटू भाषा बोलते हैं।

क

कनका—(मनुष्य) मैसूर और दक्षिणी बम्बई प्रान्त की भाषा।

कछारी—आसाम के कछार में रहने वाले लोग।

कबापल—अल्जीरिया के बर्बर लोग।

कबार्डियन—काकेशस के मुसलमान लोग। वे अपनी सिरकेशियन भाषा को अरबी अक्षरों में लिखते हैं।

कदापन—बोर्नियो के क्लेमान्टन लोग।

कराया—ब्रेज़िल के इण्डियन लोग। जो अरगुआया नदी के किनारे रहते हैं।

कशगई—दक्षिणी फ़ारस के लोग।

कलामाँटन—बोर्नियो के वे मूल निवासी जो खेती करते हैं।

कलाबीत—बोर्नियो के कलामाँटन लोग।

कनूरी—चाड झील के दक्षिण-पश्चिम के लोग जो सूडानी भाषा बोलते हैं। वे लोग बड़े लम्बे और काले होते हैं। पर वे हासा या मज़दूर लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

करेलियन—पूर्वी फिन लोग। इस शब्द का अर्थ ग्वाला है। ये लोग अपने पड़ोसी रूसी लोगों से मिलते हैं।

कबाबिश—एँग्लो-इजिप्शियन सूडान के धनी और शक्तिशाली लोग।

कबीरी—न्यूगिनी की फ़्लाई नदी के मुहाने पर रहने वाले लोग।

कछिन—इरावदी के निकास के पास रहने वाले लोग।

कनेम्बू—नाइजीरिया के उत्तरी प्रान्तों के लोग जो चाड झील के दक्षिण-पश्चिम में रहते हैं। कनेम्बू शब्द का अर्थ है कनेम का मनुष्य।

करेन—श्याम के पश्चिम की ओर बरमा के रहने वाले।

काकचिक्विल—क्विचे के दक्षिण में ग्वाटे माला के लोग।

काडूविओ—ग्रेनचाको के ग्वे कुरु लोग जो खेती करते हैं। वे जुलाहे और कुम्हार का काम करने में भी निपुण हैं।

काज़ीकुमुक—काकेशस के लाक या लेसगियन लोग। इस प्रदेश में यही लोग पहले पहल मुसलमान हुए थे इसलिये इन्हें गाज़ी भी कहते हैं।

काल्काडून—पूर्वी क्विन्सलैंड के मूल निवासी।

कामचाडल—(इटेलमीज) कमश्चटका के प्राचीन साइबेरियन लोग।

कारागा – पूर्वी अल्टाई के तुर्की लोग।

काराकल्पक—(काली टोपी वाले) आमू नदी के तुर्की लोग।

कायन—बोर्नियो के बौने लोग।

कायपो—ब्रेज़िल की अरागुआया नदी के पश्चिम में रहने वाले लोग।

कायाखा—मानखमेर भाषा बोलने वाले स्याम के लोग

काफ़िर—(१) उत्तरी-पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान के लोग। ये लोग हिन्दुस्तानी हैं जिन्होंने मुसलमान होने से इन्कार कर दिया। ये लोग बड़े बीर होते हैं और अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं। (२) नैटाल के बाँटू लोग।

कामिलो रोई—आस्ट्रेलिया के मूल निवासी जो न्यू साउथ वेलस के उत्तर में रहते हैं।

कारामुन्डी—आस्ट्रेलिया के मूल निवासी जो प्रायः नष्ट हो चुके हैं।

काकेशियन—गोरे लोग।

कायुगा—इरोकोई समूह के अमरीकन इण्डियन जो राज्यक्रान्ति के समय कनाडा चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किकुयु—पूर्वी अफ्रीका के वे लोग जो कीनिया पर्वत के पश्चिम में रहते हैं।

किपचक—स्वर्ण समुदाय (गोल्डियन होर्ड) के लोग।

किवई—लोअर फ़्लाई नदी और न्यूगिनी के पापुअन लोग।

किरगीज़—तूरानी तुर्क लोग।

किरेई या किरैट—मंगोलिया के उत्तर-पश्चिम में रहने वाले तूरानी तुर्क लोग या किरगीज़ लोग।

किस्त—काकेशस के मुसलमान लोग।

किंश्रोवा—अमरीकन इण्डियन लोग जो मिसूरी और आर्कांसास में रहते थे।

क्विचुआ—बोलिविया के रेड इण्डियन लोग। इनको चरका भी कहते हैं। पोटोसी में वे अब भी वही पोशाक पहनते हैं।

क्विचे—ग्वाटेमाला के मध्य भाग में रहने वाले लोग। इनका क़द काला और रंग पीला होता है। ये लोग खेती करते हैं।

कीनेयाह—बोर्नियो की एक प्रधान जाति।

क्री—मेकेंज़ी प्रदेश के रेड इण्डियन लोग। ये लोग बड़े ईमानदार और अतिथि-सेवी होते हैं।

कुबू—सुमात्रा के घुमक्कड़ लोग।

कुआनयामा—दक्षिणी अंगोला और उत्तरी डमारा-लैंड के बाँटू भाषा-भाषी लोग।

कुविरी—नेलसन अन्तरीप के रहने वाले न्यूगिनी के लोग।

कुई—खोंड लोग।

कुर्द—लघु एशियाई (एशिया माइनर) और आरमीनिया के पठार पर रहने वाले लम्बे लोग।

कुनामा—दक्षिणी इरीट्रिया के सूडानी बोलने वाले लोग।

कुरुम्बा—नीलगिरि के लोग।

कुयोनो—फिलीपाइन लोग। इनका रंग पीला और बाल खड़े होते हैं। इनके पैर का बड़ा अँगूठा बड़ा लम्बा होता है। वह दूसरी अँगुलियों से बहुत अलग होता है।

कुशापट—पूर्वी अफ्रीका के अगाओ, गाला, सुमाली अफ़रसाहो आदि लोग।

कूटेनाई—ब्रिटिश कोलम्बिया के कूटोनाका लोग। ये लोग छाल की विचित्र नाव रखते हैं। पहले ये लोग नदी और झील के तट पर ही रहते थे। अब हाल में ये लोग घोड़े पर भी चढ़ने लगे हैं।

क्रू—तट तथा लाइबेरिया के पृष्ठ प्रदेश में रहने वाले हबशी लोग। ये लोग नाव चलाने में प्रसिद्ध हैं। ये अपने माथे के नीचे नीला टीका लगाते हैं।

केई—द्वीपीय मूल निवासियों और मलय लोगों के मेल से उत्पन्न लोग। ये लोग मेलमेल (श्रेष्ठ), रिनरिन (प्रजा) और ईरी नाम के तीन वर्गों में बँटे हुए हैं।

क्वेसी—(ख्वेसी) लाइबेरिया के वे लोग जो मैंडिंगो भाषा बोलते हैं।

क्रेज या क्रेडी—बहरुलगज़ल के चौड़े सिर वाले लोग। ये लोग कुछ छोटे होते हैं।

केलिफोर्निया क्षेत्र—वह ज़िला जिसमें ऐसे लोग बसे हैं कि जिनके पास नाव या मिट्टी के बर्तन भी नहीं हैं। ये लोग जंगली बीजों पर निर्वाह करते हैं।

केनेलोस या क्विजोस—इक्वेडार में नापो के निकास के पास रहने वाले लोग।

केरिब—दक्षिणी अमरीका के वे लोग जिनमें अका-वाय, बकेरी, गालिबी, मकूसी, रुकियन आदि लोग शामिल हैं।

केशिबो या कारापेची—यूकेयाली के पश्चिम में नोअन लोग।

केल्ट—इटेलोकेल्ट समूह की भाषा बोलने वाले लोग।

कैज़क—अरल, कास्पियन बेसिन के उत्तर-पूर्व में रहने वाले लोग। ये लोग किरग़ीज़ लोगों से मिलते जुलते हैं। ये लोग घोड़े और शेर पालते हैं।

कैटिश—मध्य आस्ट्रेलिया के मूल निवासी। ये बेरो-क्रीक के आस पास बसे हैं। इनका रहन-सहन आरुँटा लोगों से मिलता जुलता है।

कोली—पश्चिमी हिन्दुस्तान की एक जाति।

कोहिस्तानी—कोहिस्तान के तानिक लोग।

कोम्बे या नगुम्बी—स्पेनिशगिनी के तट पर बेनिटो और केम्पो नदियों के बीच में रहने वाले लोग जो बाँटू भाषा बोलते हैं।

कोरण्डे—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका में मसालू नदी के पास रहने वाले मकोरण्डे लोग।

कोंजर—मध्य अफ्रीका के दारफूर लोग। इनका रंग ... रंग का होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोरियन—कोरिया के रहने वाले।

केरिञ्ची—मलय प्रदेश की एक जाति। ये लोग पडांग के पास पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं।

कोर्याक—कमचटका के पास के रहने वाले पेलिओ साइबेरियन लोग। ये लोग मछली मार कर और रेनडियर पाल कर अपना निर्वाह करते हैं।

कोटा—नीलगिरि प्रदेश के दस्तकार लोग।

कोटोको—चाड झील के दक्षिण में लम्बे सूडानी लोग। ये लोग लकड़ी के टुकड़ों को सी कर नाव बनाते हैं।

क्रोबो—गोल्डकोस्ट के ट्वी लोग।

कोमाञ्चो—शोशोनियन भाषा बोलने वाले व्योमिंग के रेड इण्डियन लोग।

कोसाक—रूस के लड़ाका सिपाही।

क्रो—अमरीकन इण्डियन लोग जो सिओन भाषा बोलते हैं।

ख

खा (मनुष्य)—इण्डोचीन के लोग।

खालकस—लोअर मंगोलिया के लोग।

खासी—आसाम की खासी पहाड़ियों के लोग।

खेमर—कम्बोडिया और स्याम के वे लोग जो मान खमेर भाषा बोलते हैं।

खोंड या कोंढ (गोंड)—उड़ीसा के पहाड़ियों के द्राविड़ लोग। धान की खेती करने के लिये ये लोग बन को जला दिया करते हैं।

ग

गलेगो—गेलिशिया उत्तरी पश्चिमी स्पेन की भाषा।

गाया अक्रा—गोल्ड कोस्ट के लोग।

गारो—खासी के पश्चिम में आसाम के लोग।

ग़िल्जा या ख़िल्जी—पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान के तुर्की लोग।

गिल्याक—उत्तरी साखालियन के लोग जिनका मुख्य पेशा मछली मारना है।

ग्रीक—वर्तमान ग्रीस (यूनान) के लोग।

गुरखा—नैपाल के लोग।

गुरियन—सुराम (काकेशस) पर्वत के जार्जियन लोग।

गुआनाको प्रदेश—केपहार्न से बोलिविया तक का वह प्रदेश जिसमें बद्दू लोग रहते हैं।

गुआरानी—पेरेग्वे और दक्षिणी ब्राज़ील के लोग।

गुआकुरू—पेरेग्वे के वर्ण संकर लोग।

गोला—सिअरालिओन और लाइबेरिया की सीमा के लोग।

च

च्यूस्यर—जार्जिया के वर्ण संकर लोग।

चाम—कोचीन चाइना के लोग।

चान्टोज़—तुर्किस्तान के वर्ण संकर लोग। ये लोग खेती और व्यापार करते हैं।

चारगर—चिली और शान्सी के उत्तर वाले प्रान्तों में रहने वाले मंगोल लोग।

चारुआ—यूरुग्वे के लोग बोला का प्रयोग करते हैं और घोड़े पर सवार होकर शिकार करते हैं।

चिकासा—अकूला हामा के मकूगियन लोग जो कोलम्बस के आने से पहले मिसीसिपी स्टेट में बस गये थे।

चिचाअकी—दक्षिणी अमरीका का उत्तरी भाग इसमें वह फिरके रहते हैं जो विषैले तीर चलाते हैं। इस तरह के कुछ लोग कोलम्बिया में भी रहते हैं।

चिन—ब्रह्मा के पहाड़ी लोग। इसी से चिन्दविन नाम (इरावदी नदी की सहायक नदी का) पड़ा है।

चिलकट—अलास्का के लिनकिट लोग जो अपने कम्बलों के लिये मशहूर हैं।

चिनूक—प्रशान्त महासागर के तट पर बसने वाले लोग कोलम्बिया नदी के उत्तर में बसे हुये थे। आजकल वे प्रायः नष्ट हो गये हैं।

चिप्पेवा—अलोन्किन जाति के ओजिवा लोग।

चिप्पेवियान—कनैडा के एटोवास्कन लोग।

चिरिग्वानो—ग्रेन चाको के पूर्व में रहने वाले कम्बा लोग।

चित्राली—हिन्दुकुश के दक्षिण में रहने वाले लोग। इनका सिर गोल होता है।

चिक्विटो—तूवी भाषा बोलने वाले बोलिविया के लोग। इनका रंग ज़ैतूनी और क़द नाटा होता है। ये लोग बड़े ईमानदार और मेहनती होते हैं।

चीनी—चीन देश के निवासी। उत्तर के लोग मन्चू और दक्षिण के लोग मिआओत्से कहलाते हैं। चीनी लोग बड़े ईमानदार और मेहनती होते हैं।

चुकची—साइबेरिया के धुर उत्तर-पूर्व में रहने वाले पेलिओ साइबेरियन लोग। इनकी दो जातियाँ हैं। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति के लोग रेनडियर पालते हैं दूसरी जाति मछली मारती है।

चुवास—कज़ान प्रदेश के फिनिक लोग। ये लोग बड़े मेहनती और कम ख़र्च होते हैं। वे बड़े अच्छे किसान होते हैं।

चेचेन—मध्य टेरेक श्रासा आदि के लोग। इनमें किस्त, गलगई और इन्गुश लोग शामिल हैं। ये लोग अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

चेरेमिस—वालगा प्रदेश के फिनिक लोग। इनके सिर छोटे आखें तंग, दाढ़ी छोटी और नाक चपटीहोती है।

चेरोकी—वर्जिनिया के इरोकिन लोग।

चेचीन—मैदान के रेडइन्डियन जो अलगान्कियन भाषा बोलते हैं और सूर्य-नृत्य करते हैं।

चोलो या चोला—बोलविया के वर्ण संकर इन्डियन लोग।

चोलोन—हुआलागा के बायें किनारे पर रहने वाले दक्षिणी अमरीका के लोग।

चोन्टाल—निकारेगुआ के पोपोलूका लोग। नाहुआटल भाषा में चोनटान अजनबी को कहते हैं।

चोरोटेगा—निकारेगुआ और मेक्सिको के वे लोग जो माँग्वे भाषा बोलते थे।

चोकटा—मिसीसिपी नदी के समीप रहनेवाले मस्कोगियन लोग। ये लोग मुरदों की हड्डियों को साफ करके हड्डी को घरों में जमा करते थे।

ज

जगतई भाषायें—तुर्की-तारतारी भाषायें जिसमें उईगुट, कोमन, जगतई, उसबेग, तुर्कोमन और कज़ान भाषायें शामिल हैं।

जर्मन—जर्मनी के रहने वाले लोग।

जम्बो—सुमात्रा के मलय लोग।

जम्ब्रो—एबीसीनिया के वे लोग जो सोबात नदी के किनारे पर रहते हैं।

जाट—उत्तरी-पश्चिमी भारत के किसान लोग। पुराने समय में इन्होंने सिन्ध की घाटी को जीता था।

जापानी—जापान के लोग। इनमें माँचू और कोरिया का रुधिर भी मिला है।

जार्जियन—काकेशस के दक्षिण में रहने वाले कथिली लोग।

जाकुन—मलय प्रायद्वीप के वर्ण संकर लोग। ये प्रायः मलय प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में रहते हैं। इनके बाल खड़े होते हैं।

जावानी—जावा द्वीप के रहने वाले लोग। इनका रंग हल्का और बाल सीधे होते हैं। इनका सिर गोल होता है, ये सुंडा के लोगों से क़द में बड़े होते हैं।

जिप्सी—बञ्जारे, नट लोगों की तरह के घुमक्कड़ लोग। फारस और तुर्किस्तान में वे लूली और मलङ्ग कहलाते हैं सिरिया में उन्हें चिंगने कहते हैं। इँग्लैंड में इस तरह के लोग बहुत कम हैं। रूस में वे बहुत अधिक हैं।

जिवारो—एमेज़ान के निकास के पास के लोग। ये लोग बड़े स्वाभाविक भक्त होते हैं। इन्हें स्वतन्त्रता बड़ी प्रिय होती है।

जिरियन—फिनिक लोग जो मामूली क़द, भूरे बाल, और गोल सिर के होते हैं।

जुकून—बेन्यू नदी के दक्षिण में सूडानी बोलने वाले लोग।

जुलू—(अमाज़ुलू) दक्षिणी पूर्वी अफ़्रीका के बाँटू भाषा भाषी लड़ाका लोग।

ज़ूनी—उत्तरी अमरीका के दक्षिण-पश्चिम में रहने वाले प्यूबलो लोग।

जेर्क्री—(शेक्री) नाइजीरिया में नदी के पास के रहने वाले लोग।

जेफी—पू लोगों के ही रूपान्तर हैं।

ज़ेपोटेक—छोटे सिर वाले मेक्सिको के निवासी जो स्पेन वालों के आक्रमण के समय प्रशान्त महासागर की ओर रहते थे।

ट

टर्क—टर्की के लोग जो शायद प्राचीन हूण लोगों के सम्बन्धी हैं।

टर्को—ईरानी, बलूची, बरुही और अफ़ग़ान लोग।

टस्केरोरा—नार्थ केरोलिना के सन इकट्ठा करने वाले इन्डियन लोग।

टश—जार्जियन लोग जो प्रायः काकेशस के उत्तर में रहते हैं।

टावस्टियन—पश्चिमी फ़िन लोग। जो अपने को हेमेलेसेट झील के पास रहने वाले कहते हैं इनका शरीर चौड़ा और भारी होता है। इनकी आँखें तिरछी, भूरी या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीली होती हैं। ये लोग ईमानदार लेकिन बदला लेनेवाले और सुस्त होते हैं।

टापीरो—न्यूगिनी के हबशी लोग जो मिमिका नदी के निकास के पास रहते हैं। पापुअन लोगों से इनका रंग कुछ हल्का (गोरा) होता है। इनका क़द ५ फुट से ५ फुट ४ इं० तक लम्बा होता है।

टिंगुयन या इटनेग—उत्तरी लूज़न के पहाड़ी लोग जो धान की खेती करते हैं।

टिंलकिट—एलास्का के पच्छिमी तट पर रहने वाले अमरीकन इण्डियन लोग। इनका सिर गोल और रङ्ग पीला होता है।

टिकीटिकी—ऊपरी इटूरी नदी के बौने लोग। जो काँगो और नील नदी के बीच में रहते हैं। ये लोग बद्दू होते हैं। ये लोग अटिओ या बेंटेके लोगों से मिलते जुलते हैं। ये लोग चट्टानों में आश्रय लेते हैं। शिकार की चीज़ें देकर संगबेट्टू या मोम्बू लोगों से फल, हथियार और कपड़ा मोल लेते हैं।

टुंगस—निओसाइबेरियन लोग। जिनमें गोल्डी, मांचू और ओरोचोन आदि लोग शामिल हैं। शिकार करने में ये लोग बड़ी वीरता दिखलाते हैं। ये शमानी होते हैं।

टेडा—चाड झील के उत्तर और ताइबस्ती पठार में रहने वाले सहारा रेगिस्तान के लोग। इनका रंग काला होता है लेकिन ये हबशी नहीं होते हैं। ये लोग टीबू और कनूरी लोगों से मिलते हैं।

टेलिगू—आन्ध्र प्रान्त की भाषा।

टेंगरेसे—जावा के पूर्व में रहने वाले पहाड़ी लोग। इनके सिर लम्बे, नाक चौड़ी और बाल घूँघुर वाले होते हैं। ये लोग दक्षिणी भारत के उन लोगों की सन्तान हैं जो यहाँ ७वीं सदी से आने लगे।

टेहुआना—मेक्सिको के टेहुआस्टी पेक प्रदेश में रहने वाले ज़ेपोटेक लोग।

टेहेलची—पेटोगोनिया के मूल निवासी। इनका क़द बहुत लम्बा (५ फुट ८ इञ्च से ६ फुट तक) होता है। ये लोग अधिकतर गुआनाको का मांस खाते हैं।

टोडा—नीलगिरि की पहाड़ियों पर रहने वाली एक जाति। पहले इन लोगों में कन्या को मार डालने की चाल थी। इसलिये स्त्रियाँ बहुत कम हो गईं और एक स्त्री के कई पति होने लगे।

टोबा—पिल्कोमेयों और बरमेजो के बीच में रहने वाले बोलविया के लोग। ये लोग लम्बे होते हैं और चिरीगुआनो लोगों से उनका रंग अधिक काला होता है।

टोमक—वे बल्गेरियन लोग जो मुसलमान हो गये।

टोंगा—न्यासा झील के पश्चिम में रहने वाले बाँटू भाषा-भाषी लोग। इसी नाम के कुछ लोग इन्हाम्बेन के पास तट पर रहते हैं।

टोपा—पाँडीचीरी के पुर्चगीज़ लोग।

ड

डच – हालैंड के लोग। और डुंगन (ज़ुंगन या ज़ुंगर) इलाई नदी के पास वाले प्रदेश के पश्चिमी मंगोलियाटिकी टारटार लोग। ये लोग मुसलमान हैं लेकिन चीनी ढंग से रहते हैं।

डनाकिन या अफार—हेमायटिक जाति के वे लोग जो एबीसोनिया और समुद्र के बीच वाले खुश्क प्रदेश में रहते हैं। बनावट में येला सुमाली से मिलते हैं। लेकिन इनमें अरबीपन बहुत कम है।

डाकोटा या सिओक्स—ये लोग सुपीरियर झील के दक्षिण-पश्चिम मैदान में रहते थे। इनकी संख्या इस समय ३०,००० से अधिक नहीं है।

डाफला—हिमालय प्रदेश के बाँधिन लोग जो शिकार से रोज़ी कमाते हैं।

डुसून—बोर्नियो के इन्डोनेशियन लोग जो खेती करते हैं।

ड्रूस—लेबनान और एन्टीलेबनान के लोग। ये लोग अरबी बोलते हैं। नाम मात्र को इनका मत ईसाई है।

डेनी या टिनेह—उत्तरी अमरीका में मेकेंज़ी-समुदाय के लोग। ये लोग छाल के रेशे से जाल बनाकर केरिबो हिरण को पकड़ते हैं। इसी मांस से उनका गुज़ारा होता है। इस मांस के पकाने के लिये वे स्प्रूस लकड़ी की बनी हुई टोकरी से हाँडी का काम लेते हैं। वे लोहे के टुकड़ों से आग बना लेते हैं फिर वे आग में पत्थरों को गरम कर लेते हैं। अन्त में वे इन्हीं गरम पत्थरों को मांस से भरी हुई टोकरी में डाल डाल कर अपना भोजन पका लेते हैं।

डेलावेर या लेनापी—एल्गोंक्वियन समुदाय के लोग जो पहले डेलावेर नदी के बेसिन में रहते थे।

डेन—डेनमार्क के लोग। इनकी भाषा वही है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नार्वेजियन लोगों की है। निओलिथिक समय से पहले यह देश बसा नहीं था।

त

तगबानुआ—फिलीपाइन के कैलिमियेन द्वीप समूह के निवासी। क़द में ये लोग छोटे होते हैं पर इनकी टाँगें बड़ी लम्बी होती हैं। ये बड़े मेहनती होते हैं।

तनगुत—दक्षिणी-पश्चिमी चीन के मंगोल और दूसरे लोग।

तगाल—बोर्नियो के लम्बे और मज़बूत लोग।

तगालोग—मेनिला के पास रहने वाले फिलीपायन लोग।

तलामान्का—चिब्चा भाषा बोलनेवाले कोस्टारिका के लोग।

तराञ्ची या इलाई तारतार—तुर्की लोग जो रूसी तुर्किस्तान में आकर बस गये। जब चिंगेज़ ख़ाँ ने कुलजा पर अधिकार कर लिया तभी ये लोग इधर आये थे। ये लोग सार्ट लोगों के सम्बन्धी हैं; लेकिन ये लोग खेती करते हैं और अपनी स्त्रियों को अधिक स्वतन्त्रता देते हैं।

तरास्को—मेक्सिको के मेचोआकन प्रदेश के ब्यूरेपेचा लोग। ये लोग बड़े वीर और दयालु होते हैं। इनकी स्त्रियाँ अपने बच्चों को कन्धों पर लटका कर ले जाती हैं।

ताजिक—गोल सिर वाले पूर्वी फ़ारस के लोग। ये लोग खेती करते हैं। पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले लोग परसीवान (फ़ारसी की एक उप-भाषा) बोलने के कारण परसीवाल कहलाते हैं। मैदान में रहने वाले दिखन (किसान) कहलाते हैं।

तामिल—उत्तरी लङ्का और दक्षिणी हिन्दुस्तान के लोग। इनमें पल्लाई, एयीन और वेल्लाल जातियों के सिर लम्बे होते हैं। दूसरे लोगों के सिर चौड़े होते हैं। इनकी द्राविड़ भाषा बड़ी पुरानी है। शुद्ध भाषा कोशेन और बिगड़ी हुई भाषा को कोदुम कहते हैं।

तानला—मेडेगास्कर के घने बनों में रहने वाले हबशी लोग।

ताई या थाई—स्याम इन्डचीन और चीन के वे लोग जो स्यामी चीनी भाषा बोलते हैं। लोलो लोगों को छोड़ कर ये लोग इस प्रदेश के बड़े पुराने रहने वाले हैं। लड़कपन में इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र होती है और ये लोग सीखने में बड़े कुशल होते हैं। लेकिन नशीली तम्बाकू पीने के कारण बड़ी उम्र में वे बड़े सुस्त हो जाते हैं।

ताराहुमारे—मेक्सिको के उत्तरी पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले लोग। इनका रंग कुछ भूरा और शरीर गठीला होता है।

तारतार—मध्य एशिया के असली तारतार लोग तो नष्ट हो गये। परन्तु यह शब्द पश्चिमी एशिया के तुर्क लोगों के लिये प्रयुक्त होता है। ये लोग मंगोल लोगों से हिल मिल गये। तारतारी भाषाओं में तुर्की तारतारी, किरग़ीज़, बश्कीर, नोगाई, कोमान, कारचल, काराकल्पक, मश्चेरक और साइबेरियन भाषायें शामिल हैं।

गविंज़ुर—नूबिया के लोग। इन्हीं में चाड झील के दक्षिण-पश्चिम में रहने वाले शूवा अरबी भी शामिल हैं। कहते हैं कि ये लोग ट्यूनिस से यहाँ आये।

तुकानो—एमेज़ान प्रदेश के लोग जो देशाना लोगों के दुश्मन हैं। इनका सिर गोल होता है। ये मछली मार कर खाते हैं और बेटोया भाषा बोलते हैं।

तुगाई या कैया-कैया—न्यूगिनी के मनुष्याहारी लोग।

तुर्की—मध्य एशिया के लोग जो खेती करते हैं। तुर्की लोगों में याकूत, किरगीज़, उज़बेग, टर्कमान आदि लोग शामिल हैं। पश्चिमी तुर्कों की भाषा में डरबेन्ट, अज़र बैजान, काइमियन, अनाटोलियन और रुमेलियन भाषायें शामिल हैं। अनाटोलियन और रुमेलियन के मिलने से ओस्मानली भाषा बनी है।

तुर्कीतारतारी—इन लोगों में क़ज़ान तारतार, तारतार, क्राइमिया के तारतार, तौरिदा, किरग़ीज़, कास्पियन के नोगई और ओरनबर्ग में बश्कीर शामिल हैं।

तुरकाना—रुडाल्फ झील के पश्चिम में पूर्वी अफ्रीका के लोग। ये संसार भर के मनुष्यों से अधिक लम्बे होते हैं। इनकी औसत ऊँचाई ७ फुट होती है। ये लोग ढोर पालते और मछली मारते हैं।

तूरानी—पारसी लोगों के अवस्ता ग्रन्थों में तूरा (तुरया) शब्द उन प्रदेशों के लिये आया है जिन्हें आजकल तूरान कहते हैं। तारतारी का दूसरा नाम तूरान है।

तोरज—सेले बीस द्वीप के जंगली लोग। ये लोग सीधे सादे और ईमानदार होते हैं।

तोमत—खीबा के पड़ोस में रहने वाले तुर्की लोग।

तौरेग—सहारा के बर्बर लोग जिन्हें अस्थेनावा (अलेक्जेन्डरवालीस्तान) के रहने वाले कहते हैं।

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहा और फौलाद

बहुत पुराने समय में मनुष्य अनाज और तरकारी उगाना नहीं जानते थे। वे जंगली जानवरों का शिकार करके उनके मांस से अपना पेट भरते थे। उन दिनों जङ्गली जानवर बहुत थे। लेकिन उनको मारना कठिन था। उस समय के लोगों के हथियार बहुत भद्दे थे। वे तेज़ पत्थरों को लकड़ी में बांध कर भाला बनाते थे।

एक वार कुछ लोगों ने काले पत्थरों के ढेर के पास आग जलाई। इन्हीं में एक पत्थर कड़ी आंच में पिघल कर बहने लगा। गरमी में घुल कर वह शीरे की तरह गाढ़ा और आग की तरह लाल हो गया। ठंडा होने पर

२—लोहा साफ करने की पुरानी भट्ठी।

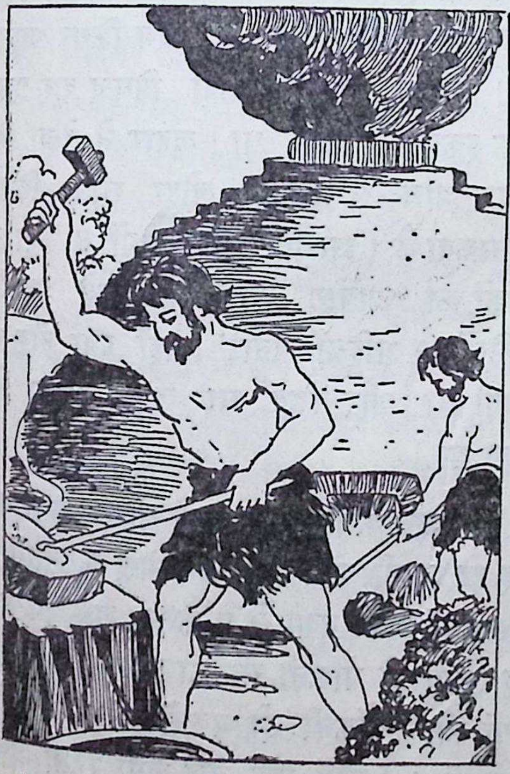

१—पत्थर के हथौड़े से लोहा पीटने का ढंग।

वह फिर कड़ा हो गया। यही लोहा था। इसको फिर गरम करके इन्होंने इसे पत्थर के हथौड़ों से पीटा। उससे उन्होंने तरह तरह के हथियार बनाये। इस तरह एक नया युग शुरू हुआ।

लोहे में जल्द जङ्ग (काई) लग जाती है। इस लिये बहुत दिनों तक नहीं ठहरता है। फिर भी इजिप्ट (मिस्र) देश के एक पिरेमिड में लोहे का एक टुकड़ा मिला जो ४००० वर्ष का पुराना है। दिल्ली में पृथिवी राज के किले के पास वाला लोहे का खम्भा भी बहुत पुराना है।

एशिया के पश्चिम में भूमध्य सागर में क्रीट का टापू है। यहाँ के लोगों के बहुत पुराने समय में अजब ढंग से लोहे का पता लगा। वहाँ जङ्गल में बड़े ज़ोर की आग लगी। जङ्गल जल गया। लेकिन बाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह जगह पर वहाँ के लोगों को लोहे के ढेर मिले। इसी से वहाँ के लोग बड़े होशियार लुहार बन गये। सब से अच्छा लोहा आकाश से आता है। रात को जो छोटे छोटे तारे टूटते हुए दिखाई देते हैं उनमें किसी किसी में बहुत ही बढ़िया लोहा रहता है। लेकिन इस तरह का आया हुआ लोहा बहुत थोड़ा होता है। सबसे अधिक लोहा हमारी ज़मीन के भिन्न भिन्न भागों में मिलता है।

एशिया के प्राचीन लोग लोहे से तरह तरह की चीज़ें बनाते थे। पश्चिमी एशिया के एसीरियन लोग लोहे के रथ और सुन्दर गहने बनाते थे। उनके पास लोहे की तलवार और औज़ार थे। उनका आरा आजकल के आरे की तरह था। वे लोग लोहे से फौलाद बनाना जानते थे। फौलाद अधिक मज़बूत और चमकीला होता है। वह लोहे में कार्बन मिलाने से बनता, है कार्बन कोयले में मिलता है। तुम्हारी पेन्सिल में प्रायः शुद्ध कार्बन है। हीरे में सब से अधिक शुद्ध कार्बन रहता है।

पहले लोहे का पता लगाने और उसको शोधने में बहुत खर्च होता था। इस लिये आरम्भ में लोहा बहुत कीमती था। स्पार्टा (ग्रीस) के लोग लोहे के सिक्के बनाते थे। सिकन्दर हिन्दुस्तान से सोने के साथ साथ लोहे को भी लूट ले गया था। अब से छः सौ वर्ष पूर्व तक कहीं कहीं लोहे के तसले और बर्तन शाही हीरा जवाहिरात की तरह कीमती समझे जाते थे। पहले कच्चे लोहे को साफ

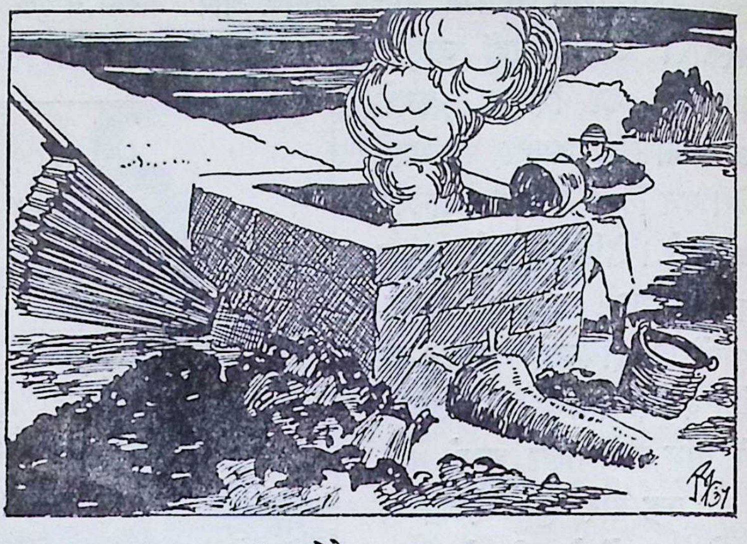

३—लोहे का साफ करना

करने का ढंग बहुत सीधा सादा था। कच्चा लोहा लकड़ी के कोयले से गरम किया जाता था। अधिक आँच में लोहा पिघल कर एक तरफ इकट्ठा हो जाता था। लुहार ने देखा कि अधिक आंच से अधिक लोहा साफ किया जा सकता है। इस लिये कुछ लोगों ने हवा के झोंकों का उपयोग करने के लिये पहाड़ी चोटियों पर भट्टियाँ बनाईं। वहाँ हवा ज़ोर से लगती थी और बहुत सा लोहा साफ हो जाता था।

लेकिन कभी हवा चलती थी। कभी वह बन्द हो जाती थी। इस लिये मिस्र के लोगों ने खोखले बेंत की नली से फूँकना शुरू किया। कुछ लोगों ने धौंकनी से काम लिया। मिस्री लोगों की धौंकनी दो बकरों की खाल से बनती थी। इनमें एक नल लगा रहता था। इसी से हवा आग तक पहुँचती थी। धौंकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला एक पैर एक खाल पर और दूसरा पैर दूसरी खाल पर रखता था। वह रस्सी को हाथ से पकड़ कर खालों के ऊपरी भाग को उठाता था। फिर वह बारी बारी से एक पैर से एक खाल को दबाता और दूसरी को ढीला करता जाता था।

इसके बाद भट्टियाँ बनने लगीं। इनमें कोयले की तहों के बीच में लोहे की तहें भरी जाती थीं। आँच को भीतर रखने के लिये बाहर से भट्टी मिट्टी या पत्थर से बन्द कर दी जाती थी। धुआँ निकलने के लिये ऊपर छेद होता था। नीचे हवा के आने के लिये छेद होता था। इस तरह की भट्टी में एक दो सेर लोहा निकालने में कई दिन लग जाते थे।

स्पेन में केटेलोनिया के लुहारों ने कुछ अच्छी भट्टियाँ बनाईं। इनमें वे बड़ी बड़ी धौंकनियों को हाथ या पानी के ज़ोर से चला कर हवा भरते थे। लड़ाई और दूसरे कामों के लिये लोहे की मांग बढ़ती ही गई। लोहा गलाने में लकड़ी का इतना कोयला खर्च होने लगा कि कई जगह जंगल साफ होने लगे। इंगलैंड के मल्लाह डरने लगे कि कहीं जंगल बिल्कुल साफ न हो जाय और उनको नाव बनाने के लिये लकड़ी न मिले। इसलिये वहाँ एक क़ानून बना कि कोई जलाने के लिये पेड़ को न काटे। इसी समय पत्थर का कोयला मिला और नये ढंग की बड़ी बड़ी भट्टियाँ बनने लगीं।

अमरीका के रेड इंडियन लोग लोहे के कुछ ज़ेवर बनाते थे। लेकिन वे बड़ी बड़ी भट्टियों को पसन्द नहीं करते थे। जब १६२२ ई० में इंगलैंड से आये हुए लोग वर्जीनिया में बसने लगे तो उन्हें वहाँ बहुत सा लोहा मिला। लोहे को साफ करने के लिये उन्होंने वहाँ बड़ी

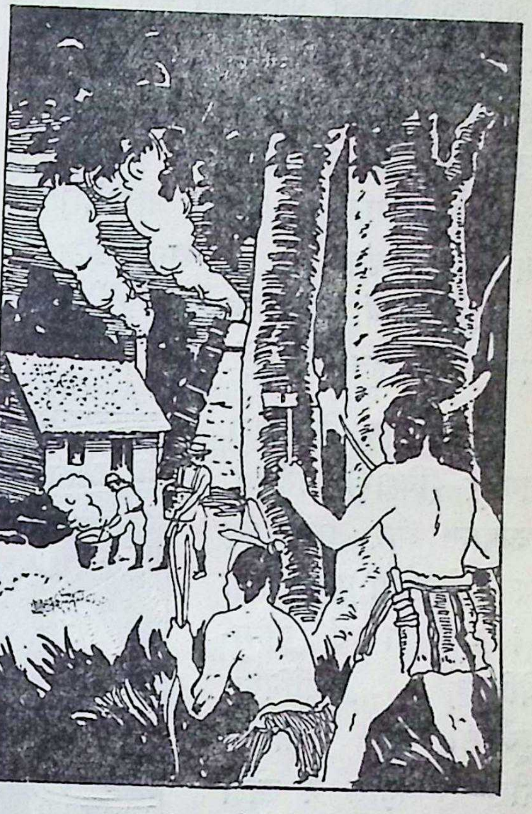

४—लोहा और फौलाद।

बड़ी भट्टियाँ बनाईं। इस पर रेड इंडियन लोगों ने उन पर हमला किया। इससे १०० वर्ष तक वहाँ किसी ने भट्टियों में लोहा गलाने का नाम नहीं लिया।

जब गोरे लोग मज़बूत हो गये तब उन्होंने लोहे से अँगीठी, बर्तन, हल और तोपें बनाईं।

जब रेल निकली तब तो और भी अधिक लोहे का सामान वहाँ बनने लगा। आजकल वहाँ कई सौ मन लोहा हर रोज़ तयार किया जाता है। लोहे के कारखाने वाले घड़ियों के स्प्रिंग, सुई और आल्पीन से लेकर बड़े बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुल, घरों के ढाँचे, रेल की पटरियाँ और बड़े बड़े इंजिन बनाते हैं।

हमारे देश के लोग बहुत पुराने समय में ही लोहे को काम में लाने लगे थे। गदर के समय तक लगभग हर गाँव के लुहार बहुत बढ़िया तलवार और बन्दूक बनाते थे। हल, फाउड़ा, गँड़ासी और हँसिया, खुरपा इस समय भी बहुत से स्थानों में बनाया जाता है। बड़े पैमाने पर नये ढंग का कारखाना टाटानगर या जमशेदपुर में हाल में खोला गया है। यहाँ फौलाद की बहुत सी चीज़ें बनती हैं।

हिन्दुस्तान में छोटा नागपुर (विहार) उड़ीसा, मध्यप्रान्त और दूसरे कई स्थानों में लोहा पाया जाता है। अमरीका में पेन्सिल्वेनिया, वर्जीनिया, न्यूजेरसी और सुपीरियर झील के पड़ोस में लोहा बहुत है। मध्य इंगलैंड, उत्तरी फ्रांस, और जर्मनी में भी काफी कोयला निकलता है। स्वेडन और स्पेन का लोहा बाहर बहुत जाता है।

कुछ खानों में लोहा धरातल के पास मिलता है। कई खानों में वह अधिक गहराई पर पाया जाता है। अक्सर ड्रिलिंग मेशीन से छेद किया जाता है। बारूद से चट्टानें तोड़ी जाती हैं। फिर बिजली के ज़ोर से चलने वाले फौलादी फाउड़े इस कच्चे लोहे को नीचे से ऊपर लाते हैं। जहाँ कई फाउड़े एक साथ चलते हैं वहाँ कुछ ही मिनटों में गाड़ी के कई डब्बे एक साथ भर जाते हैं। यह गाड़ियाँ इस कच्चे लोहे को दूसरे स्थान (ब्लास्ट फर्नेस के पास) पर ले जाती हैं। वहाँ दूसरी मशीनें इन डब्बों को उलट कर खाली कर लेती हैं।

ब्लास्ट फर्नेस (झोंके वाली भट्टी) एक बड़े भट्टे की तरह लगातार आग और चिनगारियाँ उगलती रहती है। इसकी चिमनी १०० फिट या इससे भी अधिक ऊँची होती है। इसमें नाप नाप कर कच्चा लोहा, कोक (पिसा हुआ कोयला) और चूना भरते हैं। यह

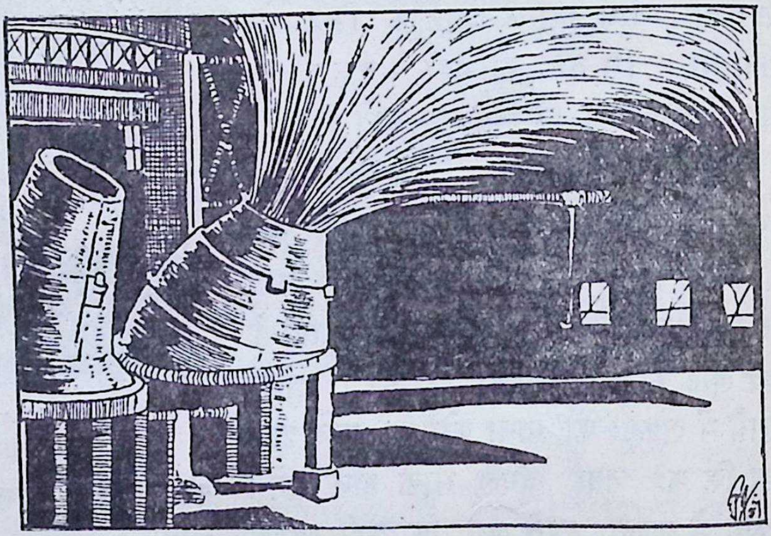

५—फौलाद।

सब चीज़ें कड़ी आँच में पिघल कर पहले आपस में मिलती हैं फिर वे अलग हो जाती हैं। चूना और कच्ची धातु का मैल स्लैग (धात-मैल) कहलाता है। २१२ अंश फारेनहाइट की आँच में पानी खौलने लगता है। लेकिन इस भट्टी में लगभग ३००० अंश फारेनहाइट की आँच रहती है। चार पाँच घंटे की लगातार आँच के बाद भट्टी की तली के दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। ऊपरी दरवाज़े से स्लैग (मैल) बहता है। निचले दरवाज़े से पिघले हुए लोहे की चकाचौंध कर देने वाली लाल लाल गरम धारा बहती है।

पिघल जाता है। लेकिन ठंडे होने पर इसके जल्द टूटने का डर रहता है। फिर भी अँगीठी आदि ढालने के लिये यह बहुत अच्छा रहता है।

राट आयरन में बहुत थोड़ा (०.२ फी सदी) कार्बन रहता है। इससे यह देर में गलता है। लेकिन इससे सुन्दर आकार की चीज़ें बन सकती हैं। जंज़ीर, लंगर, छड़ आदि राट आयरन से बनते हैं।

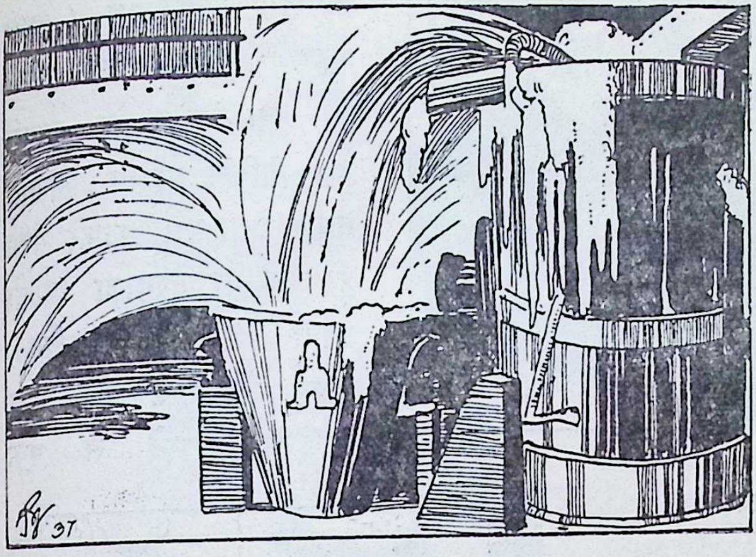

६—फौलाद।

फौलाद इन दोनों से अच्छा होता है। इसमें लगभग २ फी सदी कार्बन रहता है। पहले लोग गरम लोहे को एकदम ठंडे पानी में डाल कर फौलाद बनाते थे।

लेडिल या बड़ी बड़ी बालियाँ इस लोहे को भर कर दूसरे स्थान पर ले जाती हैं। यहाँ से इससे दो ढाई मन के टुकड़े (पिगबेट) बनते हैं। पहले पिघला हुआ लोहा बालू में ढाँचों पर बहाया जाता था। वहाँ इसकी सूरत लेटे हुए सुअर की तरह हो जाती थी। इसी से इसे पिग आयरन कहते थे। आजकल पिघले हुए लोहे को बिना ठंडा किये ही कास्ट आयरन या फौलाद बनाने के काम में लाते हैं।

कास्ट आयरन में ३.५ फी सदी कार्बन रहता है। इससे यह कम आँच में

आजकल लग भग आध घंटे में नये ढंग से गरम लोहे को फौलाद में बदल लेते हैं। गरम लोहा एक बड़े बर्तन में किया

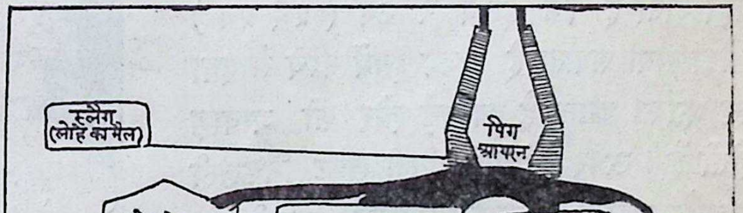

७—लोहा और फौलाद। कच्चे लोहे से फौलाद इसी प्रकार बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। इसको बेसमेर कन्वर्टर कहते हैं। इस ढंग की खोज हेनरी बेसमेर

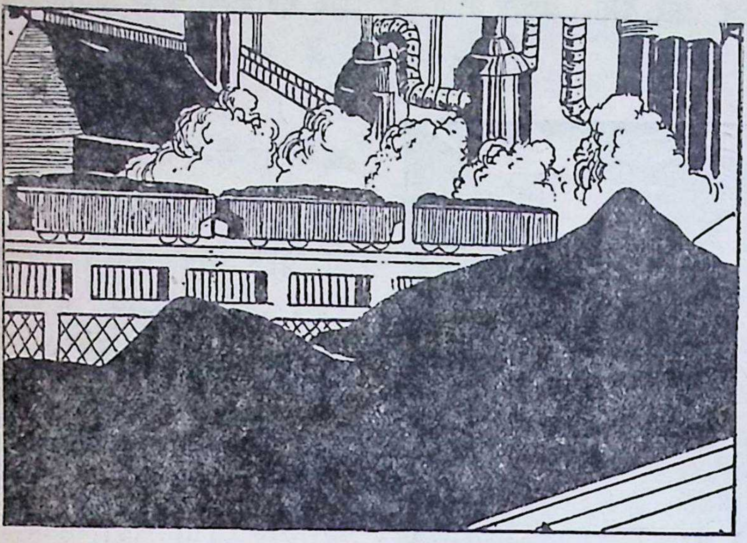

८—फौलाद का कारखाना।

नामी एक अंग्रेज़ ने की थी। इसी से यह बेसमेर कन्वर्टर कहलाता है। इस बर्तन की सूरत एक अंडे की तरह होती है। यह इतना बड़ा होता है कि इसमें २ टन (५६ मन) लोहा समा सकता है। जब इसमें नीचे से हवा का झोंका आता है तब बड़े ज़ोर की आवाज़ होती है। ऊपर से पीली पीली लपट निकलती है और लाखों लाल चिनगारियाँ छूटती हैं। इसमें लगभग २ फी सदी कार्बन मिलाया जाता है। ठंडा होने पर इसी से फौलाद तयार हो जाता है। कन्वर्टर को देखने के लिये भारी ऐनक पहन कर एक आदमी पुल के ऊपर से आता है। जब कन्वर्टर खाली हो जाता है तब वह इशारा करता है और कन्वर्टर फिर पिघला हुआ लोहा भरने के लिये सीधा कर लिया जाता है।

रेल की पटरी, जहाज़ और मोटर की चादरें और दूसरी बड़ी चीज़ों को बनाने के लिये बेसमेर ढंग से काम लिया जाता है। कई चीज़ों के लिये ओपेन हर्थ (खुली भट्टी) से काम लिया जाता है। इस ढंग से देर लगती है। लेकिन बढ़िया फौलाद तयार होता है। काफी गरम हो जाने पर दरवाज़ा खोला जाता है। मैल (स्लैग) ऊपर तैरता है और ऊपर के ही रास्ते से एक

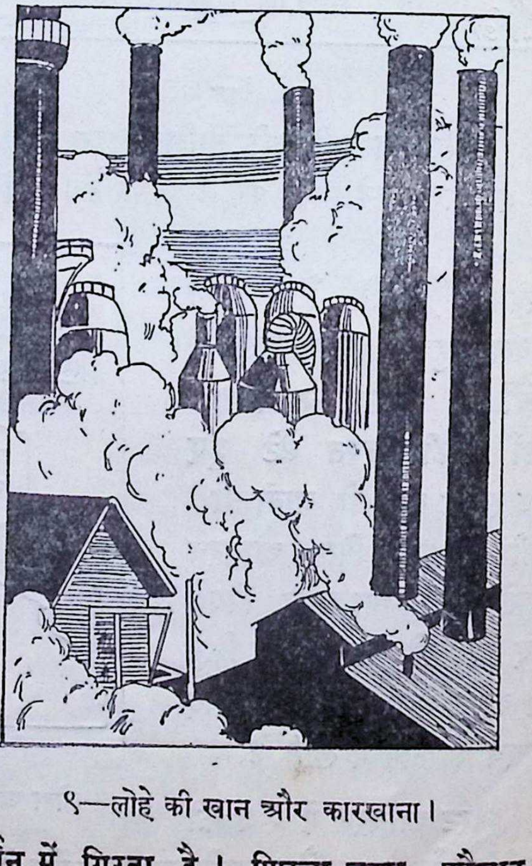

९—लोहे की खान और कारखाना।

बर्तन में गिरता है। पिघला हुआ फौलाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

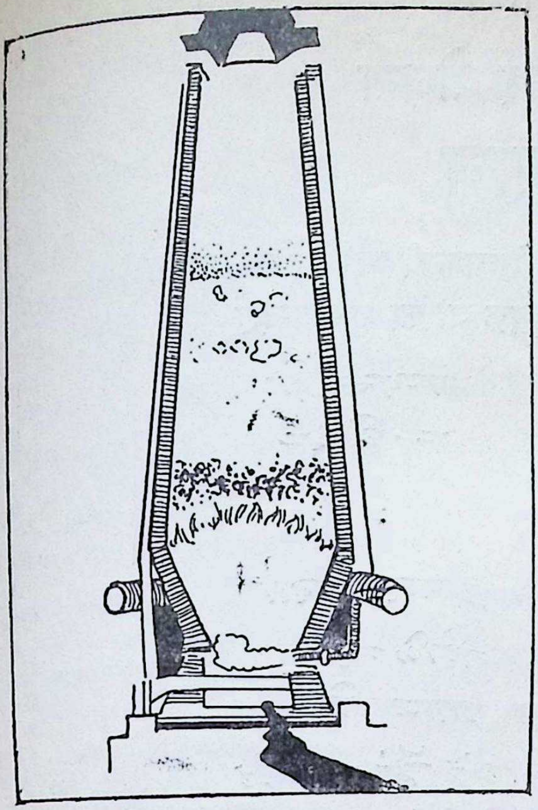

१०—लोहे और फौलाद की भट्टी

लेडल या बड़ी बाल्टी में गिरता है। यह बाल्टियाँ मशीनों से उठाई जाती हैं।

रोलिंग मिल में फौलाद से तरह तरह की चीज़ें बनती हैं। जब गरम फौलाद की पटरियाँ या चादरें रोलरों के बीच से गुज़रती हैं तब उनसे लाल चिनगारियाँ चारों ओर को छूटती हैं। यहाँ कुछ मशीनें गरम पटरियों में सूराख करती हैं। कुछ मशीनें पटरियों और चादरों को मूली की तरह आसानी से काटती हैं। यहीं और भी कई तरह की चीज़ें बनती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" की नई योजना

देश-दर्शन

के सम्बन्ध में मध्य प्रान्त के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री और वर्तमान प्रधान मंत्री माननीय पंडित रविशंकर शुक्ल जी का शुभ सन्देश

कैम्प-पचमढ़ी.
८·६·३८

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद से
श्री पंडित रामनारायण जी मिश्र
'देशदर्शन' नामक ग्रंथावली
प्रतिमास निकाल रहे हैं। आम
जनता में संसार के देशों का ज्ञान
फैलाना वर्तमान परिस्थिति में
विशेष महत्व की बात है। इस
का लाभ प्रत्येक स्थानिक
संस्था को उठाना चाहिये।
मैं पंडित जी को कई वर्षों से
जानता हूं और मेरा विश्वास है
कि यह ग्रन्थमाला उपयोगी
होगी।

रविशंकर शुक्ल
शिक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारखानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एबिसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ॥) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

भूगोल एटलस

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नकशे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—" चाँद "

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० X ७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १॥) सजिल्द १॥।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, 'भूगोल' इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

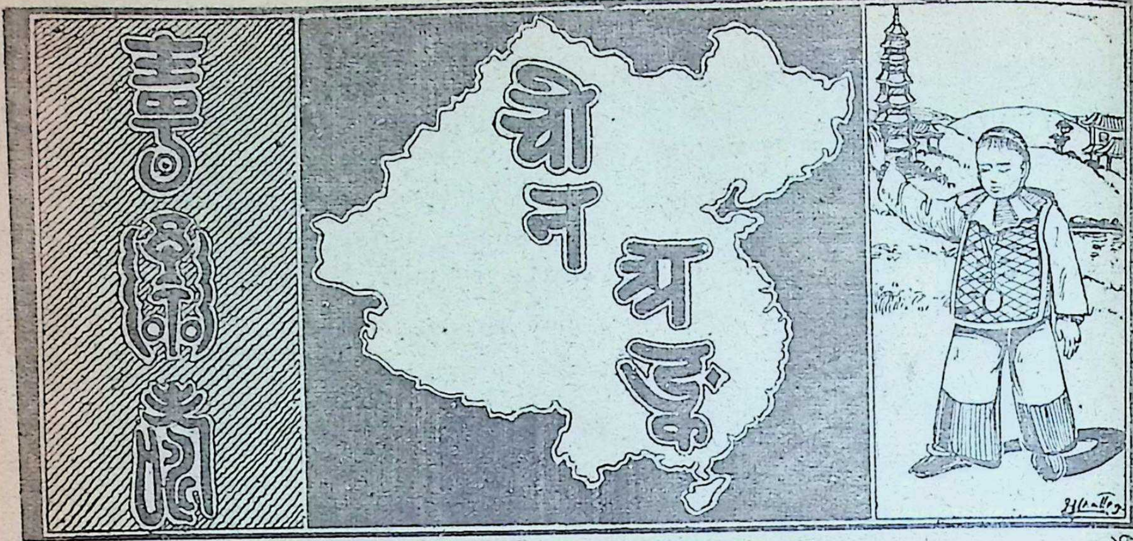

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं। पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें। मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है। इसमें कई नक़शे और चित्र हैं। बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ॥)।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है। प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे। चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर)। इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं। अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं। मूल्य ॥) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेलस (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार, रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एण्टेण्ट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज़ है। मूल्य केवल ॥)

देश-निर्माता

इस ८२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिलसुडस्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूरा प्रकाश डाला गया है। रंगीन कवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। बिहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़्शे। बिहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।≡) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भूगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांङ्कों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा; २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ।।-)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

भुवनकोष

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ९०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बग़दाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़गानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चार भागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़्शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १॥) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्राय: निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे।

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद- त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्राय: निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा। इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे। :—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४— गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२— पटियाला, ३२—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवाँ, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्नियो, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़ग़ानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ६—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फिनलैंड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलैंड, १५—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया १७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रोस, १९—इटली, ०२—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २५—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्पा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा —पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०— रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—१४—महाराष्ट्र, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७— ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको,५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ८—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया,। २—गायना, ३—वेनिज्वेला १—इक्वेडार, १—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली ८—पेरेग्वे ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़िल, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—डे्क, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०— मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहरा, १५ —यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेजन, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज, पनामा, चीन की ग्रांड केनाल।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरिया, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**.

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-

3rd page of the cover „ 12/-

4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by Sheopal at the Bhugol Press; 306, Jumuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अक्तूबर १९३८

गुरुकुल पुस्तकालय
८-१०-३८

सम्पादकः रामनारायण मिश्र बी०ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"-कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१६२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १५ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १५ वर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुए सूची-पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक़, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बल्गेरिया, यूगोस्लैविया, हङ्गारी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, जर्मनी, डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फिनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देशवासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका "भूगोल" कार्यालय, भूगोलसम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नक़्शों का संग्रह करता रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेज़ी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें।

आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्राक्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों की बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तैयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तैयार हैं। आप उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तक-माला का आयोजन किया है। इसमें २०० पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी। पुस्तक चित्रों और नक़्शों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। काग़ज़ कवर, छपाई सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) होगा। इस सम्बन्ध में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशङ्कर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—

रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—संसार की सेनायें	१
२—नई दुनिया के प्राचीन नगर	३
३—जापान की जन वृद्धि समस्या (श्री० बेशलाल चौधरी बी० ए०) ...	५
४—इतिहास का भूगोल पर प्रभाव (प्रह्लाद नरायन रायजादा एम० ए० विशारद) ...	७
५—आस्ट्रेलिया के मोती	१०
६—ग्रीनलैंड	११
७—सोना	१२
८—दक्षिण दिशा में (विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.) ...	१९
९—जातियों का कोष	२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १६] कार्तिक सं० १९९५, अक्तूबर १९३८ [सं० ६

संसार की सेनायें

बड़ी लड़ाई के बाद कुछ समय तक शान्ति रही राष्ट्र संघ से लोगों को आशा थी कि शायद सचमुच संसार में न्याय का राज्य हो जावे और शस्त्रों के जोर से प्रबल देश निर्बल देशों का चूसना बन्द करदें। लेकिन कुछ ही समय में लोगों का भ्रम दूर हो गया। सभी स्वाधीन देश अपनी अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने लगे। एबोसीनिया की लड़ाई से सिद्ध हो गया कि दुर्गम देश में बहादुर और निडर फौज भी नये ढंग से सुसज्जीत फौज का सामना नहीं कर सकती। स्पेन को गृह-कलह और चीन-जापान युद्ध में कुछ देशों को अपने फौजी प्रयोगों को आज़माने का अवसर मिल गया। बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी की सैनिक शक्ति एक दम कम कर दी गई थी। इससे जर्मनी को नये ढंग से सैनिक संगठन करने का पूरा अवसर मिल गया। दूसरे देश अपने पुराने ढर्रे के फौजी ढंग को छोड़ने में इतने स्वतन्त्र न थे।

बड़ी लड़ाई के समय में हवाई जहाजों और टैंक (तोपों) को रोकने के लिए कोई उपयुक्त साधन न था। इसके बाद सैनिकों के सामने यह प्रश्न था कि क्या कोई देश हवाई शक्ति को इतना बढ़ा सकता है कि वह उन्हीं के ज़ोर से अपने शत्रु का नाश कर दे और उसे फौज की आवश्यकता ही न पड़े। दूसरा प्रश्न यह था कि क्या सशस्त्र मोटर कारों की फौज इतनी बढ़ाई जा सकती है कि वह अपने सामने के पैदल सिपाहियों को कुचलती हुई अपने सामने का रास्ता साफ करले।

बड़ी लड़ाई के समय में रेंज फाइंडिंग (दूर से आने वाले हवाई जहाज़ों की दिशा और दूरी निर्धारित करने वाले) यन्त्रों का आविष्कार नहीं हुआ था। उनको दूर से देखने के यन्त्र भी इतने अच्छे न थे। आज कल एन्टीएअर क्राफ़्ट तोपों का निशाना इतना पक्का है और वे इतनी तेज़ी से गोला छोड़ती हैं कि हवाई जहाज़ आसानी से उनका सामना नहीं कर सकते। इसी प्रकार एंटी टैंक शास्त्रों ने टैंकों का डर कम कर दिया है। पैदल सिपाही जर्मन सेना के प्रधान अंग हैं। लेकिन पैदल सेना के प्रत्येक डिवीज़न (भाग) के साथ उसी अनुपात से एंटी एअर क्राफ़्ट और एंटी टैंक तोपें और दूसरे शस्त्र रहते हैं। इन शस्त्रों की इतनी अधिकता है कि एक प्रकार से जर्मन फौज हवा और जमीन पर आग के वायुमंडल से घिरी हुई आगे बढ़ती है और शत्रु से लड़ती है।

लड़ाई आरम्भ हो जाने पर हवाई जहाज़ों का प्रधान काम यह है कि वे शत्रु की सेना पर गोलाबारी करके उसे बड़ी संख्या में एकत्रित न होने दें। वे गोलाबारूद के कारखानों को नष्ट करें और रसद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रों को उजाड़ दें। वे शत्रु की फौज पर इस प्रकार अचानक छापा मारें कि उनके पैदल सिपाही आसानी से आगे बढ़ सकें। सारे राष्ट्र को डराने के लिये कभी कभी हवाई जहाज निःशस्त्र जनता पर भी गोलाबारी करते हैं। हवाई जहाज और टैंकों के अतिरिक्त फौजी मोटरकारों ने भी लड़ाई के ढंग को बदल दिया है। फौजी मोटर कार कुछ हद तक (घोड़सवारों) का काम करते हैं। वे अपनी फौजों को आड़ में रखते हैं। उनसे दुश्मन को टोलियों को भीतरी भाग का ठीक पता नहीं लगता है। तोपों को खींचने का काम भी अक्सर घोड़ों के बदले बड़े मोटरों से लिया जाने लगा है। मोटरों से सारी फौज को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाने का काम भी लिया जाने लगा है। इस प्रकार घोड़ा उन ऊँचे नीचे बिकट स्थानों के लिये उपयोगी रह गया है जहाँ पहिये वाली गाड़ियां (मोटर लारियाँ) नहीं चल सकती हैं।

रासायनिक (केमिकल) लड़ाई अभी तक विषैले गैसों का प्रयोग इतना अधिक नहीं किया गया है कि किसी देश की समस्त जनसंख्या को समूल नष्ट कर दिया जावे। फिर भी गैस से बचने के लिये गैस मास्क और तहखाने योरुप के प्रायः सभी बड़े शहरों में तयार होने लगे हैं।

सेना की भरती—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ब्रिटिश साम्राज्य और चीन को छोड़ कर प्रायः और सभी स्वाधीन देशों में १८ वर्ष से अधिक उम्र वाले पुरुषों को अनिवार्य रूप से फौज में भरती होना पड़ता है। कितने समय तक फौजी शिक्षा प्राप्त करें इसकी अवधि अलग अलग देशों में अलग अलग है। स्विजरलैंड में पैदल सिपाहियों, इंजीनियरों और तोपखाने के सिपाहियों को ६५ दिन तक शिक्षा लेनी पड़ती है। रूस में पचास फीसदी सिपाहियों को केवल एक महीने की शिक्षा लेनी पड़ती है। वैसे औसत से अधिकतर फौज को दो वर्ष की लगातार शिक्षा अनिवार्य है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका को छोड़ कर और प्रायः सभी प्रबल देशों में कुछ न कुछ संरक्षित (रिज़र्व) फौज रहती है। लड़ाई के समय इससे काम लिया जाता है। संयुक्त-राष्ट्र अमरीका में केवल कुछ आफ़िसर संरक्षित (रिज़र्व) सेना में है। इटली, जर्मनी और जापान में फौजी उम्र के पहले ही लड़कों को स्कूलों में कुछ न कुछ फौजी शिक्षा दी जाती है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका के कुछ स्कूलों और कालिजों में फौजी शिक्षा का प्रबन्ध है। ब्रिटेन में फौजी अफसर तयार करने के लिये कई स्कूल हैं।

जर्मनी में साधारण फौज के अतिरिक्त कई हजार (१२,००० से ऊपर) काली कमीज (ब्लैक शर्ट), खाकी शर्ट के स्वयं सेवक और दूसरे फौजी अफसर हैं। इटली में फेसिस्ट मिलीशिया के अतिरिक्त तट, बन्दरगाह, रेलवे, वन आदि की रक्षा के लिये फौज है। फौज के अन्तर्गत रेजीमेन्ट, बेटेलियन आदि में सिपाहियों और बन्दूकों की संख्या अलग अलग देशों में अलग अलग है। अधिकतर देशों के पैदल (इन्फेंट्री) डिवीज़न में १०,५०० सिपाही रहते हैं। जर्मनी में ८४०० और जापान में १५,१३८ होते हैं। हलकी भारी बन्दूकों की संख्या भी अलग अलग है रूस में भारी बन्दूकों की अधिकता है। जर्मनी में एन्टी एअर क्राफ्ट और और दूसरे यन्त्रों की अधिकता है। सीमा के पास आजकल सीमेन्ट और फौलाद की पक्की खाइयों और सुरंगों की अधिकता हो रही है। फ्रांस और जर्मनी ने एक दूसरे के आमने सामने इसी तरह की मज़बूत किलाबन्दी कर ली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई दुनिया के प्राचीन नगर

चोलूला—१

मेक्सिको में पहुँचने के लिये स्पेनवासियों ने समुद्र के किनारे पर वेराक्रूज़ (सच्चा क्रूस) नाम का बन्दरगाह बसाया। समुद्र से देखने पर वेराक्रूज़ कुछ भी सुन्दर नहीं मालूम पड़ता है। रेतीले किनारे पर घरों की सुनसान क़तार दिखाई देती है। नगर के चारों ओर वीरान पहाड़ियाँ हैं। इन में हरियाली का नाम नहीं है। वैसे यहाँ पानी खूब बरसता है। बादल में से आस्मान घिरा रहता है। निचले किनारे पर अनूप वन गये हैं। पीला अज़ार (बुखार) बहुत फैलता है। इसी से वेराक्रूज़ मेक्सिको भर में सबसे अधिक अस्वास्थ्यकर गिना जाता है। वेराक्रूज़ का बन्दरगाह भी अच्छा नहीं हैं। उत्तर की ओर से अक्सर तूफानी हवायें चलती हैं। नावें अपना बादबान उतार देती हैं। जहाज़ दुहरा लंगर डालते हैं। फिर भी ठीक ठीक रक्षा केवल फोर्टसेन्ट जूलियन के पास होती है। वेराक्रूज़ के ताजे पुते हुये घर कुछ अच्छे मालूम होते हैं। लेकिन अक्सर गलियों और घरों की छतों पर काले गिद्ध मंडराते रहते हैं। वे ऐसे पालतू हो गये हैं कि मुसाफिर को देखकर वे अपनी जगह से नहीं हिलते हैं। जब नौकर घरों का कूड़ा कचड़ा फेंकते हैं तब ये गिद्ध बड़ी तेज़ी से इस पर उड़ते हैं। मेक्सिको दरवाज़े के बाहर वेराक्रूज़ शहर का सुन्दर भाग है। शहर के दोनों ओर कोकोआ के बड़े बड़े पेड़ लगे हुए हैं। इसी ओर शाम को माझी और कुली इकट्ठा होते हैं। रात को देर तक गाना बजाना होता है। अगर हम वेराक्रूज़ से पश्चिम की ओर बढ़ें तो किनारे के गरम दलदली भाग के आगे कुछ ऊँचा शीतोष्ण प्रदेश मिलता है। यहाँ क़हवा, तम्बाकू, केला बहुत होता है। इस भाग में नारंगियों के बगीचों के बीच में घिरे हुए छोटे छोटे घर बहुत सुन्दर मालूम होते हैं। यहाँ से आगे हर मोड़ के सामने आरिज़ावा पर्वत दिखाई देता है। आरिज़ावा और पोपोकेटिपेटल मेक्सिको के सबसे ऊँचे पहाड़ हैं। इनकी सुन्दर बर्फीली चोटियाँ तो समुद्र से ही दिखाई देने लगती हैं। आरिज़ावा नगर इसी नाम के पर्वत की तलहटी में बसा हुआ है। इधर कारखाने बढ़ रहे हैं जो बिजली के ज़ोर से चलते हैं। इस ओर पठार पर पहले विकराल ज्वालामुखी पर्वत आग धुआं उगलते थे।

आरिज़ावा के आगे सड़क बहुत सपाट हो जाती है। बड़े बड़े पुलों के ऊपर से नद कन्दराओं को पार करने के बाद यात्री माल्ट्राटा नगर में पहुँचता है। यहाँ से अधिक चढ़ाई शुरू होती है। रेलगाड़ी में नये इंजिन लगते हैं। इसके आगे सुरंग और पुल बहुत जल्द जल्द रास्ते में पड़ते हैं। एस्परांज़ा के पास गाड़ी ३९०१ फुट की ऊँचाई पर चढ़ जाती है। इसके आगे ज़मीन खुश्क मिलती है। आरम्भ की हरियाली लुप्त हो जाती है। रास्ते में अक्सर धूल उड़ती हुई मिलती है। कहीं कहीं मकई और गेहूँ के छोटे छोटे खेत दिखाई देते हैं। कांटेदार राम बांस (केक्टस) अक्सर मिलता है। कहीं कहीं सफेद हेसियंडा से मालूम पड़ता है कि वह प्रदेश एक दम निर्जन नहीं है। दूर क्षितिज में स्थित ऊँचे पहाड़ और पड़ोस के रेतीले टीले मैदान (पठार) के दृश्य में कुछ विभिन्नता डाल देते हैं। अब हमारा मार्ग कुछ उत्तर पश्चिम की ओर मुड़ता है। हम ह्वामांटला से गुज़र कर मोलिंची का चक्कर लगाते हैं। लगभग २० मील की दूरी पर प्यूब्ला शहर हमारी बाईं ओर छूट जाता है। इसी के पड़ोस में एलो पौधे से शराब बनाई जाती है। इसका रंग कुछ पीला होता है। रस गाढ़ा होता है। इस में बड़ी गन्ध आती है। यहाँ से मेक्सिको के प्रायः सभी भागों को शराब के पीपे रेलगाड़ी पर लद कर जाते हैं।

स्पेन वासियों ने मेक्सिको की विजय के कुछ ही समय बाद प्यूब्ला शहर बसाया था।

मेक्सिको शहर के बाद मेक्सिको देश में दूसरे नम्बर का शहर प्यूब्ला ही है। यहाँ के थलिक गिरजों की भरमार है।

प्यूब्ला से कुछ ही दूरी पर मेक्सिको का प्राचीन नगर चोलूला बसा हुआ है। किसी समय में चोलूला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विशाल पिरेमिड़ बहुत प्रसिद्ध था। तलेहटी में इसका घेर १६ एकड़ और चोटी पर एक एकड़ था। इसी के ऊपर मेक्सिको के अधिष्ठातृ देव क्वेटज़ा-कोटल (पवन देव) का मन्दिर बनाया गया था। कहा जाता है कि टोल्टेक लोगों (उस समय के मेक्सिकोवासियों) को शान्ति की कलायें, धर्म, और राजनीति सिखाने के लिये क्वेटज़ा कोटल (पवन देव) ने मनुष्यों के बीच में रहना स्वीकार कर लिया। था। इस पवित्र देवता को ऋतु के ऋतु में होने वाले केवल फल और फूल भेंट चढ़ाये जाते थे। इसी देवता के सम्मानार्थ चोलूला का विशाल पिरेमिड बनाया गया था। वह कब बना इसका ठीक पता नहीं चलता है। जब अज़टेक लोग पठार पर आये तब यह पिरेमिड चोलूला में वना हुआ था। कुछ लोगी का कहना है कि यह विशाल पिरेमिड ओल्मेक लोगों ने बनाया। कुछ का अनुमान है कि इसे टोल्टक लोगों ने बनाया। कुछ का कहना है कि इन से पहले वाले विशालकाय लोगों ने इसे बनाया जो प्रलय से डरते थे। लेकिन बहुत ऊँचे प्राकृतिक पहाड़ों के होते हुए कृत्रिम टीलों का बनाना अनावश्यक था। इसकी ऊँचाई केवल १९९ फुट है।

अपने समय में चोलूला अत्यन्त समृद्ध शाली नगर था। जैसे हिन्दुओं का काशी, मुसलमानों का मक्का, ईसाइयों का यरूशलम कैथलिक लोगों का रोम है उसी प्रकार चोलूला प्राचीन रेड इंडियन लोगों का तीर्थ स्थान था।

आनाहुआक के दूर दूर के सिरों से रेड इंडियन लोग क्वेटज़ा कोटल के मन्दिर में भेंट चढ़ाने आते थे। यहीं क्वेटज़ा कोटल ने निवास किया था। पूर्वी देशों की ओर चलते समय क्वेटज़ा कोटल (पवन देव) ने अपने अनुयायियों को धर्म पर आरूढ़ रहने का आदेश दिया था और उन्हें वचन दिया था कि वह और उसकी सन्तान उसके ऊपर राज्य करने के लिये फिर वहाँ आवेंगे। स्पेन वालों के आने के समय इस भविष्य वाणी ने जादू का काम किया। इससे स्पेन वासियों को बड़ी सहायता मिली। भोले भाले रेड इंडियन लोगों ने समझा कि लम्बे क़द गोरे रंग और नीली आँखों वाले स्पेन वासी क्वेटज़ कोटल की ही सन्तान हैं। वे बहुत दिनों से इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस लिये स्पेनवासियों को मेक्सिको विजय में दैवी सहायता मिल गई।

जिस समय स्पेन वासियों ने मेक्सिको को जीता उस समय चोलूला बड़ा शक्ति शाली नगर था। यहाँ के पिरेमिड के ऊपर से वड़ा आलीशान दृश्य दिखाई देता था। उत्तर की ओर पोपोकेटी पेटल और इज़टाक्सी ह्वाटल दो विशाल पर्वत प्राकृतिक पहरेदारों के रूप में मेक्सिको के पठार को रक्षा करते मालूम होते थे। दक्षिण की ओर आरिज़ावा की बर्फ़ीली चोटी आस्मान से बातें करती थी। पास वाला सियराडि मेलिंची पर्वत अपने पड़ोस के मैदान पर छाया डाल रहा था। इनमें से तीन ज्वालामुखी पर्वत योरुप के ऊँचे से ऊँचे पहाड़ से भी अधिक ऊँचे हैं। उनके नीचे कड़ी बरफ जमा रहती है जो जून की तेज़ धूप में भी नहीं पिघलती है।

अपने समय में चोलूला में बहुत से विशाल मन्दिर और भवन थे। स्पेन वालों के आने के बाद जैसे जैसे रेडइंडियन लोगों का ह्रास हुआ वैसेही चोलूला शहर भी खंडहरों में बदल गया।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान की जन-बृद्धि समस्या

(लेखक-श्री बेशलाल चौधरी, बी० ए०)

ऐसे तो सभी राष्ट्र अपनी राजनीतिक, औद्योगिक और सैनिक शक्ति बढ़ाने की चेष्टा करते हैं। सभी की महत् आकांक्षा रहती है कि अपने राज्य-सीमा को यथासाध्य विस्तृत करें। जापान भी इस से वञ्चित नहीं। अपनी सभी शक्तियों को बढ़ाने का प्रयत्न कई वर्षों से कर रहा है। आज चीन से भिड़ा हुआ है। राजनीतिक क्षेत्र में इसके कई कारण बताये जाते हैं। कितनों का ख्याल है कि विश्व-राज्य-संस्थापन के फेर में जापान पड़ा हुआ है। कोई कोई सोचते हैं कि पूर्वीय संसार में सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता है। ऐसा भी अनुमान किया जाता है कि निकटवर्त्ती देशों को जीत कर अपने लिए औद्योगिक क्षेत्र तैयार कर रहा है। इन सब कारणों के होते हुए भी एक ऐसा जटिल प्रश्न इसके सामने आ उपस्थित हुआ है जिससे वाध्य होकर जापान अन्यान्य देशों पर अपना आधिपत्य जमाने की कोशिश कर रहा है। वह प्रश्न यहां की जन-वृद्धि का है। यहाँ की जन-संख्या इतनी शीघ्रता से बढ़ रही है कि इसके असह्य बोझ से आज जापान दबा जा रहा है। इसका प्रारम्भ सन् १८७० ई० से बताया जाता है। परन्तु गत कुछ वर्षों से इसकी संख्या इतनी बढ़ती जा रही है कि सभी जापान निवासियों के ध्यान इसी ओर आकृष्ट हैं।

दिनों दिन जन-संख्या की इतनी वृद्धि हुई कि इसका उल्लेख करना अनिवार्य्य प्रतीत होता है। अन्यान्य भागों को छोड़ कर केवल मुख्य जापान को ही लेता हूँ। सन् १९२५ में ८,७५,००० की वृद्धि हुई। १९२६ में ९,००,००० की हुई और १९२७ में १०,००,००० तक की वृद्धि हो गई। अगले चार वर्षों में वृद्धि की संख्या लगभग ९,००,००० के हुई और १९३२ में १०,००,००० की हो गई। इस प्रकार बृद्धि प्रति वर्ष प्रति शत १.२ होती रही है। इस गणना के आधार पर ऐसा अनुमान किया जाता है कि ४० वर्षों में ही यहाँ की जन-संख्या दूनी हो जायेगी। जन-संख्या की बढ़ती देख कर मृत्यु-संख्या भी कम होती जा रही है। इसका एक प्रधान कारण ग्रामीणों का नगरों में आश्रय लेना है। जापान में पहले पहल जागीरदारी प्रथा (Feudal System) थी। वे ही कृषकों को भूमि जोतने बोने के लिए दिया करते थे। उनकी प्रताड़ना सभी को मालूम है। भाग्यवश सन् १८७२ में ग़रीब किसान इनके चंगुल से बचे जब कृषि-भूमि इनके (किसानों) अधिकार में आ गई। किन्तु इधर कई वर्षों से एक नये वर्ग के अधिकार में अधिकांश भूमि आ गई है। इस वर्ग के लोग "नये धनिक" (Nouveaux riches) के नाम से विख्यात हैं। इनकी प्रताड़ना जागीरदारों (Feudal Lords) से भी बढ़ कर है। अतएव बहुत सी कृषक संतान ग्रामों को छोड़ छोड़ कर नगरों का आश्रय ले रही हैं। ग्रामों की अपेक्षा नगरों में औषधि आदि का प्रबन्ध अच्छा रहता है अतएव मृत्यु संख्या न्यूनतम होती जाती है। फलस्वरूप जन-वृद्धि का प्रश्न और भी जटिल हुआ जा रहा है।

ऐसी परिस्थियों में पड़ कर इस प्रश्न को हल करने के लिये जापान अपनी आँखें देश की प्राकृतिक बनावट की ओर फेरता है! देखता है कि क्वाटों का विस्तृत मैदान केवल १२०,०००,००० मनुष्यों को भोजन दे सकता है। नोबी की निम्नभूमि ४५,०००,००० मनुष्यों का भरण-पोषण कर सकती है। किन्की की चौरस जमीन ६०,०००,००० मनुष्यों का पालन कर सकती है। इस के अतिरिक्त पर्वत पार्श्व-स्थित संकीर्ण भूमि तथा छोटी छोटी नदियों की तराइयां नज़र आती हैं। इस पहाड़ी देश में इस प्रकार केवल एक चौथाई भूमि ऐसी है कि कृषिकार्य में लाई जा सकती है। ऐसी भूमि की गणना में केवल उर्वरा समतल भूमि नहीं वरन् पार्वतीय ढाल और कुछ ऊसर भूमि भी सम्मिलित हैं जो कठिन मानवी परिश्रम से धान के क्षेत्रों में परिवर्त्तित की जा सकती हैं। ऐसी भूमि कुल खेती की जाने वाली जमीन के $\frac{1}{3}$ हैं। यदि इन्हें जोता बोया जाय तो सम्भव है कि भोज्य पदार्थों में ३३ प्रतिशत की बृद्धि हो जो लगभग २०,००००,००० मनुष्यों के लिये पर्य्याप्त होगी। परन्तु यहाँ के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह उतनी आशातीत नहीं दीख पड़ती है। सन् १९०५ से १९२५ तक अर्थात् २० वर्षों में कृषि-क्षेत्र की बृद्धि लगभग १८,७५,००० एकड़ भूमि से हुई। इस प्रकार वार्षिक बृद्धि १००,३००० एकड़ भूमि से भी कम हुई। इस हिसाब से ५० वर्षों में सभी शेष भूमि खेती कार्य्य के लिए अधिकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जा सकती है। और इधर २०,००,००,००० जन-संख्या २५ वर्षों से भी कम समय में बढ़ सकती है। अतएव भूमि वृद्धि से भी जन वृद्धि का प्रश्न हल नहीं हो सकता। कितनों का अनुमान है कि अन्न की उपज की मात्रा में वृद्धि की जाये तो सम्भव है कि यह प्रश्न हल हो। परन्तु सभी बातों की सीमा होती है। सन् १८८० से आज तक ९६-९७ प्रतिशत की वृद्धि केवल चावल की उपज में हुई है तौभी यह प्रश्न ज्यों का त्यों रहा।

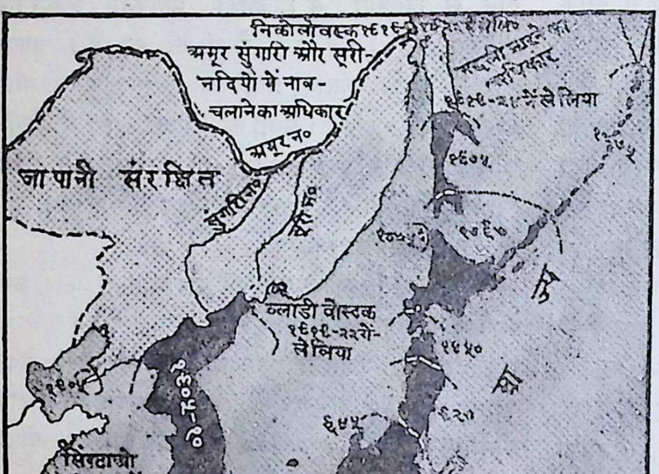

जापान साम्राज्य की वृद्धि

जापान जन-वृद्धि निवारणार्थ उद्योग धन्धों की ओर दृष्टि डाल रहा है। यद्यपि यह पूर्वीय इङ्गलैण्ड के नाम से विख्यात है तथापि इङ्गलैण्ड या अमरीका से इसकी तुलना करने पर यह व्यवसायी राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। इसमें कोई शक नहीं कि पूर्व की अपेक्षा अब जापान व्यवसाय में बहुत कुछ उन्नति किये हुए है। सभी देशों में जापानी चीज़ें दीख पड़ती हैं। परन्तु फिर भी यह अभी भी कृषि प्रधान देश है क्यों कि अधिकांश लोगों की जीविका खेती पर ही निर्भर है। १९२६ में कारख़ानों में श्रमजीवियों की संख्या १०प्रतिशत थी। सूत और लोहे की कुछ ही चीजें बड़े बड़े कारख़ानों में तैयार की जाती हैं नहीं तो शेष चीजें छोटे छोटे कारख़ानों में तैयार की जाती हैं। ओसाका नगर में १९२४ में लगभग १६००० औद्योगिक केन्द्र थे जिन में १३००० में ४ से भी कम मनुष्य काम करते थे। रुई सम्बन्धी कारोबार सानों और आशीकागो जिले में तथा इन के निकटस्थ स्थानों में होता है। लगभग ६ कपड़े गृहस्थों के घर बनते हैं। कपड़े पूर्ण रूप से तैयार होने के पहले कई छोटे छोटे व्यवसाय-केन्द्रों से होकर गुज़रते हैं। यही प्रथा जूते, ब्रश, कैंची-छुरी, छाता, लालटेन, मिट्टी के वर्तन आदि चीजों को बनाने की भी है। इस प्रकार जापान अत्यल्प संख्या में श्रमजीवियों को औद्योगिक केन्द्रों में पाता है और इसे जन-वृद्धि समस्या को हल करने का यथेष्ट साधन नहीं समझता। यदि वह बड़े बड़े कारख़ानों के अभाव को दूर कर सकता तो सम्भव है कि कुछ हद तक समस्या हल हो जाती।

परदेश-गमन द्वारा कुछ मनुष्यों का निर्वाह हो सकता है और देश जनता के बोझ से कुछ बच सकता है। परन्तु प्रवासित जापानियों को देखने से पता चलता है कि ऐसा करने से भी वे बाज नहीं आये हैं। अन्यान्य देशों में प्रवासित जापानियों की संख्या सन् १९३१ में ६३४,००० थी। इन में मंचूरिया में १६६०००, हवाइन द्वीपों में १४०,००० ब्राजील की अधित्यका में १००,००० और संयुक्त प्रदेश (अमेरिका) के उपकूल भागों में १००,००० इस से पता चलता है कि यथा सम्भव वे अन्यान्य देशों में जाकर बस ही गये हैं। यदि उन्हें कोई रिक्त स्थान प्राप्त हों तो उनका कल्याण हो सकता है।

वे भोज पदार्थों में परिवर्त्तन लावें तो सम्भव है उनकी कठिनाई दूर हो। वे अधिकांश भोजन चावल का ही करते हैं। यदि वे चावल के बदले कुछ अधिक मात्रा में शाक, फ़ल और मूल का व्यवहार करते तो चावल की माँग कम हो सकती है। आलू प्रति एकड़ चावल से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपजता है। पहाड़ी प्रान्तों में धान के बदले चाय और फलों की पैदावार अच्छी हो सकती है। फिर भी यदि चावल के बदले गेहूँ का प्रयोग करें तो किफ़ायत पड़ेगी क्यों कि संसार में गेहूँ के क्षेत्र धान के क्षेत्रों से अधिक हैं। साथ ही साथ उनका स्वास्थ्य भी सुधरेगा। परन्तु जापानियों को चावल अत्यन्त ही प्रिय भोजन है। इसके बदले में कोई भी दूसरा अन्न भोजन करना उनके लिए अपने मान मर्यादा को कम करना है। अतएव सार्वजनिक शिक्षा द्वारा कुछ दिनों में उनका विचार पलट सकता है। ऐसा होने पर भी ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनका संतान-वृद्धि-दुःख पूर्ण रूप से दूर नहीं हो सकता।

अब जापान के लिए केवल एक ही उपाय शेष नज़र आता है जिस से वह युद्ध के अमानुषिक कार्य्यों तथा नर हत्या के दोषों से मुक्त रह सकता है। साथ ही साथ अपनी वर्त्तमान सन्तान को पुष्ट बना सकता है। वह है सन्तान नियंत्रण-साधन। इसमें कठिनाइयाँ तो अवश्य हैं क्यों कि यह जापानी सिद्धान्तों के नितान्त प्रतिकूल है, फिर भी य दे सार्वजनिक शिक्षा द्वारा उनके विचारों में पूर्ण परिवर्तन लाया जाय तो सम्भव है कि इस साधन में उन्हें सफलता मिले। कुछ जापानी तो अवश्य इसके पक्ष में हैं और इस साधन का प्रयोग भी कर रहे हैं। परन्तु ऐसे महानुभावों की संख्या सोचनीय है। अतएव उन्हें यथोचित रूप में इस क़ा आन्दोलन करना चाहिए। साथ ही साथ इसकी महता को सर्व-प्रिय बना देना चाहिये।

इतिहास का भूगोल पर प्रभाव

(ले० प्रहलाद नारायण रायज़ादा एम० ए० विशारद)

इतिहास से हमें पूर्व कालीन ज्ञान प्राप्त होता है अर्थात् इतिहास हमें मनुष्य के किये हुए कार्य बतलाता है। मनुष्य जैसा कार्य करता है वैसा ही इतिहास बन जाता है। अतः मनुष्य अपने कार्य से सदैव किसी देश का इतिहास बनाता रहता है। वह अपने परिश्रम से बड़े बड़े कार्य जो असम्भव प्रतीत होते हैं कर डालता है और प्राकृतिक वस्तुओं में भी अन्तर कर भौगोलिक दशा को बदल देता है।

प्राचीन इतिहास अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य ने अपने परिश्रम से पर्वत और समुद्र को भी कुछ न समझा। हम रामायण में पढ़ते हैं कि किस प्रकार नल और नील दो भाइयों ने भारतवर्ष और लंका के बीच के समुद्र के ऊपर रामचन्द्र जी की सेना के जाने के लिये मार्ग बनाया, किस प्रकार हनुमान जी सम्पूर्ण पर्वत को उठा कर रामचन्द्र जी के पास ले आये थे। महाभारत अध्यन करने से हमें ज्ञात होता है कि किस प्रकार कृष्ण जी ने अपने सहपाठी ग्वालबालों की सहायता से गोवर्धन पर्वत को उठा लिया था। इसी प्रकार की वीरता की कहानियाँ हम प्राचीन यूनान और रोम के इतिहास में पढ़ते हैं। हरकुलीस (Hercules) की कहानियाँ आज तक उसकी वीरता के हेतु बड़े मनोरञ्जन से पढ़ी जाती हैं।

प्रायः इन प्राचीन कहानियों को असम्भव बतला झूँठी समझते हैं परन्तु वर्तमान युग में हमको बहुत से उदाहरण मिलते हैं जिन्हें देख आश्चर्य होता है कि इस थोड़े से जीवन में मनुष्य ने कैसे कैसे कार्य किये हैं जिनके कारण सम्पूर्ण संसार का भूगोल बदल गया है।

मनुष्य ने वर्तमान युग में विज्ञान को सहायता से प्रकृति पर अधिकार स्थापित कर लिया है। वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों ने समय और दूरी को बहुत घटा दिया है। प्रकृति द्वारा स्थापित सुदूर देशों को रेल, तार, जहाज, हवाई जहाज़ द्वारा निकट बना दिया है। प्रकृति की बनाई हुई खानों को मनुष्य ने खाली कर डाला है। इंगलैंड में स्थानाभाव के कारण टेम्स नदी के नीचे नीचे रेलें चलाई हैं। पिहाड़ काट कर देशों को मिला दिया है। (Simpllon) सिम्पलौन की सुरंग में बारह मील तक रेल सुरंग के अन्दर ही अन्दर चलती रहती है। बहुत समय तक भौगोलिक कारणों से दक्षिण भारत उत्तरी भारत से अलग रहा यहाँ तक कि दक्षिण एक बिलकुल ही दूसरा देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। कोई भी मुसलमान बादशाह उस पर पूर्णतया अपना आधिपत्य न जमा सका और मुग़ल बादशाहों की तो वह कब्र ही बना रहा। परन्तु ऐतिहासिक कारणों से वही दक्षिण अब उत्तरी भारत से मिला दिया गया है और ब्रिटिश सरकार ऐसी आसानी से उस पर शासन करती है जैसे उत्तरी भारत पर। भौगोलिक कारणों से सहारा का रेगिस्तान अंधेरा महाद्वीप (Dark continent) कहलाता था परन्तु ऐतिहासिक कारणों से उसका अंधकार दूर हो गया है और अब वह उजाला महाद्वीप बन रहा है।

हालैन्ड की पृथ्वी समुद्र तल से नीची है अतः समुद्र के पानी को देश में घुस आने से रोकने के लिये डच लोगों ने बड़े बड़े डाइक्स (Dykes) और ड्यून्स (Dunes) बनाये हैं। जब कभी समुद्र में तूफ़ान आने के कारण यह डाइक्स टूट जाते हैं तो देश के भीतर तक समुद्र बढ़ आता है परन्तु वहाँ के परिश्रमी मनुष्य फिर से ऐसे ही डाइक्स बना लेते हैं। यही नहीं वरन् डच लोग समुद्र से बरजोरी ज़मीन छीन लेते हैं। वह लोग समुद्र के अन्दर बड़ी बड़ी दीवार बना कर एक प्रकार का कुंड बना लेते हैं जिसका पानी इञ्जन द्वारा निकाल देते हैं और ज़मीन को सुखा लेते हैं इस प्रकार की सुखाई हुई ज़मीन को पोल्डर (Polder) कहते हैं।

ज्यूडरज़ी के स्थान पर किसी समय पृथ्वी थी परन्तु समुद्र के तूफ़ान ने डाइक्स (बांध) को तोड़ डाला और बहुत दूर तक थल के स्थान पर जल ही जल हो गया। अब फिर इसका पानी उलीचा जा रहा है और आशा हैं कि शीघ्र जल के स्थान में थल बन जायेगा।

पृथ्वी को शक्ल और संसार के मान चित्र का ज्ञान भी मनुष्य को क्रमशः बढ़ता रहा है। इतिहास द्वारा समय समय पर उसमें परिवर्तन होते रहे हैं। जब ईसा के ५०० वर्ष पूर्व ऐनिक्सीमेंडर (Anexemander) ने संसार का मानचित्र बनाया तो उसने समझा कि समस्त देश एक वृत्त (Circle) बनाते हुये हैं और यूनान उन सब के मध्य में स्थित है। उसके सौ वर्ष पश्चात् डेमोक्रटस (Democratees) ने अपने पूर्व देशों के भ्रमण के आधार पर एक ऐसा चित्र बनाया कि जिसके पूर्व से पश्चिम की दूरी उत्तर से दक्षिण की दूरी से डेढ़ गुनी थी। तत्पश्चात यूनान के विद्वानों ने पता लगाया कि पृथ्वी एक ग्लोब है। परन्तु अब भी बहुत सी त्रुटियाँ बाक़ी थी। रूम सागर बहुत लम्बाकार बनाया गया था। योरुप बहुत ही सकड़ा गया भारतवर्ष दिखलाया ही नहीं गया और लंका बहुत बड़ी बनाई गई इत्यादि। जब मार्कोपोलो सन् १२१५ ई० में चीन और जापान का भ्रमण कर के जेनोआ लौटा और वहाँ बन्दी कर लिया गया था तो बन्दी गृह में ही उसने अपने भ्रमण का वृत्तान्त लिखा। उसके लेख से संसार के भूगोल का बहुत सा ज्ञान बढ़ गया।

जब क़ुतुब नुमा (Mariner's compass) का आविष्कार हुआ तो बहुत से मनुष्य नये नये देश की खोज में चल पड़े और बहुत से नये देश ढूंढ़ निकाले। प्रत्येक खोज संसार के चित्र को कुछ न कुछ बढ़ा देती थी। सन् १४९२ ई० में क्रस्टफ़र कोलम्बस ने (Christpher Columbus) ने अमरीका (America) के बड़े महाद्वीप का पता लगाया। यह महाद्वीप इतना बड़ा था कि नई दुनिया (New world) के नाम से पुकारा जाने लगा। सन् १६६९ ई० में कैप्टिन कुक (captain Cook) ने (New-zealand) को ढूंढ़ निकाला और उसके एक वर्ष बाद Australia का भी पता चलाया। ऐसे ऐसे आविष्कारों ने मनुष्य के भौगोलिक ज्ञान को ही नहीं बढ़ाया वरन् बड़ी बड़ी वस्तियाँ बसने लगीं और बहुत से व्यापारिक, राजनैतिक, और आर्थिक परिवर्तन कर डाले।

एक समय था जब भारत का व्यापार योरुप के महाद्वीप से अफ्रीका के बड़े महाद्वीप का चक्कर लगा कर होता था। परन्तु जब अरब और अफ्रीका के बीच की पतली चिट को काट कर स्वेज नहर (Suez canal) द्वारा लाल सागर (Red Sea) और रूमसागर (Mediterranean) मिला दिये गये तो स्वेज़ नहर (Suez canal) में होकर जहाज़ आने जाने लगे और हज़ारों मील का चक्कर कम हो गया। इसी प्रकार पनामा की नहर (Panama canal) ने अटलान्टिक महासागर और पेसेफ़िक महासागर को मिलाकर दक्षिण अमरीका का चक्कर मिटा दिया और कील Kiel) नहर ने उत्तरी सागर (North Sea और बेरिंग सागर को मिलाकर डेनमार्क का चक्कर कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया जिसके कारण व्यापार में बड़ी सुविधा हुई।

इसके अतिरिक्त इतिहास का व्यापारिक भूगोल (Commercial Geography) पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला है। पहले भारतवर्ष से योरुप थल की राह से ख़ैबर दर्रे में होकर कुस्तुन्तुनिया (coustuntunia) होते हुए व्यापार होता था परन्तु जब सन् १४५१ तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तो उन्होंने अपने देश में होकर काफिलों को जाने से रोक दिया। अब तो कोई अन्य मार्ग की आवश्यकता हुई। थल की राह से कोई मार्ग नहीं था क्योंकि टर्की का विस्तृत राज्य पूर्व में सारे प्रान्त में फैला हुआ था अतएव जल मार्ग ढंढ़ने के लिये बहुत से यात्री चल पड़े और वास्कोडिगामा (Vascodegama) नामक यात्री ने अफ्रीका का चक्कर लगाते हुए अटलान्टिक महासागर में मार्ग ढूँढ़ निकाला और अब इस राह से व्यापार होने लगा।

इतिहास का राजनैतिक भूगोल (Political Geography) पर भी बहुत प्रभाव है। ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा देशों की सीमा बहुत कुछ घटती व बढ़ती रहती है। एक समय वह था जब कि रोम साम्राज्य (Roman Empire) सम्पूर्ण दक्षिण योरुप में फैला हुआ था परन्तु आज रोम नगर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा और वह भी इटली के आधीन एक नगर है। महान युद्ध से पहिले आस्ट्रिया पर्शिया व रूस (Austria, Purssia and Russia.) के प्रबल राज्यों ने मिलकर पोलैन्ड (Poland) के स्वतन्त्र देश को आपस में बाँट लिया और उसका अस्तित्व ही संसार के मानचित्र से मिट गया। युद्ध के पश्चात पोलैन्ड पहिले के समान फिर स्वतन्त्र देश स्थापित कर दिया गया। पोलैन्ड ही नहीं परन्तु और भी कई छोटी २ स्वतन्त्र रियासतें बनाई गईं जैसे जार्जिया, ऐज़र बेजान, रीगा इत्यादि।

इस प्रकार देखा जाता है कि इतिहास का भूगोल पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है और ऐतिहासिक घटनाओं के अनुसार भौगोलिक दशा में भी परिवर्तन होता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्ट्रेलिया के मोती

उत्तरी-पश्चिमी आस्ट्रेलिया में मोती निकालने का काम फर्वरी महीने में शुरू होता है। तूफानों का आना इससे पहले ही बन्द हो जाता है। इससे छोटी छोटी नावें भी बड़ी आसानी से चल सकती हैं। आधे दिसम्बर से आधी फर्वरी तक एक तरह से आराम करने का समय होता है। नावें आकर ब्रूम शहर के पास ठहर जाती हैं। वहाँ उनकी मरम्मत या रँगाई होती है। इसी बीच में पुराने मल्लाह कोपाँग और दूसरे टापुओं को जाते हैं। यहाँ से वे दूसरे नये मल्लाह भरती कर लाते हैं। इसी समय सोप को अलग करने को गोरे लोग भरती किये जाते हैं। गोरे मजदूरों को २ पौंड (लगभग ३० रु०) हर हफ्ते मिलता है। इसके साथ ही किसी किसी गोरे को आमदनी (जो उसके द्वारा होती है) का १५ फी सदी भाग मिलता है। मोती निकालने वाले मोती के अलावा उन सीपों से भी लाभ उठाते हैं। जिनमें मोती अक्सर छिपे रहते हैं। मोती का सीप लगभग २०० पौंड (३०००० रु०) प्रति टन के हिसाब से बिकते हैं। मोती निकालने वालों में अक्सर कुछ जापानी गोताखोर, टेंडार, कई कोपाँग द्वीप निवासी और एक गोरा रहता है। इस तरह नाव पर बड़ी भीड़ रहती है। ४० फुट लम्बी नाव पर सभी लोग बहुत साफ रहते हैं। पानी बहुत रहता है। पीले जापानी और काले द्वीप निवासी खूब नहाते और कपड़ा धोते हैं। वे शाम को कपड़ा धोकर नाव के घेरे पर सूखने के लिये लटका देते हैं। सवेरे को कपड़े सूखे मिलते हैं। नाव पर ही लोग भोजन पकाते हैं। कुछ लोग पानी से ताजी मछली पकड़ कर पका लेते हैं।

सब लोग सवेरे ही काम पर लग जाते हैं। डाइ-विंग ड्रेस (गोताखोरी की पोशाक) पहनने के पहले लोग फलालैन के कपड़े पहनते हैं फलालैन का पाजामा एड़ी के पास बंधा रहता है। गोता लगाने वाले सवेरे को गरम गरम कहवा पीते हैं। जब गोताखोर नियत समय तक अन्दर ठहर चुकते हैं तब टेंडार लोग "ऊपर आओ" की आवाज लगाते हैं और रस्सी हिलाते हैं। शीघ्र ही गोता खोरों की टोपी ऊपर दिखाई देती है। वे रस्सी के उस थैले को डेक (नाव के फर्श) पर डाल देते हैं जिसमें वे सीपें भर लाते हैं। इसके बाद गोरा अफसर छुरी लेकर सीपों को काटता है। किसी किसी सीप की चौड़ाई, दस बारह इंच होता है। इसके बाद गोता खोर फिर डुबकी लगाते हैं और सीप का थैला भर लाते हैं। इस तरह से सवेरे से शाम तक सीपें निकाली जाती हैं। शाम को छुट्टी होती है। मजदूर लोग भोजन बनाने में लग जाते हैं। किसी किसी दिन सीप में मोती भी निकला है। एक एक मोती का दाम २५०० रु० होता है। कोई कोई मोती ३०,००० रुपये को बिकता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीनलैंड

उत्तरी ध्रुव (आर्क्टिक) सागर में ग्रीनलैंड दुनिया का सब से बड़ा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल ८,४०,००० वर्गमील है जो हिन्दुस्तान का लगभग आधा है। लेकिन इस बड़े द्वीप में केवल ३५,००० वर्गमील ऐसी ज़मीन है जो बरफ से नहीं ढकी है। नाम का बन्दरगाह बरफ से नहीं खाली रहता है। डेन्मार्क की सरकार ने घोषणा निकाली कि १९४१ ई० तक यह बन्दरगाह सब जहाज़ों के लिये खुला रहेगा। तब से कई मछली पकड़ने वाले जहाज़ इधर आने लगे हैं। ग्रीनलैंड के भीतरी भागों का

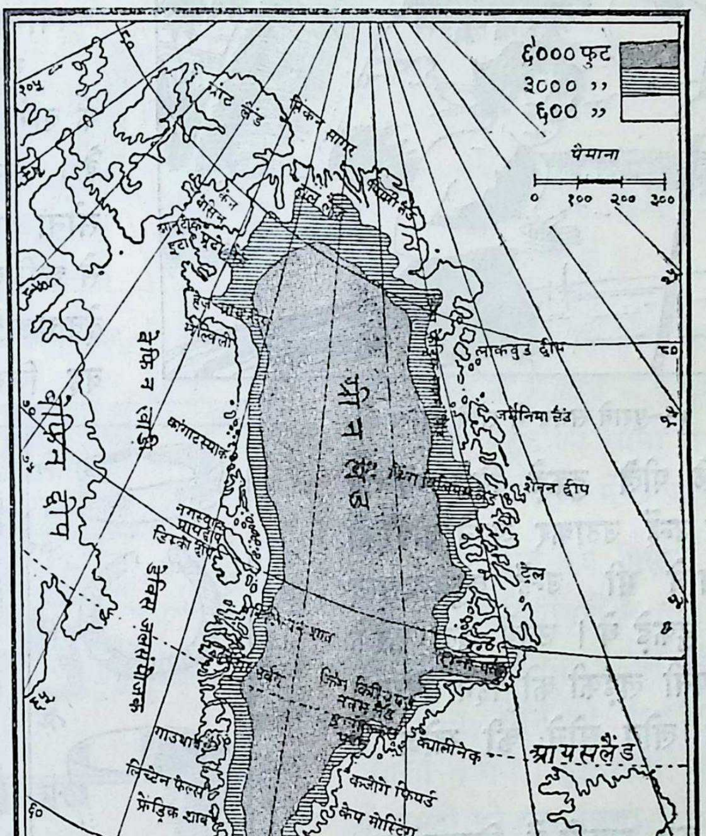

यहाँ की आबादी १६,७०० है। इसमें ४०० डेन्मार्क के डेन लोग हैं। इस द्वीप का व्यापार एकदम डेन्मार्क की सरकार के हाथ में है। १९३७ के अप्रैल महीने में डेन्मार्क वालों ने थ्यूल को भी मिला लिया। दुनिया का सब से अधिक उत्तरी आबाद स्थान थ्यूल ही है। दक्षिणी-पश्चिमी तट पर फेरिंजहेविन पता लगाने का काम भी जारी है। उत्तरी-पश्चिमी तट पर नई बस्तियाँ बसाई जा रही हैं।

अटलांटिक महासागर के आर पार उड़ने वाले हवाई जहाजों के लिये ग्रीनलैंड बड़े मौके पर पड़ता है। यहाँ का जलवायु सम्बन्धी खोज भी बड़े काम की होगी। इसी से ग्रीनलैंड का महत्व बढ़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना

बहुत पुराने समय में जब मनुष्य खोहों में रहते थे एक लड़की को एक नदी के किनारे

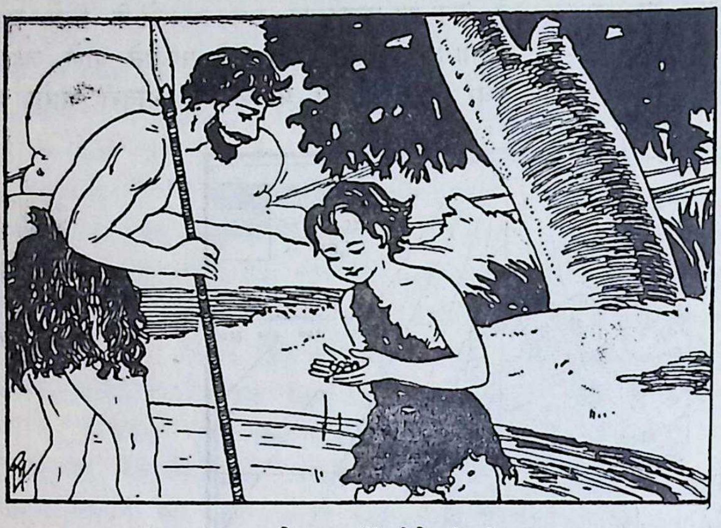

१—पुराने समय में सोने की खोज

वालू में कुछ पीले पीले टुकड़े मिले। वे बड़े सुहाने थे। उसने उन्हें उठाकर अपने बाप को दिखलाया। बाप ने भी उन्हें बहुत पसन्द किया वे सोने के टुकड़े थे। उनमें छेद करके बाप ने उन्हें अपनी लड़की को पहना दिया। तब से अब तक लोग सोने की खोज में रहे हैं।

सोना बहुत कम स्थानों में मिलता था। फिर भी राजा लोग इससे तरह तरह के आभूषण और बर्तन बनवाते थे। पुराने समय के राजाओं की कब्रों में तरह तरह का सामान मिला है। यह सामान बड़े बड़े अजायबघरों में रक्खा गया है। सोने का कुछ सामान पुराने मिस्री राजाओं के पिरेमिडों में मिला है इराक़ देश के प्राचीन एसीरियन लोग भी बड़े मालदार थे। उन्होंने सोने की तरह तरह की चीज़ें बनाई थीं। हिस्दुस्तान का बहुत सा सोना विदेशों में पहुँच गया है।

सुलेमान बादशाह के पास इतना सोना था कि उसने सोने का मन्दिर बनवाया :—

यूनान के राजा मिडास के बारे में एक विचित्र कहानी है। उसके पास बहुत सा सोना था। वह सोने को सब से अधिक चाहता था। उसने देवताओं से प्रार्थना की कि वह जिस चीज़ को छुए वह

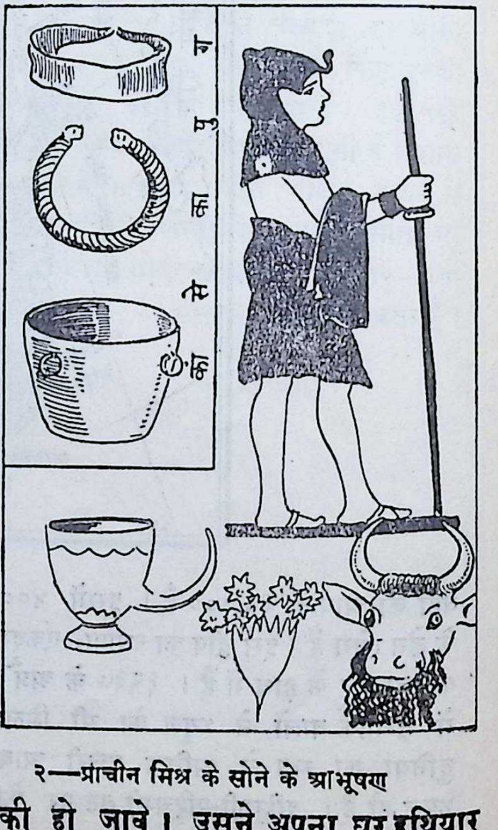

२—प्राचीन मिश्र के सोने के आभूषण

सोने की हो जावे। उसने अपना घर हथियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि बहुत सी चीज़ें छू कर सोने की बनाली। उसके नौकर कई प्रकार का

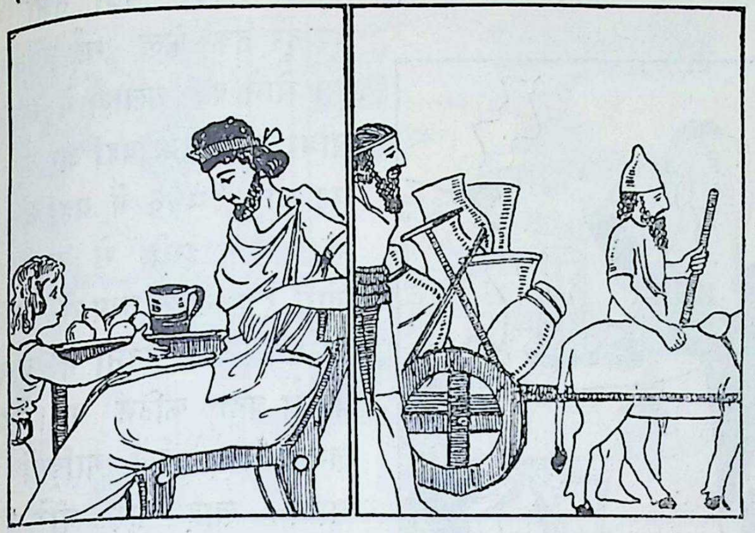

३—सोना असीरियन और यूनानी।

४

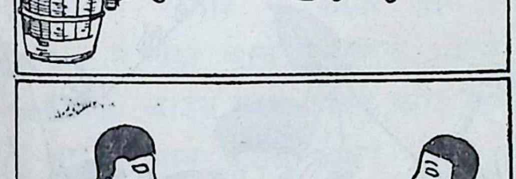

५

४—मिश्र देश का सोना। ५—सोना निकालनेका पुराना ढंग।

भोजन बना कर उसके सामने परोसते। लेकिन जिस भोजन को राजा खाने के लिये छूता वही सोना बन जाता। राजा सोना नहीं खा सकता था। इससे राजा को कष्ट होने लगा। एक दिन इसकी प्यारी लड़की आकर उससे लिपट गई। वह बेचारी भी सोने की बन गई। तब तो मिडास ने दुःखी होकर देवताओं से प्रार्थना की कि जो वरदान उसे मिला है उसे वे वापिस ले लें।

फिर भी राजा लोग सोने को चाहते ही रहे। सोने के लालच से वे दूर के देशों में हमला करते और बहुत सा सोना रथों पर लादकर वे अपनी राजधानी में ले जाते थे।

जब सोना कम मिलने लगा तो पुराने समय के कीमियागरों ने तरह तरह की चीज़ों को मिलाकर सोना बनाने की कोशिश की। कुछ लोग सोने की तलाश में पहाड़ और जंगलों में गये। कुछ लोगों ने सोने की खोज में समुद्रों को पार किया।

स्पेन वाले सोने की खोज में मेक्सिको पहुँचे। मेक्सिको के लोग अज़टेक कहलाते थे। उनके पास बहुत सोना था। जब वहां के राजा को मालूम हुआ कि स्पेन वाले सोना चाहते हैं तब वहां के राजा ने स्पेन के सरदार कोर्टेज़ को सोने की बहुत सी चीज़ें भेंट की। लेकिन इससे स्पेन वालों का लोभ बढ़ता ही गया और उन्होंने मेक्सिको बरबाद कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन वाले सोने की तलाश में दक्षिणी अमरीका भी पहुँचे। वहां पीरू के इन्का लोग भी

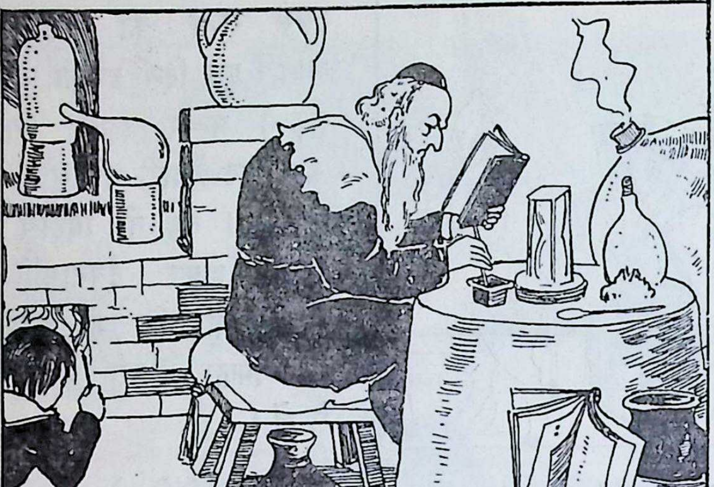

६—सोने की मियागार।

मालदार थे। उनको हरा कर स्पेन वालों ने वहां से बहुत सा सोना लूटा। लेकिन कभी कभी स्पेन वालों को रास्ते में इंग्लैंड और फ्रांस के लुटेरे जहाज़ मिल जाते। वे स्पेन वालों से लड़कर सोना छीन लेते थे। कभी कभी दोनों की लड़ाई में सोने से भरा हुआ जहाज़ डूब जाता था। आज कल कुछ लोग डुबकी लगाकर खोये हुए सोने को निकालने की कोशिश करते हैं।

कुछ लोग घोड़े या खच्चर पर सवार हो कर सोने की खानों का पता लगाने निकलते हैं। एक बार केलिफोर्निया में जेम्स मार्शल ज़मीन खोद रहा था। उसने वहां की मिट्टी में सोने के कण देखे। यह खबर बड़ी तेज़ी से दूर दूर तक फैल गई। लोग इस सोने की तलाश में लम्बी यात्रा तय करके यहां आ बसे। यह लोग १८४९ में यहां बसने आये थे। इसी से यहाँ के लोग १८४९ के नाम से प्रसिद्ध हो गये। उन दिनों में यात्रा करना बड़ा कठिन था। लोग लम्बी बन्द बैल गाड़ियों में सामान लाद कर धीरे धीरे चलते थे। उनको यहाँ आने में कई महीने लग गये।

आस्ट्रेलिया में कुछ ही इंच की गहराई पर सोना मिलने लगा। इस सोने की खोज

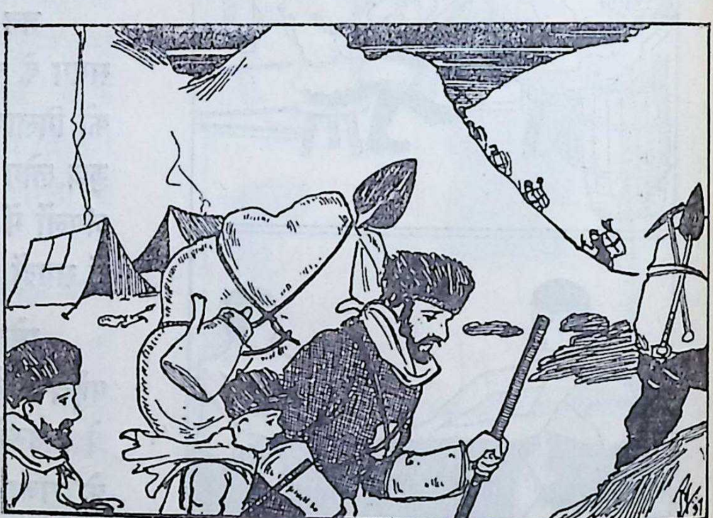

७—सोना।

में भी इंगलैंड के बहुत से लोग घर बार बेच कर यहां दौड़ आये।

उत्तरी अमरीका के धुर उत्तरी क्लांडायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश में एस्किमो रहते हैं। एक बार स्कूकुम-जिम नामी रेड इंडियन शिकारी एक हिरण

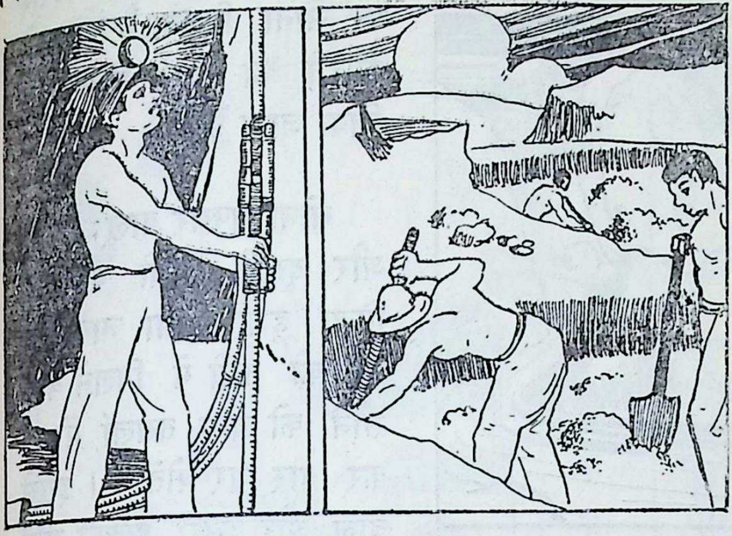

८—सोने की खुदाई।

का पीछा करता करता यहां आ पहुँचा। वह बहुत थक गया था। पानी पीने के लिये एक नदी के किनारे ठहर गया। नदी के कंकड़ों के बीच में उसने सोने के टुकड़े देखे। यह ख़बर भी दूर दूर तक पहुँची यहां साल में आठ महीने तक कड़ा जाड़ा पड़ता है। फिर भी जाड़े की कुछ भी परवाह न करके लोग सोने की तलाश में यहां आने लगे। वे ओढ़ने के लिये कम्बल, खोदने लिये फावड़े और दूसरा भारी भारी सामान अपने आप ही ढो कर लाये थे। बरफ पर चलते चलते उनके पैर सुन्न पड़ जाते थे। कभी कभी उनको भूखा रहना पड़ता था। कुछ लोग तंग आकर लौट गये। कुछ मर गये। कुछ लोगों को सोना मिला और वे मालदार हो गये।

आज कल सोने की दुनिया भर में सब से बड़ी खानें दक्षिणी-अफ्रीका में हैं। वहाँ के मज़दूर लोग काले हबसी हैं। वे बड़ी गहराई पर सोना खोदते हैं। उनके मालिक गोरे लोग हैं जो योरुप से आकर वहाँ बस गये हैं। खानों के चारों तरफ सब कहीं सफेद बालू के ढेर लगे हैं। इनको इन्हीं हब्शियों ने खोद कर इकट्ठा किया है।

कनाडा की कुछ सोने की खानें इतनी दूर उत्तर के बर्फीले प्रदेश में हैं कि वहाँ बिना पहिये की स्लेज गाड़ियों में सामान लादकर मज़दूरों के लिये पहुंचाया जाता है। कभी कभी सामान और

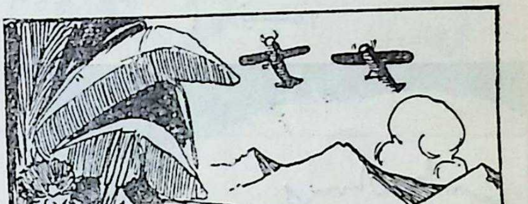

९—सोना।

मुसाफिरों को पहुँचाने का काम हवाई जहाज़ों से लिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी द्वीप समूह के दक्षिण-पूर्व में न्यूगिनी द्वीप की सोने की खानें जंगलों से घिरी हुई

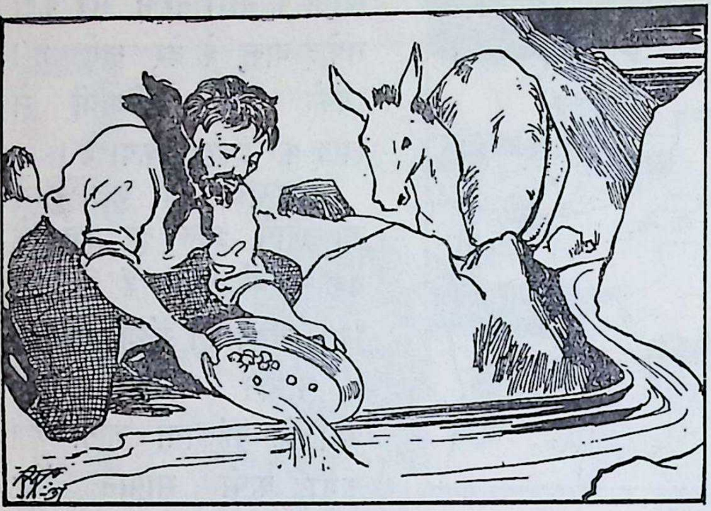

१०—सोना।

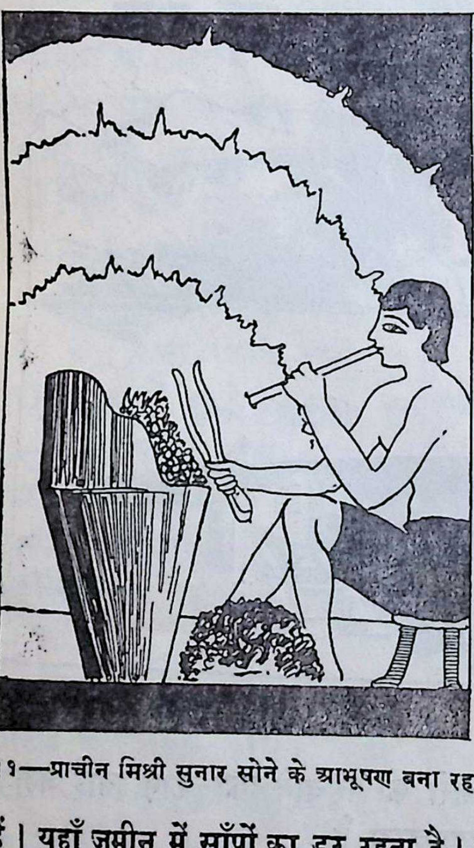

११—प्राचीन मिश्री सुनार सोने के आभूषण बना रहा है।

हैं। यहाँ ज़मीन में साँपों का डर रहता है। पेड़ों के ऊपर बन्दर उछलते कूदते रहते हैं। मैसूर राज्य की कोलार की खानों में बहुत गहराई पर सोना मिलता है। इसको खोदने का काम मशीनों से लिया जाता है।

सोना अक्सर बालू, मिट्टी और दूसरी मैली धातु से मिला हुआ पाया जाता है। नदी की तली में मिलने वाले सोने को लोग तसलों में भर कर बार बार धोते हैं। इससे बालू और दूसरी हलकी चीज़ें

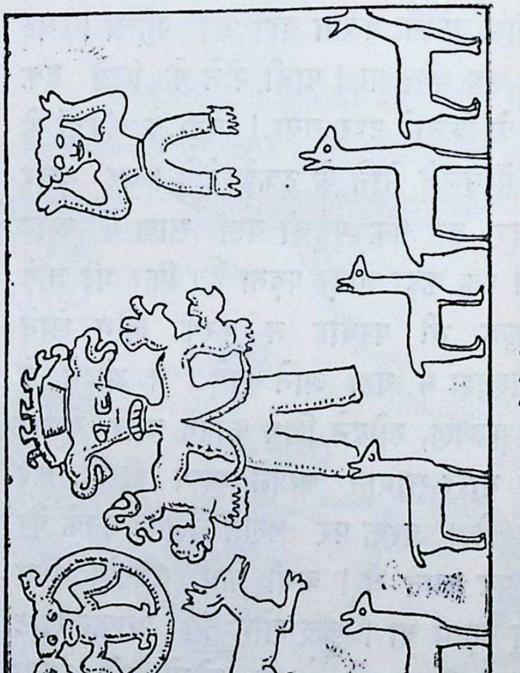

१२—सोने के आभूषण।

बह जाती हैं। भारी सोना बच जाता है। जो सोना खानों के भीतर से निकलता है। उसमें कई कड़ी चट्टानों से रंग चिपके रहते हैं। पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३—रानी शेबी सुलेमान बादशाह को सोना भेंट में दे रही है।

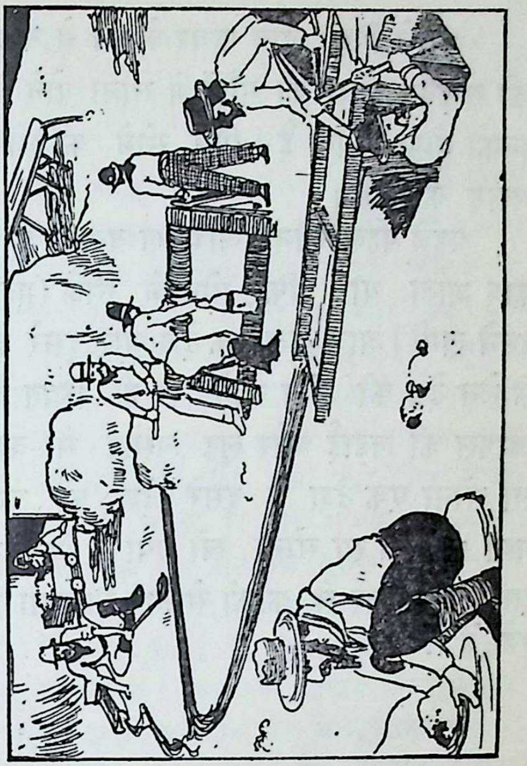

१५—सोना।

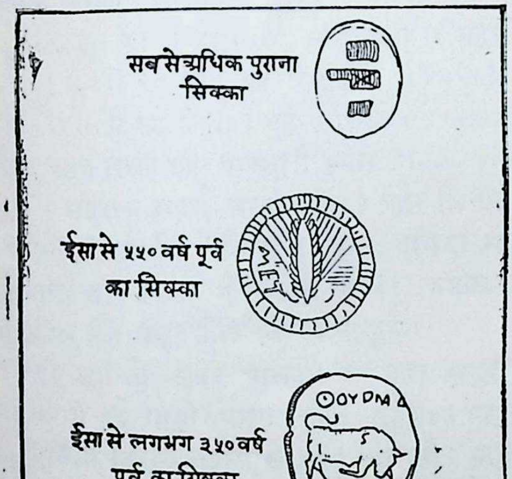

१४—सोने के सिक्के।

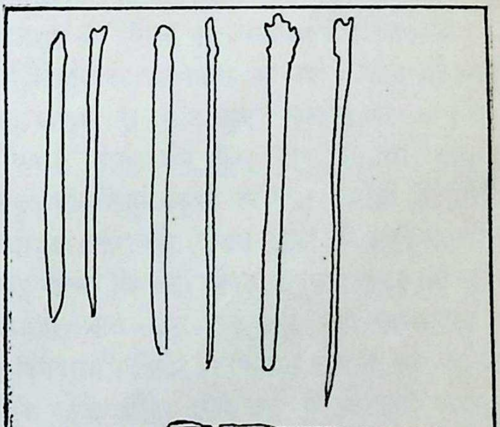

१६—सोने के सिक्के और आभूषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने मिस्री लोग पत्थर के घन से चट्टानों को तोड़कर पत्थर की नाँदों में सोना धोते थे। इनको तोड़ा जाता है। फिर सोने को धोकर अलग करते हैं।

पहले पहल सोना आभूषण बनाने के ही काम आता था। फिर सोने के सिक्के (मुहरें) बनने लगीं। आज कल एक देश और दूसरे देश के लेन देन की नींव सोने पर ही स्थित है। आपस की लड़ाई और लूट खसोट से बहुत सा सोना एक देश से दूसरे देश को चला गया। बहुत सा सोना खो गया। फिर भी ज़मीन के भीतर से काफ़ी सोना निकाला जा रहा है।

पहले सोना राजा के खज़ाने और किले में रहता था। आज कल अधिकतर सोना बड़े बड़े बैंकों के तहखानों में रक्खा है। न्यूयार्क में संयुक्तराष्ट्र अमरीका के फेडरल रिज़र्व बैंक के गहरे तहखाने में कई अरब रुपये का सोना रक्खा है। लन्दन के बैंक में भी इसी तरह कई अरब रुपये का सोना मौजूद है। फ्राँस के बैंक में सोना रखने के लिये पेरिस शहर में ठोस चट्टान को काट कर सेन नदी की तली के नीचे बड़ा तहख़ाना बनाया गया है। इसी में वहाँ का सोना रक्खा है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण दिशा में

[विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.]

(गताङ्क से आगे)

अधिक बोझ भ्रमण में रुकावट डालता है इस लिए ट्रंक और विस्तर आर्य समाज में छोड़ने का विचार कर लिया, पहने हुए कपड़े के अतिरिक्त २ चादरें १ कम्बल २ कोट २ कमीज २ धोती एक अंगौछे में बाँध लिए। झोले में लोटा गिलास रख लिए। टार्च (Torch) जेब में डाल ली। इस सूक्ष्म सामान के साथ मैंने लंका की तैयारी की। कुली ने ताला पकड़ कर ट्रंक उठाया तो कुन्दा निकल आया। मैं बड़े असमंजस में पड़ गया। यदि बाजार में ट्रंक ले जाकर कुन्दा लगवाया तो ट्रेन न पा सकूंगा और यदि बिना ताले के ट्रंक छोड़ता हूँ तो अपरिचित जगह पर सामान खोने का डर है। फिर भी मुझे आर्य पुरुषों की ईमानदरी पर अधिक विश्वास है। ट्रंक विना ताले के आर्य समाज में पड़ा रहा और जब मैं १५ दिन के वाद लौट कर आया तो सब सामान सुरक्षित मिला।

१२ जून को Egmore station (मद्रास) से २२) रु० में २० दिन का रियायती Travel as you like टिकट लिया। यह summer season टिकट बहुत सस्ता और अच्छा है इससे M. & S. M. Ry. (मद्रास सदर्न मरहठा रेल) और S. I. R. (सदर्न इंडियन रेल) के द्वारा कुल दक्षिण भारत की यात्रा हो सकती है। दिन के ११ बजकर १५ मिनट पर रेल धनुषकोटि को रवाना हुई।

१३ जून को सवेरे पामबन के पास समुद्र को पार करती हुई गाड़ी धनुष कोटि पहुँची। यह रेल का अन्तिम स्टेशन मद्रास से ४६० मील है। यहाँ से स्टीमर तलाई मनार (लंका) को जाया करते हैं। २२ मील की समुद्र यात्रा २ घंटे में समाप्त हो जाती है यहाँ आकर मालूम हुआ कि डाक्टर का सार्टीफिकट और लङ्का की पुलिस का आज्ञा पत्र मण्डपम कैंप (mandapam camp station) पर मिलता है। इन दोनों के बिना लंका में उतरना असम्भव है। मण्डपम कैंप को मैं रास्ते में छोड़ आया था गाड़ी के लौटने में अभी तीन घंटे की देर थी इसलिए कपड़ों को स्टेशन पर रखकर एक नौकर के साथ समुद्र स्नान को चला। २ मील के लगभग चलने पर समुद्र का संगम आया। एक ओर शान्त महोदधि बंगाल सागर वह रहा था। और दूसरी ओर उत्ताल तरंगों वाला रत्नाकर अरवसागर अट्टहास कर रहा था, जब मैं महोदधि में स्नान कर रहा था मैंने देखा कि एक बहुत ही सुन्दर दुध शंख लुढ़कता हुआ जा रहा है। मैंने उसे झट उठा लिया, वह जिन्दा था, अन्दर से कीड़े ने पैर निकाले वह मेरी हथेली में छू गए मैंने उसे तुरन्त पानी में डाल दिया और वह लहरों के साथ बहता हुआ चला गया। मैंने अपने स्वार्थ के लिए उसकी जान लेना उचित न समझा। स्नान के पश्चात अन्य मनुष्य तो पंडों के इशारों पर नाच रहे थे मैं किनारे किनारे सीपी, रावण के नाखून और किरीट बीनता हुआ स्टेशन पहुँचा दस बजे गाड़ी में बैठ कर १२ बजकर ३० मिनट पर मण्डपम कैंप आ गया।

मैं स्टेशन से अस्पताल में गया। तीन घंटे वाद डाक्टर साहब से भेंट हुई। उन्होंने कहा ५०) रु० जमा करना होगा और कल टीका लगाया जायगा मेरे बहुत कुछ कहने सुनने पर २५) रु० की जमानत ही स्वीकार कर ली लेकिन टीका से छुट्टी न दी। मैंने यह सोचा कि कहीं टीका के बाद ज्वर आ गया तो अकेले सात दिन तक यहीं पड़ा रहना पड़ेगा टीका लगवाना स्वीकार न किया। स्टेशन पर आकर देखा कि पहले और दूसरे दर्जे के यात्रियों का सब संस्कार स्टेशन पर किया जा रहा है और ट्रेन उनके लिए रुकी रहती है। हम जैसे तीसरे दर्जे के यात्रियों का कोई मूल्य ही नहीं रक्खा। २० दिन कहीं लंका और मण्डपम कैंप के अस्पतालों में ही न बीत जाय और लंका के लालच में दक्षिण भारत भी न रह जाय "माया मिले न राम" यही समझ लौटने की ठान ली। २ घंटे की समुद्र यात्रा में कौन सी विषाक्त महामारी है जिससे गवर्नमेंट इतना भय खाती है। और बेचारे यात्रियों को परेशान करती है कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई में हजारों मनुष्य आते जाते रहते हैं परन्तु वहाँ पर कभी टीका का प्रश्न नहीं उठता ऐसी रुकावटें व्यापार तथा समाज की दृष्टि से दोनों देशों के लिए हानि कारक हैं।

मण्डपम कैंप से मैं रामेश्वरम् को लौट पड़ा। पामवन स्टेशन से ही पंडों ने घेरना आरम्भ किया और रामेश्वरम पहुँचते ही पंडे टिड्डीदल की तरह टूट पड़े। असीमित प्रश्नों की वर्षा शुरू हो गई। मैंने कहा कि मैं दर्शन के लिए नहीं आया तो भी उन लोगों ने एक न सुनी मैं जिधर जाता वह दल मेरे पीछे हो लेता। पिण्ड छुड़ाना कठिन देखकर मैंने एक कुली किया और उसके साथ रामेश्वरम् देखने को पैदल चल दिया। निराश होकर वह एक एक खिसकने लगे। अब केवल दो रह गए। वह दोनों उन दो फरिस्तों की तरह जो कि मनुष्य के भले बुरे कामों को लिखते रहते हैं मेरे साथ साथ घूमते रहे। थक कर उनमें एक ने अपना रास्ता लिया बाजार से बिना मन्दिर देखे ही मैं स्टेशन की ओर मुड़ा। अपने सब प्रयत्नों को निष्फल देख उसने आग्रह किया कि एक समय के भोजन के लिए ही कुछ पैसे मिल जाय लेकिन मैंने उसे सबक सिखाने के लिए एक पाई भी न दी वह बड़बड़ाता हुआ अपने घर चला गया और मैं जाकर रेल में बैठ गया शाम को लगभग सात बजे त्रिचनापली को चल दिया।

५ वजे सबेरे त्रिचनापली पहुँच कर एक मास्टर के यहाँ सामान रख दिया यह शहर भी अपने अच्छे दिन देख चुका है। यहाँ पर कभी चाँदा साहब का बोल बाला था। चाँद के अस्त होने से यह अमावस्या के अँधेरे में विलीन हो गया। एक भग्न द्वार के अतिरिक्त कोई चिन्ह उन दिनों का स्मरण नहीं दिलाता। समय का फेर यही है यहाँ का Rock temple (पहाड़ी मन्दिर) दर्शनीय है। कावेरी स्नान को गया वहां सैकड़ों स्त्री पुरुष नहा रहे थे पानी बहुत गन्दा था इसलिये मेरी इच्छा उसमें नहाने की न हुई।

एक साथी लेकर श्रीरंगम् क्षेत्र देखने चला, श्री रंगम् त्रिची से तीन मील है। दो आने में मोटर वहाँ पहुँचा देती है। यह दक्षिण का एक प्रसिद्ध मंदिर है। मूर्ति तक पहुँचने के लिये कई चौक पार करने पड़ते हैं। रास्ते में एक आने के एक दर्जन केले लेकर खाने लगा केले बिलकुल फीके थे, अन्य कोई चीज खाने की पास न थी। फेंकना भी उचित न समझा। इतने में उस खान की याद आ गई जो पेड़े की जगह साबुन खरीद लाया था और बेचारा जैसे तैसे उसे खतम करने लगा, किसी ने उसे मुंह बनाते हुये देखकर पूछा 'खान क्या खाते हो? उसने कहा 'खान खाता क्या है अपना पैसा खाता है' हंसते हंसते मैंने भी कई केले अकेले ही समाप्त कर दिये। शेष केले साथी के हाथ घर भिजवा दिये इस तरह उससे पिंड छूटा। यह नगर S. I. R. का Head quarter है उत्तर-दक्षिण का प्रसिद्ध व्यापार-केन्द्र है।

रेल में मुझे किसी ने यह बताया था कि त्रिवेन्द्रम का चिड़िया घर भारत में सबसे अच्छा है, उसमें ऐसे २ जीव जन्तु हैं जो अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं। उनको देखने को मैं व्यग्र हो रहा था इसलिए सवा बारह बजे दिन के त्रिची से चल दिया और रात को साढ़े आठ बजे मदुरा स्टेशन पहुँचा होटल वाला मुझे शहर ले गया।=) कोठरी के।=) आना भोजन के तय हुए सबेरे ।॥) मैनेजर को दिए और १५ जून को आठ वज कर तीस मिनट पर त्रिवेन्द्रम को रवाना हुआ।

दक्खिन में काली मिट्टी के अतिरिक्त लाल मिट्टी (Red laterite) भी पाई जाती है। एक सूखी छोटी नदी लाल धूल से ही ढकी हुई थी और वह बहुत अच्छी लगती थी सामने लाल लाल खेत दिखलाई देते थे दूर दूर गड्ढे लाल जल से पूरित लाल शरबत के प्याले से मालूम देते थे। लाल गुलाबी खपरैल लाल दीवालों पर दिल को लुभा रही थी। स्टेशनों की पटरियों पर भी लाल बजरी बिछी थी। जिधर देखता था लाल ही लाल दिखलाई देता था। कृषि विभाग के कर्मचारी ने बतलाया कि अगर इस लाल मिट्टी को पानी मिले तो पैदावार के लिए काली मिट्टी से अधिक अच्छी है। काली मिट्टी में पौधों की जड़ें फैलने नहीं पातीं, लाल मिट्टी चिकनी न होने से मुलायम होती है और जड़ों को फैलने का पूरा अवसर मिलता है लेकिन छिद्रमयी होने से पानी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती है। यहाँ की दो तिहाई भूमि लाल ही लाल है।

ट्रावन कोर राज्य में प्रवेश करते ही चित्त प्रसन्न हो गया। समय बड़ा सुहावना था कभी कभी बूदें पड़ जाती थीं, गर्मी का नाम न था पहाड़ियों पर सागोन (Teak) रोज़ वुड कन्द (Rose wood) कटहल और जंगली पेड़ हरियाली से आच्छादित थे। खाइयों में गुला लताओं में गुत्थम् गुत्था हो रही थी जंगली फूल अपनी स्वाभाविक हँसी से हँस रहे थे। बीच बीच में केले और अनन्नास भी अपनी छटा दिखा रहे थे। कहीं कहीं किसानों के लाल २ घर पृथक पृथक खड़े हुए थे और उनके पास नारियल के पेड़ झूम रहे थे। सुपारी (Areca nut) काजू (Cashewnut) और ताड़ी गोला के वृक्ष अपना निराला सौंदर्य प्रदर्शित कर रहे थे। कहीं कहीं अंधेरी सुरंगें पार करनी पड़ती थी। कहते हैं कि इस विकट वन में हाथी और शेर भी पाये जाते हैं। इस निरीक्षण में मि० चक ने मुझे बहुत सहायता दी।

५ बजे से पहले क्विलन स्टेशन पर हमारी ट्रेन आ गई। लड़कों की टोलियाँ समुद्र स्नान करने को जा रही थीं। क्विलन एक छोटा बन्दरगाह है। रेल में से शहर साफ, सुथरा तथा सुन्दर दिखलाई देता था (Back waters) में नावें चल रही थीं।

जब हम त्रिवेन्द्रम के समीप पहुँचे तो खेतों में अपरिचित पौधे दिखलाई पड़े मैंने मि० चक से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि यह (Tapioca) है। इस नाम के सुनते ही मैं फूला न समाया। इसे देखने को मैं अत्यन्त लालायित था। ईश्वर की कृपा से खेत के खेत देखने को मिल गये। मैंने तो यही पढ़ा पढ़ाया था कि पूर्वी द्वीप समूह (East Indies) तथा अफ्रीका में पाई जाती है और वहाँ के लोगों का यह मुख्य भोजन है। पूर्वी द्वीप समूह वाले इसके विष को हटाने के लिए इसको पहले उबालते हैं और फिर खाने के काम में लाते हैं। सुखा कर इसकी रोटी बनाते हैं। (Tapioca) की जड़ सूरत में शकर कन्द की तरह होती है। डाली काट कर आसानी से लगाई जा सकती है लौटते समय (Tapioca) का नमूना लेने का निश्चय कर लिया. ट्रावनकोर की (Tapioca) विषाक्त नहीं होती। रात को ७१ बजे त्रिवेन्द्रम के Grand Hotel में पहुँच गया, ॥) आना प्रति दिन एक कोठरी के और ।=) आ० खूराक के निर्णय हुए।

१६ जून को सबेरे त्रिवेन्द्रम नगर देखने निकला। पैसे की जगह यहाँ रियासत का सिक्का (चक्रम) चलता है यह सवा दो पैसे का होता है मैं दो चक्रम देकर मोटर में बैठ गया कुछ दूर जाकर उतर पड़ा। छः छः पैसे में हाथी दाँत की एक स्वस्तिका और एक हाथी खरीदे। मनुष्य बहुत मिलनसार थे और आगन्तुक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बड़ी सभ्यता से देते थे। यहाँ दो प्रकार के लेटरबक्स लगे हुए थे। स्थानीय तथा सरकारी राज्य के बाहर पत्र भेजने के लिए लाल रंग का सरकारी लेटरबक्स था। स्थानीय में डालने से बैरंग हो जाता है। फूलों से परिपूर्ण एक वाटिका में एक सुन्दर गुलाबी भवन खड़ा हुआ है। यही राजमहल है। संतरी बाहर पहरा दे रहा था। अन्दर बिना पास के नहीं जा सकते इस लिए मैंने दूर से ही दर्शन कर लिए। चिड़िया घर (Zoo) के फाटक से एक आदमी मेरे साथ हो लिया। हम दोनों एक दूसरे की भाषा से अनभिज्ञ थे वह समझाने का बहुत प्रयत्न कर रहा था परन्तु मेरी समझ में कुछ न आता था। एक चक्रम में सापों का तमाशा देखा। गुलाबी पेलीकन (Pelican) और पचरंगी तोता दर्शनीय पक्षी थे मैंने कुछ चिड़ियों के पंख माँगे तो उसने 'राजा' शब्द कर दोनों कलाइयाँ मिला दीं यानी राजा हथकड़ी डलवा देगा। Zoo बहुत ही साधारण था। पास ही एक छोटा सा अजायब घर भी था जिसमें चित्रों का संग्रह अच्छा था आस्ट्रेलिया Australia के सारंगी चिड़िया (Lyre bird) की पूँछ का प्रत्यक्ष दर्शन यहीं हुआ. यह बहुत ही सुन्दर थी। बेध शाला (Observatry) देखने गया लेकिन वह बंद थी।

यहाँ पर मुझे मालूम हुआ कि कन्याकुमारी का सूर्यास्त बहुत सुन्दर होता है दार्जिलिंग में सूर्योदय देखने के लिए १२ मील पैदल गया था। कन्याकुमारी लगभग ५० मील है एक रुपये में बस (Bus) ले जायगी। १ बजकर २० मिनट पर कन्या कुमारी के लिये मोटर से चल दिया, ॥।≡) ही देने पड़े। सड़क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दोनों ओर नारियल तथा अनेक प्रकार के ताड़ के जंगल खड़े हुए थे। जहाँ जहाँ मोटर खड़ा होता था खाने को केले, पीने को नारियल का पानी मिल जाता था।

नारियल को यदि कल्पवृक्ष कहा जाय तो अत्युक्ति न होगा। गरी खाने को, अन्दर का दूध पीने को, जटा की चटाइयाँ बिछाने को, लकड़ी जलाने को, पत्ते छत पाटने को, प्याले, हुक्के तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ इससे प्राप्त होती हैं। अरब के लिये ऊँट, एस्किमों के लिये रेनडियर और दक्षिण वासी को नारियल ही सर्वस्व है। मैडेगास्कर (अफ्रीका) के Travellers tree की तरह खान पान आश्रय तीनों ही इससे मिलते हैं। नारियल की चटपटी चटनी कौन नहीं चाहता। मेरी तृषा को कई बार इसने शान्त किया। इसके तेल से नाना प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं। ऐसा लाभदायक वृक्ष संसार में शायद ही कोई होगा।

साढ़े सात बजे शाम को कन्याकुमारी पहुँचगया। (Red and Black monazite) मानिक रेती शंखमाला, सीता के चावल, सुइयाँ, गर्भ तथा समुद्र की वस्तुएँ लेकर स्वामी विवेकानन्द हिन्दी पुस्तकालय में रख दीं और गाइड लेकर समुद्र तट को चल दिया। शीतल वायु बह रही थी। समुद्र गर्जना कर रहा था। उत्ताल तरंगें चट्टानों से टकरा कर गिर पड़ती थीं। लवण विन्दु पवन के सहारे अंग स्पर्श करते थे। यह अंतरीप भारत की सीमा का अन्त है। एक ओर अरब सागर हिलोरें ले रहा था दूसरी ओर गंगा सागर उमड़ रहा था। दो समुद्रों का संगम बहुत ही सुन्दर तथा शान्तिप्रद था। लेकिन सूर्यास्त? कोई विशेष बात नहीं।

इतने में एक अपरिचित व्यक्ति केमरा लिये सामने आया। दोनों ने अपना अपना परिचय दिया। एकाका ने समुद्र की ओर संकेत कर कहा, टेनीसन ने ठीक कहा है, 'Water, water everywhere, not a drop to drink'. मैंने कहा यह पंक्तियाँ कालरिज के Ancient mariners से ली गई हैं, टेनीसन की नहीं हैं। उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली। दोनों किनारे किनारे बहुत देर तक टहलते रहे। उन्होंने दो एक चित्र भी लिये। सूर्य डूबने का समय आ गया किन्तु उसमें कोई अलौकिकता न दृष्टिगोचर हुई। मि० काका ने कहा, शायद जाड़ों में जब सूर्य दक्षिणायन होता है कुछ सुन्दरता दिखाई देती होगी। मैंने कहा, हाँ ऐसा हो सकता है। सूर्य के लोप होते ही अंधकार फैलने लगा। हम लोग कुमारी के मंदिर को चल दिये। मंदिर के चारों ओर किले की तरह ऊँची चहार दीवारी थी। जिसके ऊपर चौड़ी २ सफेद और लाल कमीज की तरह खड़ी धारियाँ थीं। एक अंग्रेजी पढ़ा पुजारी द्वार पर खड़ा था। उससे मालुम हुआ कि धोती के अतिरिक्त कुल कपड़े बाहर ही उतार कर रखना होगा। नहीं तो मंदिर के अन्दर नहीं जा सकते। मेरी जेब में ६०) के नोट पड़े थे इस डर से मैंने यह बात स्वीकार न की और बाहर ही रहना पसन्द किया। एकाका ने अपना मनी बेग निकाल कर मुझे दे दिया और कपड़े उतार कर अन्दर चले गये। वह पूजा पाठ तथा दर्शन के बाद बाहर चले आये उन्होंने बतलाया कि देवी के कई हीरे जड़े थे। परन्तु किसी के हाथ अपने रुपयों को छोड़ना मैंने उचित न समझा। परदेश में सहसा किसी का विश्वास करना ठीक नहीं, इसी नीति का मैंने अवलम्बन किया। एकाका कुछ हास्य प्रेमी भी थे। जब उनसे पूछा गया, क्या आप भगवान् के दर्शन को भी जाँयगे तो झट बोल उठे मैं भगवान और भगवती में समझौता करने नहीं आया। यहाँ पर एक पौराणिक कथा की ओर संकेत था। यह कन्या भगवान से शादी करना चाहती थी। लेकिन किसी कारण शादी न हो सकी तो उसने आजन्म कुमारी व्रत धारण कर लिया। उसी कन्या कुमारी का मन्दिर समुद्र के किनारे खड़ा हुआ है मिस्टर काका ने कहा कि मैं १४) रु० का Taxi किराये पर लाया हूँ आप मेरे साथ ही त्रिवेन्द्रम चलिये मैंने यह सोचकर कि कहीं आधा मुझे न देना पड़े कहा कि मैं इतना खर्च नहीं कर सकता। उधर से मैं सिर्फ ।।।=) आने में आ गया था। उन्होंने कहा खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं मैंने पूरी Taxi की है। उसमें जगह है आप बैठ चलिये। मैं सहमत हो गया अपना सामान लेने के लिये काका के साथ पुस्तकालय आया। पुस्तकाध्यक्ष ने दान का रजिस्टर उनके सामने रख दिया। उन्होंने ५) इसमें लिख दिये दस रुपये का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट निकाल कर उससे कहा कि शेष रुपया लौटा दिया जाय मैंने भी चार आने दे दिये और अपना सामान लेकर काका की मोटर को चल दिया सिढ़ियों से उतरने चढ़ने में मेरे चोट आ गई टांग में थोड़ा सा रुधिर भी निकल आया। जिससे धोती लाल हो गई मैं दर्द को सहता हुआ मोटर में आ बैठा मुझे डर था कि दौलमौला काका को मालूम हो गया तो वह तुरन्त डाक्टर के पास ले जायँगे और शहर को पहुँचने में देर हो जायगी खर्च भी न जाने कितना पड़ जाय। इसी लिये मैं चुप रहा। अभाग्यवश मोटर भी कई जगह फेल हुई और जैसे तैसे आधी रात के बाद होटल पहुँचे। खाना समाप्त हो गया था इससे निराहार ही सोना पड़ा सबेरा होते ही १७ जून को होटल से स्टेशन आ गया। लाल मिट्टी और Topica न ले सका उनके लेने की उत्सुकता बढ़ती ही जाती थी। मैंने कुली से कहा तुम दौड़ कर कुछ लाल मिट्टी ले आओ तुम्हें कुछ पैसे दिये जायँगे। वह मेरी बात न समझता था और अपनी मजदूरी माँगता था हम लोग एक द्विभाषिये के पास पहुँचे कुली ने अपनी भाषा में शिकायत की कि यह बाबू हमारी मजदूरी नहीं देता। मैंने उस बाबू को कुल हाल बतलाया तब उसने कुली को समझा दिया कि बाबू तुमको ज्यादा पैसे देगा। तुम दौड़कर थोड़ी सी लाल मिट्टी ले आओ कुली दौड़ा गया और कोई एक सेर मिट्टी भर लाया मिट्टी मेरे पसन्द न आई मैं जैसी लाल चाहता था वैसी न थी। उसमें से दो ढेली या (आध पाव) रख कर शेष फेंक दी कुली को मजदूरी और दो पैसे मिट्टी के देकर विदा किया अब मुझे Topioca की चिन्ता हुई बार २ इधर उधर लोगों से पूछता था तो उत्तर मिलता था कि बाजार यहाँ से दूर है इस समय मिलना मुश्किल है। ३ बाबू मेरे डिब्बे के दूसरे खाने में बैठे थे उनसे जाकर पूछा तो कोई आशा जनक उत्तर न मिला इतने में S. I. R. का एक कर्मचारी उधर से निकला मैंने अपनी इस प्रबल उत्कण्ठा को उसके सामने प्रगट किया उसने फ़ौरन एक लड़के को एक चक्रम का लालच देकर Topioca के लाने के लिये दौड़ाया वह गाड़ी के छूटते २ तीन जड़ें लेकर आ पहुँचा। लड़के को एक चक्रम और बाबू को धन्यवाद देकर मैं कोदई केनाल (Kodaikanal) वेध शाला देखने चल दिया:—

उन तीन बाबुओं ने दराज से झांक कर देखा एक पतले दुबले आदमी के पास बहुत सी चीज़ों का ढेर लगा हुआ है वह उठ कर खड़े हो गये और मुझसे उन चीज़ों के विषय में पूछने लगे। मैंने उनकी शंका दूर की और बात चीत करने को उन्हीं के पास बैठ गया। पारस्परिक परिचय के उपरान्त मैंने उनको बतलाया कि मैं काश्मीर से कन्या कुमारी तक यात्रा कर चुका हूँ। और स्कूल के अजायबघर के लिये यह संग्रह कर रहा हूँ। यह सुन कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। और वे मेरे उत्साह की सराहना करने लगे। उन्होंने उत्तरी भारत के विषय में कई प्रश्न किये। मैंने उनका संतोषप्रद समाधान किया उन्होंने कहा कि हमारा देश बहुत निर्धन है। और 'कोढ़ में खाज' यह कि नारियल का भाव ६।) सै० से गिर कर १।) रुपया ही रह गया क्योंकि लंका के नारियल ने धावा बोल दिया है। मैंने प्रश्न किया कि इतने खनिज पदार्थ के होते हुये भी देश निर्धन क्यों है—नारियल से ही अनेक उद्योग चल सकते हैं।

उन्होंने लम्बी सांस लेते हुये कहा लोगों में स्वार्थ भरा हुआ है सहयोगिता का नाम नहीं। ट्रावनकोर राज्य में हिन्दी का अच्छा प्रचार है। बहुत देर तक विविध विषयों पर वार्तालाप होता रहा दो बालर्क ऐयर और पिलाई तो किलन पर उतर गये तीसरे मि० नैयर जो बैंक में नौकर हैं कई स्टेशन तक मेरे साथ रहे। रेल से शिव काशी आदि के मन्दिर देखे रात के सात बजे मदुरा पहुँच कर उसी होटल में पहुँच गया।

मदुरा का मीनाक्षी मन्दिर भारत के देवालयों में बहुत प्रसिद्ध है। मैं एक गाइड लेकर रात में ही देखने गया, जूते बाहर रख दिये उस आदमी को समझा दिया था कि मैं मूर्तिपूजक नहीं हूँ इसलिये कहीं पूजा पाठ या पैसे चढ़ाने की बात न करना। लेकिन वह अपने स्वभाव से लाचार था जिस मूर्ति के पास जाता वहाँ चिल्लाता इस पर चढ़ाने से बड़ा पुण्य होता है। यह आरती उतारो यह चरणामृत पियो मैं अन सुनी कर आगे बढ़ जाता यहाँ १५२ फुट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊँचा गोपुरम् स्वर्णाभ कमलिनी से युक्त तड़ाग तथा सहस्त्र स्तम्भी भवन उल्लेखनीय हैं मन्दिर देखने के बाद शहर का चक्कर लगाया। दक्षिण में मद्रास के बाद तंजौर या मदुरा का ही नम्बर बताया जाता है। १८ जून को पौने नौ बजे कोदई केनाल रोड को चल दिया। मदुरा मिल्स देखने को समय न मिला।

दिन के ११ बजे कोदई के नाल रोड पहुँच गया। यहाँ पर चार पैसे के ५ बालबेरी खरीदे। यह फल नासपाती की तरह होता है। खाने में अधिक स्वादिष्ट नहीं लगा। एक घंटे के बाद १।।) में नेयर मेल मोटर (Nair mail motor service) में बैठकर कोदई केनाल चल दिया रास्ते में सैकड़ों चरी, ज्वार के से बोझ पड़े हुये थे। मोटर वाले ने उनमें से कुछ मोटर में लाद लिये मैंने उससे पूछा यह क्या है। उसने कहा एलम्, मैं कुछ न समझा, दूसरे पड़ाव पर महकमा जंगलात का एक कर्मचारी मोटर में बैठ गया मैंने उससे भी वही प्रश्न किया उसने कहा यह इलायची है। इलायची देख कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ क्योंकि उसके देखने की बड़ी उत्कंठा थी मोटर वाले के एलम् का अर्थ अब मेरी समझ में आया यह संस्कृत के एला (इलायची) से बना है। इलायची के लिये कुछ छाया होनी चाहिये। यह बड़े पेड़ों के नीचे लगाई जाती है। फल जड़ के पास ज़मीन के ऊपर लगते हैं।

मोटर ऊँचाई पर चढ़ रही थी दिन के साथ साथ गर्मी भी घट रही थी। आकाश मेंघाछन्न था और कभी कभी बौछार आ जाती थी। रंग बिरंगे फूल चारों ओर प्रसन्नता से स्वागत कर रहे थे, पहाड़ी धारा के रजत जल से मधुर संगीत निकल रहा था। चार बजे कोदई केनाल पहुँचा और अपना सामान नायडू हिन्दू होटल में रख कर वेधशाला (Observatory) गया।

यह वेधशाला एक ऊँची चोटी पर बनी हुई है भारत में एक यही स्थान है जहाँ पर तारों का निरीक्षण किया जाता है और यही समझ कर मैं उसे देखने गया था। बाहर साइनबोर्ड पर यह पढ़ कर कि जनता शुक्रवार को ही देख सकती है। मैं बहुत उदास हो गया। कई दिन तक रुक नहीं सकता था। मैं आगे बढ़ा। जगह जगह भांति भांति के यन्त्र लगे हुये थे। एक कमरा खुला देखकर उसके अन्दर गया। वहां के बाबू कुछ काम कर रहे थे। मैंने एक के पास जाकर अपना परिचय दिया और आने का उद्देश्य बतलाया, उन्होंने कहा छुट्टी हो चुकी है दफ़्र बंद हो चुका है अतः आज आप न देख सकेंगे, कल आप डाइरेक्टर से मिल लीजिये वह आप को सब चीजें देखने की आज्ञा दे देंगे। परन्तु मि० खाँ कुछ दयालु थे। उन्हों ने कहा आप बड़ी दूर से आये हैं २० मिनट ठहरिये मैं इस काम को कर लूं तो आप को कुछ यंत्र अभी दिखला दूंगा। मैं कुर्सी पर बैठ गया। मि० खाँ थोड़ी देर बाद मुझे भूकंप यंत्र (Seismograph) के पास ले गये। इससे भूडोल की दूरी, दिशा वेगादि सब बातें मालूम हो जाती हैं। फिर उन्होंने कई एक विचित्र यंत्र तथा सूर्य के चित्र दिखलाये इन चित्रों से प्रगट होता था कि सूर्य में भी गति है। तदुपरान्त वे मुझे अपने घर ले गये और अतिथि सत्कार किया।

सूर्यास्त के बाद मेरे साथ फेरी (परी) प्रपात तथा झील तक घूमने गये यहाँ इसाइयों का एक बड़ा कालेज है जहाँ २५० ईसाई पादरी का काम सीखते हैं। अंधेरे के साथ साथ सर्दी भी बढ़ती जाती थी। हवा और बूंदों ने उसे और भी मदद पहुँचा दी. मेरे दाँत बजने लगे और शरीर काँपने लगा। जाड़े का कोई वस्त्र मेरे पास न था, मि० खान ने कहा कि आप को सर्दी लग रही है। मैंने उत्तर दिया कोई बात नहीं थोड़ी देर में आदी हो जाऊँगा। मुझे दृढ़ विश्वास था कि एक रात तो सिकुड़ कर ही काट सकता हूँ मुझे होटल तक पहुँचा कर वह अपने घर चले गये। उनका हिन्दी प्रेम इससे प्रगट होता है कि उन्होंने मुझसे अपनी हिन्दी पुस्तकें भेजने का बड़ा आग्रह किया।

२९ जून को बड़े सबेरे उठा और पार्क में पहुँचा इस बाटिका में विविध प्रकार के फूल खिल रहे थे कुछ विदेशी वृक्ष भी अपने देश की स्थिति बतला रहे थे।

यूकलिप्टस ने कहा मेरी जन्मभूमि आस्ट्रेलिया गर्म देश है। सूर्य से बचने के लिए मुझे अपनी पत्तियों के किनारे खड़े रखने पड़ते हैं। चीड़ ने कांपते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कहा ओह: मेरे देश में तो इतनी सर्दी पड़ती है कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं और जाड़ों में तो बर्फ की सफेद चादर ओढ़नी पड़ती है अगर यह सुइया (नुकीली पत्ती) न होती तो कब का मर गया होता। कटीला कीकर कहने लगा अगर मेरे यह त्रिसूल न होते तो कबका सूख कर ठठरी रह जाता। चौड़े पते वाला बृक्ष बोला मैं तो इन्द्र के मोतियों को खुले हाथों लुटाया हूँ। मुझे आठ बजे मोटर से स्टेशन लौटना था इसलिये वहाँ अधिक न रह सका। मि० खान की बातों से मालूम हो गया था कि इस वेधशाला में सूर्य का ही निरिक्षण परीक्षण होता है अन्य तारों का नहीं इसलिये मेरी पूर्व की उत्सुकता जाती रही और ९ बजे मोटर से चलकर १२ बजे स्टेशन गया। दो घंटे बाद रेल मिली और रात को ८ बजे रामेश्वरम् आ गया इस बार पंडों ने तंग नहीं किया। मैं स्टेशन के समीप सरकारी धर्मशाला में ठहर गया।

२० जून के सबेरे पाम्बन (Pamban) आया। एक गाइड को साथ लेकर क्रुसेदाई (Crusadei) द्वीप को पैदल चला। यह मूंगे का द्वीप स्टेशन से ३ मील होगा। गाइड के बिना वहाँ पहुँचना कठिन है आठ आने में तय करके मैं उसके साथ साथ समुद्र के किनारे किनारे चल दिया तट पर समुद्र फेन, रावण के नाखून और किरांट, झाग, सीपी तथा अन्य छोटे जल जीव ढेर के ढेर पड़े थे। थोड़े थोड़े नमूने मैने और नौकर ने एकत्रित किये। विचित्र प्रकार के ताड़ खड़े हुये थे। बोझ होने के डर से मैंने उनका कोई नमूना नहीं रक्खा।

झाग रुई के नमदे सा समुद्र तट पर पड़ा हुआ था। दो मील चलने के बाद मुझे मालूम हुआ कि मेरा अंगोछा गिर गया है इतने में दूसरी ओर से एक नाव दिखाई दी। नौकर को तो अंगोछा खोजने वापिस भेजा और मैं नाव में बैठ गया। नाव वाले ने पूछा क्या आप के पास pass है तब मैंने समझा कि यहाँ भी pass की आवश्यकता होती है। मैंने कहा वहाँ देखा जायगा। परन्तु यह बात नहीं थी Pass तो Director of fisheries, Madras से मँगाना पड़ता है और बिना आज्ञा के कोई मनुष्य उस द्वीप पर उतरने नहीं पाता। Assistant biologist से बातें करता करता मैं उसके दफ्तर में पहुँच गया वहाँ एक छोटा सा Biologist museum था। उस को मैंने थोड़ी देर तक निरीक्षण किया Pass न होने के कारण मैं द्वीप में घूमने न पाया और उसी नाव से वापिस लौटा दिया गया। द्वीप के तट से मैंने तीन चार प्रकार के मूंगे नमूने के लिये और एक सरसरी दृष्टि उस प्रवाल द्वीप पर डाली वहाँ नारियल ही नारियल दिखलाई देते थे। मूंगे को मिट्टी और समुद्र का खारा पानी दोनों ही उसके लिये अनुकूल हैं। मि० वरदराजन Research assistant ने नारियल का स्वादिष्ट जल पिलाया मैं धन्यवाद देकर नाव में बैठ गया और उसी जगह पर आ उतरा जहाँ से चला था। नौकर ने सूचना दी कि अंगोछा नहीं मिला। समुद्र के विचित्र भंडार से कुछ संग्रह करते हुये हम लौट रहे थे बीच बीच में खारी लहरें पैर धो जाती थीं :

मुझे यह चिन्ता थी कि मूंगे का कोई अच्छा नमूना हाथ न लगा। समुद्र छूटने ही वाला था सिर्फ चार पांच गज का एक कोना और पार करना था, अपनी पंक्तियों को दुहराने लगा :—

बड़ी बड़ी आशा ले आये, जाते हैं सब कुछ छोड़े।
सुना सुना कर सब कहते हैं नाम बड़े दर्शन थोड़े॥
जनक ढपोर शंख का,खारी,कौड़ी, घोंघों का घर है।
या दिवालियां सेठ पुराना, यह दरिद्र रत्नाकर है॥

पानी में पैर रखते ही एक कोने में मनुष्य के सिर से बड़ा मूंगे का एक टुकड़ा दिखलाई दिया आनन्द से उछल कर उसको उठा लिया और नौकर के हवाले किया। अंतिम पंक्तियां पढ़ने लगा।

प्रगट रंकता कर देते हैं, रत्नाकर शंबुक तेरे।
जगमें नाम धराते मुझको, इसी तरह अवगुण मेरे॥

पाम्बन १० बजे आ गया और रेल में बैठ कर रामेश्वरम् लौट आया यहां पर मैंने मूंगे के दो नमूने और खरीदे। यह सामान एक ताड़ की पिटारी में रख लिया और प्रसिद्ध रामेश्वरम् मन्दिर देखने चला। पट तो उस समय बंद थे। किले का चक्कर लगा आया, सारा दिन नारियल के पानी पर ही बीता था। होटल में भोजन को गया। दो आने का एक हनूमान का रोट जैसा पराठा मिला, वह भी ठंडा, दांत तो हाँ किरकिराने लगे, ऐसा ज्ञात होता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आधी मिट्टी मिला दी है भूख में किवाड़ भी पापड़ हो जाते हैं। बड़ी मुश्किल से उस भीमसेनी पराठे को समाप्त किया और धर्मशाला से सामान लेकर स्टेशन को रवाना हुआ। पाम्बन पर गाड़ी बदल गई।

पामबन द्वीप एक छोटा जंकशन है, इससे ट्रेन रामेश्वरम् धनुषकोटि तथा उत्तर की ओर मदुरा आदि को जाती है इसके समीप समुद्र पर एक मील लम्बा पुल है जो जहाजों के जाते समय उठ जाया करता है उसके ऊपर जाते समय डिब्बों के दोनों ओर ताले बंद कर दिये जाते हैं ताकि कोई आदमी दरवाजा खुल जाने से समुद्र में न गिर पड़े। लहरों के शोर से और पवन के प्रचन्ड वेग से रात बहुत भयंकर लगती है लोग खिड़कियाँ बन्द कर लेते हैं परन्तु मुझे सबसे अधिक आनन्द इसी पुल पर आता था। खिड़की के उत्तर देखता था कि सप्तर्षि ध्रुव का चक्कर लगा रहे हैं दक्षिण की खिड़की से त्रिशंकु दिखलाई देते थे, उत्तर और दक्षिण ध्रुव के तारे निर्मल आकाश में जगमगा रहे थे।

ग्राहकों को सूचना

साल के आरम्भ में प्रति वर्ष भूगोल का विशेषांक निकलता है। इसका आकार बड़ा होने के कारण तीन महीने (मई, जून, जुलाई) का अङ्क एक ही निकाला जाता है। कृपया ग्राहकगण मई, जून के भूगोल की प्रतियाँ अलग मंगाने के लिये लिखने का कष्ट न करें। मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियों का कोष

(गताङ्क से आगे)

दरद—उत्तरी पच्छिमी हिन्दुस्तान के पहाड़ी लोग जो पिशाच भाषा बोलते हैं।

द्राविड़—दक्षिण भारत के लोग। इनकी भिन्न भिन्न जातियाँ कनारी, कोटा, टोडा, टुलू, तामिल, तेलिगू, कुरुख, माल्टो और गोंडी आदि भाषायें बोलते हैं।

दिओला—गोम्बिया के मुहाने पर सूडानो बोलने वाले लोग। इनकी भाषा आधी बान्टू होती है।

दिन्का—ख़ार्टूम, गोन्डो केरो और बहरु गज़ल के प्रदेश में बसे हुये जींग या जिन्गे लोग। ये लोग बड़े लम्बे होते हैं। ढोर पालने वाले दिन्का लोग उन लोगों से बड़ी अच्छी हालत में होते हैं जो केवल मछली मारकर या दरियायी घोड़े का शिकार करके पेट भरते हैं। मछली मारने वाले लोग नरकुल के छोटे छोटे घर बनाकर रहते हैं। और ढोर पालनेवाले दिनका लोग अपने को तैन कहते हैं। और शिलूक लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अगार, बोर, शीश और अलियाब भी दिन्का लोगों के फिरक़े हैं।

नगोम्बे—मध्य काँगो के बाँटू बोलने वाले लोग। नगोम्बे शब्द का अर्थ है झाड़ी में रहने वाले।

न्यीका—ताना नदी के पास रहने वाले वागीरियामा, वेडिगो आदि लोग।

नन्दी—एलगन् पर्वत के पास रहने वाले पूर्वी अफ्रीक़ा के लोग।

नागा—ब्रह्मपुत्र के दक्षिण में पहाड़ी प्रदेश के रहने वाले लोग।

नापो—नापो नदी के पास रहने वाले लोग। इन लोगों के अलग अलग घर नहीं होते हैं। इनके यहाँ एक बड़ा लम्बा गोलाकार घर होता है। यह घर १० गज़ ऊँचे और ६० गज़ घेर में होता है। इसी में सारा कुटुम्ब रहता है।

नास्कोपी—लेब्राडोर के रेड इंडियन लोग।

नाहुआ प्रदेश—मध्य अमरीका का वह प्रदेश जिसमें अज़टेक और माया के बंशज रहते हैं।

नाचेज़—लोअर मिसिसिपी के पड़ोस में रहने वाले मस्केजियन लोग। ये लोग सूर्य की पूजा किया करते थे।

नायर—मालावार तट के फौजी लोग।

नार्डिक—उत्तरी योरप की गोरी और लम्बे सिरवाली जाति।

नार्वेजियन—नार्वे के लोग।

निओसाइबेरियन—मध्य एशिया के लोग जो साइबेरिया में बस गये हैं। ओस्टयाक, याकूट और वोगुल आदि लोग इन्हीं में शामिल हैं।

नीग्रो (हब्शी)—मध्य और पश्चिमी अफ्रीका के काले लोग।

नुआरोक—दक्षिणी अमरीका के अरावक लोग।

नूपे—मध्य नाइजर के लोग।

नूवा—कार्डो-फान के वर्ण संकर लोग।

नेदरलैंडर—हालैन्ड और बेलजियम के लोग जो फ्रिशियन, डच, प्लेमिश और वालन भाषा बोलते हैं।

नेवार—नैपाल के लोग।

नेग्रिटो—अफ्रीका के बाहर वाले हबशी लोग।

नेग्रिलो—अफ्रीका में भूमध्य रेखा के बन में रहने वाले हबशी। इनका क़द ४ फुट ४ इंच से ४ फुट ६ इंच तक होता है।

नोसू—उत्तरी पूर्वी चीन के लोग।

(प)

पश्चा—जार्जयन लोग।

परमिअक—पर्म के निकट रहने वाले फिनिक लोग।

प्राकृत—हिन्दुस्तान की असंस्कृत भाषायें।

पहाड़ी—निचले हिमालय की भाषा।

पाडौंग—ब्रह्मा के लोग। इनकी स्त्रियाँ पीतल के बहुत से मोटे कड़े पहनती हैं।

पापुआन—न्यूगिनी के लोग।

पारसी—सूर्य के उपासक प्राचीन ईरानी लोग।

पालिनेशिया—दक्षिणी द्वीपों के वर्णसंकर हबशी लोग।

पालौंड—ब्रह्मा के वे लोग जो ऊपरी और मध्य सीकाँग की घाटी में रहते हैं। ये लोग बड़े मेहनती और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्त होते हैं। वे लोग मेड खमेर भाषा बोलते हैं।

पावनी—मैदान के इंडियन लोग। ये लोग मकई की खेती करते हैं।

पासुमा—कोरिंची के दक्षिण में सुमात्रा के लोग।

पिगमी—भूमध्य रेखा के बौने लोग।

पिगमी—मध्य अफ्रीका और मलय प्रदेश के बौने लोग।

पिसाच—भारत की संस्कृतेतर भाषायें।

प्रीड्रविडियन—द्राविड़ों से पहले के प्राचीन लोग।

पुर्चगीज़—पुर्चगाल के रहने वाले लोग।

पुनान—बोर्नीयो के शान्त लोग।

पेपो—फारमूसा के दक्षिणी मैदान के असभ्य लोग।

प्लेन्सइन्डियन—मिसिसिपी प्रदेश के अमरीकन इंडियन।

पेलिओसाइबेरियन—साइबेरिया के पुराने लोग जिन में चुकची, कोर्याक, कमचडल, ऐनू, गिलियाक, एस्किमो और दूसरे लोग शामिल हैं।

पैवान—फारमूसा के दक्षिणी सिरे के असभ्य लोग। ये लोग अपने कान में लकड़ी की १ इंच मोटी बाली पहनते हैं। ये लोग अपने शत्रुओं के सिरों को पत्थर के सन्दूकों में रखते हैं।

पोल—पोलैंड के स्लैव लोग।

पंजाबो—पंजाब के लोग।

(फ)

फलाशा—एबीसीनिया के अगाओ या हेमायटिक लोग ये लोग अपने को उन यहूदियों की संतान बताते हैं जो शेव एनीकेस्थ से आये थे।

फान—यू भाषा बोलने वाले डहोमा के लोग।

फ़ान्टी—गोल्ड कोस्ट के हबशी लोग जो असान्टी लोगों के सम्बन्धी हैं। ये लोग असान्टी लोगों के समान लड़ाका नहीं होते हैं। पर ये सारे हबशियों में बुद्धिमान होते हैं। वे चतुर व्यापारी होते हैं। इनमें अधिकतर लोग पढ़े लिखे होते हैं।

फिजियन—लम्बे सिर वाले मेलेनेशिया के पूर्वी सिरे पर रहने वाले लोग।

फिन (फिनो)—उग्रियन लोग जो मध्य एशिया से चलकर योरप में आ बसे। बर्तमान फिन लोग एस्थोनियन लिबेनियन और लैप-लोगों से मिलते हैं।

फिनिक जातियाँ—फिनलैंड के लोगों के अतिरिक्त जिरियन, परमियक बोटयाक करमिस मोर्डविन, चुवास आदि लोग।

फुंज—सेनार (सूडान) के लोग।

फूला—फुल्बे नाम के फिलाने या हासा लोग।

फ्रेंच—फ्राँस निवासी।

फ्लेमिश—जर्मन की भाषा।

फ्लेमिङ्ग—बेल्जियम के उत्तर में बसने वाले लोग।

फंग, पंगवे, पहूइन—ओगवे और सनागा के बीच में बाँटू भाषा बोलने वाले लोग।

(ब)

बखितयारी—सूसियाना, खूगिस्तान (ईरान) के निवासी।

बग्गर—एक अरबी फिरका जो दार फूर सूडान में रहते हैं। बग्गर शब्द का अर्थ गोपाल या ढोर रखनेवालाहै

बगेसू—पूर्वी अफ्रीका में एलगोन पर्वत के पूर्वी ढालों पर रहने वाले बाँटू भाषा भाषी लोग। पहले वे ढोर चराते थे। आज कल वे खेती करते हैं।

बघिर्मी—चाड झील के दक्षिण पूर्व में सूडानी भाषा बोलने वाले लोग। वे घोड़े पर सवार होकर ज़हरीले भालों से घोड़े का शिकार करते हैं।

बजाऊ—बोर्नियो के पश्चिमी तट पर रहने वाले मलाया लोग।

बजावीं—न्यान्जा प्रदेश के बाँटू भाषा भाषी लोग।

बटक—सुमात्राद्वीपी के बट्टा लोग।

बटवा—उरूँडी (पूर्वी अफ्रीका) के बौने लोग।

बट्टा—(१) पच्छिमी अफ्रीका में मध्य बेन्यू के पास वाले लोग।

(२) सुमात्रा के लोग जिन्हें बटक भी कहते हैं

बटूसी—पूर्वी अफ्रीका के उरूँडी लोग। जो बहुटू लोगों पर शासन करते हैं।

बटेटेला—बेल्जियम काँगो में संकुरू के पूर्व बाँटू भाषी लोग।

बदख़शी—ऊपरी आक्स के पास रहने वाले गोल सिर वाले लोग।

बदगा—नीलगिरी (दक्खिन) के किसान लोग।

बदजोक—मध्य अफ्रीका में कसाई के पास रहने वाले बाँटू भाषी लोग। इनका कद छोटा होता है। लेकिन ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े निडर लड़ाका होते हैं। ये हाथी का शिकार और रबड़ का व्यापार करते हैं।

बन्डा—युबांगी के उत्तर में फ्राँसीसी मध्य अफ्रीका में रहने वाले लोग।

बम्बाला—क्विलू नदी के पास पच्छिमी अफ्रीका में रहने वाले बाँटू भाषा भाषी लोग। ये लोग बड़े दयालु होते हैं।

बयाञ्जी—अफ्रीका के बोबाँगी और कसाई आदि लोग।

बराबा—नूबिया के लोग।

बरूँडी—पूर्वी अफ्रीका के बाँटू लोग।

बरोट्सी—विजयी बाँटू लोग।

वर्बर या लिबियन—उत्तरी अफ्रीका के बर्बर या अरबी भाषा बोलने वाले हेमायटिक लोग। बर्बर से अरबी लोग अधिक ऊँचे और लम्बे सिर वाले होते हैं। एक हजार वर्ष से साथ रहने पर भी अरबी और बर्बर लोग बहुत कम एक दूसरे से हिलते मिलते हैं।

बलाँगी—स्पेनिश गिनी के लोग जो काम्पो और गिरि नदियों के बीच रहते हैं।

बलाली—काँगो नदी के उत्तरी तट के लोग।

बश्कीर—रूस के मिश्रित लोग।

बसा—क्रू के पास रहने वाले बाँटू लोग।

बसूटा—आरेञ्ज नदी के पूर्व, दक्षिण पूर्व अफ्रीका के बाँटू भाषी लोग।

बसुंडी—निचली काँगो के बाँटू भाषी लोग।

बहुतू—पूर्वी अफ्रीका में उरूँडू प्रदेश के लोग। जिन पर बतुसी लोग शासन करते हैं।

बहुरुत्से—बेचवाना लैंड के बक्वेना लोग।

बाइशी—काँगो नदी के दक्षिण में कांगो और समुद्र तट के बीच में रहने वाले लोग।

बाइला—उत्तरी रोडेशिया के बांटू भाषा भाषी लोग। ये लोग ऊपर के ६ दांत निकाल डाला करते हैं।

बाकूब—बेल्जियन काँगो के बालूबा लोग।

बाकुसू—स्टैनले प्रपात के पास याकुसू के लोग।

बाकुलिया—पूर्वी अफ्रीका के बाँटू भाषा भाषी लोग।

बाकाँगो—मध्य अफ्रीका का वेली कुटुम्ब।

बाँकुटू—बेल्जियन कांगो में ऊपरी लुकन्यी के पास रहने वाले लोग।

बाचमा—नाइजीरिया के उत्तरी गन्ती के पास रहने वाले लोग। ये बेन्यू-चाड समूह की भाषायें बोलते हैं।

बाँज़ीरी—युबांगी (मध्य अफ्रीका) के बांटू भाषी व्यापारी लोग। ये लोग बड़े चतुर किसान और पानी खींचने वाले होते हैं।

बाड़ा—मेडेगास्कर द्वीप के दक्षिण और मध्य में रहने वाले लोग।

बान्टू—मध्य और दक्षिणी अफ्रीका के लोग।

बान्पोशे—यूगाँडा के बाँटू भाषा भाषी लोग।

बापिन्डी—क्विल कसाई के बांटू भाषा भाषी लोग। ये लोग बड़े चतुर जुलाहे होते हैं।

बापूको—स्पेनिशगिनी के बाँटू भाषी लोग।

बाबा—चीनी से उत्पन्न मलय लोग।

बाबुन्दा—मध्य अफ्रीका के कसाई व क्विलू प्रदेश के रहने वाले बान्टू भाषा भाषी लोग। ये लोग बड़े लम्बे और लड़ाका होते हैं। ये लोग रबड़ का व्यापार करते हैं। इनके घर नहीं होते हैं। ये अपने बग़ीचों के बीच में रहते हैं।

बाल्ती—बाल्तिस्तान लद्दाख के लोग।

बालुआ—बेल्जियन काँगो के दक्षिण-पूर्व में रहने वाले लड़ाका लोग।

बालुन्डा या आलुन्डा—उत्तरी रोडेशिया में बैंग-ब्यूली झील के दक्षिण पश्चिम में रहने वाले बाँटू भाषी लोग।

बास्क—स्पेन और फ्राँस की पिरेनीज़ के पास का प्रदेश।

बेटसीमिसिरका—मेडेगास्कर के पूर्वी भाग में रहने वाले मैदान के लोग इन का रंग कुछ हलका और बाल खड़े होते हैं।

बेंगा—बनोहो, बन्नोको, मलिम्बा आदि स्पेनिशगिनी के लोग। ये लोग बेनिटो नदी और कोरिस्को की खाड़ी के बीच में रहते हैं।

बेचुआना—जेम्बज़ी से आरेञ्ज नदी तक फैले हुये बसूटो आदि लोग।

बेजा—पूर्वी अफ्रीका के हेमायटिक लोग। इन में हम्ब, बदेह, बिशरिन, हेडेनडोआ, हेलेंडा और बेनी अमेर भी शामिल हैं।

बेल्जियन—नेदरलैंड या बेलजियम के लोग।

बंगाली—बंगाल प्रान्त के निवासी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ

भील—ये लोग बड़े चतुर शिकारी होते हैं और जंगल, पहाड़ या मैदान में निडर घूमते हैं।

भूटिया—तिब्बत के पहाड़ी लोग। इन का सिर गोल और ५ फुट ५ इंच ऊँचा होता है। इन के गाल गुलाबी और बाल घूँघुर वाले होते हैं। लासा के पास वाले दक्षिण पूर्व के लोग सभ्य होते हैं। उत्तर-पच्छिम के लोग घुमक्कड़ होते हैं।

म

मकरका—अजान्दी लोगों से मिलने वाले सूडान के लोग।

मकासर—सेलेबीस के दक्षिणी प्रायद्वीप के लोग। कहा जाता है कि ये लोग अपने बच्चों की नाक को दबा दबा कर चपटी कर देते हैं।

मकुआ—मुजम्बीक के बाँटू लोग।

मकूसी—केरिब भाषा बोलने वाले गायना प्रदेश के लोग।

मको लो लो—बसूटी लोगों की एक उपजाति।

मन—असभ्य मनुष्य।

मन्डन—मैदानी रेड इंडियन लोग।

मन्डय—फ़िलीपायन लोग।

मनोबो—फिलीपायन द्वीप के इन्डोनेशियन लोग। इनका माथा ऊँचा और नाक सीधी होती है।

मफूल्लू—न्यूगिनी के मम्बुलो लोग। ये लोग अयर-सेन्ट जोजेफ़ के प्रदेश में रहते हैं।

मबुन्दू—अन्गोला की भाषा।

मयोंगवे—गाबून प्रदेश के बान्टू बोलने वाले लोग।

मराठा—(महाराष्ट्रीय) महाराष्ट्र के लोग।

मलय—मलय द्वीप के लोग।

महफल—मेडगास्कर के दक्षिण में रहने वाले लड़ाका लोग।

मलयालम—मलाबार तट के लोग।

मवम्बा—ब्रिटिश मध्य अफ्रीका के ववण्डा लोग।

मशूकोलुम्ब्वे—रोडेशिया के बाँटू भाषा भाषी लोग। ये लोग शंकु के समान अपने सिर के बाल बना लेते हैं।

मशोना—अफ्रीका के दक्षिण-पूर्व के रहने वाले शान्त लोग ये लोग चट्टानों के बीच में घर बनाते हैं।

मसाई—पूर्वी अफ्रीका के होमायाटिक लोग।

मसाबा—कावीरोंडो की बान्टू भाषा।

मसीम—न्यूगिनी (ट्रेब्रियण्ड द्वीप) के लोग।

मस्कोजी—संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दक्षिण-पूर्व में रहने वाले रेड इंडियन लोग। इनमें चोकटा क्रीक आदि लोग शामिल हैं। जो ओकला हामा को भेज दिये गये।

माओरी—न्यूज़ीलैंड के मूल निवासी।

माइक्रोनेशियन—गिल्बर्ट, मार्शल, केरोल और नाइ मेरियन द्वीप के निवासी। इनका कद छोटा लेकिन सिर बड़ा होता है।

माजिया—सूडानी बोलने वाले फ्रेंच कांगो के लोग।

माँचू—मंचूरिया के लोग

माटावेले या अमण्डेबेल—अबाकवा जुलू लोग। उन्नीसवीं सदी में वे अपनी स्वाधीनता खो बैठे।

माया—ग्वाटे माला के छोटे सिर वाले लोग। ये लोग अपनी प्राचीन सभ्यता के लिये प्रसिद्ध हैं।

मारकिसस-द्वीपीय—पालीनेशियन जाति के लोग।

माल्टी—माल्टा के लोग।

माल्टो—राजमहल के लोगों की भाषा।

मिकीर—आसाम के आलैंग लोग जो खासी लोगों से कुछ बड़े होते हैं।

मिक्सी—मेक्सिको पठार पर रहने वाले लोग।

मिक्सटेक—मेक्सिको के पढ़े लिखे और उन्नति शील लोग।

मिट्टू—सूडान में रोहल और रोह नदियों के बीच में रहने वाले लोग। यह प्रदेश दिन्का लोगों के देश से मिला हुआ है।

मिन्हासा—सेलेबीस द्वीप के मेलेपालिनेशियन लोग। इन लोगों की आँखें भूरी और बाल काले होते हैं।

मिश्मी—आसाम की उत्तरी सीमा पर रहने वाले मोइू, मिथुन, ताइंग और मीजू लोग।

मिंग्रेलियन—रिओन घाटी के जार्जियन लोग। ये लोग बड़े मज़बूत और हँसमुख होते हैं। पर वे सुस्त और अज्ञान होते हैं। कुछ शहरों में कुली का काम करते हैं।

मुमूयी—उत्तरी नाइजीरिया के फुंगुम या जागुम लोग। ये लोग याम का भोजन करते हैं। और दूध बहुत पीते हैं वे लोग अपने मुर्दों को खाली कब्र में छोड़ देते हैं केवल लाश के ऊपर एक पत्थर छोड़ देते हैं।

मुराडू कू—दक्षिणी अमरीका के टेपे होज़ लोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्थी—नाइजीरिया के उत्तरी प्रान्तों के तिवी लोग। ये लोग बन्यू नदी के दक्षिण में रहते हैं इनकी संख्या लगभग तीन-चार लाख है। ये लोग बड़े लड़ाका होते हैं और ढोल बजा कर खबर भेजते हैं।

मुरूत—बोर्नियो के काज़ामाएटन लोग। ये लोग नदियों के किनारे लम्बे घर बना कर बड़े कुटुम्ब के साथ रहते हैं।

मुहमन्द—अफ़ग़ानिस्तान की एक जाति।

मेईथेई—मनीपुर राज्य के लोग। इनकी स्त्रियां खेती और व्यापार करती हैं।

मेलेनेशियन—पच्छिमी प्रशान्त महासागर के लोग।

मेनाङ्ग कवाऊ—सुमात्रा द्वीप के दक्षिणी पच्छिमी पठार पर रहने वाले असली मलय लोग।

मेंडी—सियरालिओन के पूर्व में रहने वाले लोग, जो अक्सर बोझा ढोया करते हैं।

मेंटावेई द्वीपीय—वे लोग जो मलय प्रायद्वीप के सामने वाले द्वीपों में रहते हैं।

मेक्सिकन—मेक्सिको देश के रहने वाले लोग। पुराने लाग अज़्टेक और नये लोग योरुपीय हैं।

मेरोनाइयट—लेबनान के उत्तर में रहने वाले ईसाई लोग। ये लोग मुसलमानी याड़ूसली से विवाह नहीं करते हैं।

मोजो—बोलविया के इंडियन लोग। ये लोग खेती में लगे हैं।

मोङ्गो—काङ्गा नदी के बड़े मोड़ के पास रहने वाले और बाँटू बोलने वाले लोग। किसी समय ये बड़े व्यापारी और मिट्टी के काले बरतन बनाते थे जिनकी बड़ी मांग थी।

मोई—इण्डोचीन के लोग। इन का रंग कुछ लाल, कद छोटा और सिर लम्बा होता है।

मोहेगन—न्यू इंग्लैण्ड के अल्गोंक्विन लोग।

मोहाक—अमरीकन इंडियन के सबसे अधिक इरोकोई लोग। दोबारा अल्गोंक्विन लोगों ने लड़ाई में इन को प्रायः नष्ट कर डाला। लेकिन फिर इन्होंने डच लोगों से बन्दूकें लीं और ५० वर्ष तक इरोकोई संघ में इनका बड़ा भय रहा फिर इनकी संख्या तेज़ी से घट गई।

मोनुम्बो—पाट सडैमहाफन (जहाँ पहले जर्मनी का अधिकार था)। कंपापुअन भाषा भाषी लोग।

मोङ्ख्मेर—एशिया के दक्षिण-पूर्व में बोली जाने वाली भाषायें।

मोपला—पश्चिमी घाट के वर्णसंकर मुसलमान लोग जो अरबी और हिस्दुस्तानियों के मेल से बने हैं। ये लोग बड़ी तेज़ी से बढ़े हैं। एक मोपला ने सात स्त्रियों से विवाह किया। प्रत्येक स्त्री से सात सात लड़के उत्पन्न हुये। लड़कियों की संख्या अलग है। तट के पास वाले मोपला लोग व्यापार करते हैं। भीतर बसे हुये लोग किसान हैं। ये लोग बड़े कट्टर होते हैं। गत मोपला-विद्रोह में उन्होंने अपने पड़ोसी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न किया।

मोकुई या होपी—उत्तरी-पच्छिमी अमरीकन इंडियन लोग।

मोरडोफ—मोरडोविन लोगों की भाषा।

मोरडोविन लोग—वाल्गा वेसिन के फिनिक लोग। जो बहुत समय तक अपने पुराने धर्म पर आरूढ़ रहे। इनका सिर छोटा और बाल भूरे या काले होते हैं। ये लोग बड़े मेहनती और मितव्ययी होते हैं। पर इनके लड़के इनका कहना नहीं मानते हैं।

मोरिओरी—न्यूज़ीलैंड के पूर्व चैथम द्वीप के निवासी

मोरोस—मिंडनाओ और सुलू द्वीपसमूह के लोग। काला रंग होने से स्पेन वालों ने इनका यह नाम रक्खा। इनका असली नाम मेगिन्दानो है। इनका क़द छोटा होता है। पर वे बड़े स्वामिभक्त होते हैं।

मोसो—नाइजर के बिशाल मोड़ में बसे हुये वोल्टा लोग। ये लोग मोल भाषा बोलते हैं।

मंगबेटू—ऊपरी दावावेल नदी के पास रहा करते हैं। इनका रंग जैतूनी होता है। दाढ़ी बड़ी होती है।

मंडिंगो—पच्छिमी सूडान के लोग।

मंगोल—मंगोलिया पठार के लोग। चिंगज़ेख़ों के समय में मंगोल लोग बहुत प्रसिद्ध हो गये। मोंग शब्द का अर्थ बीर है। इन्हीं में काल्मुक और बुर्यात भी शामिल हैं।

मंगोलाइड—तिब्बती इंडोचीनी लोग। नैपाल, ब्रह्मा आदि के लोग भी इन्हीं में शामिल हैं।

य

यज़ीदी—पश्चिमी खुर्दिस्तान के छोटे सिर वाले लोग। ये लोग मोर की सभ्यता और प्रेत-पूजा के लिये प्रसिद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदी—पेलेस्टायन के इस्रायली लोगों की संतान जो इस समय संसार के भिन्न २ भागों में फैले हुये हैं। इस समय इनका कोई देश नहीं है।

याकुई—काहिता बंश के लोग जो मेक्सिको को याकुई नदी के दोनों किनारों पर रहते हैं। ये लोग प्राचीन माया लोगों से बहुत कुछ मिलते हैं।

याकूत—पूर्वी साइबेरिया के तुर्की लोग। ये रेनडियर पर निर्वाह करते हैं। लेकिन भोजन की कमी होने पर मछली भी मार लेते हैं।

यामों—फारमूसा के दक्षिण-पूर्व में एक छोटे द्वीप के रहने वाले। इनका क़द ४ फुट २ इंच से अधिक नहीं होता है। रंग भूरा होता है।

याओ (वाओ या अजावा)—न्यासा प्रदेश के लोग जो बहुत भारी बोझा ले जाते हैं। इनकी स्त्रियाँ ऊपरी ओंठ में एक बाली पहनती हैं।

यूरल—अल्टाई भाषायें-इस समूह में मंगोल, फिनों उग्रियन, तुर्की, मान्चू और सेमे ईड भाषायें शामिल हैं।

यूराकेरी—मेक्सिको के दक्षिण में रहने वाले इंडियन लोग।

योरुवा—ये लोग समुद्र-तट और मध्य नाइजर के बीच में बसे हुये हैं। एग्वा और जीबू आदि इन्हीं की उप जातियाँ हैं। ये लम्बे पतले लोग बड़े चतुर व्यापारी होते हैं। इनकी संख्या लगभग २० लाख है। योरुबा प्रदेश में कई बड़े २ नगर हैं। इनके यहां कई गुप्त समितियां हैं।

योलोफ—(वोलोफ या जोलोफ) सेनेगाल और गोम्बिया के बीच में सूडानी बोलने वाले पश्चिमी अफ्रीका के लोग। वे बड़े लम्बे और काले होते हैं।

र

राजपूत—राजपूताना में रहने वाले क्षत्री लोग।

रूआँडा या वरूआँडा—बटूसी के लोग।

रूमानियन—रूमानिया के लोग।

रूसी—रूस के लोग।

रूथेनियन—यूक्रेन के स्लैव लोग।

रोमान्श्च—अपराइन और अपइन में बोली जाने वाली भाषा।

रोंगा—दक्षिणी पूर्वी अफ्रीका के रोंगा लोग।

(ल)

लट्टुक—निलोटिक लोग।

लहू—ब्रह्मा के लोलो लोग।

लद्दाखी—लद्दाख के लोग।

लाओ—स्याम देश के थाई लोग।

लिशा--(लिसू) ब्रह्मा के लोलो लोग।

लूर—फारस के मुसलमान लोग।

लूसाटियन—वेण्ड लोग।

लेपचा—शिकम के रोंग लोग।

लेज़ेस—काकेशस के जार्जियन या सान लोग।

लेंगुआ—पेरेग्वे के चाको प्रदेश में रहने वाले लोग। जो अरावक भाषा बोलते हैं।

लेग्वेडाइल—उत्तरी फ्राँस की भाषा।

लेग्वेडाक—दक्षिणी फ्राँस की भाषा।

लेम्बोंग—सुमात्रा के लोग।

लेगियन—दाग़िस्तान और ट्राँस काकेशिया के काकेशस लोग। ग्रूसियन लोग इन को लेकी कहते हैं।

लैप—लैपलैंड के लोग। ये ५ फुट ऊँचे होते हैं।

लोलो—दक्षिणी चीन के लोग।

व

वहबी—नजद के मुसलमान लोग। ये लोग अब्दुल वहब के अनुयायी हैं। इसलिये वहबी कहलाते हैं। कुछ वहबी लोग मेसोपोटामिया, हिन्दुस्तान और अफ्रीका में भी पाये जाते हैं।

वहीमा—यूगाँडा के हब्शी लोग। इनका क़द ऊँचा और सिर लम्बा होता है। लेकिन इनके हाथ पैर छोटे होते हैं। उन्योरो में ये लोग अमीर गिने जाते हैं। यूगाँडा में ये ढोर पालते हैं।

वहेहे—पूर्वी अफ्रीका के उहेहे लोग। ये लोग बड़े लम्बे बीर और लड़ाका होते हैं। लड़ने के समय में ये लोग "हे हे हे हे" चिल्लाते हैं। शायद इसी लिये इनका नाम वहेहे पड़ गया।

वज़ीबा या बजीबा—विक्टोरिया न्याञ्ज़ा के पश्चिमी तट पर रहने वाले बाँटू भाषा भाषी लोग। इन लोगों का शरीर हृष्ट पुष्ठ और जीवन सादा होता है। ये लोग रेशे के धागों की एक विचित्र पोशाक पहनते हैं। वे अपने मृत सरदारों को एक गहरे और तंग गढ़े में खड़ा गाड़ते हैं। सिर जमीन के ऊपर निकला रहता है। उसकी देख भाल के लिये दो महीने तक संतरियों का पहरा रहता है। फिर वह जमीन के नीचे दबा दिया जाता है। इन्हें गाने बजाने या नाचने से बहुत कम प्रेम है। प्राचीन समय में इनका कोई आदमी दाढ़ी नहीं रख सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

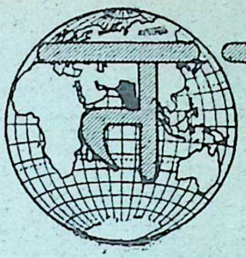

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारखानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एबिसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ।।) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

भूगोल एटलस

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११५ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया ओर प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१०×७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १।।) सजिल्द १।।।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं ।।पहले भाग में चीन। की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें । मनोरंजन, खेलकूद हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है । इसमें कई नक़शे और चित्र हैं । बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ।।) ।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है । प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे । चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर) । इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है । इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं । अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं । मूल्य ।।) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना ।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेलस (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार, रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एण्टेण्ट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह, भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज है। मूल्य केवल ।।)

देश-निर्माता

इस ८२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिल्सुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नांप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। बिहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़्शे। विहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।=) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भूगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांकों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ।=)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

भुवनकोष

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ९०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बग़दाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चारभागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १।।।) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्रायः निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे।

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद- त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्रायः निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा। इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे।:—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४— गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२— पटियाला, २३—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवाँ, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्नियो, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़गानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फिनलैंड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलैंड, १४—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लेटविया और एस्थोनिया १७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्पा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—१४—महाराष्ट्र, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ८—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया,। २—गायना, ३—वेनिज्वेला १—इक्वेडार, १—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली ८—पेरेग्वे ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़िल, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—डेूक, ८—स्पेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०— मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहरा, १५—यरुशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज, पनामा, चीन की ग्रांड केनाल।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरिया, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=) वार्षिक ४)रु० समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol".**

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-
3rd page of the cover „ 12/-
4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press; 306, Jumuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

नवम्बर १९३८

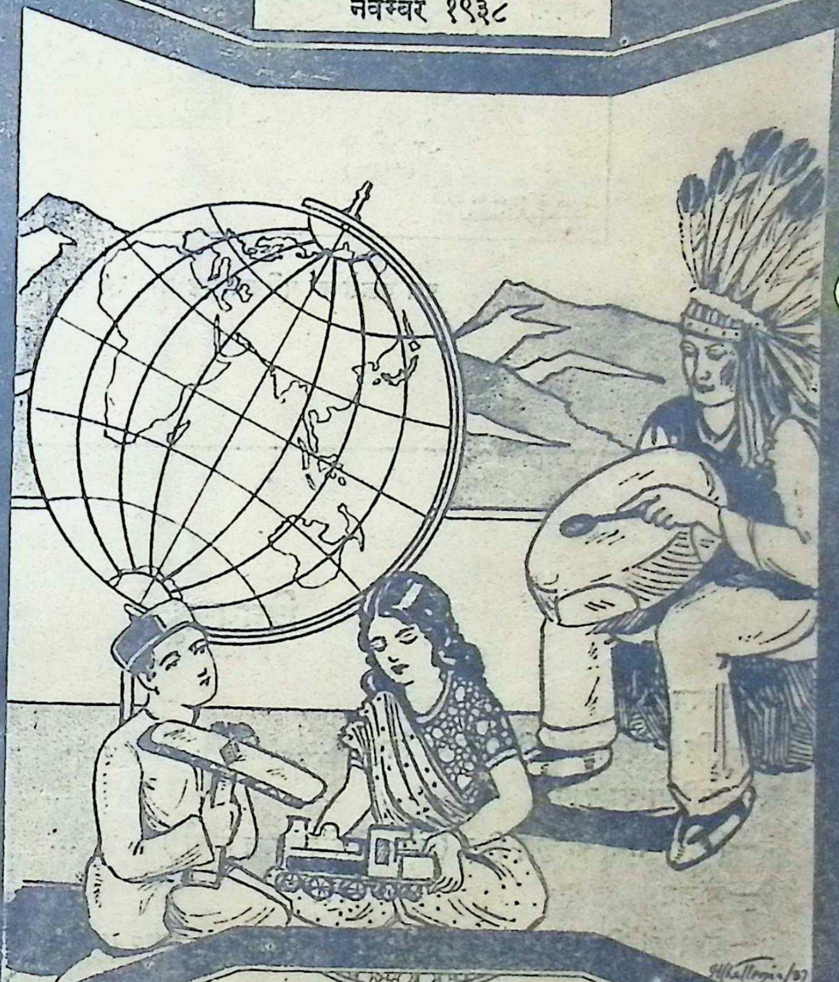

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL
SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

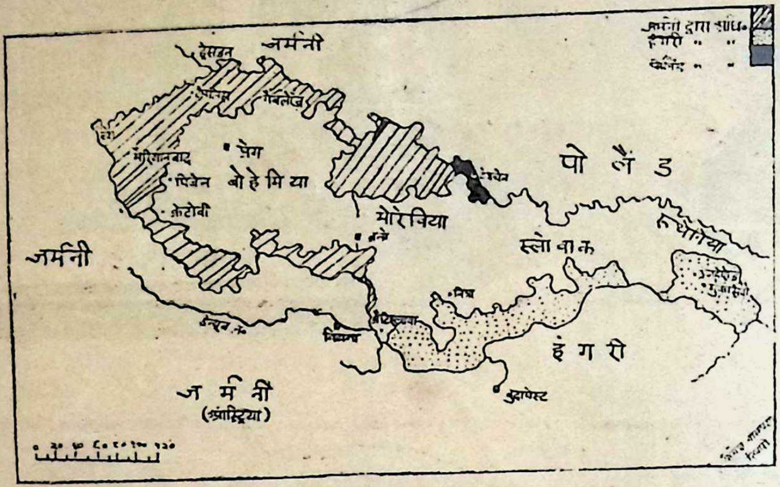

इस नक़शे का परिचय पृष्ठ नं० २५ पर देखिये

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—दक्षिण दिशा में (विद्याभूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.) ...	१
२—जातियों का कोष	७
३—विदेश यात्रा के कुछ चित्र (श्री० निरंजनलाल शर्मा)	१०
४—भोजन	१८
५—चेकोस्लोवेकिया की हत्या (श्री० शान्तिस्वरूप गुप्ता, एम० ए०) ...	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १५] मार्गशीर्ष सं० १९९५, नवम्बर १९३८ [सं० ७

दक्षिण दिशा में

(विद्याभूषण विभु, बी० ए०, एफ० आर० जी० एस०, एम० एन० जी० एस०)

[गताङ्क से आगे]

भारतवर्ष में उटकमंड बहुत ही उत्तम पहाड़ी स्थान गिना जाता है। इसी विचार से २१ जून को आठ बजे सवेरे मदुरा से ऊटी देखने चला। डिएडीगल, पोतनूर कोइम्बतूर में गाड़ी बदलते बदलते तंग आ गया। शाम को मेटरपेलम पहुँचा। स्टेशन पर होटल में मदरासी भोजन किया। ठहरने का कोई प्रबन्ध होटल में न था। कुली ने चार आने में चौकीदार से पहले दरजे का वेटिंग रूम दिला दिया। रात आराम से कटी मानों चार आने में चार फल प्राप्त हो गये। २२ जून को सवेरे संकलित सामान होटल में छोड़ कर ७-५ मिनट पर नीलगिरि रेल (Blue Mountain Light Railway) से रवाना हुआ। ऊटी का टिकट १।) को मिला। मैं आगे के डब्बे में था। गाड़ी सर्पाकार मार्ग का अनुसरण कर रही थी। पीछे को दृष्टि डाली तो एक विचित्र बात देखी। इंजन पीछे से धक्का दे रहा था। आगे कोई इंजन न था। यह प्रबन्ध इसलिए था कि चढ़ाई पर डिब्बे पृथक होकर पीछे फिसलने न पावें। स्थान स्थान पर खतरे की चेतावनी के सिगनल लगे हुए थे। गाड़ी धीरे धीरे चलने लगी। पटरी के दोनों ओर वृक्ष टीलों और खाइयों से इस तरह झांक रहे थे जैसे जनता किसी बड़े आदमी के दर्शनों को जमा हो जाती है। कहीं कहीं पेड़ों से पुष्प वर्षा भी हो जाती थी। नीलगिरि में प्यास बुझाने के लिए झरनों की पौसाल बिठा दी थी। ट्रेन कभी कभी सुरंगों में छिप जाती थी। स्टेशन बहुत छोटे छोटे थे और उनपर दोहरी लाइन के स्थान पर इधर उधर शाखा निकली हुई थीं। दूसरी ओर से यदि कोई गाड़ी आती थी तो हमारी रेल उन शाखाओं पर खड़ी हो जाती थी और गाड़ी के निकल जाने पर फिर लाइन पर आ जाती थी। कोनूर ही एक बड़ा जंकशन मिला। दस बजे से पहले ऊटी पहुँच कर होटल में ठहर गये। होटल वाले ने ।।) एक खुराक का चार्ज किया।

कोइम्बतूर के साथी कोमल प्रकृति के धनी व्यक्ति प्रतीत होते थे। पैदल चलकर सब जगह घूमना उनके लिए कुछ असम्भव मालूम होता था। और फिर उसी दिन लौटना भी चाहते थे। इसलिये उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैक्सी का प्रस्ताव किया। मुझे भी उसी दिन वापस आना था। इससे मैं तो सहमत हो गया। परन्तु तीसरा साथी रुपये की कमी के कारण हिचकिचाता था। ६) में मोटर मिल गई। ढाई ढाई रुपये हम दोनों ने दिये और एक रुपया उस तीसरे आदमी ने दिया। टैक्सी में सैर का वास्तविक आनन्द न मिला दो घंटे में कुल मुख्य मुख्य स्थान देख लिये।

हरियाली को चीरती हुई सी मोटर चलने लगी। पहले लाट साहब की कोठी रेस कोर्स एक टीले से खड़े होकर देखे। इस बार नीलगिरि की

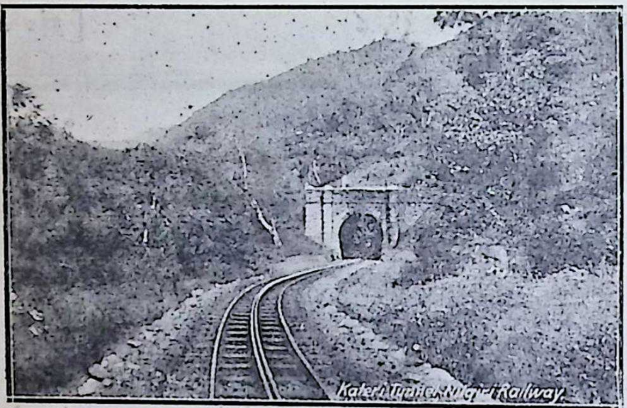

नीलगिरि-रेलवे की एक सुरंग

सबसे ऊँची चोटी दूधावाती (Dodabeti) पर पहुँचे। यह समुद्र से ८००० फीट से अधिक ऊँची है। वहाँ से टोडा (Toda) की झोपड़ी पर पहुँचे। इस घर में बैठ कर या घुटनों के बल ही अन्दर जा सकते थे। मैंने घुस कर देखा तो एक ओर रसोई का चूल्हा और दूसरी ओर सोने के लिए एक ऊँचा चबूतरा बना हुआ था। चार औरतें बाहर बैठी हुई थीं। उनमें से दो कुछ बुन रही थीं। मेरे साथी ने उनको एक इकन्नी दिखलाई। वे चारों एक पंक्ति में बैठ गईं और कनपटी पर हाथ रखकर ऐं ऐं कर गाने लगीं। मैं कुछ नहीं समझा। टोडे यहाँ के पुराने निवासी हैं। जङ्गली जीवन व्यतीत करते हैं। सरकार से उनको रहने के लिए स्थान और जलाने के लिए लकड़ी मुफ़्त मिलती है।

ऊटी का बोटेनीकल गार्डन दार्जिलिंग के बाग से छोटा मालूम देता था। प्रकृति ने हरा मखमल का फर्श उसमें बिछा रक्खा है। कहीं कहीं फूलों के बेल-बूटे भी हैं। झीलों का निर्मल जल गोटा या पन्नी चुन्नी का काम देता था। बड़े बड़े वृक्ष अपने पत्तों से पंखा झल रहे थे। नील कमल जल में अपना मुख देखकर हर्ष से फूले नहीं समाते थे। आस्ट्रेलिया के नुकीली पत्ती वाले तरु का कुछ गोंद मैंने नमूने के लिए ले लिया। हैदराबाद के निजाम की कोठी हरियाली से अच्छादित थी। परन्तु मैसूर का झाड़ियों पर बहुत ही सुन्दर आकृतियाँ कटी हुई थीं। ऊटी से मैंने दस आने का यूकेलिप्टस तैल और चित्र खरीदे। मोटर ने बस के अड्डे पर उतार दिया। आठ आने देकर बस में कोनूर के लिए चल दिया।

शिमले के लिए सोलन और दार्जिलिंग के लिए खुर्सांग जो काम करते हैं वही काम कोनूर ऊटी के लिए करता है। जो मनुष्य ऊटी के खर्च से डरता है, परन्तु पहाड़ी जलवायु में रहना चाहता है, उसके लिए कोनूर उत्तम स्थान है। यहाँ से दूसरी बस ने बारह आने में मेटरपेलम पहुँचा दिया और रात के साढ़े आठ बजे अपना सामान लेकर सेलम को चल दिया।

रात के दो बजे सेलम पहुँचा। मेटूरडैम की गाड़ी खड़ी थी। कुली ने उसमें बिठा दिया। साढ़े छः बजे ट्रेन वहाँ से चली और दस बजे आ पहुँची। अपना संग्रह स्टेशन पर ही छोड़ दिया और कावेरी बांध देखने चला। यह बाँध ५३०० फीट लम्बा और २२० फ़ीट ऊँचा है। पर्वतों के मध्य कावेरी को बाँधने से १६ वर्गमील की एक झील बन गई है। उसमें १३ फाटक हैं। जिनसे पानी आवश्यकतानुसार छोड़ सकते हैं। दूसरी ओर कावेरी स्नान किया और फिर बाँध के नीचे उतरा। कुछ फाटकों से पानी प्रबल वेग से बह रहा था। एक छोटी सी वाटिका भी लगा रक्खी है। उनमें कई फव्वारे छूटते रहते हैं। एक फव्वारे के नीचे चार बतख तैरती हुई दिखाई दीं। पास जाकर देखा तो वह पत्थर की निकलीं। स्थान अत्यन्त रमणीक था। वहीं पर पानी से बिजली बनाने का कारखाना भी है। कावेरी के जल से पहिये घूमते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे डाइनेमो (Dynamo) चक्कर करता है और बिजली उत्पन्न होती है। स्टेशन के होटल में चावल खाये और चार बजे सेलम लौट आया। यहाँ मैंने डाक रेलवे के कर्मचारी की कृपा से मेग्नेसाइट का नमूना लिया और ५ बज कर ४५ मिनट पर वहाँ से चल दिया। दक्षिण में लगा हुआ पान विकते मैंने नहीं देखा। स्टेशन पर पान बेचने वाले को एक पैसा दीजिये तो वह आप को कुछ पान चूना और मसाले की एक पुड़िया देगा। आप स्वयं लगाते और खाते जाइये।

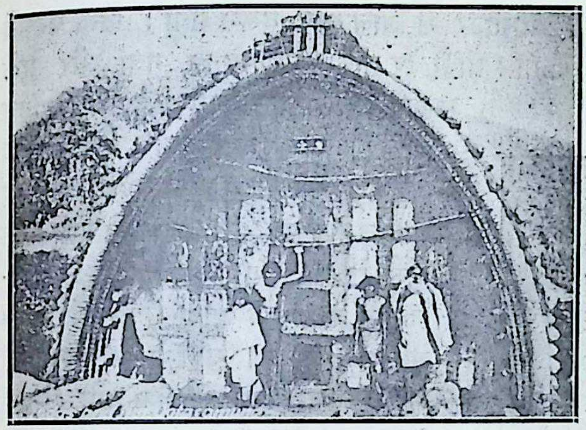

टोडा लोगों का झोंपड़ा

महारानी तम्बाकू का साम्राज्य विस्तार में मलिका विक्टोरिया के राज्य से भी अधिक बढ़ गया है। संसार का कोई कोना न मिलेगा जहाँ इसका आतंक किसी न किसी रूप में न पाया जाता हो। भारत में तो इसका रंक, राजा सभी पर आधिपत्य है। आठों पहर धुआँधार होती रहती है। इसके कारण उत्तर-भारत अग्निहोत्री बन गया है। गृह अग्नि कभी बुझने नहीं पाती। जिस डिब्बे में देखिये बीसियों उप-इंजन धुआँ उड़ाते दिखलाई पड़ेंगे। मध्यभारत रसिक विहारी हो गया है। यहाँ पर बारह मास होली ही होती रहती है। जिधर देखिये उधर ही रंगीन पिचकारियाँ चल रही हैं। दक्षिण भारत में पूरक प्राणायाम सिद्ध कर लिया है। जिधर कान लगाइये सू-सू की सरसराहट सुनाई पड़ेगी। बतलाइये ऐसे सिद्धों को भी मोक्ष न मिलेगी तो किसे मिलेगी।

वर्तमान संसार में, हुई मुक्ति आसान।
घर घर प्रचलित वर्ग-त्रय, चाय, तमाकू, पान॥

इस त्रिगुणात्मकशालिनी को धन्य है। लोग इसके अवगुणों पर ध्यान न देकर गुणों का ही ग्रहण करते हैं। यही सज्जनता है। इसी सज्जनता के वशीभूत होकर यह सन्मुख बैठे हुए व्यक्ति न जाने कितने मन सुँघनी सूंघ चुके हैं। यह दूसरे महाशय न जाने कितनी थूक चुके। दिल जला फेफड़ा गला। लेकिन इन तीसरे महोदय का इसी धुआंधार में है भला। यही अनन्य भक्ति है।

रात को २ बजे ट्रेन जालेरपेट आ पहुँची। त्रिचनापोली जंकशन के बाद मुझे यही सुन्दर और विशाल स्टेशन मिला। गाड़ी बदली गई। सवेरे ५ बजे बोरिंगपेट आकर कोलार गोल्ड फील्ड के लिये ट्रेन बदली।

२४ जून को सवेरे ६ बज कर १५ मिनट पर ऊरे गाँव पहुँचा।

कोलार गोल्ड फील्ड कोई एक स्थान नहीं है। कोलार (मैसूर) जिले में कई जगह सोना निकाला जाता है और उनके स्टेशन भी भिन्न २ हैं। लेकिन मुझे यह पता न था जिससे मैं पूछता कि मैं कोलार गोल्ड फील्ड देखना चाहता हूँ। वह मुझसे प्रश्न करने लगता कौन कौन सी जगह। तब मैं निरुत्तर हो जाता। एक सज्जन ने बतलाया कि यहाँ तीन स्टेशन हैं। किसी एक पर आप उतर जाइये। इसलिये मैं ऊरे गाँव पर उतर पड़ा। स्टेशन बहुत छोटा था। होटल एक मील दूर था। इस लिये वहाँ न जाकर स्टेशन पर ही जो कुछ मिला पेट में डाल लिया। दस बजे गोल्ड फील्ड के दफ़्तर में पहुँचा। एक रुपये का पास लेकर खान देखने चला। यह खान दो हजार फीट नीचे है, जहाँ पर कई हजार आदमी दिन रात काम करते हैं। सब काम मशीन से होते हैं। बड़े बड़े लिफ्ट के द्वारा चट्टानों के बड़े बड़े टुकड़े ऊपर आते हैं और उनको मशीनों द्वारा तोड़ कर पीसा जाता है। फिर पानी के साथ कारपेट पर बहाया जाता है। सोना उन कारपेट से चिपट जाता है। और रेत पानी के साथ बह जाता है। इसी रीति से सब सोना निकाल लेते हैं। पास लेकर दरवान पहले अपने आफिसर को दिखला कर उसके हस्ताक्षर कराता है। तब अन्दर जाने पाते हैं। प्रत्येक विभाग में यही नियम काम में लाया गया। दरवान सिपाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी थे। कहीं कहीं उत्तरदायित्व के स्थान पर गोरे दिखाई देते थे। किसी किसी कमरे में मशीनों का इतना शोर होता था कि गूंगे की तरह संकेत से ही बातचीत हो पाती थी। एक टेस्टिंग (परीक्षण) विभाग भी था जिसका काम यह था कि वह जाँच करे कि किन चट्टानों में सोना है और किस अनुपात से। यह लोग टुकड़े को पीस कर पारा आदि के साथ बंद भट्टियों में गलाते हैं। इस प्रकार सोना तथा दूसरे धातु पृथक हो जाते हैं। मुझे एक टुकड़ा ऐसा दिखलाया गया जिसमें सोना खूब चमकता था। यह रिच (धनी) चट्टान कहलाते हैं। ये सब बातें मैंने जमीन के ऊपर देखी थीं। खान के नीचे जाने के लिये तीन रुपये का पास लेना पड़ता था। उसका लेना हमने उचित न समझा क्योंकि गाइड उस दिन छुट्टी पर गया था।

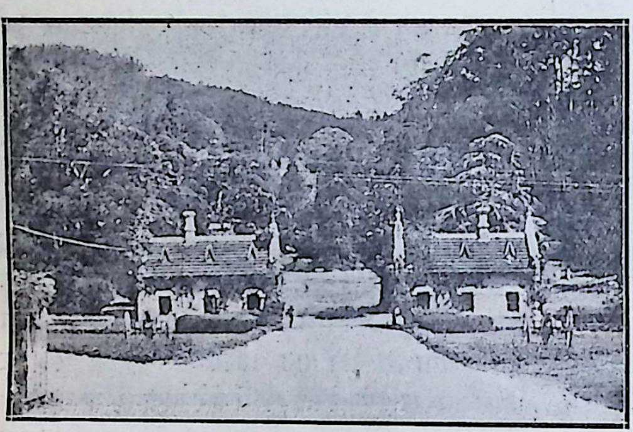

उटकमंड के सरकारी बग़ीचे का दरवाज़ा

उर गाँव से ढाई बजे चलकर शाम को बंगलौर आ गया। पानी बरस रहा था। टांगे वाले को पाँच आने देकर होटल में आ गया। आठ आने प्रति दिन एक कमरे के और ।=) प्रति खुराक निश्चित हुए। २५ जून को सवेरे शहर देखने निकला। घूमते घूमते पहुँचा। इस क्यूबर पार्क में एक आलीशान होटल में रेडिओ बज रहा था। एक पुस्तकालय भी था। मुझे यह बतलाया गया कि इस पार्क में मैसूर राज्य के दीवान साहब भी रहते हैं और वह प्रत्येक से बड़ी प्रसन्नता से मिलते हैं। अवकाश न होने के कारण मैं उनसे न मिल सका। यह उद्यान फूलों से सुशोभित एक रम्य स्थान है। परन्तु सबसे सुन्दर यहाँ पर एक फव्वारा है जिसके चारों ओर विविध रंग की बिजलियाँ रात को जलती हैं। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानों नभो मंडल से इन्द्रधनुष उतर कर इसकी परिक्रमा कर रहे हैं या सप्तवर्णी रश्मियाँ जल विहार कर रही हैं। फव्वारे के रंजित जल की नृत्य कला अनिर्वचनीय है। यहाँ से मैंने मार्टिनेट बे अखरोट की एक फली लेकर अजायबघर देखने चला गया। यहाँ पर चिड़ियों की प्रायः सब ही चीजें देखने को मिलीं। मृत चिड़िया, अंडे, चोंचें, घोंसले, सभी क्रमानुसार रक्खे हुए थे। श्रीरंगापट्टम का माडल अत्यन्त मनोहर था।

मोटर से लाल बाग देखने गया। पानी बरसने लगा। थोड़ी देर बाद मोटर बिगड़ गया और मुझे पैदल ही चलना पड़ा। यह बाग बड़ा है। कुछ दिन पहले यहाँ चिड़ियाघर था। अब यहाँ के सब पशु-पक्षी मैसूर पहुँच गये हैं और यह बाग उजाड़ पड़ा है। यहाँ मैंने पीले बाँस और रेन ट्री (वर्षा-वृक्ष) देखे। तदनन्तर मैं बाजार में आया। वस्तुयें सस्ती मालूम होती थीं। यहाँ से मैं लाल मिट्टी के दो लड्डू, कहवा के बीज और Ragi के दाने नमूने के लिये लेकर स्टेशन चल दिया। शहर स्वच्छ और सुन्दर था। जलवायु स्वास्थ्यवर्धक मालूम देता था। पूना की तरह बंगलोर भी मुझे अधिक प्रिय लगा। साढ़े नौ बजे रात को मद्रास के लिये रवाना हुआ।

२७ जून को साढ़े छः बजे सवेरे मद्रास पहुँचा। शहर का चक्कर लगाया। मैकमिलन और लांगमैन्स प्रकाशकों के यहाँ कुछ पुस्तकों का अवलोकन किया। २७ जून को अमावस्या थी। मैं छः बजे समुद्र स्नान को चल दिया। आज के दिन प्रायः बहुत से हिन्दू नहाने जाते हैं। इससे भीड़ काफी थी। चारों ओर एक विचित्र दृश्य था। कहीं बच्चे डर के मारे चिल्ला रहे थे लेकिन उनके माता पिता मल मल कर स्नान करा रहे थे। बुढ़िया औरतें डरती डरती पानी में घुसती थीं। लोग उनके ऊपर जल उलीच देते थे। भीरु प्रकृति दूसरे साथी का हाथ पकड़े रहते थे। पानी में बड़े पेटू की तोंद तो बिलकुल कछुये की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समानता करती थी। लड़के अपनी किलोलें अलग कर रहे थे। लहरों की अठखेलियाँ भी अद्भुत थीं। जब वे टकराती थीं तो घोर गर्जना होती थी। घुड़दौड़ की सी करतल ध्वनि और हर्ष ध्वनि सुनाई देती थी। लहरें एक के ऊपर एक बेतहाशा गिरती थीं जो श्वेत प्रवाल के समान बहुत सुन्दर लगती थीं। एक लहर कुछ आगे बढ़ आई और किनारे के कपड़ों को भिगो दिया। जहाँ दृष्टि जाती है पानी ही पानी दिखाई देता है। जब मैं इसकी असीमता को देखता हूँ और अपनी अल्प शक्ति पर विचार करता हूँ तो मुझे बड़ा दुख होता है कि ईश्वर ने मनुष्य को इतना दुर्बल क्यों बनाया।

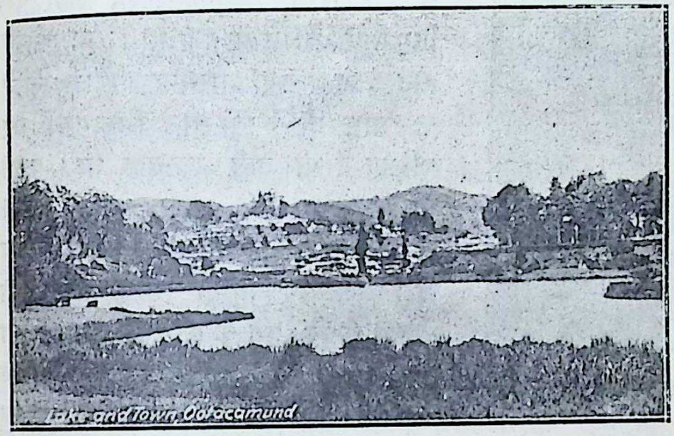

ऊटकमंड नगर और झील का एक दृश्य

आज मैं आनन्द से नहा न सका, क्योंकि समीप ही एक विचित्र वेषधारी भैरव भगवान अपने वाहन श्वान सहित विराजमान थे। मेरी जेब में रुपये थे। कोट उतार कर छोड़ना रुपयों का खोना था। मैं बहुत देर तक इधर उधर के तमाशे देखता रहा। कुछ मल्लाह भी बालू पर घूर घूर कर देखते हुए चक्कर काट रहे थे। उनसे भी पूरा डर था। कुछ देर बाद भैरव वहाँ से चल दिये। मैं कपड़े उतार कर पानी में पहुँचा। मुड़ कर देखता हूँ कि फिर वही आदमी अपना कुत्ता लेकर वहीं आ गया। मैं वहीं बैठ गया और वस्त्रों की ओर ताकता रहा। थोड़ा सा स्नान कर शीघ्र निकल आया और कपड़े पहन कर चल दिया।

२८ जून को झोला में शीशी रखकर फिर समुद्र के किनारे गया। वस्त्र उतार कर समुद्र में घुसा और शीशी साफ़ करने लगा। अचानक एक बड़ी लहर से टकरा कर मैं तो एक तरफ गिर गया। शीशी हाथ से छूट कर लहर के साथ बह गई। थोड़ी दूर पर उस की गरदन दिखलाई दी। फिर वह सदा के लिये अनन्त में विलीन हो गई। शायद जलजीव उसको भी जलचर जानकर छेड़छाड़ करते होंगे। लोग कहते हैं कि समुद्र चीजों को वापिस कर देता है, परन्तु मेरी शीशी तो मालूम देता था पचा गया। क्योंकि मैंने फिर उसको किनारे फेंकते हुए नहीं देखा। शीशी खोने का तो मुझे कुछ दुःख नहीं था क्योंकि समुद्र जल स्कूल में रक्खा है। लेकिन मेरी यह इच्छा अवश्य हुई कि उस में तारीख, स्थानादि लिखकर रख देता जिससे पाने वाले को शायद समुद्र की कुछ विशेष बातें मालूम हो जातीं।

झोले में समुद्र की बालू भर कर मैं शहर लौट आया। आज शहर में रिक्शा वालों ने हड़ताल कर दी है और मैं आज ही मद्रास से वाल्टेयर जाना चाहता हूँ। सवारी के लिये बाज़ार में आकर खोज करने लगा। यहाँ के तांगों में बैठने में बड़ी तकलीफ़ होती है। रिक्शा का मिलना असम्भव था। बाज़ार में २००० रिक्शा वालों की भीड़ थी। जो कोई रिक्शा वाला उनके विरुद्ध चलता था उसको वह तंग करते थे। एक रिक्शा वाले ने उसकी शिकायत पुलिस में की। सब भीड़ नाके पर इकट्ठा हो गई। रास्ता बन्द हो गया। ट्राम मोटर आदि सब रुक गये। इस प्रकार सब व्यापार बन्द देख कर एक गोरे पुलिस कर्मचारी ने भीड़ में डंडे मारना शुरू किया। भीड़ काई की तरह फट गई। लोग जान ले लेकर भागने लगे। मैं भी जल्दी से दूसरी ओर मुड़ गया। कुछ देर बाद छः आने में एक रिक्शा मिल गई जिसमें बैठ कर सेन्ट्रल स्टेशन आया और रात के सवा आठ बजे की मेल से चल दिया।

२९ जून को ढाई बजे दिन के वाल्टेयर पहुँचे। यह मद्रास से ५३० मील है। मार्ग के खेतों में धान लहरा रहे थे। गोदावरी अपने गंदे जल से उमड़ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। जिस गड्ढे के पास जैसी मिट्टी थी उस में वैसा ही जल दिखलाई देता था। कहीं श्वेत सागर, कहीं लाल सागर, कहीं काला सागर का दृश्य सामने आ जाता था। वाल्टेयर में अनभलाई यूनिवर्सिटी है। स्वास्थ्यवर्धक स्थान माना जाता है। यहाँ से पाँच मील पर विज़गापट्टम का बन्दरगाह है; जहाँ से मध्य भारत का माल बाहर भेजा जाता है। धूप कड़ी थी और स्टेशन का थर्मामीटर ९५° का तापक्रम बतला रहा था। मद्रास सदर्न मराठा रेलवे का यह अन्तिम रेलवे स्टेशन होने के कारण हमारा रिआयती टिकट

ऊटकमंड के टोडा लोगों की एक मण्डली

यहाँ पर समाप्त हो जाता है। सवा छः बजे बी० एन० रेलवे से रायपुर व बिलासपुर से कटनी आया। और जी० आई० पी० से प्रयाग आ पहुँचा। १४ रु० के लगभग वाल्टेयर से प्रयाग तक का रेल का किराया लगा।

दक्षिण-भारत उत्तर-भारत से भाषा, भोजन और भूषा में बिल्कुल भिन्न है। लीडर, हिन्दुस्तान टाइम्स की जगह लोगों के हाथों में हिन्दू, मद्रास मेल तथा इण्डियन एक्सप्रेस दिखलाई पड़ते थे। मद्रास के आसपास आधे दक्षिण पूर्व की भाषा तामिल है। दक्षिण-पश्चिम के केरल प्रान्त में मलायलम का प्रचार है। दोनों के उत्तर में पूर्व की ओर तैलगू और पश्चिम की ओर कनाडी भाषायें फैली हुई हैं। तामिल के भजन समझ में न आने पर भी कर्ण-प्रिय थे। अंग्रेज़ी जानने वालों की संख्या भी अधिक थी। पशु बहुत कम और दुर्बल दिखलाई देते थे। दूध के दर्शन दुर्लभ हो जाते थे। मद्रास में दो आने का एक प्याला दूध मिलता था। होटलों में चावल के साथ मद्रासी चुल्लू से मट्ठा (छाँछ) पीते थे। वह भी दो तीन चुल्लू ही मुझे तो बिना प्याला भरे संतोष न होता था। यहाँ पर होटल दो प्रकार के थे। १. हिन्दू ब्राह्मण होटल, जहाँ पर निरामिष भोजन मिलता था। २. फौज़ी होटल; जहां पर मांस-मछली भी खाने के साथ दी जाती थी। भिखमङ्गों का दक्षिण में भी वही रङ्ग-ढङ्ग था। कुली और मज़दूर इसी प्रकार झगड़ालू थे। लेकिन शिक्षित मनुष्य शिष्ट तथा सदय थे। उनके सद्व्यवहार और सहानुभूति से मैं अपने मार्ग के कष्टों को भूल जाता था। किसी किसी स्त्री के कानों में इतना भारी गहना था कि ललरी काँधे से छू रही थी। साउथ इण्डियन रेलवे का पहनावा मुझे अधिक पसन्द आया। गोटेदार हरी पगड़ी उनके हँसमुख चेहरे पर बहुत खिलती थी। वह यात्रियों के प्रश्नों का उत्तर बड़ी नर्मी से देते थे।

नये देश और नये दृश्य तो देखे ही, मनोविनोद भी पर्याप्त हुआ। मनोरंजन वह मिश्री है जो कष्ट के पश्चात् ही अधिक स्वादिष्ट लगती है। भ्रमणों ने मुझे कष्ट-सहिष्णु बना दिया। दक्षिण की कई हज़ार मील की यात्रा से मेरी ज्ञान-राशि तथा अनुभव में विशेष अभिवृद्धि हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियों का कोष

(गताङ्क से आगे)

वज़ीर या वज़ीरी—अफ़ग़ानिस्तान के सरहद के लोग। ये लोग जङ्गली और दुर्गम प्रदेश में रहते हैं। ये लोग जानवर बहुत पालते हैं, लेकिन खेती कम करते हैं। पहाड़ी धाराओं के पास कहीं कहीं खेती होती है।

वयान्डाट—उत्तरी अमरीका के हूरन या इरोक़ाई लोग।

वातूता—अंगोनी (न्यासा झील) के पश्चिम में रहने वाले ज़ुलू लोग।

वपोकोमो—बृटिश ईस्ट अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में ताना घाटी के बाँटू भाषी लोग। ये लोग खेत बोने जोतने के अतिरिक्त मछली मारने और शिकार करने का काम भी करते हैं। ये लोग वर्णसंकर हैं। इनमें एक ही घर में (काले से लेकर लाल तक) कई रंग के लोग मिलते हैं।

वारीमुङ्गा—मध्य आस्ट्रेलिया के वे लोग जो मर्कीसन रेंज में रहते हैं। आरूँटा लोगों से ये लोग अधिक लम्बे होते हैं। ये लोग अपने माथे और ऊपरी ओंठ के बाल उखाड़ लेते हैं।

वार्राऊ या वार्रा—गायना के तट पर रहने वाले लोग। ये लोग छोटे और मोटे होते हैं। इनके यहाँ एक स्त्री के कई पति और एक पुरुष के कई स्त्रियाँ होती हैं। ये लोग नाव बनाने में बड़े चतुर हैं।

वान्याम्वेज़ी—यूगांडा के वे लोग जिनको लिविंग्स्टन की यात्राओं ने प्रसिद्ध बना दिया। वान्याम्बेज़ी का अर्थ है "चन्द्रवंशी" या चन्द्रमा के बच्चे।

वापीसियाना—गायना के सवन्ना प्रदेश में रहने वाले लोग, जो अरावक भाषा बोलते हैं। इनके अंग सुन्दर होते हैं और क़द लम्बा होता है। ये लोग बड़े व्यापारी होते हैं। वे अपनी नावों को एक विचित्र गोल पेंडिल से चलाते हैं।

वाङ्कोण्डे—या नकोण्डे—न्यासा झील के उत्तरी सिरे पर रहने वाले बाण्टू भाषा-भाषी लोग। "वाङ्कोण्डे" शब्द का अर्थ है मैदान के लोग। इन्हीं में अबाकूक्वे अबाचीवा और दूसरे लोग शामिल हैं। तट के पास रहने वाले वामाराबा लोग इनके सम्बन्धी हैं। इनका रंग काला और टांगें टेढ़ी होती हैं। ये लोग आरामतलब और हंसमुख होते हैं। इनकी स्त्रियाँ सुन्दरी होती हैं।

वाण्डोरोबो या आण्डोरोबो—मसाई देश के बद्दू लोग। मसाई शब्द का अर्थ "ग़रीब" है। वे अपने को आसा कहते हैं। वे बुश्मैन लोगों से मिलते जुलते हैं।

वाम्वट्टी—बेल्जियन कांगो के इटूरी बन के बौने लोग।

वाळून—फ्रांसीसी भाषा के उत्तर में बोली जाने वाली उप-भाषायें। इस भाषा के बोलने वाले लोगों को भी बाळून कहते हैं। आर्डेन पठार, हालैंड, बेल्जियम और केण्ट में वाळून अंश की प्रधानता है।

वाडिगो—न्यीका लोग जो मोम्बासा के पृष्ठ प्रदेश में रहते हैं और बांटू भाषा बोलते हैं। ये लोग वागीरियामा लोगों के सम्बन्धी हैं। इनका क़द बौने के समान ५ फुट २ इंच होता है।

वागण्डा या बागण्डा—यूगांडा के निवासी। इनमें कई भेद हैं। कुछ हब्शी हैं कुछ रोमन लोगों से मिलते हैं। कुछ लोग ६ फुट और कुछ ५ फुट ऊँचे होते हैं। ये लोग न अपने दाँत तोड़ते हैं न शरीर को बिगाड़ते हैं जैसा कि विषुवत् रेखा के समीप के रहने वाले किया करते हैं। वे अपने कान भी नहीं छेदते हैं। यूगांडा वाले लोग ऊँची छत के मकान बनाते हैं और ढांचा ताड़ की लकड़ियों का बना होता है। सामने और पीछे की तरफ़ दरवाज़े के लिये खुला होता है।

वायावू—ब्रह्मा के लोग जो मोंखमेर भाषा बोलते हैं। वे लोग छोटे लेकिन चौड़े होते हैं। वे अपने गाँव के चारों ओर दो तीन गज़ ऊँची दीवार बना लेते हैं। यह दीवार एक खाईं से घिरी होती है। सुरंग के द्वारा द्वार बना लिया जाता है। ये लोग बड़े वीर और मेहनती होते हैं और खेती किया करते हैं।

वाबानाकी—अल्गान्क्विन के लोग जो उत्तर-पूर्व की ओर रहते हैं। इन्हीं में पासामीक्वोडी, पेनोब्स्काट, अबेनांकी, मिकमैक और डेलावेर या लेनेय शामिल हैं।

विसायन—फिलीपायन द्वीप के लोग। ये लोग अपने शरीर को रँगते हैं। इसलिये स्पेन वालों ने इनका नाम पिन्टाडो रक्खा।

वेड्डा—लंका के मूल निवासी। इनका क़द छोटा (५ फुट)। सिर तंग और लम्बा होता है। ये लोग बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न रहते हैं। ये शिकार करते हैं और शहद इकट्ठा करते हैं। अपने मुर्दों को वे खोहों में छोड़ देते हैं।

वेयाओ या याओ—रोडेशिया और बृटिश सेन्ट्रल अफ्रीका के बाँटू भाषा-भाषी गठीले लोग। इनका प्रथम निवास उनाङ्गो पर्वतों में था।

वेएड—जर्मनी में लूसिट्ज प्रदेश के लोग। इन्हें पोलाब भी कहते हैं।

वेल्श—वेल्स देश के रहने वाले। इन लोगों का क़द नाटा और शरीर गठीला होता है। इनका सिर और चेहरा चौड़ा होता है। वेल्श भाषा दो ढाई वर्ष से ज़्यादा पुरानी नहीं है।

वोप्सियन—ओनेगा झील के ओलोनेट्स आदि ज़िलों में बोली जाने वाली भाषा। इनको रूसी लोग चड कहते हैं। अधिक दक्षिण में वे चुहार कहलाते हैं। ये लोग खेतों का काम बच्चों और औरतों के ऊपर छोड़ देते हैं। वे स्वयं मछली मारते हैं और राजा का काम अधिक पसन्द करते हैं। "चड" शब्द का अर्थ लम्बा है। ये लोग क़द में बड़े लम्बे होते हैं।

वोर्गेया—आस्ट्रेलिया के वे लोग जो वारामुण्गा के पूर्व में रहते हैं।

वोटयाक—पूर्वी फिनिक लोग जो अब से १२०० वर्ष पूर्व यूरल पर्वत को छोड़ कर कामा और वियाटका नदियों के बीच में बस गये। ये लोग इनमार की पूजा करते हैं। इनका क़द छोटा और शरीर कमज़ोर होता है। इनकी आँखें भूरी या नीली होती हैं।

वोनूम—मध्य फारमूसा के पहाड़ों में रहने वाले असभ्य लोग। ये लोग काफी ऊँचाई पर रहते हैं। इनकी औरतें बोझे को पीठ पर रख कर एक पट्टी से सिर पर लटका लेती हैं। शायद यही लोग प्राचीन इन्डो नेशियन लोग हैं। इनमें मंगोल रुधिर का प्रभाव है।

वोल्टा भाषायें—उत्तरी गोल्डकोस्ट फ्रांसीसी, नाइजर प्रदेश (जिसमें मोसी, ुन्शी और डागोम्बा प्रदेश शामिल हैं) में बोली जाने वाली अर्द्ध बांटू भाषायें।

वोगुल—मञ्जी लोगों का ओस्टयाक नाम है। ये लोग यूग्रियन हैं। और ओस्टयाक लोगों से मिलते-जुलते हैं। इनका क़द छोटा सिर लम्बा और चेहरा गोल होता है। इनकी आँखें भूरी या नीली होती हैं। ये लोग शिकार करते हैं और गम्भीर रहते हैं।

वौंगा—मध्य अफ्रीका की वैंग ब्यूलो झील के दक्षिण-पश्चिम में स्थित दलदलों में रहने वाले हब्शी लोग।

श

शान—ब्रह्मा के चीन आदि दक्षिणी मंगोल लोग। इनका दूसरा नाम थाई है, जिसका अर्थ "स्वाधीन" है। ये लोग थाई या स्यामी, चीनी भाषा बोलते हैं। पहाड़ी शान रियासतों में इन्हीं लोगों का निवास है। ये लोग अक्सर अपने अंगों को नीला गुदवाते हैं।

शानी—ओहाइओ प्रदेश के अलगोंक्वियन लोग।

शाविया—आर्स पठार के बर्बर लोग।

शिह—मरक्को के बर्बर लोग। जिनमें रिफ लोग भी शामिल हैं।

शिलूक—बड़े सिर वाले लम्बे हब्शी लोग। ये लोग नील के दक्षिणी किनारे पर रहते हैं और उत्तर में काका से लेकर नो झील तक फैले हुए हैं। कुछ लोग पूर्वी किनारे और सोबान नदी के पास भी रहते हैं। इन लोगों में हेमायटिक ख़ून बहुत मिला है। ये लोग ढोर चराते हैं और दुर्रा उगाते हैं। वे बड़े खुले दिल होते हैं। शिलूक भाषा की अभाषाओं में अनीवक, जुरे बेरी, गंग, अचोली, निकबा लागो, अलूर और चोपी भाषायें शामिल हैं।

शूवा—चाड झील के दक्षिण में रहने वाले लोग। ये लोग ढोर चराने का काम करते हैं। इनकी उत्पत्ति अरबी लोगों से हुई है। एबीसीनियन भाषा में शा या शोआ शब्द का अर्थ ही चरवाहा है। ये लोग क़द में छोटे होते हैं। लेकिन वे लड़ाका होते हैं और आज़ादी पसन्द करते हैं।

शोशोन—अमरीकन पठार के रेड इण्डियन लोग जो कोमाँची लोगों से मिलते हैं। पहले वे लोग व्योमिंग में रहते थे। ये लोग मछली, फल, मूल आदि का भोजन करते हैं।

स

स्यांक—सुमात्रा द्वीप के मलय लोग।

स्यामी—इण्डोचीन के थाई लोग। कम्बोडिया के खेमर लोगों के द्वारा भारतवर्ष की सभ्यता स्यामी लोगों के यहाँ पहुंची। ये लोग बड़े उदार और हँसमुख होते हैं। लड़ने झगड़ने और चिल्लाने से उन्हें बड़ी घृणा है।

सकाई या सेनोई—मलय प्रायद्वीप के बनों में रहने वाले लोग। ये लोग बद्दू होते हैं। कुछ जंगली जानवरों से बचने के लिये पेड़ों पर झोंपड़ा बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकालव—पश्चिमी मेडागास्कर के लोग।

सालिश—बृटिश कोलम्बिया में पठार पर रहने वाले रेड इण्डियन लोग।

सारसी—एथेबास्कन जाति के अमरीकन इण्डियन।

स्काट या स्कच—स्काटलैंड के लोग।

साइबेरियन तारतार—तूरानी तुर्की लोग जो तूब और डरियाँ खाई कहलाते हैं। रूसी लोग उन्हें चर्न (काले जंगली लोग) कहते हैं।

साइबेरियन तुर्क—पूर्व के याकूत लोग और सायन पर्वत के उत्तर में साइबेरियन तारतार लोग।

सिहानक—मेडेगास्कर के पश्चिम में रहने वाले लोग। ये लोग दलदल के प्रदेश में रहते हैं और मछली मार कर अपना पेट पालते हैं।

सिक्ख—पंजाब के बीर जाट लोग जो गुरु नानक और गुरू गोबिन्द सिंह के चलाये हुए मत को मानते हैं। अधिकतर बातों में वे हिन्दू ही हैं।

सिन्धी—सिन्ध प्रांत के लोग।

सिंहाली—लंका के सभ्य लोग।

सिवाश—वेंकूवर द्वीप के रेड इण्डियन लोग।

स्लोवेक—पश्चिमी स्लैव लोग। ये लोग चेकोस्लेवो-किया में रहते हैं।

स्लोवीन—क्रेट के उत्तर में कार्नि ओला के यूगोस्लैव लोग। स्लोवो शब्द का अर्थ है वे लोग जो एक दूसरे को समझते हैं।

सोवो—ईडो लोगों की एक उप-जाति। जो बेनिन की प्रजा हैं। ये लोग नाइज़र डेल्टा की धाराओं में रहते हैं। लेकिन शेक्री या जेक्री लोग पानी के बिल्कुल पास रहते हैं।

सुमाली—अफ्रीका के पूर्वी तट पर रहने वाले हेमा-याटिक लोग।

सोर्व—वेण्ड।

सोयात—सायन-अल्टाई की सीमा पर रहने वाले तुर्की तारतारी लोग। जो शायद डरियाँखाई लोग हैं।

स्पेनियार्ड—गेलेग्गे का प्रयोग करने वाले स्पेनवासी लोग।

स्टोनी इण्डियन—एसिनी बोइन।

ह

हनाक—बोहेमिया, मोरेविया और उत्तरी हंगारी में बसने वाले चेक लोग।

हका—क्वांटङ्ग की पहाड़ियों पर बसने वाले चीनी लोग।

हजारा—अफ़ग़ानिस्तान के तुर्की लोग। ये लोग मंगोल तारतार होते हैं।

हाटनटाट—दक्षिणी अफ्रीका के नावायोखोई खोइन लोग हैं। ये लोग बुशमैन से अधिक बड़े होते हैं।

हिदाता या मोनारी—उत्तरी अमरीका के सिओअन लोग जो सूर्य नृत्य बड़ी धूमधाम करते हैं।

हिमिया राइवट—दक्षिण अरब के लोग।

हिन्दू—हिन्दुस्तान के हिन्दू धर्म के मानने वाले लोग।

हुई चोल—कोरा के पूर्व में रहने वाले मेक्सिको के लोग। इनका रंग हलका भूरा होता है।

हूरन—इरोकोई लोग जो प्रायः नष्ट हो चुके हैं।

हेमायट—उत्तरी पूर्वी अफ्रीका के इथिओपियन लोग जो हब्शी नहीं हैं। गाला, सुमाली, मसाई; (पूर्वी), बर्बर, तौरेग भी इन्हीं में शामिल हैं।

हैडा—बृटिश कोलम्बिया के तट पर रहने वाले लोग बड़े चतुर नक्काशी करने वाले होते हैं।

होकलो—चीन के दक्षिणी पूर्वी तट पर रहने वाले लोग।

होपा या मोकोई—शोशोनियन बोलने वाले रेड इण्डियन लोग। इन का प्रधान पेशा खेती है। वैसे ये लोग बुनना और रंगना भी जानते हैं।

होराक—वे लोग जो बोहोमिया, मोरेविया और उत्तरी हंगारी में रहते हैं।

होवा—मेडेगास्कर में सब से ऊँची जाति के लोग।

हङ्गारियन या मेगायर (माजार)—हङ्गारी के लोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेश यात्रा के कुछ चित्र

आजकल भारतीय विद्यार्थी और अध्यापक विदेश यात्रा के लिये उतने ही उत्सुक रहते हैं जितने सनातन धर्मी हिन्दू भाई चारों धाम की यात्रा के लिये और मुसलमान भाई मक्का और मदीना की यात्रा के लिये। अन्तर केवल इतना ही है कि प्रथम समुदाय के यात्री यात्रा के फल-स्वरुप इसी जीवन में अच्छी पदवी पाने की इच्छा करते हैं, और द्वितीय समुदाय के यात्री मरने के बाद स्वर्ग में स्थान पाने की। यद्यपि मेरी अभिलाषा कभी विदेश जाने की न थी परन्तु ईश्वर की कृपा से सन् १९३६ में मैं भी अकस्मात् इस यात्रा पर चल पड़ा और मुझे भी एक वर्ष अपने देश से बाहर रहना पड़ा। मेरा अधिक समय इङ्गलैंण्ड में ही बीता परन्तु योरुप के अन्य देशों में भी होकर मुझे गुज़रने का अवकाश मिल गया था। इस लेख में उन्हीं देशों के कुछ चित्र दिये जाते हैं।

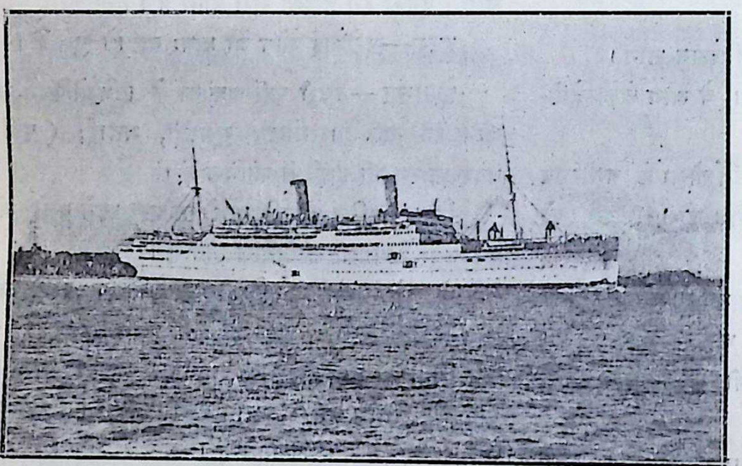

चित्र नं० १*

१—इटली की कम्पनी—"लाइड ट्रस्टीनो"—का "कान्टी वर्डी" नामक जहाज। वैसे तो योरुप की यात्रा के लिये अंग्रेजी कम्पनी के बम्बई से जाने वाले साप्ताहिक जहाजों के अतिरिक्त मद्रास और कोलम्बो से फ्रेंच और जापानी जहाज़ भी जाते हैं परन्तु इटली की कम्पनी के बम्बई से जाने वाले जहाज़ हिन्दुस्तानियों को अधिक पसन्द हैं कारण कि एक तो इन जहाज़ों से दो दिन पहले योरुप पहुँच जाते हैं और दूसरे मुझ जैसे शाकाहारी यात्रियों के लिये इस कम्पनी के जहाज़ में भारतीय भोजन का अच्छा इन्तज़ाम रहता है। जहाज़ वाले कर्मचारी भोजन की दृष्टि से भारतीयों को सन्तुष्ट करने का काफी ख्याल रखते हैं। परन्तु खेद है फिर भी कभी कभी भोजन के ऊपर कुछ भारतीय यात्री उनसे बड़ा अशिष्ट व्यवहार कर बैठते हैं। अपने घर की जैसी पूड़ी तरकारी या दाल चावल जहाज़ में पाने की आशा रखना निरा भ्रम है। मैंने तो दोनों तरफ से इसी कम्पनी के जहाज़ से यात्रा की थी। इस कम्पनी का परिचय कराने के लिये मैं 'भूगोल' के पं० रामनारायण मिश्र जी का कृतज्ञ हूँ।

२—अदन की एक घाटी पार करने की सड़क का दृश्य। अप्रैल सन् १९३८ से अदन देश भारत से पृथक कर दिया गया है। भारत के हित में यह अच्छा हुआ या बुरा यह तो राजनीतिज्ञ जानें परन्तु लालसागर में प्रवेश करने के लिये इस बन्दरगाह का स्थान है बड़े मार्के का। पीने के जल की इस देश में बड़ी कमी है। वर्षा न होने के कारण पहाड़ियों पर वृक्षों या घास का अभाव है। यहाँ के काले काले पहाड़ कदाचित ज्वालामुखीय शिलाओं के बने हैं।

३—लाल सागर का जल अपने नाम के विपरीत स्वच्छ नीले रंग का है। सितम्बर के मास में केबिन में बिजली के पंखों के होते हुये भी बड़ी गर्मी मालूम पड़ती है क्योंकि इस सागर के दोनों किनारे रेगिस्तानी देश हैं। इस समय यात्रियों को सबसे अच्छा स्थान जहाज के अगले हिस्से के ऊपर का पसन्द आता है जहाँ पर दोपहर को शामियाना लग जाता है और

* चित्रों में जो संख्या पड़ी है उसी संख्या वाले पैराग्राफ में उनका वर्णन दिया गया है। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्री डेक पर कुर्सी या रस्सों के ढेर पर बैठकर खूब हवा लेते हैं। रात के बारह बजे तक भी केबिन में जाने का जी नहीं चाहता।

४—अफ्रीका के इटेलियन पोर्ट "मसावा" में इटली के बैङ्क की इमारत। एबीसोनिया की लड़ाई में इटली की फौजों का यह खास केन्द्र था। खुश्की के कारण यहाँ पर हरियाली बिल्कुल नहीं है। एक दो बम्बई और सिन्ध प्रान्त के रहने वाले सौदागरों की दुकानें भी हैं परन्तु उनकी दुकान पर कपड़ा अधिकतः इटली देश का था न कि बम्बई का यद्यपि बम्बई वहाँ से अधिक नजदीक शहर है। सभी देश अपने माल की खपत चाहते हैं। जब बम्बई शहर में ही स्वयं भारत के माल के मुकाबिले विदेशीय माल अधिक मिलता है तो बाहर तो वहाँ का माल मिलने ही क्यों लगा। इटली के देशों में से भारतीय व्यापारी अधिक कमा कर यहाँ ला भी नहीं सकते। वहाँ का वहाँ ही खर्च कर देना होता है या देश छोड़ने पर बहुत सा भाग सरकार द्वारा जब्त कर लिया जाता है।

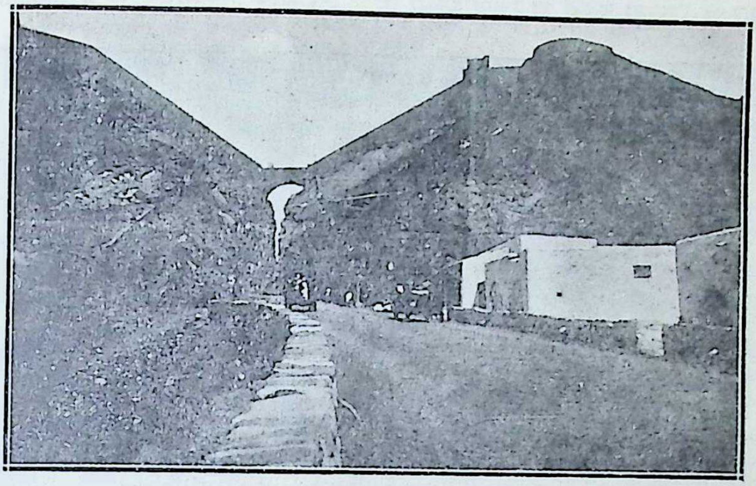

चित्र नं० २

चित्र नं० ३

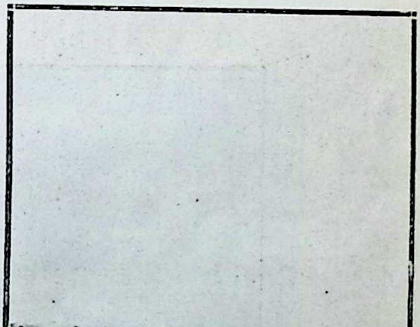

चित्र नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—मिश्र देश के "पोर्ट सईद" शहर की मशहूर अंग्रेजी दुकान जहां से यात्री चीज़ें खरीदते हैं। पोर्ट सईद में पूर्व और पश्चिम की रीति रिवाजों का मिश्रण खूब देखने में आता है। यहाँ की स्त्रियों का बुर्का पूर्वीय रिवाज का द्योतक है और सड़क पर बेचने वालों का मोल भाव में झगड़ा करने से हिन्दोस्तान के

६—इटली के 'वेनिस' शहर में सड़कों के स्थान पर नहरें हैं जिनमें नाव (गोन्डोला) से सफ़र किया जाता है। नहरों पर जगह जगह पुल बने हुए हैं। वेनिस की कई गलियां भारत के छोटे कस्बों की तरह ईंट से बनी हैं और कई तो काफी तंग भी हैं और काशी की गलियों की याद दिलाती हैं। वेनिस के इधर उधर कई द्वीप

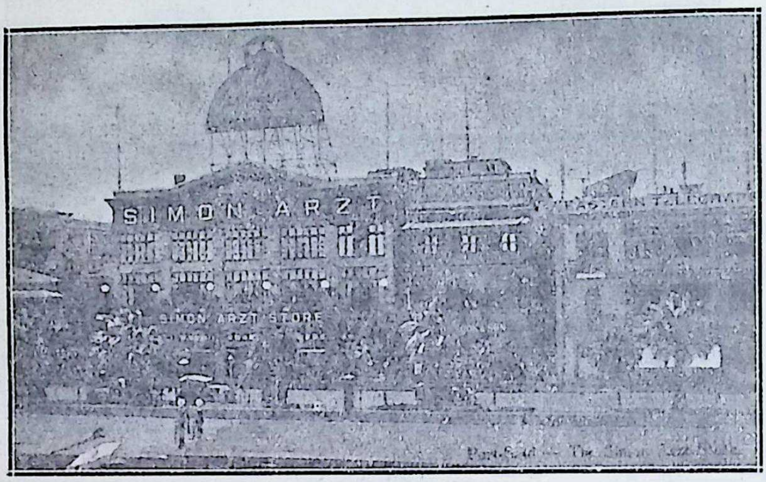

चित्र नं० ५

चित्र नं० ६

बाज़ार का दृश्य याद आता है। स्त्रियों के नग्न चित्र बेचने वाले परदेशियों को सड़क पर काफी परेशान करते हैं। एबीसीनिया की लड़ाई में मिस्र देश ने मौका पाकर स्वराज्य ले ही लिया। विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने के लिये यहाँ की सरकार अब काफी विद्यार्थी भेज रही है।

हैं जिन में तरह तरह के कारखाने हैं। एक द्वीप में लड़कियों को कपड़े पर काढ़ना सिखाने का मशहूर स्कूल है। वेनिस में कांच के कारखाने मशहूर हैं जिन में अनेक तरह की खूबसूरत चीजें बनती हैं। चाय के सेट (कांच के) दो दो सौ रुपये के मिलते हैं। प्रायः दुकानदार समझते हैं कि भारत से आने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब यात्री धनवान राजा महाराजा ही होते हैं इसलिये ऐसी चीजें खरीद लेने का बड़ा अनुरोध करते हैं। भारत की तरह सिगरेट इटली में सस्ती नहीं है (लेखक सिगरेट न पीने वाला होकर ठीक तो जानता नहीं) कारण कि कस्टम वाले प्रायः यही सवाल करते हैं कि साथ में तम्बाकू तो नहीं है और वेनिस में यह देखने में आया कि यात्री जो गोन्डोला में से सिगरेट का बचा हुआ छोटा टुकड़ा नहर के तट पर फेंक देते थे तो छोटे छोटे ग़रीब लड़के उन टुकड़ों को उठाकर पीने लगते थे।

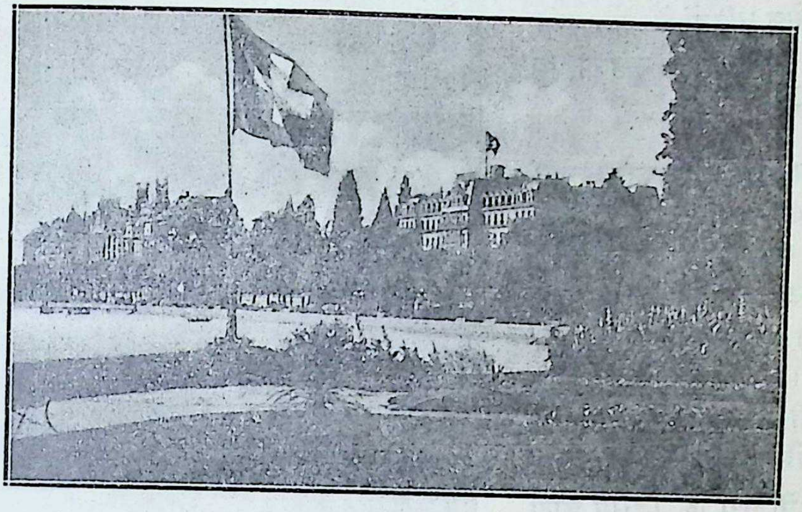

चित्र नं० ७

चित्र नं० ८

७—जनेवा में राष्ट्रसंघ (League of Nations) की नई इमारत, स्विटजरलैंड सचमुच सुन्दरता में अद्वितीय देश है। परन्तु जिन्होंने कश्मीर को देखा है वे कहते हैं कि कश्मीर में भी अनेक स्थान योरुप के इस देश से टक्कर सुन्दरता में ले सकते हैं परन्तु कश्मीर गवर्नमेंट न तो उनको देखने के लिये यात्रियों को आकर्षित करने का प्रचार करती हैं और न वहां पर यात्रियों को ठहरने इत्यादि का इतना सुभीता प्राप्त होता है। स्विटजरलैंड में भिन्न भिन्न धर्मावलम्वी और भिन्न भिन्न भाषा के बोलने वाले होते हुए भी देश में पूर्ण एकता है। इस देश में ७२ फीसदी मनुष्य जर्मन भाषा, २१ फी सदी फ्रेञ्च, ६ फीसदी इटेलियन और शेष २ फीसदी अन्य भाषाएँ बोलते हैं। एक फ्रेञ्च लेखक ने लिखा था "The swiss milk

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

their cows and live peaceably" अर्थात् स्विटज़रलैंड के लोग प्रायः देहातों में रहने वाले और मक्खन दूध पैदा करके यात्रियों के लिये होटल चलाकर निर्वाह करने वाले हैं। परन्तु यह बात ग़लत है। अंकों से पता चलता है कि यह देश मशीनों के उपयोग में किसी से पीछे नहीं है। यहां पर अनेक घड़ियों के और कृषि और बिजली इत्यादि की मशीनों के विशाल कारखाने हैं।

८—वियना शहर के तफरीह स्थान (Amusement Park) का एक भाग। यहां पर एक विशाल चरख है जो करीब २०० फोट ऊँचा होगा। इस पर चढ़कर वियना शहर का सारा दृश्य दिखाई देता है। पास में बनावटी पहाड़ी पर छोटी छोटी ट्रालियां हैं जो बिजली से चलती हैं और पहाड़ी के चारों तरफ बनावटी छोटी सी नदी है जिसमें छोटी छोटी नावें जल के साथ बहती हैं। ट्रालियां जब बड़े वेग से पहाड़ी की घाटियों और ढालों पर दौड़ती हैं तो उनपर बैठे हुए बच्चे और स्त्रियों की घिग्घी बंध जाती हैं और दर्शकों को चीखें सुनाई देती हैं। इन सवारियों के अतिरिक्त यात्रियों को तफरीह के लिये अनेक प्रकार की सवारी और सामान इस पार्क में रहता है। शाम के समय यहां बड़ी भीड़ एकत्रित रहती है।

९—चेकोस्लोवेकिया देश के 'प्राग' नगर में योरुप में सबसे पुरानी घंटा घड़ी। यह घड़ी सोलहवीं शताब्दी में बनी थी। घंटा बजने के साथ साथ इसमें तस्वीरें भी इधर से उधर चलती हैं और प्रत्येक तस्वीर जनता को एक खास उपदेश देने के लिये रक्खी गई है। चेकोस्लोवेकिया की दुकानों पर बहुत सी चीज़ों पर 'Made in England' लिखा देखा जिस से पता चलता है कि इङ्गलैंड के माल को खरीदने के लिये यह अच्छा क्षेत्र है और इस देश की इङ्गलैंड से बहुत मित्रता है। खेद है कि उसी मित्र ने आज मुसीबत के वक्त इस देश को लड़ाई से बचाने के बहाने उस को छिन्न भिन्न करा दिया।

१०—म्यूनिक का म्यूज़ियम—विज्ञान की शिक्षा का जनता में प्रचार करने के लिये संसार में इस म्यूज़ियम का पहला स्थान है। इसमें क़रीब ४०० कमरे हैं। म्यूज़ियम के नीचे बनावटी खानें बनी हैं जहां पर यह दिखाया गया है कि कोयला इत्यादि खनिजें कैसे निकाली जाती हैं। यदि भिन्न भिन्न प्रकार के रेलवे पुलों की बनावट दिखानी है तो वैसे पुल कमरे

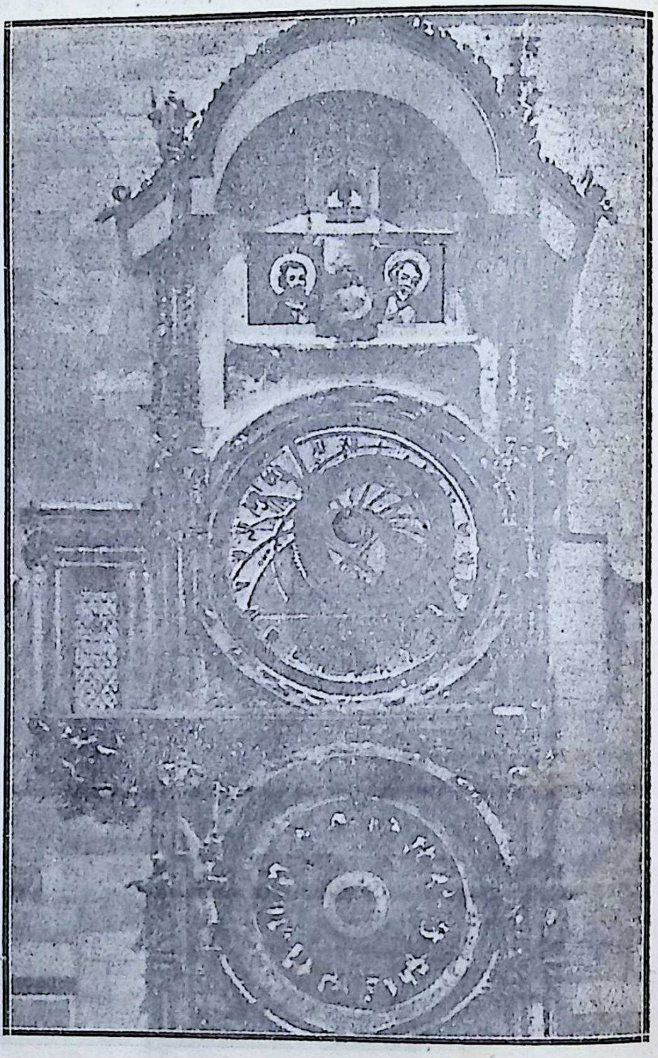

चित्र नं० ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छत के पास एक दीवार से दूसरी दीवार तक सचमुच के बना दिये हैं। हवाई जहाज़ों के कमरों में चिड़ियों के उड़ने के सिद्धान्त समझाने से आरम्भ किया है और अधुनिक ज़ैप्लन तक दिखाये गये हैं। अनेक मशीनों को दर्शकगण स्विच को दबाकर जितनी बार चाहें चलाकर देख सकते हैं, कोई रोक टोक नहीं। जर्मन गवर्नमेंट जनता में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार के लिये कितनी उत्सुक है इसका पता इस बात से चलता है कि इस म्युजियम की प्रवेश फी एक दिन की करीब १) और एक महीने को करीब २) है। जिससे प्रत्येक दर्शक को म्यूजियम को कई बार देखने की इच्छा होती है।

११—बर्लिन का पार्लेमेन्ट घर—नाज़ी गवर्नमेन्ट ने जर्मनी की काया पलट कर उस देश को संसार में एक अति उच्च स्थान प्राप्त करा दिया है। सरहद पर

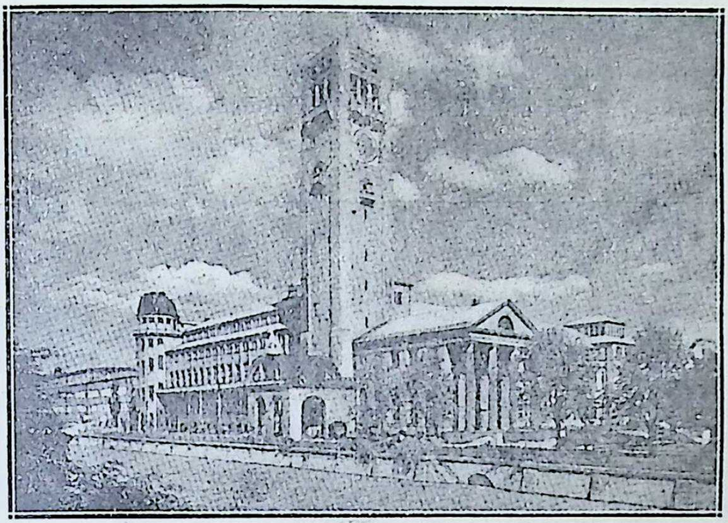

चित्र नं० १०

चित्र नं० ११

रेलगाड़ियां एक घंटे के करीब खड़ी रहती है तब सब यात्रियों के बटुए देखे जाते हैं और उनके पास जितना रुपया होता है उसकी रसीद उनको दे दी जाती है। जब वे यात्री देश से बाहर निकलते हैं तो फिर दूसरी सरहद पर उनके पास की रकम देखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है और पहली रसीद से मिलाई जाती है जिससे पता चल जाता है यात्री देश का पैसा तो बाहर नहीं ले जा रहा है। हमारे देश की तरह यह आज़ादी नहीं है कि बम्बई के बन्दरगाह से जो कोई चाहे जितना धन बांधकर ले जा सकता है। जर्मन लोगों को स्वयं भी देश से बाहर सैर को एक खास रकम ही ले जाने की इजाजत है उसके व्यय हो जाने पर या तो सैर करने वाले देश में वापिस आ जावें या फिर अपना निर्वाह विदेश में स्वयं पैसा कमाकर करें । यहां के राजे महाराजों की तरह जर्मनी से बाहर विदेशों में अपरिमित धन को व्यय करने कोई नागरिक नहीं जा सकता ।

चित्र नं० १२

१२—पेरिस शहर का प्रसिद्ध चौक (Place de la Corcorde)—यहां पर छः सड़कें आकर मिली हैं। रात को यहां पर बड़ी रौनक रहती है। कहते हैं पेरिस शहर की सी रौनक संसार में कहीं पर नहीं। विदेशियों से रात को यह रौनक दिखाने के लिये यहां की कम्पनियां खूब रुपया ठगती हैं। जिन नाचघरों को देखने की फीस साधारणतः २) है उनके लिये ये कम्पनियां १०) तक ले लेती है। राजा महाराजा से तो लेने की रकम का कहना ही क्या। उनकी खातिर करने के लिये तो कई एजेन्ट ने हिन्दुस्तानी भाषा खूब सीख ली है। वैश्या घरों में जाना सोसाइटी की नजर में बुरा नहीं गिना जाता और इन घरों में कई जगह नग्न स्त्रियों के दर्शन करने के लिये हमारे सैकड़ों धनी भारतीय भाई पेरिस की यात्रा करते हैं। पेरिस का (Art Museum) संसार में अद्वितीय गिना जाता है परन्तु इस म्यूज़ियम में भी कुछ दर्शकों को स्त्रियों के चित्रों में न्यूनाधिक नग्नता का प्रदर्शन करना अखरता है। जर्मनी और इङ्गलैंड के वासियों के मुकाबिले में इस देश के चेहरे पर उतनी रौनक नहीं है और वे उनसे साधारणतः कमजोर दिखाई देते हैं। कोई कोई कहते हैं कि यह देश कृषि प्रधान देश है इसलिये यहां के वासी अधिक गरीब हैं। जहां पर आलीशान महल खड़े हैं वहीं एक ओर महागरीबी का दृश्य मुझे भी दिखाई पड़ ही गया। वह यह था कि सड़क पर मूंगफली के छिलकों में से एक लड़का साबित मूंगफली तलाश कर रहा था और एक मूंगफली मिल जाने पर बड़ी खुशी से उसे खा गया। कदाचित भारत ऐसे ग़रीब देश का भी भिखारी एक मूंगफली के लिये इतना कष्ट न उठायेगा। यहां तो मांगने पर [illegible] अनायास ही कोई दो एक मूंगफली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे देगा। कहते हैं फ्रान्स स्वाधीनता, समानता और सबान्धवता (·Liberty Equality and Fratcinity) का देश है और वहाँ पर ऊँच-नीच, देशी-विदेशी में भेद-भाव दृष्टिगोचर नहीं होता। परन्तु जिन जिन मित्रों ने मुझसे इस बात की बड़ाई की उनसे मैंने पूछा कि क्या फ्रांसीसी हिन्दुस्तान (French India) की दशा बृटिश भारत से अच्छी है ? तब वे चुप हो गये। यह सब सिद्धान्त तथा नक्शे और इश्तहारों के द्वारा कराया था। बेचारे भारत को इस नुमाइश में भी स्थान न मिला। सुना जाता है कि पेरिस में रहने वाले कई गुजराती व्यापारी अपने खर्चे से एक भवन बनाकर भारतीय चीजों का प्रदर्शन करना चाहते थे परन्तु चूंकि वे उस भवन को बृटिश भवन से अलग रखना चाहते थे इस कारण उनको अपना भवन बनाने की आज्ञा न दी गई। बृटिश भवन भी बड़ा रद्दी था उसमें

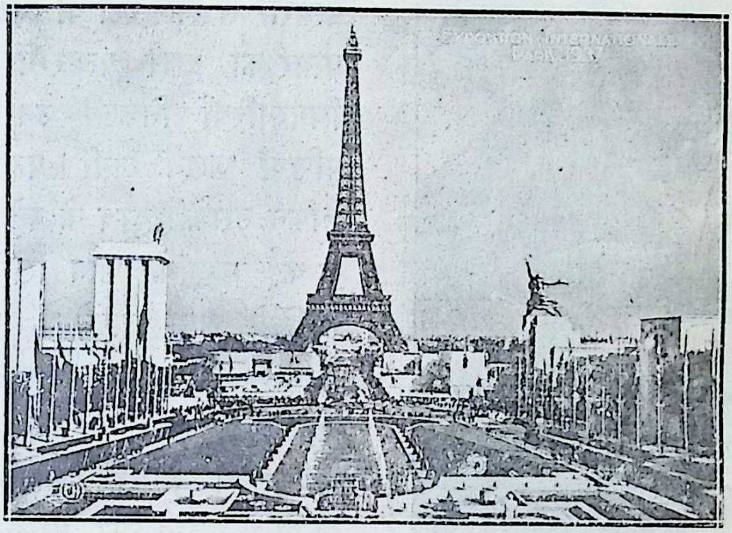

चित्र नं० १३

इन देशों के घर पर भले ही लागू हों उपनिवेशों में कदापि नहीं बरते जाते।

१३—पेरिस की सन् १९३६ की अन्तराष्ट्रीय नुमाइश में जर्मनी और रूस के भावों का दृश्य बड़े मार्के का था। बीच में ९०० फीट से अधिक ऊँचा ईफल टावर (Eiffel Tower) है जिसका स्थान उँचाई में संसार में दूसरा है। इस नुमाइश में संसार के प्रत्येक देश ने लाखों रुपये लगाकर अपना अपना भवन (pavellion) बनाया था जिसमें अपनी उन्नति का दिग्दर्शन चीजों और मोडिल्स के संग्रह से केवल मेज कुर्सी और खेल और शिकार के सामान का प्रदर्शन किया था। इङ्गलैंड के दर्शकों ने भी स्वयं बृटिश भवन की बुराई अंग्रेजी पत्रों में प्रकाशित कराई थी। यह नुमाइश करीब ६ महीने रही थी और प्रत्येक देश ने अपनी उन्नति का प्रचार संसार के यात्रियों में खूब किया और उनको अपने यहां आने को उत्साहित करने के लिये इश्तहार इत्यादि मुफ़्त उनमें बांटे। भारत इससे भी वंचित रहा इसका दुख है।

—निरंजनलाल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन

बहुत पुराने समय के लोगों को रोटी

१—भोजन तयार है

खाने को नहीं मिलती थी। उस समय के लोग खेती करना नहीं जानते थे। उस समय के लड़के लड़कियों को जब भूख लगती तब वे जंगली बेर इकट्ठे कर के खाते थे। कुछ लड़के पेड़ों के ऊपर चढ़ कर जगली फल तोड़ लेते थे। उनके मां बाप तेज पत्थर को लकड़ी में बांध कर भाला बनाते और जंगली जानवरों का शिकार करने जाते। कभी कभी वे नदियों और झीलों से मछलियाँ पकड़ लाते। लेकिन उस समय के लोगों को आग का पता न था। वे मांस या मछली को तेज पत्थर से काट कर कच्चा ही खा जाते थे। फिर किसी ने आग का पता लगाया। शायद कोई लड़का दो पत्थरों से खेल रहा था। उसने कई बार एक पत्थर को दूसरे पत्थर में मारा। इससे जो चिनगारियाँ निकलीं उनसे पास की सूखी पत्तियाँ जलने लगीं। पहले वह बहुत डरा लेकिन उसके कुटुम्ब के बड़े बूढ़े लोगों ने आग से कई तरह के काम लिये। वे ठंड से बचने के लिये आग तापते थे। वे कच्चे माँस को आग में भून कर और स्वादिष्ट बना कर खाने लगे। कुछ लोगों ने मछलियों और चिड़ियों को पकड़ने के लिये जाल तयार किये। कुछ लोगों ने हिरण और दूसरे जानवरों को मारने के लिये धनुष बाण बनाये।

मांस से ऊब कर कुछ लोग किसी दूसरे

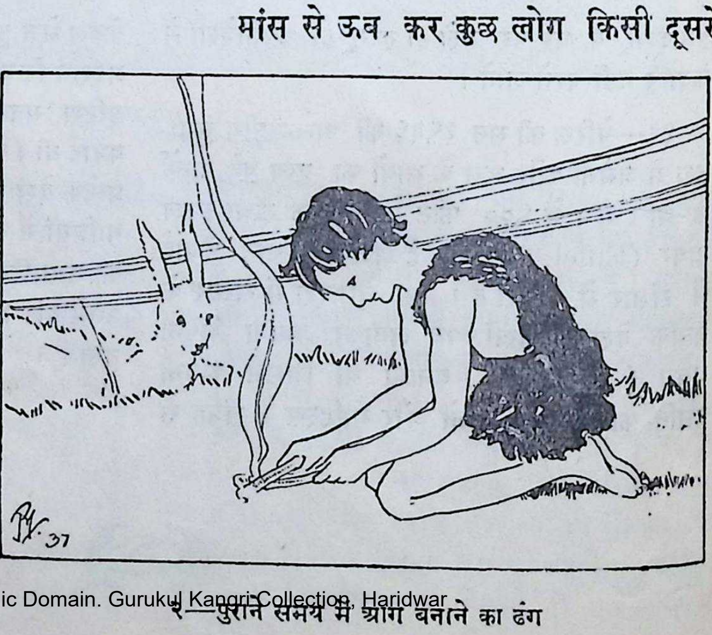

२—पुराने समय में आग बनाने का ढंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

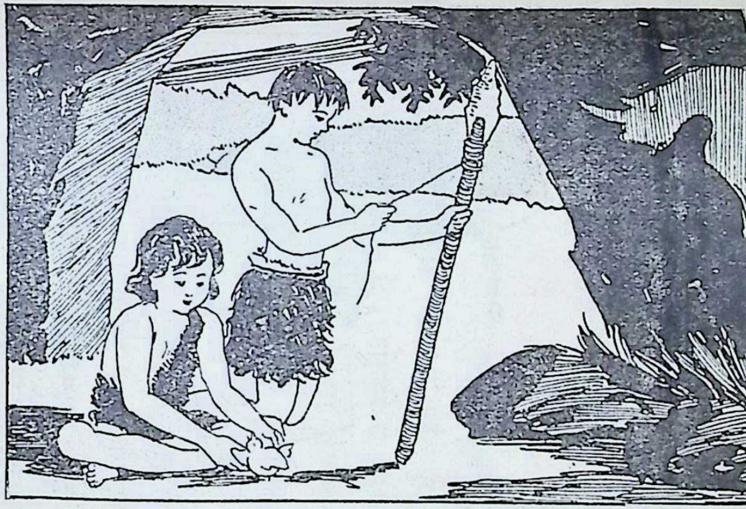

३—प्राचीन समय के जानवरों के शिकार करने का ढंग

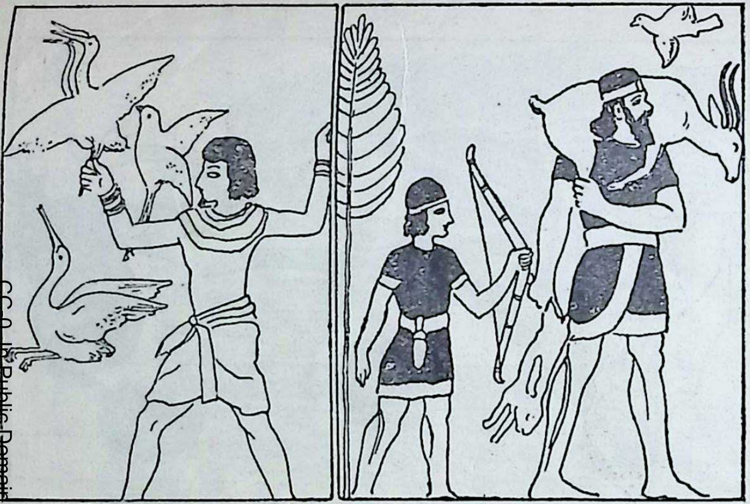

४—प्राचीन मिस्री और एसीरियन लोगों का भोजन

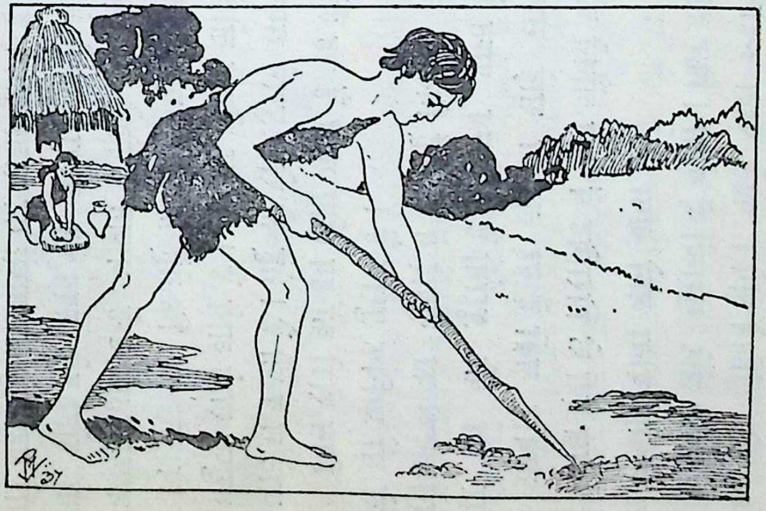

५—पुराने समय में खेतों की जुताई

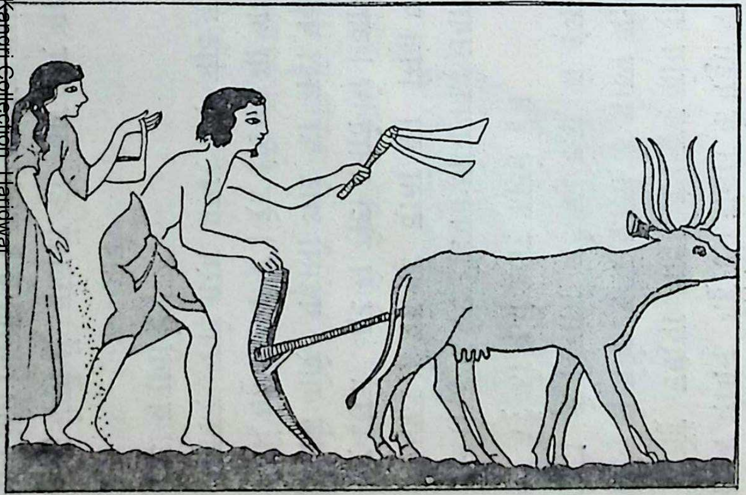

६—प्राचीन मिस्रियों का हल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन को खोजने लगे। पहले पहल उन्होंने गेहूँ को छोटे छोटे सूराखों में बोया। फिर हल जोत कर गेहूँ बोया जाने लगा।

मिस्र देश के पिरामिड में हल जोतने की जो तस्वीर बनी है वह लगभग साढ़े सात हजार वर्ष की पुरानी है। सिन्ध प्रान्त के मोहनजोदड़ो की खुदाई में जो गेहूँ मिले हैं वे इससे भी अधिक पुराने हैं।

जिस रोटी को हम लोग खाते हैं वह गेहूँ के आटे से बनती है। गेहूँ की रोटी पुराने समय से मनुष्य खाते आये हैं। प्राचीन मिस्री लोगों का विश्वास था कि गेहूँ को उनके एक देवता ने प्रसन्न होकर उन्हें भोजन के लिये दिया था चीनी लोग इसे स्वर्ग का वरदान कहते थे। हमारे यहाँ गेहूँ को अन्नों का राजा मानते हैं।

आज कल संसार के अधिकतर मनुष्यों का प्रधान भोजन गेहूँ है। संसार के बहुत बड़े भाग में गेहूँ उगाया जाता है। कुछ लोग इसे पुराने ढंग से बोते और काटते हैं योरुप और अमरीका के किसान बड़े बड़े हलों में इंजन लगाकर गेहूँ को बोते और काटते हैं।

अमरीका के रेड इंडियन लोग मकई उगाते थे। वे मकई के बड़े बड़े दानों को सिल पर पीस कर इसके आटे से रोटी बनाते थे। आज कल उनके गोरे पड़ोसी आटे की बड़ी बड़ी चक्कियों में गेहूँ पीसते हैं। रेड इंडियन माँ आटे को माड़कर चपटे गरम पत्थर पर आटे की मोटी रोटी बनाती है।

धान

कुछ देशों में बालकों को बार बार भात ही खाने को मिलता है। चीन, जापान, बरमा,

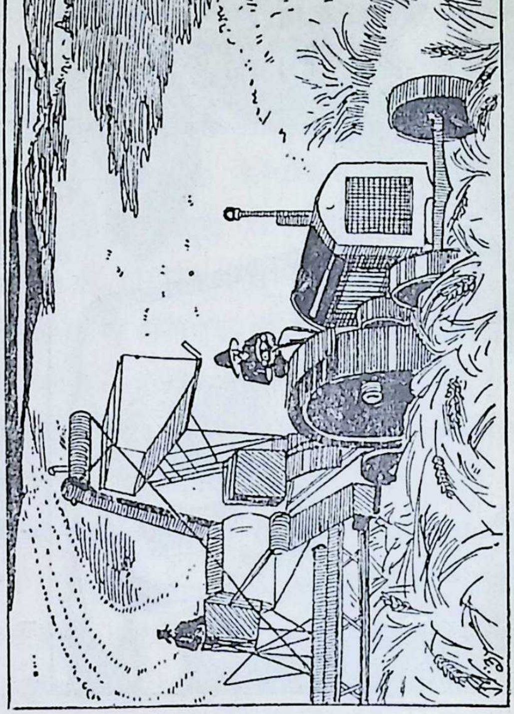

७—गेहूँ की कटाई

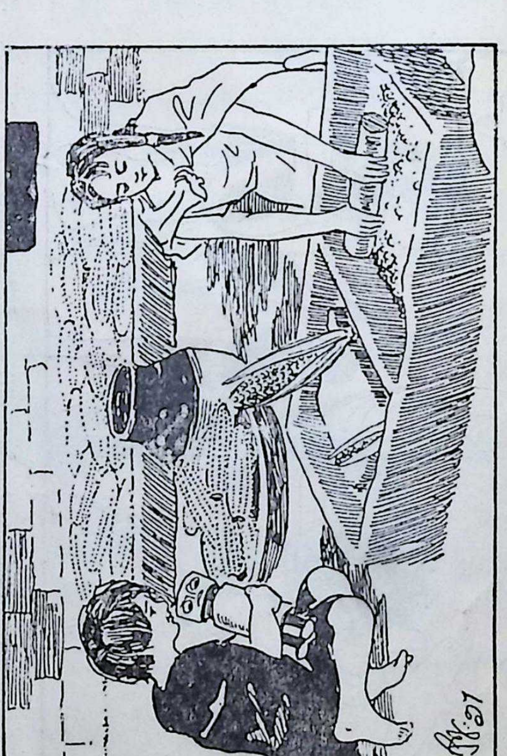

८—मकई का भोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम और हमारे देश के बहुत से भागों में लोग चावल ही खाते हैं। इन भागों में धान का उगाना आसान है। यहाँ धान सस्ता बिकता है। इस लिये ग़रीब लोग अधिकतर भात ही खाते हैं।

धान कुछ पानी भरे हुए कीचड़ वाले खेतों में उगता है। धान बोने के पहले किसान खेत को खूब जोतता है। जोतने के लिये वह हल में बैल, भैंसा, घोड़ा, या टट्टू जोतता है। औरतें घुटने तक भरे हुए खेतों में धान लगाती है। किसान को इस बात का बड़ा डर रहता है कि कहीं चिड़ियां उसके बीजों या छोटे अंकुरों को खा न जावें। अक्सर वह उनको डराने के लिये खेत में इधर उधर झंडे लगा देता है। कभी वह घड़े को रंगकर उल्टा लटका देता है। कभी वह टाट या दूसरे पुराने कपड़ों का आदमी बनाकर खड़ा कर देता था।

बहुत से गरीब ज्वार और बाजरा की रोटी खाते हैं। यह वर्षा होते ही बो दिया जाता है। इसको बहुत पानी की जरूरत नहीं होती है। इससे जानवरों के लिये बहुत सा चारा मिल जाता है। यह अनाज सस्ता बिकता है। इस लिये बहुत से गरीब लोग ज्वार बाजरा की रोटी खाते हैं। ज्वार का दाना सफेद और चौड़ा होता है। बाजरा का दाना छोटा और कुछ काला होता है। ज्वार की रोटी सफेद और बाजरा की रोटी काली होती है। इसका आटा कुछ खुरदरा होता है। माँ को रोटी पोने में बड़ी होशियारी करनी पड़ती है। जब पोते पोते रोटी का कुछ भाग टूट पड़ता है तो उसे फिर से रोटी पोनी पड़ती है।

मछली मारने का काम बहुत पुराने समय से होता आया है। आज कल भी बहुत से देशों के लोग मछली मार कर अपनी गुज़र करते हैं। वे तरह तरह की नाव ले जाकर समुद्र झील या नदी से मछली पकड़ते हैं। कुछ मछलियाँ बड़ी होती हैं। वे फँस जाने पर छुड़ाने की कोशिश करती हैं। इससे अक्सर नाव उलट जाती है। हवा और तूफान में भी

९—भोजन के लिये मछली मारना

मछली मारने वाला बड़े संकट में पड़ जाता है। जब वह मछली भर कर लौटता है तो सब लोग खुश होते हैं। कभी कभी उसे खाली ही लौटना पड़ता है।

जब नाव मछलियों से भरी हुई आती है तब लड़के लड़कियाँ मछलियाँ उतरवाने में मदद देती हैं।

शकर सब को अच्छी लगती है। बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों तक लोगों को शक्कर का पता न चला। पहले जब लोगों को मीठी चीज़ खाने की इच्छा होती थी तो वे शहद खाया करते थे। शहद की मक्खियाँ इस शहद को इकट्ठा करती हैं। फिर एक ऐसे पौधे का पता लगा जिसके रस में मिठास था। यह गाँठदार गोल पौदा

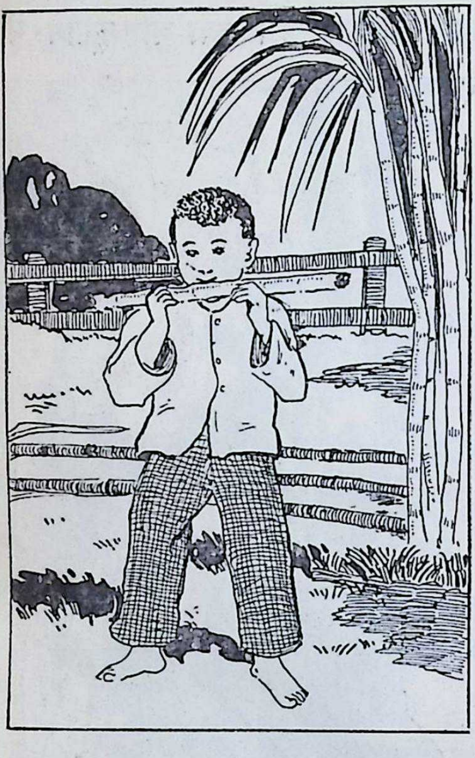

१०—गन्ना

काफी ऊँचा होता है। इसके सिरे पर लम्बी लम्बी पत्तियां होती हैं। जड़ के पास वाला भाग अधिक मीठा होता है। ऊपरी सिरा कम मीठा होता है। आज कल भी बहुत से लोग गन्ने को चूसते हैं। पत्तों को अलग करने के बाद इन गन्नों को कोल्हू में पेरते हैं। फिर इनके रस को औंट कर गुड़, राब और शक्कर बनाते हैं।

अमरीका के लोग शक्कर बनाने के लिये मेपिल नाम के बड़े पेड़ का रस निकालते हैं। वसन्त ऋतु में लोग मेपिल के बागों में जाकर हर एक पेड़ में छेद कर देते हैं। छेद के नीचे बाल्टी रख देते हैं। फिर इसी रस को इकट्ठा करके औंट लेते हैं। इसकी शक्कर भी गन्नों की

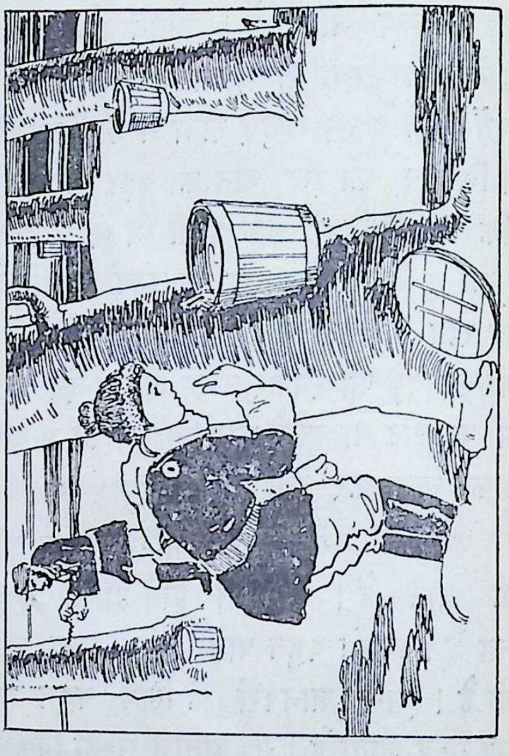

११—शक्कर बनाने के लिये रस निकाला जा रहा है

शक्कर की तरह होती है। योरुप के लोग चुकन्दर की जड़ों को पेर कर रस निकालते हैं और इस रस से शक्कर तयार करते हैं।

भोजन के लिये चिकनाई भी आवश्यक है। ठंडे प्रदेश में रहने वाले एस्किमो लोग ह्वेल और दूसरी मछलियों की चरबी खाते हैं। कुछ लोग तिल, सरसों, महुआ, बिनौले, पोस्त, जैतून, नारियल और मूँगफली आदि को पेर कर तेल निकालते हैं। इस तेल को वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

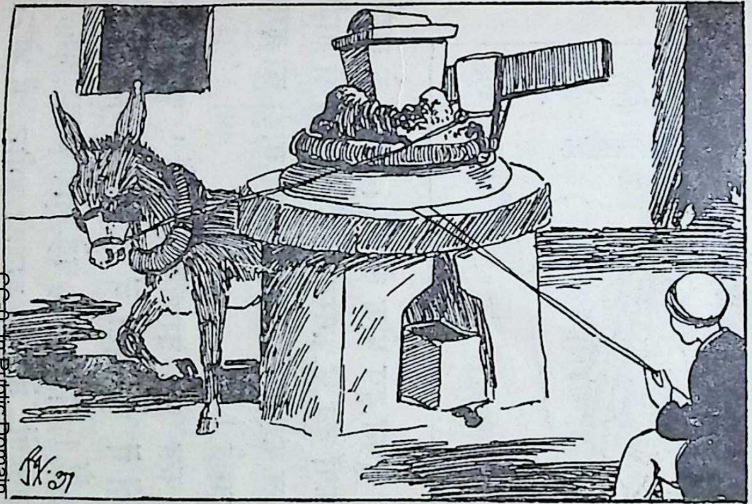

१२—तैल

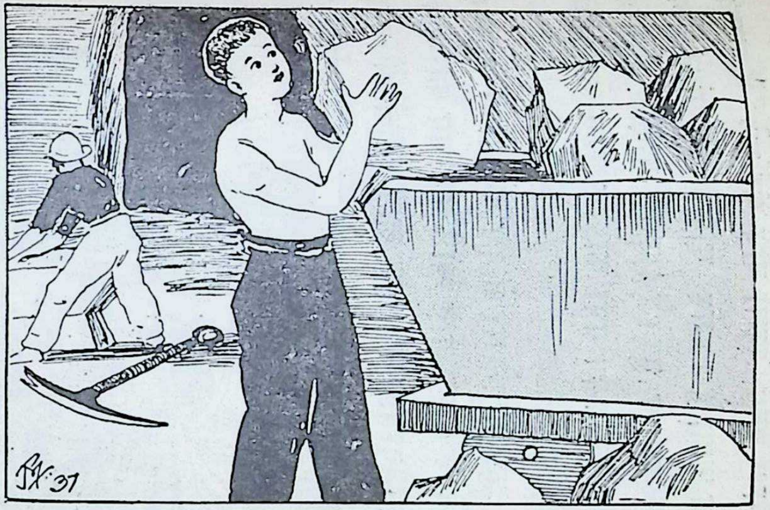

१३—नमक

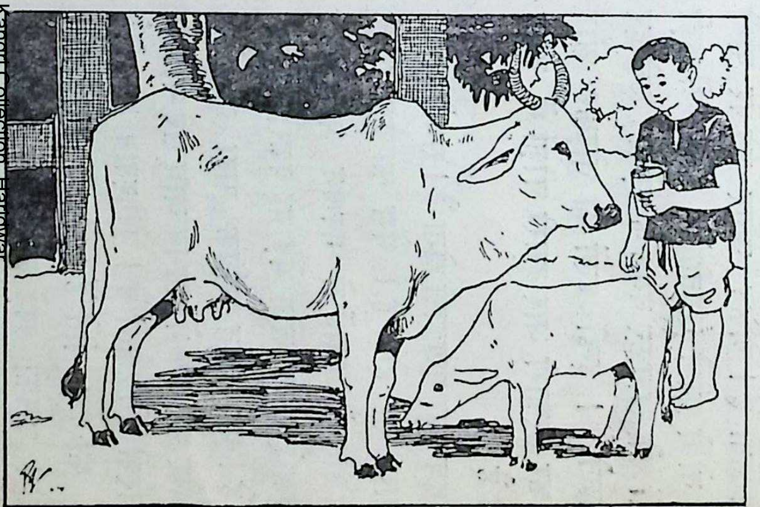

१४—दूध देने वाली गाय

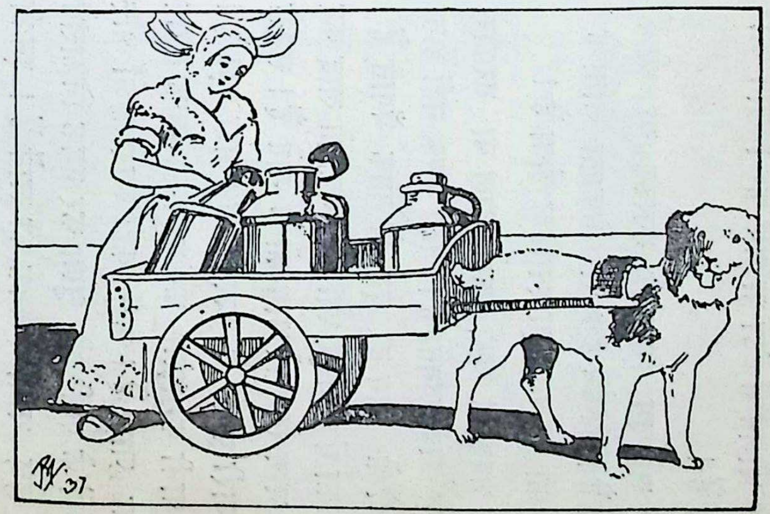

१५—बेल्जियम में दूध बेचने का ढंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने भोजन में ठंडा या औट कर मिलाते और खाते हैं।

सर्वोत्तम चिकनाई मक्खन या घी की होती है। मक्खन दूध से निकाला जाता है। गाय का मक्खन बड़ा स्वादिष्ट होता है।

नमक के बिना कोई दाल या तरकारी अच्छी नहीं लगती है। जहाँ नमक नहीं होता है वहाँ के लोग दूर दूर से नमक मँगाते हैं। अफ्रीका में ऊँटों के काफिले नमक को लाद कर एक भाग से दूसरे भाग को ले जाते हैं। समुद्रों के खारी पानी में अपार नमक भरा पड़ा है। इस पानी को सुखा कर बहुत सा नमक तयार किया जाता है। कहीं कहीं खारी कुओँ और झीलों के पानी को सुखा कर नमक निकालते हैं। कुछ भागों में नमक की खानें हैं। इनकी चट्टानें ऊपर से देखने से पत्थर की तरह कड़ी मालूम होती हैं। लेकिन अगर उन पर पानी डालो तो वे घुलने लगती हैं। लोग इन्हीं कड़ी चट्टानों को खोदकर नमक के बड़े बड़े डले दूर दूर भेजते हैं। इन्हीं डलों को तोड़कर और पीस कर तरकारी और दूसरी चीज़ों में नमक डालते है।

दूध बड़ा गुणकारी होता है। सबसे अच्छा दूध गाय का होता है। भैंस का दूध अधिक गाढ़ा होता है उसमें से मक्खन भी अधिक निकलता है। कुछ लोग भेड़ या बकरी का दूध पीते है। यह बहुत अधिक गाढ़ा होता है। इसके सेर भर दूध में लगभग आध सेर या ढाई पाव चरबी निकलती है। रेगिस्तान के लोग ऊंटनी का दूध पीते हैं। ऊंटनी बहुत ऊंची होती है। उसको खड़े खड़े दुहना पड़ता है। दूध का बर्तन रस्सी बाँध कर गले में लटका लिया जाता है। मगर एशिया के मंगोल लोग घोड़ी का दूध दुहते हैं। उससे वे दही की तरह कूमिस बनाते हैं। गधी का दूध बहुत कम लोग पीते हैं।

कुछ अपने घर में दूध देने वाला जानवर पालते हैं। कुछ लोग ग्वाले की गाय को अपने सामने दुहवाते हैं। कुछ लोग बोतलों में बन्द

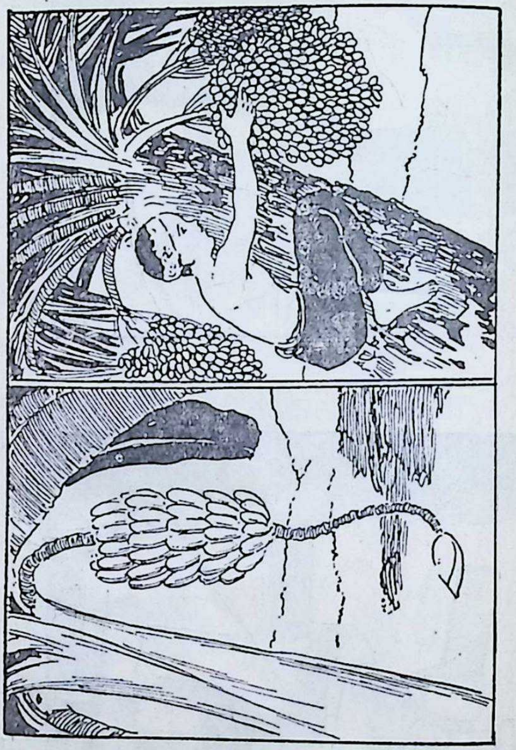

१६—केला और छुहारा

किया हुआ दूध मोल लेते हैं। हालैंड के लड़के लड़कियाँ दूध के कनस्तरों को एक छोटी गाड़ी पर रख कर बेचने जाते हैं। इस गाड़ी को कुत्ता खींचता है।

फल कई तरह के होते हैं। कुछ फल लताओं में कुछ पेड़ों में और कुछ झाड़ियों में लगते हैं। पहले इतने बड़े और अच्छे फल न थे। मनुष्यों ने इन्हें अच्छी ज़मीन में बोकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और समय से खाद और पानी देकर धीरे धीरे बड़ा किया है। आम हमारे बागों में लगता है। केला घर, कुएँ और खेत के पास लगाया जा सकता है। पपीता पानी बहने वाली नाली के पास या घर और बगीचे में अच्छा लगता है। नीबू और नारंगी के पेड़ बड़े हो जाने पर फल देने लगते हैं। बादाम, अखरोट, सेब, अंगूर, छुहारा आदि बहुत से फल बाहर से आते हैं। छुहारा रेगिस्तान की खुश्क जलवायु में पानी मिलने पर अच्छा लगता है। खरबूजा और तरबूज़ नदी के पड़ोस की तर ज़मीन में गरमी की ऋतु में उगाये जाते हैं।

तरह तरह के शाक और तरकारी ब गुणकारी होते हैं। यह दूसरे भोजन को शीघ्र पचाते हैं और पेट साफ रखते हैं। हमारे पड़ोस में बहुत से लोग मूली, आलू, भिंडी, गोभी, सेम, सोआ, मेथी, लौकी आदि कई तरह की तरकारी उगाते हैं। इनमें से कुछ चीज़ें हम लोग अपने घर या बगीचे की छोटी छोटी क्यारियों में भी उगा सकते हैं। ताज़ी तरकारी बड़ी अच्छी होती है। कुछ लोग साग को सुखा कर दूसरी ऋतु के लिये रख लेते हैं। दूर देशों में

१७—आलू

भेजने के लिये तरकारी बरफ में दबा कर भेजी जाती है। इससे वह रास्ते में नहीं बिगड़ती है।

चेकोस्लोवेकिया की हत्या

(शान्ति स्वरूप गुप्ता, एम० ए०)

चेक राष्ट्र का जन्म

चेकोस्लोवेकिया (Czechoslovakia) के स्वतंत्र राष्ट्र का जन्म देशभक्त मसारिक(Masaryk) बेनिस (Benes) और स्टीफानिक (Stephanik) के असीम साहस और अथक परिश्रम के द्वारा १९१९ के महायुद्ध के पश्चात हुआ। राष्ट्रपति विलसन (President Wilson) प्रजातन्त्रवाद और राष्ट्रवाद के भक्तों में थे। अतः उन्होंने इस नये राष्ट्र के बनने में सहायता दी। मि० लायड जार्ज (Mr. Lloyd George) और म० क्लामांसो (M. Clemenceau) ने इसकी सहायता राजनीतिक दृष्टि से की। वे बोहीमिया (Bohemia) को आस्ट्रिया (Austria) से अलग करना चाहते थे क्योंकि यहाँ पर उसके मुख्य औद्योगिक सामग्रियों के केन्द्र स्थित थे। इस प्रकार बोहीमिया (Bohemia) मोरेविया (Moravia) स्लोवेकिया (Slovakia) और रूथेनिया (Ruthenia) को मिला कर चेकोस्लोवेकिया के नये राष्ट्र की रचना की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ से ही यह एक कृत्रिम राष्ट्र था। महा-शक्तियां राष्ट्रवाद के सिद्धान्त को भूल गईं। अतएव चेकोस्लोवेकिया एक राष्ट्र न हो सका। इसकी जन-संख्या में ७० प्रतिशत चेक २० प्रतिशत जर्मन और १० प्रतिशत रूथेनियन थे। इसकी स्थिति भी भय से रहित न थी। शक्तिशाली राष्ट्र इसे चारों ओर से घेरे हुए थे। उत्तर-पश्चिम में जर्मनी, पश्चिम में आस्ट्रिया (जो अब जर्मनी से संयुक्त हो चुका है) पूर्व में पोलैंड (Poland) और दक्षिण में हंगारी (Hungary) ये राष्ट्र सदैव इस पर अपनी लोभ की दृष्टि जमाए रहे हैं। यहाँ का शासन-विधान उदार और प्रजातांत्रिक है। किन्तु इस राष्ट्र में कितनी ऐसी कमजोरियाँ हैं जो इसके पड़ोसियों को हस्तक्षेप करने का अवसर देती रही है।

अल्पसंख्यकों का प्रश्न

चेकोस्लोवेकिया की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वहाँ पर जर्मन स्लोवैक, पोल (Poles) मेगायर (Magyar) और रूथेनियन इत्यादि जातियों के अल्पसंख्यका की प्रथक प्रथक बस्तियाँ हैं। वे चेक राष्ट्र में अपनी सत्ता को मिलाना नहीं चाहते। अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी शासन-प्रणाली पर वे पूर्ण स्वायत अधिकार चाहते हैं। इतना ही नहीं इस अधिकार को प्राप्त करने के लिये वे जर्मनी. पोलैंड और हंगारी से सहायता पाने के लिये चेकोस्लोवेकिया के विरुद्ध खड़यन्त्र रचते रहते हैं। सूडेटन जर्मनों ने हर हेनलाइन (Herr Henlein) के नेतृत्व में नाज़ी (Nazi) दल बनाया और जर्मनी के तानाशाह हिटलर से सहायता के लिये प्रार्थना की। स्लोवैक लोगों ने भी देखा कि अवसर अच्छा है। फ़ादर श्री लिंका (Father Hlinka) ने सूडेटनों से मिलकर अपना उद्देश्य सिद्ध करना चाहा। पोल और मेगायरों ने पोलैंड और हंगारी से सहायता की याचना की। इस प्रकार इन अल्पसंख्यकों ने १९३८ में चेकोस्लोवाकिया के अंग-भंग करने की सम्पूर्ण सामग्री प्रस्तुत कर दी।

चेक-जर्मन कलह का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व

चेकोस्लोवेकिया का प्रश्न केवल अल्प-संख्यकों और बहुसंख्यकों का ही नहीं है। योरोप के अन्य राष्ट्र भी उसमें आवश्यकता से अधिक दिल-चस्पी ले रहे हैं। इनमें मुख्य पोलैंड, हंगारी और जर्मनी है। ये राष्ट्र प्राहा (Hlinka) की आन्तारिक कठिनाइयों से लाभ उठाकर अपने अपने राज्यों की सीमा बढ़ाना चाहते हैं।

पोलैंड और चेकोस्लोवोकिया में टेश्चेन (Teschen) प्रान्त के लिये पुराना झगड़ा चला आता है। यहाँ पोल अल्पसंख्यक रहते हैं और पोलैंड उन्हें चेक राष्ट्र से पृथक हो जाने और अपने में मिल जाने के लिये प्रोत्साहन देता रहा है। इसी प्रकार हंगारी की आंखें हंगेरिया इरेडेंटा (Hungaria Irredenta) पर गड़ी हुई हैं। हंगारी की स्थिति आज अत्यन्त ही कठिन हो गई है। हिटलर की शक्ति बढ़ती जा रही है। उसकी नजर रूमानिया के तेल के सातों पर हैं। वहाँ पहुँचने के लिये हंगारी बीच में पड़ता है। अतएव अभी से हंगारी हिटलर की मित्रता के लिए व्याकुल है। हंगारी के रीजेंट ऐडमिरल हौर्थी (Admiral Horthy) का बर्लिन जाना और हिटलर से मिलना इस बात का निश्चित प्रमाण है। यही कारण है कि हिटलर के चेक राष्ट्र से सूडेटनलैंड मांगने में भी हंगारी ने जर्मनी का ही साथ दिया।

जर्मनी सूडेटनलैंड (Sudetenland) पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिये उत्सुक था। वास्तव में हिटलर ही चेकोस्लोवेकिया का हत्यारा है क्योंकि अकेले पोलैंड और हंगारी चेक राष्ट्र का कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। न उनमें इतनी शक्ति थी और न इतना साहस कि ब्रिटेन, फ्रांस और रूस के समान शक्तिशाली योरुपीय राष्ट्रों की कुछ भी परवाह न कर निरपराध चेक राष्ट्र को युद्ध की धमकी देते।

जर्मनी को इतनी हिम्मत कैसे हुई?

अत्याचार को सहने की भी एक सीमा है। १९१८ में विजयी राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ भयंकर अन्याय किया। वरसायी (Versailles) के संधिपत्र ने जर्मनी को नितान्त निःसहाय और पंगु बना दिया। १९३२ तक जर्मनी महाशक्तियों के अत्याचार को चुपचाप सहता रहा। किन्तु एक मनुष्य के हृदय में बदला लेने की आंधी उड़ रही थी। वह था एडोल्फ हिटलर (Adolf Hitler) उसने नाज़ी दल का संगठन किया और १९३३ में जर्मनी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांसीलर (Chancellor) बन बैठा। संयुक्त और संगठित जर्मनी की सम्पूर्ण लौह-शक्ति से उसने वरसायी के टुकड़े टुकड़े कर डाले। जर्मन राष्ट्र फिर ५ वर्ष के अन्दर ही सशस्त्र और शक्तिशाली बन गया। अब हिटलर को जर्मनी की सीमावृद्धि करने की धुन सवार हुई। गूच(Goohc) के कथनानुसार हिटलर का राष्ट्रवाद में कट्टर विश्वास है। वह यूरोप के बिखरे हुए सम्पूर्ण जर्मनों को एक अखिल जर्मन साम्राज्य में मिलाना चाहता है। सबसे पहले उसने आस्ट्रिया की ओर दृष्टि फेरी।

डा० शुसनिग (Schusnigg) और डा० बेनिस (Benes) जानते थे कि यदि आस्ट्रिया और चेकोस्लोवेकिया में से किसी पर भी जर्मनी का अधिकार स्थापित हो गया तो दूसरा सुरक्षित न रह सकेगा। अतएव डा० हौड्ज़ा (Hodza) ने डैन्यूब नदी के निकटवर्त्ती राज्यों का एक डैन्यूबियन संघ बनाने के लिये अपना हौड्ज़ा प्लैन (Hodza Plan) बनाया। किन्तु ऐसा होने से पहले ही हिटलर ने आस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया और डा० बेनिस और डा० हौड्ज़ा दांत पीस कर रह गये। अब चेकोस्लोवेकिया की मुख्य रेलें शत्रु देश में होकर जाती है और इस प्रकार उसका आर्थिक अधिकार हिटलर के हाथ में आ गया है।

सूडेटन आन्दोलन

आस्ट्रिया पर अपना अधिकार स्थापित कर लेने के बाद हिटलर ने सूडेटनलैंड को लेने का संकल्प किया। हर हेनलाइन के नाज़ी दल को अब हिटलर का प्रोत्साहन मिलना आरम्भ हो गया और उसने सूडेटनलैंड की स्वाधीनता के लिए चेक राष्ट्र के विरुद्ध आन्दोलन करना आरम्भ कर दिया। हेनलाइन हिटलर का प्रतिनिधि है और उसकी मांगें हिटलर की मांगें थीं। चेक सूडेटनों का अलग होना नहीं चाहते थे। क्योंकि ऐसा होने से उनकी जनसंख्या और देश का एक बड़ा भाग जर्मनी के हाथों में चला जायगा। उनके मुख्य औद्योगिक प्रदेश और उनकी सशस्त्र सीमा पर जर्मनी का अधिकार हो जायगा और इस प्रकार वे जर्मनी के सामने पूर्णतया निःशक्त और असहाय बन जायंगे जर्मनी अत्यन्त ही शक्तिशाली बन बैठेगा। अब तो योरुप के अन्य राष्ट्रों को भी शंका हुई। बोहीमिया की स्थिति सैनिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। यदि वह जर्मनी के हाथ में चला जाय तो हिटलर के लिए दक्षिण-पूर्व की ओर काले सागर का मार्ग खुल जायगा। मेडिटरेनियन सागर का पश्चिमी छोर भी जर्मनों से सुरक्षित न रह सकेगा। पूर्व का प्रश्न

मध्य योरुप में चेकोस्लोवेकिया का स्थान

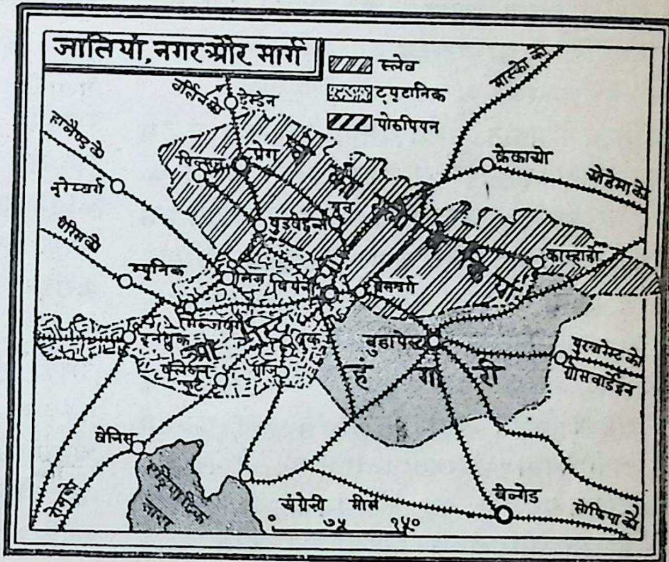

(Eastern Question) भी फिर जीवित हो उठेगा। फ्राँस, ब्रिटेन और रूस ने अपनी अपनी फौजें तय्यार करनी शुरू कर दीं। चेकोस्लोवेकिया की रक्षा के लिये सब ने वचन दे दिया।

जर्मनी की युद्ध के लिए तैयारी

हिटलर भी चुप न था। हेनलाइन ने कार्लबा (Carlsbad) में अपनी मांगें चेक राष्ट्र के सामने रक्खीं। उनमें मुख्य यह थीं—

१ सूडेटनलैंड का चेकोस्लोवेकिया से अलग होना।

२ जर्मन प्रदेश में जर्मन अफ़सर।

३ सूडेटनों की सामाजिक, धार्मिक और वैधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निक स्वतंत्रता और उनको स्वायत्त शासन का अधिकार।

अब ब्रिटेन ने लार्ड रन्सीमैन (Lord Runciman) को चेक और सूडेटनों के झगड़े का निपटारा करने के लिए मध्यस्थ बनाकर भेजा। उनकी चेष्टाएँ विफल हुई। अब ब्रिटेन और फ्रांस ने हिटलर के सामने अपने एंग्लों-फ्रेंच्च प्रस्ताव (Anglc-French Proposals) रक्खे। हिटलर ने उनको मानने से साफ़ इन्कार कर दिया और चेक राष्ट्र को युद्ध की धमकी दे दी। जर्मनी की फ़ौजें सुसज्जित होने लगीं। ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चेकोस्लोवेकिया ने भी जर्मनी का मुक़ाबिला करने के लिए सेनाओं को एकत्रित करना आरम्भ कर दिया। ऐसा ज्ञात होता था कि भयंकर महायुद्ध का होना अनिवार्य है।

मि० चेम्बरलेन का समझौते के लिए प्रयत्न

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मि० चेम्बरलेन ने इस समय सराहनीय साहस से काम लिया। संसार को दूसरे महायुद्ध की भयंकरता से बचाने और चेक प्रश्न को शान्ति पूर्वक तै करने के लिए वे वायुयान में स्वयं उड़कर जर्मनी गए और बर्ख़टेसगाडेन में (Berchtesgaden) हिटलर से मिले। दो तीन दिन बाद वे फिर गोडेसवर्ग (Godesberg) में जर्मनी के चांसलर से मिले। वहाँ हिटलर ने उन्हें अन्तिम बार अपनी मांगें (Memorandum) दे दिया। यह एक प्रकार की युद्ध की धमकी थी। संसार में भय और निराशा के बादल फिर छाने लगे। ब्रिटेन के नौ-सेना अध्यक्ष श्री० डफ़-कूपर (Duff Cooper) ने अंग्रेज़ी जंगी बेड़े को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दे दी। मि० चेम्बरलेन ने शान्ति-रक्षा के लिए अब अपना अन्तिम प्रयत्न किया और समझौता कराने के लिए इटली के तानाशाह और हिटलर के परम मित्र सिगनर मुसोलिनी (Signer Mussolini) से अपील की। अब हिटलर भी कुछ सशंकित हुआ और उसने म्यूनिक (Munich) में मुसोलिनी, मि० चेम्बरलेन और फ्रांस के प्रधान मंत्री म० दलादियेर (M. Daladier) को आमंत्रित किया।

म्यूनिक का समझौता

म्यूनिक में फ्रांस और ब्रिटेन ने हिटलर की सब शर्तें स्वीकार कर लीं। सूडेटनलैंड जर्मनी को मिल गया। पोलैंड और हंगारी भी जिन जिन प्रदेशों को पाना चाहते थे उनके लिए चेक राष्ट्र की सम्मति पा चुके हैं। इस प्रकार निरीह हिटलर ने म्यूनिक में यूरोप के शक्तिशाली राष्ट्रों से मिल कर असहाय और निर्दोष चेकोस्लोवेकिया की निर्मम हत्या कर डाली।

चेक राष्ट्र के साथ विश्वासघात

मि० चेम्बरलेन ने निःसन्देह संसार को महायुद्ध के गर्त्त में गिरने से बचा लिया किन्तु योरुप के राष्ट्रों ने चेक राष्ट्र के साथ जो कलंकित विश्वास घात किया है उसके लिए चेकोस्लोवाकिया सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा। उसकी आर्थिक स्वतंत्रता का गला घुट चुका है। उसकी राजनीतिक स्वतंत्रता के दिन भी इने गिने हैं। उसकी स्वतंत्रता की रक्षा का उत्तरदायी ब्रिटेन था। लार्ड रन्सीमैन को समझौते के लिए भेज कर, बहुत से अल्प-संख्यकों का मिलाकर चेकोस्लोवेकिया को जन्म देकर, एँग्लो-फ्रेंच्च प्रोपोज़लस (प्रस्ताव) उससे ज़बरदस्ती स्वीकृत कराकर और अंतर्राष्ट्रीय सङ्घ का सदस्य हो कर, ब्रिटेन ने उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व ले लिया था। किन्तु उसकी रक्षा करना तो दूर, उसे म्यूनिक में बुलाया तक नहीं गया। उसके साथ युद्ध में पराजित शत्रु की अपेक्षा से भी अधिक कठोर व्यवहार किया गया। यह विश्वासघात ब्रिटेन की कीर्ति को संसार में सदैव अमर रक्खेगा।

भविष्य

संसार से आज युद्ध के काले बादल हट गए हैं। २० वीं शताब्दी की सभ्यता और संस्कृत को नया जीवन मिल गया है। किन्तु जर्मनी के हृदय में अभी तक है वही अशान्ति और साम्राज्य-विस्तार की विकट कामना। संसार का प्रत्येक राष्ट्र अस्त्राकरण की दौड़ में सब से बाज़ी लेने की चेष्टा कर रहा है। साम्राज्यवाद का भूत सभी राष्ट्रों के सिर पर सवार है। पारस्परिक विश्वास के स्थान पर है पारस्परिक अविश्वास। आर्थिक और सांस्कृत प्रतियोगिता की आंधी में प्रत्येक राष्ट्र उड़ जाना चाहता है। इन सब का परिणाम क्या होगा ? इस प्रश्न का उत्तर जितना ही सरल है, उतना ही भयंकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

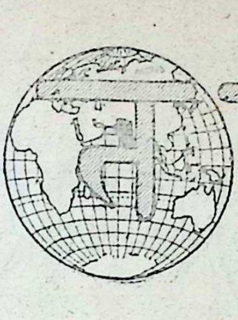

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारख़ानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

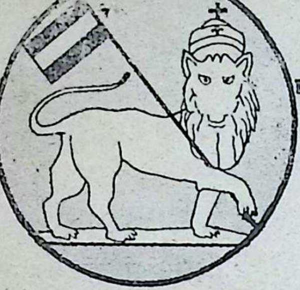

एबिसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ।।) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

भूगोल एटलस

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० X ७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १॥) सजिल्द १॥।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

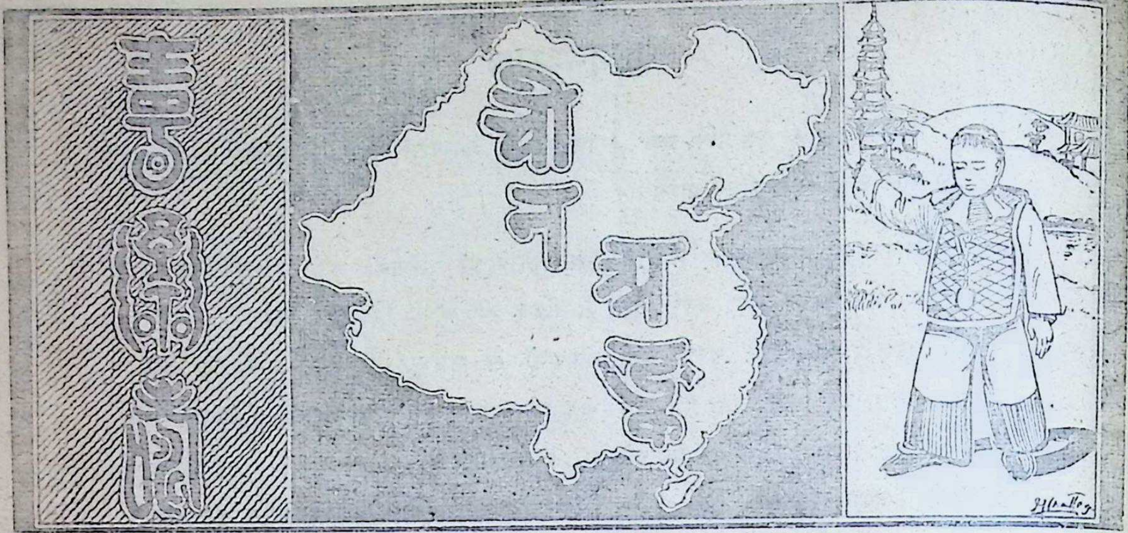

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं ।।पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें । मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांग काई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है । इसमें कई नक़शे और चित्र हैं । बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ॥) ।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है । प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे । चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर) । इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है । इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं । अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं । मूल्य ॥) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना ।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ट पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेलस (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार, रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एरुटेएट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य यरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज़ है। मूल्य केवल ॥)

देश-निर्माता

इस ७२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मुसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिलसुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। बिहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़शे। बिहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।=) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भूगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांङ्कों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ।-)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास,साहित्य;वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

卐 भुवनकोष 卐

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ६०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बगदाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़गानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चार भागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १॥) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्रायः निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे :—

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद, त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्रायः निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा। इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे :—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४—गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२—पटियाला, २३—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवाँ, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्नियो, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़गानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फिनलैंड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलंड, १४—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया १७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रोस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्पा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—१४—महाराष्ट्र, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज्वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़िल, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्पेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फरात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज, पनामा, चीन की ग्रांड केनाल।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरिया, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का।=) वार्षिक ४)रु० समस्त पुस्तक माला का १०)रु०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol".**

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-
3rd page of the cover „ 12/-
4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 106, Jumuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

दिसम्बर १९३८

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" के सोलहवें वर्ष के उपलक्ष में

"भूगोल"

का

देशी राज्य-अङ्क

पृष्ठ-संख्या लगभग २००, चित्र-संख्या लगभग १००, नक़शों की संख्या लगभग २०, मूल्य साधारण संस्करण २) रु०, राज-संस्करण ५) रु० ।

आगामी जुलाई (१९३९) में "भूगोल" का देशी राज्य-अङ्क प्रकाशित होगा। फेडरेशन योजना के सिर पर आने से प्रत्येक हिन्दुस्तानी को देशी राज्यों का ज्ञान आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रख कर देशी राज्य-अंक का प्रकाशन हो रहा है।

इस विशाल अंक में हिन्दुस्तान के छोटे बड़े सभी राज्यों का समावेश रहेगा। सम्पूर्ण सूची अगले मास के "भूगोल" में देखिये। काश्मीर, हैदराबाद, मैसूर, बड़ौदा, ग्वालियर, इन्दौर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, जैपुर, कोटा, रीवाँ आदि अधिक प्रसिद्ध लगभग १०० राज्यों का पूरा परिचय रहेगा।

प्रत्येक राज्य की स्थिति, विस्तार, संक्षिप्त इतिहास, जन-संख्या, कारबार, आर्थिक महत्व, भारत सरकार से सम्बन्ध, शासन-प्रणाली, राजा और प्रजा का सम्बन्ध आदि सभी जानने योग्य विषय रहेंगे।

यह देशी राज्य-अंक आवश्यक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित रहेगा। "भूगोल" के आकार की पृष्ठ-संख्या लगभग २०० होगी। मूल्य साधारण संस्करण का २) रु०, राज-संस्करण का ५) रु०। राज-संस्करण बढ़िया आर्ट पेपर पर छपेगा। जिल्द भी आकर्षक और मज़बूत रहेगी।

जिन नये या पुराने ग्राहकों का चन्दा मई सन् १९३९ से अप्रैल सन् १९४० तक आगया है या १९३९ के मई महीने के पहले आ जायगा उनको देशी राज्य-अंक का साधारण संस्करण उनके चन्दे में ही मिलेगा। यदि वे साधारण के बदले राज-संस्करण चाहेंगे तो उन्हें "भूगोल" के वार्षिक मूल्य के साथ ३) रु० अधिक अर्थात् ६) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजना चाहिये।

देशी राज्य-अंक परिमित संख्या में ही छपेगा। अतः यथा शीघ्र वार्षिक मूल्य ३) अथवा इस विशेषांक का मूल्य २) या ५) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित कर लीजिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—मक्का की तीर्थ-यात्रा	१
२—साँपों की दुनिया	३
३—मेरी नासिक यात्रा (ले० जगत सिंह 'विद्यार्थी')	६
४—भीनमाल-भूगोल (ले० मनफूल त्यागी 'प्रभाकर')	७
५—जालोर का क़िला (ले० भूपसिंह चूड़ामणि 'विशारद')	१७
६—दक्षिणी अमरीका में फेसिस्ट राष्ट्रों की गुप्त तैयारियाँ	१९
७—वाहन या बारबरदारी	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १५] पौष सं० १९९५, दिसम्बर १९३८ [सं० ८

मक्का की तीर्थ-यात्रा

मक्का मुहम्मद साहब का जन्म स्थान होने से इस्लाम धर्म का प्रधान तीर्थ स्थान है। मक्का नगर एक उजाड़ घाटी में बसा है। यह नगर लालसागर के जद्दा बन्दरगाह से ६० मील पूर्व की ओर स्थित है। मक्का के चारों ओर सब कहीं खुश्क रेगिस्तान और नंगी पहाड़ियाँ हैं। यहां किसी प्रकार का कारबार नहीं है। फिर भी यह छोटा नगर जिसकी आबादी ७०,००० से भी कम है दुनिया के प्रसिद्ध नगरों में गिना जाता है।

दिन भर में पांच बार दीनदार मुसलमान मक्का (काबा) की ओर मुंह करके प्रार्थना (नमाज़ पढ़ते हैं) करते हैं। सभी धार्मिक मुसलमानों की सबसे बड़ी इच्छा यह रहती है कि वे अपने जीवन में एक बार मक्का का दर्शन (हज) कर सकें। इसी से हर साल दूर दूर से मुसलमानों की भीड़ यहां हज करने आती है। इस भीड़ में स्त्री, पुरुष, बुड्ढे, बच्चे सभी रहते हैं। कुछ पैदल आते हैं। कुछ ऊंट पर सवार होते हैं। कुछ मोटर पर चढ़कर आते हैं। जद्दा बन्दरगाह तक कुछ छोटी नावों (धौ) और कुछ बड़े जहाजों पर चढ़कर आते हैं। रोज़ा (उपवास), नमाज़ (प्रार्थना), खैरात (दान) और हज (मक्का तीर्थ-यात्रा) चार ऐसे कर्त्तव्य हैं जिनका पालन करना हर एक मुसलमान के लिये आवश्यक है। जिनके पास पैसा है और जो तन्दुरुस्त हैं उन मुसलमानों को ज़िन्दगी में कम से कम एक बार मक्का का हज (तीर्थ यात्रा) करना अनिवार्य है। जो हज करके लौटते हैं वे हाजी कहलाते हैं। मुसलमानों में उनका बड़ा मान होता है। मक्का में हिन्दुस्तानी नवाब नाइजीरिया के हबशी, अरब के बद्दू आदि सभी देशों के मुसलमान दिखाई देते हैं।

हज की यात्रा जुलहिज्जा नाम के मुसलमानी महीने में होती है। लेकिन मुसलमानी वर्ष चन्द्र-मासों से गिना जाता है। इसी से मुसलमानी वर्ष में केवल ३५४ दिन होते हैं। इसी से हज का महीना हर साल लगभग ११ दिन पहले पड़ता है। १९३८ में जुलहिज्जा का पहला दिन ७ जनवरी को पड़ा। लेकिन यात्रा की सबसे अधिक भीड़ ८, ९ और १० तारीख को हुई।

दीनदार मुसलमान हफ़्तों तक मक्का शहर और उसके पड़ोस में इकट्ठे होते हैं। इस प्रदेश में प्रवेश करते ही प्रत्येक हाजी (यात्री) अहराम की पोशाक (लिबास) अख़्तियार करता है। इसे वह आजन्म निभाने की कोशिश करता है। अन्त में वह उसके कफ़न का काम देता है। इसमें दो बग़ैर बाँह के (बिना सिले हुए) मलमल या ऊन के टुकड़े होते हैं। एक टुकड़ा कमर में लपेटा जाता है, दूसरा कन्धे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला जाता है। हज (यात्रा के समय सिर खुला रहना चाहिये। कुछ लोग तेज धूप से बचने के लिये छाया कर लेते हैं।

जुलाई के महीने की अष्टिमी (आठवें दिन) शहर में प्रवेश करने के बाद यात्री सबसे पहले मस्जिद अलहाम (पवित्र मस्जिद) में जाते हैं। इसका आंगन बहुत बड़ा है। इसी के अन्दर पवित्र काबा और बैत-अल्लाह या ईश्वर का घर स्थित है। यह एक बहुत पुराना चौकोर पत्थर है। कहा जाता है कि इसको इब्राहीम ने बनाया था। मुसलमान लोग उसकी बड़ी इज्जत करते हैं। दक्षिण-पूर्व कोने पर चांदी से जड़ा हुआ जमीन से चालीस इंच की ऊँचाई पर यहाँ का प्रसिद्ध काला पत्थर रक्खा है। यह उल्का पात (मेट्योराइट) का काला पत्थर है। पर यहाँ के लोगों का विश्वास है कि प्रथम काबा बनाने के लिये गेब्रियल नामी फरिश्ते ने स्वर्ग से इस पत्थर को लाकर इब्राहीम को भेंट दिया था। पास ही ज़म ज़म नाम का प्रसिद्ध कुआ है। कहा जाता है कि इसी कुएँ के पानी से अरबों के पितामह हाजो और इस्माइल ने अपनी प्यास बुझाई थी। इसका पानी पाक माना जाता है और दूर दूर के मुसलमान इस पानी से भरी बोतलें मँगाते हैं।

बड़े आंगन में दीनदार मुसलमान सात बार परिक्रमा करते हैं और काले पत्थर को चूमते हैं। फिर वे ज़म ज़म (कुए) का पानी पीते हैं। शाम होने पर हाजी लोग कतार बनाकर मुना की घाटी की ओर धीरे धीरे चलते हैं। वहीं पहुँचने पर वे रात विताते हैं। दूसरे दिन सबेरा होते ही वे पास वाले पहाड़ पर जाते हैं। यहाँ आने में तीन दिन लगते हैं। यहाँ वे पूरा दिन प्रार्थना करने में लगाते हैं। कहा जाता है कि इसी पहाड़ी पर कुरान का इलहाम हुआ था। ऊँच-नीच का भेद भाव छोड़कर सभी मुसलमान एक तरह की लिबास (पोशाक) में प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनको और इस्लामी राज्यों को ठीक रास्ते पर चलावे।

शाम के समय वे धार्मिक आनन्द में डूब जाते हैं। फिर वे पहाड़ को छोड़कर पास वाले स्थान में सारी रात नमाज़ पढ़ने और कुरान पढ़ने में विताते हैं। जुलहिजा के दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही वे मुना की वादी में प्रवेश करते हैं। यहाँ हर एक यात्री किसी न किसी पशु का बलिदान करता है। अपनी औकात के मुआफिक कोई बकरी, कोई गाय और कोई ऊंटनी की बलि चढ़ाता है। यह बलि पुरानी बलि की यादगार में की जाती है जो इब्राहीम ने ईश्वर की आज्ञा के अनुसार अपने बेटे इस्माइल के बदले में चढ़ाई थी। बलि के पशु इसी जगह पर मोल लिये जा सकते हैं। इससे पड़ोस के बद्दू अरबों को काफी आमदनी हो जाती है। बलि के पशु का कुछ माँस पकाकर खाया जाता है। शेष भाग गरीबों को बाँट दिया जाता है। ये लोग बहुत सा मांस धूप में सुखा कर भविष्य के लिये रख लेते हैं। इसके बाद हर एक हाजी के सिर का मुंडन होता है। उसके नाखून काटे जाते हैं। कटे हुए नाखून और बाल वहीं गाड़ दिये जाते हैं। इसके बाद काबा का अन्तिम दर्शन किया जाता है। इस प्रकार हज की क्रिया समाप्त हो जाती है।

आज कल हजाज का शासन कट्टर अरबी लोगों के हाथ में है। यहाँ फोटो उतारने की उन्होंने सख्त मनाई कर रक्खी है। एक बार एक अंग्रेज़ ने छिपकर यहाँ के चित्र (फिल्म) लिये। जब मिस्र में इनका प्रदर्शन किया गया तब बहवी लोगों को बहुत बुरा लगा। दूसरे वर्ष बादशाह इब्न सऊद ने आज्ञा निकाली कि सारे केमरे ज़ब्त कर लिये जावें। इन सब असुविधाओं के होते हुये भी हज के यात्रियों की संख्या हर साल बढ़ती जा रही है। मिस्र देश का राजा अपने खर्चे से वहाँ के रास्ते में पेड़ लगाने और पानी का नल लगाने का विचार कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांपों की दुनिया

सांपों को हम अपना दुश्मन समझ कर उन से बचने की कोशिश करते हैं और जहां कहीं उनको देखते हैं उनको मार डालना ही अपना धर्म समझते हैं परन्तु बहुत से लोग यह नहीं जानते कि उनमें से कितने ही बिना ज़हर के होते हैं और उनसे हमको हानि का जगह लाभ होता है। कुछ सांप हरे, लाल, पीले, बैजनी रंग में बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं परन्तु दुःख है कि लोग उनको भी ज़हरीला समझ कर मार डालते हैं। वे ज़हरीले नहीं होते और उन्हीं जीवों को खाते हैं जो मनुष्य जाति को हानि पहुँचाते हैं।

प्रत्येक जीव को अपना जीवन कायम रखने के लिये खाना, दुश्मनों से अपने को बचाना और अपने आस पास की जगह को अपने रहने के लायक बनाना आवश्यक है। यदि हम सांपों के जीवन के इतिहास का चित्र खींचें तो पता चलता है कि शुरु में सांप आजकल के सांपों जैसे नहीं थे। ये गिरगिट के समान थे क्योंकि इनके पैर थे। यदि हम आजकल एक गिरगिट के चारों पैर काट दें तो वह कुछ कुछ सांप सा दिखाई देने लगता है। उन पैर वाले सांपों के पैर धीरे धीरे नष्ट हो गए। इसका कारण शायद यह है कि वे जमीन के अन्दर सूराखों में रहने लगे (आजकल भी सांप ज़मीन के अन्दर सूराखों में रहते हैं जिन्हें बांबी कहते हैं) सूराखों में घुसते समय उनके आगे के पैर रुकावट डालते थे इस लिये धीरे धीरे कई हजार वर्ष के बाद इन लोगों के अगले पैरों की जरूरत न होने की वजह से वे नष्ट हो गये। और धीरे धीरे पिछले पैरों की जगह छोटे छोटे पंजे रह गए। वे भी कुछ समय में गायब हो गए और कमर की हड्डियां सीधी हो कर सांप के लम्बे सीधे बदन से मिल गईं। इस प्रकार के सांप आजकल भी बहुत सी जगहों में पाए जाते हैं।

अब धीरे धीरे सांपों में और भी परिवर्तन होने लगे। अधिकतर परिवर्तन उन को अपना खाना आसानी से पाने के लिये हुए। अक्सर वे किसी भी जानवर को विना उसके छोटे बड़े का विचार किये ही अपना शिकार बनाते और पकड़ने के बाद दोनों में खूब खींचातानी भी होती और अक्सर शिकार छूट कर निकल भागता। इस लिये सांप के तालू में तेज नोकीले दांत जमने शुरू हुए यहां तक कि धीरे धीरे इतने दांत जम गए कि तालू का कोई भी हड्डी का हिस्सा दांत से खाली नहीं। ये दांत बहुत तेज और पीछे की ओर झुके होते हैं। इससे शिकार एक बार पकड़ जाने पर आसानी से छूट कर जा नहीं सकता।

परन्तु इससे ही अभी खाने की समस्या हल नहीं हुई। शिकार सांप के मुह में मजबूती से पकड़े जाने पर भी यदि ताकतवर हुआ (क्योंकि सांप शिकार करते समय छोटे बड़े पर विचार नहीं करता) तो वह सांप को घसीट कर मार डालेगा। इसलिये अब यह जरूरी हो गया कि मजबूती से पकड़ने के साथ शिकार चाहे वह जितना बड़ा हो उसे कमजोर भी बना देना चाहिये। इस लिये प्रकृति ने सांप के थूक को धीरे धीरे ज़हरीला बनाया। यह थूक तालू के किनारे किनारे नालियों द्वारा बह कर शिकार के खून में जख्म द्वारा मिल जाता है और शिकार चाहे जितना बड़ा और ताकतवर हो शिथिल हो जाता है फिर सांप उसे आराम के साथ खा सकता है। धीरे धीरे वे नालियां जिनसे जहरीला थूक आता था एक बन्द नली के समान हो गई। और फिर बाद में तालू के बीच में मिलकर एक थैले के रूप में बन गई। यही बाद में ज़हरीली थैली बन गई। इसी थैली के बीच में एक बहुत मज़बूत तेज दांत भी बन गया जिसके ज़रिये से जहर खून में मिल जाता है। (यह बात याद रखना चाहिये कि सांप का जहर जब तक खून में नहीं मिलता तब तक वह अपना असर कभी नहीं दिखाएगा। अगर मुँह में कोई जख्म न हो तो सांप का जहर बिना किसी खतरे के पी लिया जा सकता है। बहुत से बाजीगर साँप का मुह खाकर लोगों को दिखाते हैं। यह कोई कठिन बात नहीं है। सांप का मुँह खाने वाला इस बात का ध्यान रखता है कि खाने के पूर्व और खाते समय तक उसके मुँह में कोई जख्म नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन जैसा कि पहिले बताया जा चुका है सभी सांप जहरीले नहीं होते फिर वे किस तरह अपने शिकार को बश में लाएँ ? प्रकृति ने उनको भी धीरे धीरे वे साधन दिये हैं। उन में जहर की थैलियों का न होने का शायद यह कारण हो सकता है कि वे बड़े बड़े जीवों को अपना शिकार नहीं बनाते थे एक बार पकड़ने पर फिर उनको खींचा तानी नहीं करना पड़ता था। इसी लिये उनको शिकार को कमजोर बनाने के लिये जहर की जरूरत नहीं पड़ी।

उन्होंने अपने शरीर के रंग को बदलने की ताकत पैदा की यदि वे किसी ऐसे जानवर को शिकार बनाना चाहते हैं जो हरी घास में बैठा हो तो वे अपने बदन का रंग हरा बना लेते हैं जिससे शिकार को हरी घास और हरे सांप में फर्क न मालूम हो। बस सांप आसानी से उसे पकड़ कर खा जाता है। यह रंग बदलने की आदत से सांप स्वयं अपने को भी अपने दुश्मनों से बचा सकता है। कुछ सांपों में अपने शिकार को बेहोश (Hypnotyse) करने की ताकत होती है। शिकार सांप को देख कर भागना भूल जाता है। सांप उसको और आसानी से पकड़ कर खा जाता है।

लोगों का ख्याल होगा कि सांप जितना बड़ा होगा उतना ही वह अपने पूर्वजों से दूर होगा। परन्तु यह बात गलत है। वे बड़े सांप जिनको लोग अजगर सांप कहते हैं उनकी लम्बाई ३० या ३२ फुट तक होती है। अपने उन पूर्वजों से बहुत दूर नहीं जिनके पैर होते थे। क्योंकि इन्होंने अभी तक जहर की थैली नहीं पैदा की कमर की हड्डी अब भी इनमें पाई जाती है और आगे के पैरों के गायब होने के निशान अब भी बाकी हैं और पिछले पैर अभी तक बिलकुल गायब नहीं हुए बल्कि उनकी जगह छोटे छोटे पंजे मौजूद हैं।

यद्यपि इन सांपों के अपने शिकार को कमजोर बनाने के लिये जहर नहीं है परन्तु प्रकृति ने इनके शरीर को बहुत मजबूत बनाया है और वे बड़े बड़े सांप अपने शिकार को रस्सी की तरह जकड़ कर बाँध लेते हैं और उसे बेकाम कर देते हैं। इनका भीतरी भाग इतना लचकदार होता हैं कि बड़े बड़े जानवरों को निगल जाते हैं।

जंगली बोआ और अजगर (pythons) नाम के सांप बहुत बड़े नहीं होते। ये बहुत सुन्दर होते हैं इनमें जहर नहीं होता। ये हमारे यहां और अफ्रीका में पाए जाते हैं।

अफ्रीका में इन सांपों को और सांपों की अपेक्षा बहुत अधिक तादाद में मारा जाता है और इनके खूबसूरत चमड़ों का व्योपार होता है। इन सांपों के कई हजार चमड़े हर माह इङ्गलैंड में भेजे जाते हैं। इन सांपों की संख्या बहुत कम होती जा रही है। यह बात बहुत देर में मालूम हुई कि इन सांपों ने पूर्व काल में चूहों की बढ़ती को रोक रक्खा था इस प्रकार ये मनुष्य जाति के बहुत फायदे के थे।

पकड़ने वाला अजगर (Boa Constrictor) अमरीका के गरम भागों में पाया जाता है यह बहुत सुन्दर होता है। और मनुष्य जाति से इसे कोई हानि नहीं होती यह बारह फुट तक लम्बा होता है। बहुत से खेतों में और पुराने घरों में चूहों को रोकने के लिये यह सांप पाले भी जाते हैं।

सांपों में पेड़ पर रहने वाले अजगर होते हैं। इनके चमड़े का रंग बहुत सुन्दर होता है। ये दक्षिणी अमरीका उत्तरी-पश्चिमी भाग में पाए जाते हैं इसके बदन का रंग गहरा हरा होता है और उस पर सफेद धारियाँ होती हैं यह खूबसूरत सांप पाला नहीं जा सकता क्योंकि फौरन मर जाता है।

अंडा खाने वाला सांप

यह सांप दक्षिणी अफ्रीका में पाया जाता है इसकी भीतरी बनावट दूसरे सब जानवरों से बिलकुल भिन्न होती है। यह दो या तीन फुट से ज्यादा लम्बा नहीं होता। इस के गर्दन के भीतर चारों ओर तेज छोटे छोटे कांटे होते हैं जो पीछे की ओर झुके होते हैं। जब सांप अण्डे को निगल जाता है तो गर्दन के भीतरी भाग में एक अजीब सा घुमाव फिराव होता है और दांतों की चोट से अण्डा फूट जाता है। उसका सब रस पेट में चला जाता है। खाने का कुछ हिस्सा बाद में हजम हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सांप बहुत से अजायबघरों में पाया जाता है। लेकिन इसके खाने का समय रात में होता है। इसलिये इसके खाने का तरीका बहुत कम लोग देख पाते हैं।

सांपों की सेना

ये सांप बहुत से अण्डे एक साथ देते हैं। लगभग चालीस अण्डे एक बार में देते हैं। बहुत से सांप तो अपने अंडों को सूराखों में जमा करने के बाद फिर कभी उनकी परवाह नहीं करते और न उनमें कोई दिलचस्पी ही लेते हैं। लेकिन अजगर (pythons) सांप बहुत उत्साह के साथ अपने अंडों को सेते हैं। मादा सब अंडों को इकट्ठा करके अपने घेरे के अन्दर कर लेती है। इन दिनों मादा के बदन का तापक्रम कुछ बढ़ जाता है जिसकी वजह से अंडों के सेने में मदद मिलती है। इससे ज्यादा मदद सांपों को अंडे के निकलने के बाद मिलती है क्योंकि मादा की देख रेख में होने के कारण दूसरे सांप उनको खा नहीं सकते।

ज़हरीले सांप

जो सांप जितना ज़हरीला होगा वह उतना ही अपने पूर्वजों से समय द्वारा ज्यादा दूर होगा। समय के बीतने के साथ साथ अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिये (खास तौर पर खाने की और दुश्मनों से बचने की जरूरत) उनमें ज़हर की थैली पूर्णरूप से विकसित हो चुकी है। नाप में भी ये सांप दूसरे बिना जहर वाले सांपों से छोटे होते हैं।

सब से ज्यादा खतरनाक जहरीला सांप काला नाग (King Cobra) होता है। सब से बड़ी पहिचान इनके जहरीले दाँत हैं। ये सांप योरप को छोड़ कर सब मुल्कों में पाये जाते हैं और वहां के मनुष्यों को इन से बड़ी हानि पहुँचती है। हमारे देश में सांप काटने के कारण मरे हुये लोगों की संख्या बहुत ज्यादा है। मामूली तौर पर पता लगाया गया है कि साल में करीब २९००० मौतें सांपों द्वारा होती हैं और इनमें से अधिकतर कोबरा द्वारा होती हैं।

काला सांप (King Cobra) सांपों में सब से ज्यादा जहरीला और जहर वाले सांपों में सब से बड़ा होता है। आमतौर से इसकी लम्बाई चौदह फुट होती है। कुछ साल पहिले King Cobra पकड़ कर London Zoo में रक्खा गया था। यह सोलह फुट तीन इंच था। इससे बड़ा काला सांप (King Cobra) दूसरा अभी तक नहीं मिला।

समुद्री सांप जो गरम समुद्रों (Tropical Seas) में पाए जाते हैं असल में समुद्री कोबरा हैं। इनकी दुम कुछ चपटी सी होती है ताकि मछली की तरह तैर सके। इनसे मछलियों को ज्यादा नुकसान पहुँचता है।

कोबरा सांप कई रंग का होता है। कोई भूरा कोई पीला और ज्यादातर काले होते हैं। ये सांप देखने में सुन्दर नहीं होते। ये बहुत ज़हरीले होते हैं। फिर भी बहुत खतरनाक नहीं होते और बहुत से लोग अपने घरों में इनके पीने के लिये दूध रख देते हैं ताकि ये आएँ और चूहों को साफ करें।

जब कोबरा गुस्से में होता है तो ज़मीन से करीब एक फुट तक सिर को उठा लेता है और फन को फैला कर हमले के लिये तैयार रहता है।

कोबरे के फन में जो चश्मे की तरह की तस्वीर है उसकी एक कहानी प्रचलित है। कहा जाता है कि एक सोए हुए देवता के ऊपर एक कोबरा ने अपना फन फैला दिया ताकि उसके सूर्य की किरणों का असर न पहुँचे। जब देवता जागे तो उन्होंने प्रेम के साथ कोबरे के फन में हाथ फेरा। हाथ फेरते समय उसमें उङ्गलियों के निशान बन गए। वे ही अब चश्मे की तरह दिखाई देते हैं। आज कल भी लोगों का विश्वास है कि कोबरा सांप जिस के ऊपर साया करता है वह राजा होता है इसके बारे में बहुत सी कहानियाँ प्रचिलित हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बीरबल एक गरीब आदमी का लड़का था उसके ऊपर एक सांप ने साया किया था जबकि उसकी मां उसे खेत में लिटा कर घास छीलते छीलते दूर जा निकली थी। इसी से बीरबल को अकबर के दरबार में ऊँचा ओहदा मिला था।

कोबरा सांप दूसरे सांपों को खा जाता है। कभी कभी वह चिड़ियों के अण्डे और दूसरे छोटे छोटे जानवरों को भी खा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांपों (विशेषकर कोबरा सांपों) को गाने से बहुत प्रेम होता है। सांप नचाने वाले अपने बाजे को एक खास तरह से बजाते हैं जिससे कि कोबरा सांप मस्त होकर झूमने लगता है।

कोबरा सांपों और उसकी दूसरी जातियों में कायाकल्प करने की शक्ति होती है जब उनकी खाल बहुत पुरानी हो जाती है तो वे उसे उतार फेंकते हैं जिसे केंचुल छोड़ना कहते हैं जिसके बाद वे बहुत चमकदार दिखाई देते हैं।

मेरी नासिक यात्रा

गोदावरी के उद्‌गम से अठारह मील नीचे नासिक नगर पहाड़ों के मध्य बसा हुआ है। चारों ओर क्षितिज में पहाड़ियाँ आकाश से मिली हुई हैं। वे इस नगर की सुन्दरता को और भी बढ़ा देती हैं। समुद्र की सतह से यह जगह लगभग १८०० फुट की उँचाई पर स्थित है। इस कारण से यहाँ की जलवायु में भी थोड़ा सा अन्तर पड़ जाता है। वर्षा यहां लगभग पच्चीस-तीस इंच होती है। स्थिति के विचार से यह स्थान स्वास्थ्यकर है। प्रकृति विचरण करने की यह अच्छी जगह है। पुराने समय में तो यहां पर वन ही वन थे। परन्तु अब यह जगह आबाद है। नासिक नगर में ही करीब चालीस हजार मनुष्य रहते हैं। इस नगर के चारों ओर खेती होती है। गेहूँ, ज्वार, दालें, रुई, चावल यहां की मुख्य पैदावार हैं।

इस नगर का नाम उतना ही विचित्र है जितना बड़ा यह तीर्थ स्थान है। नासिक शब्द संस्कृत शब्द नासिका से बिगड़ कर बना है। नासिका नाक को कहते हैं। यह वह स्थान है जहाँ श्रीरामचन्द्रजी सीताजी तथा लक्ष्मण सहित बनवास की अवधि में पंचवटी बनाकर रहते थे। यहीं पर सूर्पणखा श्रीरामजी पर आसक्त हुई थी। और यहीं पर उसकी नाक लक्ष्मण द्वारा काटी गई थी। तभी से इस स्थान का नाम नासिका (नासिक) पड़ा है। श्रीरामचन्द्र जी की चरण-रज से यह स्थान पवित्र हो जाने के कारण आज भारत-वर्ष का एक बहुत बड़ा तीर्थ स्थान बन गया है। पंचवटी का स्थान तथा रामकुंड आज भी यहां पर हैं। राम-कुंड कोई कुंड अलग से नहीं है परन्तु गोदावरी ही एक विशेष स्थान पर रामकुंड के नाम से बोधित की जाती है। यहां पर भी आज आबादी है।

यह स्थान इतना उत्तम, सुन्दर तथा आकर्षक है कि अब तक यह बड़े महात्माओं की तपश्चर्या का स्थान होता चला आया है। यहाँ पर गौतमबुद्ध और गुरु मछन्दरनाथ (गोरखनाथ) ने अपने जीवन का काफी भाग व्यतीत किया है। मन्दिरों की तो यहाँ पर बहुत ही भरमार है। विष्णु दिगम्बर (जो गायन विद्या में बहुत प्रवीण थे) का आश्रम भी पंचवटी ही पर है। उनका प्यारा पद

रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीता राम

एक न एक मनुष्य गाता ही रहता है। जब यह आश्रम बना था उस समय भी प्रत्येक ईंट रक्खे जाने से पहिले यह पद गाया जाता था। यही इस आश्रम की विशेषता है।

पंचवटी से थोड़ी ही दूर पर गंगा (गोदावरी) का झरना है। यह स्थान अत्यन्त ही रमणीक तथा सुन्दर है। काली काली कटी हुई चट्टानें अत्यन्त ही चित्ताकर्षक हैं। यह झरना बहुत ऊँचा नहीं है। परन्तु इतने पर भी एक देखने योग्य वस्तु है।

इसके अतिरिक्त नासिक में सिक्योरिटी प्रिंटिङ्ग प्रेस (Security Printing Press) भी है जहाँ पर नोट, स्टाम्प लगे हुये कागज, टिकट, लिफ़ाफे और पोस्टकार्ड बनते हैं।

नासिक से १८ मील की दूरी पर त्र्यम्बक है। पांडवों के समय का एक मठ है। जिसके दर्शन केवल सोमवार को ही कराये जाते हैं। इस मठ के बारे में लोगों की भिन्न भिन्न रायें हैं। परन्तु यह पुरातत्व विभाग (Archeologicol Department) के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन है। यहीं पर ब्रह्मगिरी से गोदावरी निकलती है। इस स्थान पर पौने सात सौ पैढ़ियां चढ़कर जाना पड़ता है। यहां पर एक मूर्ति के मुख से एक पतली धारा जो बहुत ही धीमी है एक कुंड में गिरती है। यही गोदावरी का उद्गम है। पानी अत्यन्त ही ठंडा तथा स्वादिष्ट है। यहीं पर गौतमबुद्ध की गुफा तथा बाबा मुछन्दरनाथ की गुफायें हैं। यहाँ से पुरी पहाड़ी का दृश्य अत्यन्त ही मनोहर प्रतीत पड़ता है।

त्र्यम्बक में विशेषकर ब्राह्मण रहते हैं। यहाँ के लोग ग़रीब हैं और उनकी दशा बड़ी शोचनीय है। इसी कारण यहाँ पर भिक्षुकों की संख्या बहुत है। जब कोई यात्री वहाँ पहुँचता है तो उसके पीछे स्त्रियों तथा बच्चों का तांता लग जाता है। एक को कुछ दिया नहीं बस पच्चीसों ने आ घेरा। उन लोगों की दीनता देखकर अपनी दीनता का विचार मन में उद्वेलित हो उठता है। इसका इलाज हम किस भांति कर सकते हैं ?

—जगत सिंह 'विद्यार्थी'

'भीनमाल-भूगोल'

(ले० मनफूल त्यागी, 'प्रभाकर' माध्यमिक पाठशाला, भीनमाल, मारवाड़)

आज, जब कि संसार में विशेषतः भारत में, अहमन्यता, अकर्मण्यता, स्वार्थ और सार-हीन समालोचना का सर्वत्र साम्राज्य है, अपने अतीत की ओर ध्यान आकर्षित कराना तो एक ओर रहा कुछ बोलना, कहना और आंख उठाकर देखना भी लोहे के चने चबाने और जलती आग में कूदने से कुछ कम नहीं ! कैसा परिवर्तन है !! कितना कठोर व्यापार !!! कहीं ठिकाना है।

यों तो समस्त भारत ही अपने जीवन, बल, जागृति और आत्मोत्सर्ग के जीते जागते और समुज्वल उदाहरण समय समय पर देता आया है; परन्तु इस विषय में जो विशद-यश, विमल-ख्याति और अद्वितीय-अनुपम प्रसिद्धि प्रातः स्मरणीया, वीर प्रसूता, प्रताप-दुर्गा-जननि, वीर भोग्या बसुन्धरा राजस्थान ने प्राप्त की थी, सम्भव है वह संसार के किसी भी उन्नति देश को स्वप्न में भी प्राप्त न हो। समय था, जब इसकी बात बात में बात थी ! चला चली में भी प्रत्येक कला बला थी ! बला की शान थी; तो बला की आन !! अब वह आन-बान-शान कहाँ ? बस थोथी चाल, थोथा हाल इसकी विभूति वा स्मृद्धि है ! कितना उलट फेर है !! सच है, 'सब दिन जात न एक समान'।

मुझे स्वतन्त्र रूप से कहने दीजिये कि न केवल चित्तौर, उदयपुर और जोधपुर आदि ही अपने साथ अपना चमकता और दमदमाता इतिहास रखते हैं, अपितु नगर-नगर, गांव-गांव, और पहाड़ी-पहाड़ी उच्च मस्तक किये उसी स्वाभिमान, आत्म सम्मान और गौरव के साथ जेम्स टॉड को कहने के लिये विवश करती है :—

"राजस्थान में कोई छोटा-सा राज्य भी ऐसा नहीं है, जिसमें थर्मापली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले, जहां लियोनीडास जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो।" वन्दे राजस्थान ! वन्दे।

एक बार नहीं सैकड़ों बार युद्ध के धौंसे बाजे, आपत्तियों के बादल गरजे, अन्याय की बिजली कौंधी, लोहू के सागर उमड़े, घोर परिवर्तन हुए, परन्तु तेरी वह पैंतरे बाज़ी चंचलता, जिससे तूने अपने आत्म सम्मान की रक्षा की न केवल कौतूहलोत्पादक ही है वरन् स्मरणीय और अनुकरणीय भी। वाह री वीरता ! हाय रे काल !!

इसी राजस्थान के अन्तर्गत आज न जाने कितने बैभवशाली, धन-धान्य-पूर्ण नगर और गांव अपने भग्नावशेषों पर नौ नौ आंसू बहा अनाथों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखियों की भांति भीषण-चीत्कार में पुकार कर ये हृदय दहला देने वाला करुण-रोदन कर रहे हैं :—

"आज यहाँ आके मेरा हाल तो पूछे कोई,
हैं कहाँ अब वो मेरे नाज़ उठाने वाले !"

हा ! इसी कराल काल के गाल से अलबेला भीनमाल भी न बच सका। सच है, समय बड़ा प्रबल है। इसके सम्मुख धनी की वर्ना, न बली की चली बड़े बड़े आये और चलते बने। चार दिन तलवारें चमकीं और बस। 'न गोरे सिकन्दर न कब्रे दारा, मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे।' परिवर्तन तेरा पेट बड़ा है। वह भी समय था जब भीनमाल का बोल वाला था। लाठियों में लपटें थीं। मान था, सम्मान था। स्वाभिमान-धन-धान्य-विद्वत्ता की अकड़ थी। परन्तु आज अपनी जर्जरित दशा और टूटे-फूटे हाल को देख इसकी दीवार और बावड़ी दहाड़ दहाड़ कर कह रही हैं :—

"कभी हम भी नशेमन वाले थे
ये गुलशन था आबाद कभी।
हर शख़्स खून का प्यासा है
गुलचीं है कभी सैयाद कभी ॥"

और कुएं और तालाब भी तनके इस करुण-क्रन्दन को अत्यन्त भयंकर बनाने में संलग्न हैं। क्यों न हों, 'अच्छाई और धन-वैभव पर ज़माना मरता है।'

भीनमाल-अति अतीत में

प्रत्येक नगर की भौगोलिक स्थिति के ज्ञान प्राप्त करने के पूर्व उसके इतिहास पर भी एक दृष्टि डाल लेना परमावश्यक है। क्योंकि भूगोल-इतिहास-घनिष्ट-सम्बन्ध जगत्-प्रसिद्ध है।

यों तो नगर के इतिहास सम्बन्धी कई ग्रन्थ प्राप्य हैं; परन्तु बड़ी बड़ी पुस्तकें, जिनसे कि इस नगर के इतिहास-विकास में पर्याप्त सहायता मिल सकती है, अधोलिखित हैं :—

१—श्रीमाल पुराण वा श्रीमाल महात्म्य, २—प्रबन्ध चिन्तामणि, ३—विमल प्रबन्ध, ४—ओस-वंश मुक्तावली, ५—कालीदास और भोज, ६—भोज-प्रबन्ध, ७—उपदेश कल्पवल्ली, ८—आबूका आमलेख, ९—यतीन्द्र-विहार-दिग्दर्शन और मारवाड़ का इतिहास।

श्रीमाल पुराण के लेखानुसार यह नगर समयानुसार निम्नांकित नामों से प्रसिद्ध हुआ :—

सत्ययुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग
श्रीमाल	रत्नमाल	पुष्पमाल	भिन्नमाल

लावण्य-समय रचित विमल-प्रबन्ध के अनुसार इसके ये नाम थे :—

सत्ययुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग
पुष्पमाल	रत्नमाल	श्रीमाल	भिल्लमाल

अतिरिक्त इन लेखों के 'उपदेश कल्प वल्ली' के ये पद भी इन नामों की पुष्टि करते हैं :—

"श्रीमालमिति यन्नाम, रत्नमालमिति स्फुटम्
पुष्पमालं पुनर्भिन्नमालं युगचतुष्टये ॥१॥
चत्वारि यस्य नामानि,वितन्वन्ति प्रतिष्ठतम् ।
अहो नगर सौन्दर्यमाहार्य त्रिजगत्यपि ॥२॥"

उपर्युक्त-विवरण-चक्र से यह तो निर्विवाद ही सिद्ध है कि समय समय पर ऊर्ध्व वर्णित नाम अवश्य इस नगर के रह चुके हैं परन्तु इनके नामकरण का समय निर्देश करना वास्तव में बड़ी टेढ़ी खीर है। यद्यपि नामकरण की दन्त कथायें, इतिहास प्रदर्शक-ग्रन्थों 'प्रबन्ध-चिन्तामणि' और 'श्रीमाल पुराण' आदि में लिखी हैं, परन्तु मत-भेद किसी वास्तविक-निर्णय पर जाने से रोकता है अर्थात् वास्तविक निर्णय पर पहुँचना महान् दुस्तर है। कथाओं का यहां उद्धृत करना केवल पृष्ठ-पेषण करना ही होगा।

'मारवाड़-भूगोल' के रचयिता श्री जगदीश सिंह जी गहलौत का कहना है, कि भीनमाल नगर छठी से नवीं शताब्दी तक गुजरात के गूजरों की राजधानी रहा है। ७ वीं शताब्दि में भी यह इसी भीनमाल (भिल्लमाल) नाम से प्रसिद्ध था। सम्वत् १९४० वि० में यह प्राचीन नगर इस परगने का मुख्य और रमणीय स्थान था। तत्पश्चात् जसवन्तपुरा इसके स्थान पर परगने का मुख्य नगर बना। किसी समय में यह बड़ा भारी नगर था। इसके विशाल खंडहर इस सत्यता के साक्षी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी की प्राचीनता के प्रमाण-स्वरूप प्रसिद्ध इतिहास साहित्याचार्य्य श्री विश्वेश्वरनाथ जी रेउ लिखते हैं, "कि मारवाड़ में राठोड़वंश संस्थापक राव सीहाजी जिस समय अपने २०० साथियों के साथ द्वारका को जा रहे थे उन्हें कारणवश पुष्कर ठहरना पड़ा, तब वहीं पर इनकी भेंट, तीर्थ-यात्रार्थ आये हुए भीनमाल ब्राह्मणों से हो गई। उन दिनों मुल्तान की तरफ से मुसलमान बहुधा भीनमाल पर लूट-मार और आक्रमण किया करते थे। सीहाजी को दल-बल सहित देखकर ब्राह्मणों ने सहायता की प्रार्थना की। अभ्यर्थना सहर्ष स्वीकार हुई। भीनमाल के भाग जगे। आक्रमणकारी पराजय को प्राप्त हो सदा के लिये धराशायी हो गये।

इस विषय का यह दोहा अब तक मारवाड़ में प्रसिद्ध है:—

भीनमाल लीधो भड़ै, सीहै सेल बजाय।
दत दीन्हौ सत संग्रह्यो, ओ जस कदे न जाय॥

अर्थात् तलवार के जोर से बीर सीहा जी ने भीनमाल पर अधिकार कर लिया और इसके पश्चात् उन्हें (ब्राह्मणों को) दान देकर पुण्य का संचय किया। इनका यह यश सदैव ही अमर रहेगा।

अब देखना यह है कि राव सीहा जी ने मारवाड़ में किस समय पदार्पण किया था? कर्नल टॉड और जनरल कनिङ्गहम के मतानुसार यह समय क्रमानुसार वि० सम्वत् १२६८ और १२८३ के पास है। इस से पता चलता है कि यह नगर १२ वीं १३ वीं शताब्दी से बहुत समय पूर्व उन्नति दशा को प्राप्त हो गया होगा। तभी तो इसके धन वैभव को देखकर यवनों और अन्य आक्रमणकारियों के मुँह में पानी भर-भर आता था। कुछ भी हो, नगर की प्राचीनता प्रत्येक रूप में सिद्ध है। गत वर्ष की ही बात है कि एक जैन-मूर्त्ति पृथ्वी से आविर्भूत हुई है। उस पर उसके निर्माण-काल की तिथि इत्यादि सब लिखी है। उसका निर्माण-काल १२९० वि० सम्वत् वा १२९५ के आस-पास है।

नगर की प्रस्तुत भौगोलिक स्थिति को समझने के लिये यदि उसके प्राचीनतम गौरव और विस्तार का भी वर्णन कर दिया जाये तो अनुचित न होगा। प्राचीन ग्रन्थावलोकन से पता चलता है कि नगर अधोलिखित दशा में था:—

प्राचीन स्थिति

नगर के चारों ओर ५ योजन (२० कोस) की खाई थी, जो जल से परिपूर्ण थी। कोट (शहर पनाह) के चौरासी द्वार थे। और उनमें चौरासी दरी खाने थे। १००० गणपति, ४००० क्षेत्रपाल, ८४ चंडिका, ११००० महादेव के लिङ्ग और १८००० दुर्गा देवी आदि के देवल थे। इसके अतिरिक्त ४००० वेदशाला, १००० ब्रह्मशाला, ४००० मठ, १८००० व्यापार शाला, दो लाख दुकानें और एक लाख साठ हज़ार चौंसठ सतखण्डे महल थे।

जन-संख्या

कुल ४५००० ब्राह्मण थे। ७०० ऋग्वेदी, १२००० यजुर्वेदी, २९००० सामवेदी, ४००० अथर्व वेदी। और ९०००० श्रीमाल वंशी-महाजन, तथा पोरवाड़ और आठ हज़ार चौंसठ धनोत्कट (सुनार), २००० कंसारे, ९००० नगर नायिका, ३६००० क्षत्रिय, ५००० रंगारे, ५००० सोमया, ८००० कुम्भकार, ३००० नट, १००० नाई, १००० धोबी, ४००० माली और अन्य जातियाँ, ५००० वैश्य तथा २५०० शूद्र इस नगर में निवास करते थे। सभी धन-धान्य और समृद्धि सम्पन्न थे।

समय ने करवट बदली। उल्टा हवा बही और बना बनाया खेल घंटों में बिसन गया। भीम-काय गगन-चुम्बी प्रासाद क्षीणकाय झोपड़ों में बदले। वह ऐश्वर्य्य और वैभव जिसका पृथ्वी पर डंका और आकाश में आतंक था रेत खेत हो पृथ्वी पर लुढ़कने लगा। शिरोमणि-मुकुट पैरों पर लोटने लगा। बस दिनोंदिन अवनति होती गई। भगवान तेरी लीला।

सन् १८९१ ई० में निम्न-लिखित चोला बदला! हाय, रे काल!

महाजन जैन ३७५, श्रीमाल ब्राह्मण २००, सेवक, भोजक ७५, सुनार ३०, बन्धारा २५, कंसारा ४, घांची ३०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुम्भकार १२, मुसलमान कुम्भकार ४, रबारी ७०, भिक्षुक साधु १०, सामी अलीक १०, पिंजारा मुसलमान १५, लुहार ३, गोला १२, जाट २, देशन्त्री १, आचारी १, कोली १३, वैश्या ३०, मेमन २, माली २५, कठियारा ११, भाट १२०, बिसाती मुसलमान १, सिलावट १, चूड़ीगर मुसलमान २, चमार जृतिया १७, सरगरा १, नीरगर ५, दर्जी १२, नाई ७, सोलंकी जागीरदार १५, बांभी २, वणकर (वांभिया) ४०, वाधरी १, ढोली मुसलमान ८, भङ्गी १, रङ्गरेज २, मोची ३०, खटीक १, भील १२०।

उपर्युक्त संख्या गृहानुसार दी गई है। यदि ध्यान से देखा जाये तो भूत-वर्तमान में पृथ्वी-आकाश का अन्तर है! कहाँ वह जन संख्या कहाँ यह गृह-संख्या-तालिका!! १७ वीं शताब्दी में भी नगर का विस्तार-पर्याप्त था। सन् १६११ ईस्वी की बात है, कि एक निकोलस उफ्लेट नामक व्यापारी मारवाड़ में आया। प्रसिद्ध स्थानों का भ्रमण करते हुए उसने भीनमाल का भी निरीक्षण किया। लिखता है, "भीनमाल ३६ मील अर्थात् १८ कोस के घेरे वाला एक सुन्दर विशाल और रमणीय नगर है। अनेकों बावली तालाब और कुयें लुप्तप्राय हैं। अनेकों पतितावशेष खँडहर हैं। अतीत की स्मृति में विह्वल और कातर और इन खंडहरों पर पीलू वृक्ष सान्त्वना रूप में अपना छाया-छत्र छितरा कर छोटे लम्बे हाथों से प्राचीनतम सभ्यता, सजीवता और मनमोहकता के आलिंगनार्थ अपने जीवन के दिन काट रहे हैं। किसी भूत-पूत की प्रतीक्षा में स्वयं भूत बने हैं।" सच है, अपनों की दया आये, आये—फिर आये। आगे लिखा है—दक्षिण उत्तर और पश्चिम की ओर सपाट खुला मैदान है, जो पश्चिम में वेलुमय भूमि से मिल जाता है। मैदान सपाटी पर पांच सौ और ८ सौ फुट ऊँची छोटी छोटी पहाड़ियाँ (टेकरियां) हैं। नगर से बाहर पांच छः मील की दूरी पर उत्तर में जालौर द्वार, पश्चिम में सांचौर द्वार! ईसान में सूर्य्य द्वार, अग्निकोण में लक्ष्मी द्वार थे जिनके खंडहर अब तक विद्यमान हैं। पोनकाय भूमिशायी गृहों, देवालयों और तालावों के विशाल खंडहरों से प्रतीत होता है कि किसी समय में यह नगर जन-धन-समृद्धि से परिपूर्ण रहा होगा।"

जहाँ तक उपर्युक्त कथन का सत्यता से सम्बन्ध है वहां तक दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है। कि भीनमाल के भूतपूर्व-अपूर्व-वैभव, अद्वितीय-निर्माण, विशद्-विस्तार और विस्तरित व्यापार में सन्देह को स्थान नहीं। जैसा कि प्रस्तुत पतितावस्था भी इसकी साक्षी है।

ये तो हुआ इसका प्राचीन इतिहास मिश्रित भूगोल। अब रहो वर्तमान भौगोलिक स्थिति। आइये इस पर भी विचार कर लें। और भूत-वर्तमान का साम्मुख्य करके इसके उत्कर्ष-अपकर्ष का पता लगायें जो कि अपना मुख्य उद्देश्य और ध्येय है।

नवीन स्थिति

मारवाड़-भूगोल-अवलोकन से पता चलता है कि यह देश तीन प्राकृतिक भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

१—पहाड़ी भाग—दक्षिणी और पूर्वी प्रदेश।
२—मटियाला भाग—मध्यस्थ प्रदेश।
३—रेतीला भाग—उत्तरी व पश्चिमी प्रदेश।

भीनमाल मारवाड़ अन्तर्गत जसवन्तपुरे परगने में जोधपुर से ९६ मील के अन्तर पर पहाड़ी भाग अर्थात् दक्षिणी-वीं प्रदेश में स्थित है। लगभग २० से ३० फ़ीट ऊँची और उत्तर-दक्षिण पौन मील लम्बी विस्तरित टेकरी (पहाड़ी जमीन) पर बसा हुआ है। यह २४°-४२° उत्तर अक्षांश और ७२°-४०° पूर्वी देशान्तर के मध्य में है।

सीमा

उत्तर में—सुकड़ी[1] (सुकी) नदी।
दक्षिण में—सांचौर प्रदेश।
पूर्व में—आबू की पर्वतमाला।
पश्चिम में—लूणी नदी।

विस्तार का क्षेत्रफल

नगर का क्षेत्रफल ७६००० बीघा है। जिसमें खालसा और जागीर दोनों सम्मिलित हैं।

१—यह सिरोही और मारवाड़ की सीमा के पहाड़ों से निकली है और जालौर होकर लूनी नदी में मिल गई है। यह १२० मील लम्बी है, परन्तु सदैव जल नहीं रहता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलवायु

यहां का जलवायु शुष्क और उष्ण है। परन्तु एक विचित्र और उल्लेखनीय बात यह है कि यदि बाहर खुले मैदान में दिन की उष्णता और विशेषतः लू की झुलसाने वाली लपटें असहनीय हैं; तो संध्या-काल में वही लपटें सुगन्धित शीतल रूप धारण कर परिश्रान्त सन्तप्त और म्लानमुख आत्माओं को अपने ठंडे ठंडे झोंकों से थपकियां, लोरियां दे दे निद्रा के वशीभूत कराती हुई दृष्टि गोचर होती हैं। जलानेवाली वस्तु भी आह्लादकारी और आनन्ददायक बन जाती है। विष अमृत में बदल जाता है।

वैसाख (मई) और जेठ (जून) में बड़ी गर्मी पड़ती है और धीरे धीरे 'लू' रूप धारण कर लेती है। आषाढ़ (जुलाई) श्रावण (अगस्त) और भादों (सितम्बर) में वर्षा होती है और इन्हीं दिनों में जुड़ी-ताप, नारू वा वाला रोग अपना उग्र रूप धारण करता है। कार्तिक (नवम्बर) मगसर (दिसम्बर) और पौष में कड़ाके का शीत पड़ता है।

मौसमी हवायें

जल से परिपूर्ण हवायें वर्ष में नियत समय पर चला करती हैं। इनमें से मुख्य दक्षिणी-पश्चिमी मौसमी हवायें हैं; जो दक्षिण-पश्चिम की ओर से जून, जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में चलती हैं। परन्तु भूमि की तर हवा और उच्च श्रेणियों के अभाव से नगर की अतृप्त तृषित आँखें वर्षा की बाट जोहते जोहते 'कसर रह गई' 'कसर रह गई' की भीषण पुकार के साथ मन मार बैठ रहती हैं। करें भी क्या ? कुछ हाथ का वश नहीं। वर्षा की बड़ी बड़ी काली घटायें भीनमाल को पांच छः वर्ष से क्या कुछ देकर जाती हैं उसका निष्कर्ष यह है :—

जलवृष्टि

गत ६ वर्ष की वृष्टि-तालिका:—

सन् १९२६ ई०	सन् १९२७ ई०	सन् १९२८ ई०
५४ इञ्च १९ सेंट	२८ इञ्च २३ सेंट	१६ इन्च २ सेंट
सन् १९२९ ई०	सन् १९३० ई०	सन् १९३१ ई०
२७ इं० ९५ सेन्ट	१२ इंच १६ सेंट	१५ इंच २० सेंट

कभी कभी उत्तरी-पूर्वी मौसिमी हवा के (Cyclonic) तूफ़ान आ जाने पर तीन चार वा अधिक दिन लगातार वर्षा होती रहती है। इसी वर्ष लगभग २०दिन सूर्य्य के दिव्य-दर्शन तक न हुए थे।

तापक्रम

माध्यम वार्षिक तापक्रम ७५°F के लगभग है। यदि ऋतु ठीक है तो जाड़ा कष्ट-प्रद नहीं होता और खुले-मैदान दिवस व्यतीत करना बड़ा आनन्द-प्रद और सुख दायक होता है; परन्तु कभी कभी तो जाड़ा ऐसा उग्र और भयंकर रूप धारण करता है कि दांत कट कटाते, हाथ थरथराते और जीभ सी सा करते ही अपना एक एक दिन व्यतीत करते हैं। गर्मी भी नर्मी का नाम नहीं जानती। उत्कर्ष-अपकर्ष के रंग बदल-बदल रुलाती और हंसाती रहती है।

जन-संख्या

मोटे रूप से देखने पर यहाँ साढ़े पांच हज़ार की जन संख्या और पन्द्रह सौ पचास घर की बस्ती है। अधिक जन संख्या ओसवाल, भील और ब्राह्मणों की है। ओसवालों के घर ४७५, ब्राह्मणों के २०० और भीलों के ३०० के लगभग हैं। कई और जातियां भी निवास करती हैं उनमें से मुख्य मुख्य निम्नांकित हैं :—

सुनार, मोची, जटिये (जूतिये), बांबी, राजपूत, बन्धारे अग्रवाल, भाट, मुसलमान माली, बढ़ई, रङ्ग-रेज़, जाट, लखारे, कुम्भकार, देशन्त्री, आचार्य्य, दर्ज़ी और नगर नायिका। इनके अतिरिक्त धोबी इत्यादि कई अन्य छोटी छोटी जातियां भी निवास करती हैं।

गमनागमन

यात्रा के सम्बन्ध से रेल के पूर्व भीनमाल 'काले-पानी' के नाम से पुकारा जाता था। राज-कर्मचारी तो अपना परिवर्तन भीनमाल के लिये सुनकर ऐसे कांप उठते थे जैसे किसी आपदा से साम्मुख्य की तैयारी पर डरपोक सिपाही। रेल से पूर्व भीनमाल-यात्रा वास्तव में थी भी कष्ट-प्रद। अभिमत स्थान पर पहुँचने के लिये सुमेरपुर, रामसीन इत्यादि नगरों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्कर लगा ऊँटों की टक्कर खा तीन-चार और पाँच दिन के पश्चात् कहीं विश्राम मिलता था। नाकों दम था, पैरों जान थी। राम रे राम! कहीं ठिकाना है इस ऊँट-यात्रा का !! ईश्वर बचाये ऐसी यात्रा से !!!

रेलगाड़ी ने भीनमाल यात्रियों के लिये पर्याप्त सुविधायें उपस्थित कर दी हैं। अब यात्रा का एक मात्र आश्रय ऊँट ही नहीं रहे, अपितु रेल भी। आशा की जाती है कि समदड़ी-भीनमाल लाइन के कच्छ पहुँच जाने पर भीनमाल अपनी पूर्व सी भव्य रमणीयता मनोहरता और विशालता का भागी बनेगा और मारवाड़ के किसी उन्नति नगर से पीछे हटने के लिये वाध्य न हो सकेगा। ईश्वर करे, यह आशा पुष्पित और फलित हो।

वनस्पति

मारवाड़-अन्तर्गत अन्य प्रान्तों वा नगरों पर दृष्टिपात करते हुए कहना पड़ेगा कि वनस्पति-सम्बन्ध से भीनमाल एक धनी-मानी नगर है। इस कथन से मेरा उद्देश्य वनस्पति-प्रचुर्य्य दर्शाने का कदापि नहीं, वरन् अन्य नगरों की वनस्पति-सम्पत्ति की अपेक्षा भीनमाल-तृणाच्छादित-भूमि की अधिकता है। यों तो अधिकतर, सिंचाई के अतिरिक्त, सारा नगर ही ऐसी दशा में है जो कि न तो बहुत उन्नति ही है न अवनति ही। ग्रीष्म झंझावात के प्रचन्ड थपेड़े मध्यम हरियाली को भी रेत खेत करके दम लेते हैं सच है, "दुष्ट हृदय कभी दूसरे का मान-सम्मान नहीं सहन कर सकता"।

पहाड़ियाँ वृक्ष-विहीन हैं। माली लोग सिंचाई द्वारा निम्नांकित शाक भाजी उत्पन्न करते हैं :—

बरसात में—कंकोड़ा, करेला, तोरियाँ, चन्दलाई, बथुआ, भिंडी, कोला, कालिङ्गा इत्यादि।

जाड़ों में—शकरकन्द, मूली, गाजर, प्याज, सिंवाड़ा, लौकी, मेथी, पालक, चक्की, धनिया, मिरच, बैंगुन इत्यादि।

ग्रीष्म में—ककड़ी, बैंगुन इत्यादि।

प्राकृतिक उपज में जंगलों में अधोलिखित छोटे छोटे पेड़ देखने में आते हैं :—

आँवल, गूलर, कैर, धामन, शमी, झड़बेरी, कूमट पीलू, गूँदा, बबूल, नीम, बट, इमली, करौंदा, पीपल, सन्देला, खजूर, नींबू, दाड़िम और मीठा नीम इत्यादि।

सुगन्धित फूलों में गुलाब, अब्बास, चमेली इत्यादि पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त हजारा (गेंदा) कनेर, सदा सुहागिन, कोइली और आक इत्यादि के फूल भी देखने में आते हैं।

आम-जामुन इत्यादि पेड़ यहाँ बिल्कुल नहीं होते परन्तु तम्बाकू इत्यादि पर्याप्त रूप में प्राप्त होते हैं। और कई प्रकार की घास भी जो जड़ी-बूटियों के काम आती है, यहाँ उत्पन्न होती है।

उपज

मुख्य रूप में यहाँ दो फ़सिल अर्थात् सावनू (खरीफ़) और उनालू (रबी) ही होती हैं। सावनू फ़सिल वर्षा से होती है। यथा समय जलवृष्टि होती रहती है तो फ़सिल बहुत अच्छी होती है। इसमें बजरी, ज्वार, मूंग, मौठ, मक्की, ग्वार, तिल और कपास आदि उत्पन्न होते हैं। उनालू (रवी) की फ़सिल सिंचाई द्वारा होती है, जो कुओं वा बन्धों के पानी से की जाती है। इसमें गेहूँ, चना, जौ, सरसों, मिर्च और धनिया आदि उत्पन्न होते हैं। यहाँ की मंग और स्थानों से मोटी और अच्छी होती है।

खाद्य पदार्थ

यों तो ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना, जौ, तिल, कपास और मकई सभी प्रयोग में लाये जाते हैं परन्तु सब से अधिक महत्व और श्रेय बाजरे और ज्वार को ही है। क्योंकि सर्वसाधारण का तो मुख्य भोजन यही है और यही पदार्थ सब से अधिक उत्पन्न भी होते हैं। यदि 'बाजरा-ज्वार-नगर, कह दिया जाये तो अत्युक्ति न होगी। नित्य का साधारण भोजन बाजरे का, छाछ घोला बाजरे का आटा (रावड़ी), बाजरे की खिचड़ी, दलिया घाँट अथवा ज्वार, पीलू-कींकड़ इत्यादि की उबाली हुइ फलियों का शाक है! झड़बेरी के बेर भी बड़े सुरक्षित रूप में रक्खे जाते हैं और समय समय पर बड़े चाव से खाये जाते हैं। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि सब के भोज्य पदार्थ यही हैं जो कि वर्णन किये गये हैं। उन्नति जातियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गृहस्थों में अच्छे पकवान और खाद्य-सामग्री भी बनती है। जैसे दाल-बाटी, माल-पूआ, शीरा और अनेक मिठाइयां। गोष्ठी के समय इन समस्त खाद्य-पदार्थों का ठाट-बाट दर्शनीय और अनुकरणीय है। परन्तु साधारण जनता की ओर देखकर विवश हो कहना पड़ता है कि दिल्ली सम्राट् की मानसिंह के प्रति यह उक्ति ठीक ही है। जो कि कुछ रूप में भीनमाल के ऊपर भी घटित हो रही है :—

"बाजरी का सोगरा मोंठन की दाल।
आँकड़े की झोंपड़ी फोगन की बाड़।
देखो राजा मानसिंह थारो मारवाड़॥"

खनिज पदार्थ

मारवाड़ का एक आध स्थान ही ऐसा होगा जहाँ पर कोई खनिज-पदार्थ प्राप्त न होता हो या उसके चिन्ह दृष्टिगोचर न होते हों। परन्तु लागत की अधिकता उन पदार्थों को उनके स्थान पर ही ढका-ढंपा पड़ा रहने के लिये ही विवश करती है। भीनमाल में भी कई स्थानों पर ऐसे चिन्ह पाये जाते हैं जिनसे कि नमक की विद्यमानता दिन-दहाड़े प्रतीत होती है। सुना जाता है—कि उत्तर में नाले पर और पूर्व में भी कोड़टा और भीनमाल के मध्यस्थ नमक के चिन्ह दृष्टि गोचर होते हैं। सब से प्रसिद्ध खनिज-पदार्थ-सम्बन्धी वस्तु जो यहां पर है उसका नाम है 'लोह कांटी'। इसके विषय में प्रसिद्ध है, कि इस से पेट-तिल्ली-दर्द और अन्य रोग बात करते करते काफ़ूर हो जाते हैं। इसका रंग काला होता है। बोझ में भारी होती है। एक प्रकार के पत्थर के रूप में निकलती है फिर कूट कर गौमूत्र इत्यादि में तैयार करके डेढ़ रुपया सेर के भाव बेची जाती है। यह भी सुना जाता है, कि यह भारत भर में अप्राप्य-अलभ्य और अनुपम वस्तु है। दूर दूर के वैद्य हकीम और जाननेवाले बड़े प्रयत्न और मूल्य में प्राप्त करते हैं। भगवान की लीला अपरम्पार है। कहीं विष है; तो कहीं अमृत।

पशुधन

पशुधन की अधिकता में भीनमाल भले ही बढ़ा-चढ़ा हो; परन्तु सुघराई, अच्छाई, और नस्ल के सम्बन्ध में वह दीन और नितान्त दीन है। गायों की संख्या एक एक भाट के पास सौ सौ होगी परन्तु उन के खान-पान, रहन-सहन और अच्छी नस्ल उत्पन्न करने की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जाता और यही कारण है कि प्रातःकाल सैकड़ों गौवें इधर उधर विचरती और विष्टा भक्षण करती दिखाई देती हैं। इससे आपको पता चल सकता है कि नगर का कितना धार्मिक-पतन और ह्रास हो चुका है। धर्म-ठेकेदार, ढोंगधारी, लकीर के फ़कीर और मोटे-पगड़ इधर ध्यान दें। भगवान् सुमति दे और हमारे सिर से इस प्रत्यक्ष-पाप की भाप बना बना कर उड़ा देने में हमारी सहायता करे जिस से हम वास्तविक-धर्म समझने में समर्थ हो सकें।

गायों के अतिरिक्त दूध देने वाले जानवरों में भैंस, बकरी और भेड़ हैं परन्तु उनकी दशा भी बड़ी दयनीय है। महा-मास की अंधेरी रात है, कड़ाके का शीत है, पक्षी तक चुप हैं। स्वामी गृहों में बड़ी रक्षा से अपना प्रत्येक अंग ढांप कर वायु के ज़हरीले-विषैले डंक से भयभीत हो छुप छुप कर जीवन का आनन्द लूटते हैं। और यह बे बोलती-आत्मायें खुले-मैदान सारी रात अपने ऊपर उदार स्वामियों के व्यवहार की कड़ी आलोचना करते हुए, उनकी जानों को कोसती इस दुर्व्यवहार पर कुढ़ती हुई अपनी मूक-वेदना प्रकट करती हैं। मानव-हृदय तू कितना कठोर और निष्ठुर है! क्या स्वार्थ के आगे तुझे कुछ भी कर्तव्याकर्तव्य का ध्यान रहता है!! दयालु देव! आप ही इस मूक-वेदना परपसीजो और स्वाहा कर दो उस संसार को जिसे अपने अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं!!

इनके अतिरिक्त यहाँ सवारी के पशु ऊँट, घोड़े और गदहे भी पाये जाते हैं। घोड़ों पर जागीरदार, धनवान इत्यादि, गदहों पर कुम्भकार और भंगी इत्यादि और ऊँटों पर सर्वसाधारण सवारी गांठते हैं। वास्तव में ऊँट ही यहां के अधिक कार्य्य संचालित करता है। यही यहाँ का पोत है, यही सर्वस्व। इसकी उपयोगिता पर किसी ने क्या अच्छा कहा है :—

ऊँट सवारी देय, ऊँट पानी भर लावै।
लकड़ी ढोवै ऊँट, ऊँट गाड़ी ले धावै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेत जोते ऊँट, ऊँट पत्थर भी ढोवैं।
जो न हो इक ऊँट, लोग कर्मों को रोवैं॥

बैल हल जोतने और गाड़ियाँ खींचने के काम आते हैं। कुओं से पानी भी इन्हीं के द्वारा खींचा जाता है। जंगली पशुओं में बाघ, रीछ, हिरन, भेड़िया लोमड़ी, शशक, सूअर और स्यार आदि पाये जाते हैं।

व्यवसाय

छोटे-मोटे तो कई प्रकार के धन्धे और व्यवसाय इस नगर में पाये जाते हैं; परन्तु बड़े बड़े व्यवसाय ये हैं।

कृषि, चमड़े का काम, पृथ्वी से ईंट खोदना, रंगाई करना, व्यापार करना, काँसी के बर्तन बनाना राजपूतों, मालियों और कुछ अन्य जातियों का कार्य्य कृषी करना और अन्न उपजाना है। जटियों का कार्य्य चमड़ा साफ़ करना और रंगना है। मोची जूतियां बनाने में मस्त हैं अपनी इस कला में जगत-प्रसिद्ध हैं। भील लोग नगर के बाहर पृथ्वी को खोद खोद कर पुराने मकानों की ईंट निकाल कर बेचते हैं और अपना पेट पालते हैं। रंगरेज वा बन्धरे बड़ी अच्छी रंगाई करते हैं। व्यापार महाजनों और वनियों के हाथ में है। कंसारे कांसी के बर्तन बनाने और अपनी कला-कौशल का बड़ा अच्छा जीता जागता उदाहरण देते हैं। गिरी दशा में भी अपने हस्त कौशल द्वारा भीनमाल का मुख उज्ज्वल कर रहे हैं। सर्व श्रेष्ठ माननीय भूदेव अन्ध-विश्वास, मुहूर्त, शकुन-अपशकुन और दृष्टि-दोष आदि के मिथ्या चक्कर में पड़ निर्धनता, दीनता और भिक्षा वृति से टक्कर ले रहे हैं! समय तेरी बलिहारी! तू जो खेल खिलादे वही थोड़ा!!

व्यापार

व्यापार की दृष्टि से नगर अधिक उन्नति नहीं। अब रेल के आने से तो व्यापार में अनेकों सुविधायें उपस्थित हो गई हैं; परन्तु रेल के पूर्व तो व्यापार बड़ी गिरी दशा में था। सैकड़ों मील की यात्रा थल मार्ग से होती थी जिसके कारण विक्रय मूल्य बहुत बढ़ा चढ़ा रहता था। यद्यपि स्वच्छ और मनोवांछित सामान अब भी प्राप्त नहीं होता फिर भी पूर्व और वर्तमान भाव में थोड़ा बहुत अन्तर अवश्य है और आशा की जाती है—जो दशा आज है वह कल न रहेगी बदलते बदलते बदल जायेगी। नगर में तो बहुत कम महाजन और बनिये दुकान खोलते हैं। अधिकतर लोग बम्बई जाते हैं और वहीं कोई न कोई धंधा आरम्भ कर देते हैं। तीन लाख से अधिक सम्पत्ति वाला कोई व्यापारी प्रतीत नहीं होता। गृहस्थों में गृहणों को अन्य धन्धों से ही अवकाश नहीं मिलता इस कारण कर-कौशल-सम्बन्धी व्यापार नितान्त चौपट है। हाथ से सूत कातना अपमान समझा जाता है। अधिकतर व्यापार दलाली और सट्टे पर आश्रित है जो कि व्यापार के नाम को न केवल कलंकित हो करता है वरन् अपदस्थ और लांछित भी। बड़े से बड़ा व्यापारी भी सत्यता और ईमानदारी को पास नहीं फटकने देता। ये है नैतिक पतन! ये है कोरा अनीश्वर वाद!! भगवन् रक्षा।

निसार (बाहर जाने वाली वस्तुएं)

ऊन, आंवल की छाल, कांसी के बर्तन, जूते और चमड़ा, घी, ऊँट, बैल, नर-पशु इत्यादि।

पेसार (बाहर से आने वाली वस्तुएं)

ऊनी-सूती कपड़ा, शस्त्र, मेवा, हाथी दांत, किराना यंत्र, और औषधियां, चीनी और काँच के बर्तन, मिट्टी का तेल, सोना, चाँदी, शक्कर, गुड़, लकड़ी और कोयला आदि आवश्यक वस्तुएं बाहर से आती हैं।

प्रसिद्ध वस्तुएं

काँसी के थाल और छोटी कटोरियाँ, चमड़े के जूते और लोहकांटी अधिक प्रसिद्ध हैं। नगर में तो इन वस्तुओं की बिक्री होती ही है परन्तु बाहर के लिये भी इनका निकास पर्याप्त रूप में होता है।

शिक्षा

शौर्य्य की आँखों-देखी कड़क-कविता में बढ़ बढ़ कर हाथ मारने वाले, नवीन पैंतरे बदलने वाले, राजा भोज को अपने पांडित्य से चकित करने वाले विद्वानों का शिक्षा की ओर से नंग मनंग होकर बैठ रहना विद्या का घोर पतन, सभ्यता का नग्न-ताण्डव और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाखंड की भारी डींग नहीं तो क्या है ? गंभीर-साहित्य धौंसे की धमक, रम्य शब्दावली-कड़खे की ताल पर रणरंग की होली खेलने वाले वीर पंडित यदि अविद्या पाखंड और याचना का दूषित रंग बरसाते मिलें तो किस हृदय को ठसक न पहुँचेगी ! कौन हृत्तन्त्री न बज उठेगी !! कौन सहृदय न रो उठेगा !!!

संस्कृत-ज्ञान की तो कौन कहे भाषा की जान के भी लाले हैं। सम्भव है प्रतिशत एक भी मनुष्य ऐसा न हो जो शुद्ध भाषा लिखना पढ़ना जानता हो। यह अविद्या साम्राज्य और विद्या संहार नहीं तो क्या है ? राज्य की ओर से शिक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध है। नगर में दो पाठशाला हैं। एक भीतर तो दूसरी बाहर। दस अध्यापक सदैव जनता की सेवा शुश्रूषा करने के लिये तैयार रहते हैं परन्तु उन्हें यह भी स्वीकार नहीं। बालकों का समय व्यर्थ के वातावरण में विचरने से भले ही नष्ट हो, तीनों प्रकार की शक्तियां नहस-तहस क्यों न हो जायें, शुद्ध कोमल चरित्र नीच दुश्चरित्र में क्यों न बदल जाये परन्तु उनको पाठशाला भकाना स्वीकार नहीं। कैसा दुस्साहस है! कितनो हठ !! ऐसी परिस्थिति में भी पाठशाला-नियंत्रण के अतिरिक्त नगर निवासियों को समझा बुझा कर शिक्षा-प्रचार करना एक मात्र अध्यापकगण के अदम्य उत्साह, तत्परता, सहिष्णुता और कर्तव्य परायणता पर निर्भर है। पत्थर पर जोंक लगाना संभव है आसान हो परन्तु अशिक्षित जनता को समझाना आसान नहीं। कांटों में धसना है, अंगारों पर चलना है। कक्का-केवली जानने वाले 'गुरांशा' की पौशाल (काल कोठरी) में ठूँस कर भले ही अपुष्पित नन्हीं नन्हीं कलियों के हृदय छेद दिये जायें परन्तु राज्य की छत्र-छाया में बैठाना अंगीकार नहीं। क्या यह हठ धर्म्मी और धांधली नहीं ?

भाषा

कोई भाषा नियत नहीं। न हिन्दी ही है, न मारवाड़ी और न गुजराती। इस भाषा का नाम यदि 'खिचड़ी भाषा रख दिया जाये तो बड़ा उपयुक्त हो। अनेकों गुजराती शब्दों जैसे चोपड़ी, महता इत्यादि का प्रयोग होता है। फ़ारसी शब्दों से भी छुटकारा नहीं। फणास (फ़ानूस) मुजरा आदि का प्रयोग सर्वसाधारण में पाया जाता है। मारवाड़ी भी निराली है। समझे का 'हमजे' 'हजमे' आदि प्रयोग पाये जाते हैं। आदमी को 'आमदी' भी बोला जाता है। 'स' के स्थान पर 'ह' और 'च' के स्थान पर 'स' का प्रयोग बहुत पाया जाता है। जैसे, समझे को हमजियो, हमजियों और चाकू को साकू आदि। सच की सत्यता पर विश्वास न कर के उसे 'च' का रूप देना इनके बायें हाथ का खेल है। जिसने अपना सर्वस्व नष्ट कर दिया हो दूसरों के बिगाड़ने में उसे कैसा संकोच ? इन पंक्तियों के लेखक को 'डिंगल' के पढ़ने का चाव लगा। कुछ हस्थ लिखित ग्रन्थों का पता लगा। रास्ते छान मारे परन्तु पुस्तक स्वामियों के हृदय न पसीजे ! अन्त में मन मार कर बैठ रहना पड़ा। प्राचीन ग्रन्थों को दूसरों को दिखाना बुरा और हेय समझा जाता जाता है। आशा है भीनमाल-नवयुवक मंडल इस निस्सारता की जड़ खोद कवि के इन शब्दों का निरीक्षण करेगा। और दुखिया मातृ-भूमि के इस प्रश्न का उचित और त्याग रूप उत्तर देगा—

"मेरे गौरव के बादल का गया सरल रंग लाल।
फैला मेरे वक्षःस्थल पर, काला रजनी-काल ??
अपने यश से ही आलोकित, झुकता मेरा भाल।
मेरी फिर से लाज रखेंगे, कब ये मेरे बाल ?"

सब एक से नहीं होते। कुछ विद्वान और शिक्षा प्रेमी ऐसे भी हैं कि उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाये वह सब थोड़ी है।

कला-कौशल

जब शिक्षा नहीं तो कला-कौशल कहां ? जितना उन्नत और सभ्य देश होगा उतनी ही उन्नत उसकी कला होगी। यही कारण है कि इस विषय में नगर नितान्त चौपट है। कंसारों और मोचियों के कर-कौशल को छोड़ कर और कोई कला उल्लेखनीय नहीं।

रहन-सहन

शिक्षा और कला-कौशल का ही प्रतिबिम्ब रहन-सहन पर पड़ता है। जितनी उच्च शिक्षा और कला-कौशल होगी उतनाही उच्च रहन-सहन भी। परन्तु यह इन दोनों बातों में शून्य है इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां का रहन सहन भी ऐसा ही है। न स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों का पालन होता है न शिष्टता का व्यवहार। नगर मार्ग घूर और अस्वच्छता के घर बने हैं। भोजन आच्छादन में भी पर्याप्त शुद्धि को स्थान नहीं। परन्तु श्रीमाली जाति की इस विषय में मुक्त-कंठ से प्रशंसा और सराहना करनी पड़ेगी। गृहों के भीतर वातायन, गवाक्ष और खुले मैदान का विशेष ध्यान नहीं रक्खा जाता। बाहर पुरुषों के बैठने को कोई बैठक नहीं। प्राचीन रीतियों और बनावटी पर्दे का प्राबल्य है। स्त्रियों को गहने और चूड़े* इत्यादि से ढुबका छिपका कर रक्खा जाता है और वह भी इसे बड़ा पसन्द करती हैं।

दर्शनीय स्थान

निम्नांकित स्थान यहाँ पर देखने योग्य हैं :—

माता जी की भाखरी—यहाँ पर माता जी का एक मन्दिर बना है। वर्ष में दो बार इस मन्दिर में एक भैंसे और बकरे की बलि चढ़ाई जाती है। मानव-हृदय के इस नृशंस व्यापार से 'मातेश्वरी' प्रसन्न हो या न हो, परन्तु उसे निर्दोष निष्पाप मूक हृदय के रक्त में हाथ रंगने से ही सन्तोष मिलता है ? हाय री सभ्यता ! वाह रे धार्मिक ढोंग !!

चण्डीनाथ का मन्दिर—यहां पर एक विद्वान वयोवृद्ध श्रीमाली सन्यासी रहते हैं जो संस्कृत के पूर्ण ज्ञाता हैं। इसी मन्दिर में एक बावली है जिसके विषय में सुना जाता है कि इसके जल-प्रयोग से कैसी ही खुजली हो मिट जाती है।

बड़ी पाठशाला, चिकित्सालय, पुलिस कार्यालय, पार्श्वनाथ जी का जैन मन्दिर, बाराह जी का मन्दिर और जैनियों के कुछ अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं। पाठशाला का भवन एक विस्तृत खुले मैदान में है और पर्याप्त विशाल है। रेलवे स्टेशन भी ठीक है। न बहुत बड़ा है न बहुत छोटा। वर्षा ऋतु में बड़े तालाब की शोभा निराली और मन-हरण होती है। वायव्य दिशा में नील कंठ मन्दिर भी देखने योग्य है।

धार्मिक मेले और विचार

निवासी प्राचीन रूढियों के प्रेमी और भक्त हैं, धर्म-भीरु और डरपोक हैं। जिससे ज्ञात होता है कि वह प्राचीन उष्ण रक्त जिसमें अपने मान सम्मान के लिए मिनटों में उफान और उबाल आता था अब जम कर ठंडा हो चुका है। नस, वह फड़कने वाली नस नहीं ! अन्याय पर पाद-प्रहार नहीं ! ऊँचा उठने वाला सर नहीं ! समस्त अंग शिथिल और निर्जीव हैं, बेजान हैं। विधवा विवाह पाप—महा पाप समझा जाता है। बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह की कमी नहीं। भर पेट धन लेकर दुधमुहीं बालिकाओं को आंख मीच कर ढकेल दिया जाता है जिसका न कोई प्रतिशोध है, न प्रायश्चित !

वर्ष में दो बार जैनियों के दो बड़े मेले एक भाद्रपद और दूसरा पौष मास में बड़े समारोह से मनाये जाते हैं। प्रथम में पार्श्वनाथ जी की रिवाड़ी निकाली जाती है और दूसरे में सब लोग गोड़ी जी के मन्दिर में, जो गांव से बाहर वायव्य दिशा में है, दर्शन करने जाते हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष में तीज से अष्टमी तक गोर का मेला होता है जिसमें ऊँट और घोड़ों की भाग्य भी होती है। चैत्र वदी सप्तमी को शीतला देवी का मेला चंडीनाथ में होता है। श्रावण सुदी १४ को 'माता जी' का और भाद्रपद सुदी एकादशी को 'देव झूलनी' का मेला बड़े चाव और श्रद्धा से परिपूर्ण किया जाता है। दशहरा का मेला भी नियम पालन के लिये ज्यों त्यों कर के समाप्त कर दिया जाता है। इन सब मेलों में पर्व की वास्तविकता पर ध्यान न देकर असत्यता, ढोंग और निस्सारता का ही साम्राज्य दिखाई देता है। अत्याचार होते हैं, धर्म के नाम पर कदाचार होते हैं, धर्म के नाम पर बेटियां बिकती हैं धर्म के नाम पर और न जाने कैसे कैसे गुरुडम रचे जाते हैं धर्म के नाम पर ऋषियों की पवित्र आत्माओं ! माघ-वंशजों ! सभ्य साहूकार और सेठों ! बलि चढ़ा दो इन कदाचारों की, आग में झोंक दो उन पापों को जो आप की शारीरिक नैतिक और सामाजिक शक्तियों के

* यह एक गोलाकार कुंडल के रूप में होता है। इसको सधवा स्त्रियें अपनी भुजाओं अर्थात् कोहनी के ऊपर पहनती हैं। कहा जाता है कि यह हाथी दांत का होता है परन्तु इसमें सन्देह है। छोटे रूप में चूड़ियों के स्थान पर भी यही पहिना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधक हैं। धर्म सार्थक धर्म हो। कर्म में धर्म का मर्म हो और हमारी यह आशा पूर्ण हो :—

जीवन-पथ पर बढ़ चलें, हो सब सत्यारूढ़।
भीनमाल के मध्य में, मिले न कोई मूढ़॥

नोट—इस लेख में निम्नांकित पुस्तकों से सहायता ली गई है जिनका लेखक बड़ा आभारी है :—

१—श्रीमाल पुराण व श्रीमाल महात्म्य २—प्रबन्ध चिन्तामणि ३—विमल प्रबन्ध ४—ओसवंश मुक्तावली। ५—कालीदास और भोज ६—भोज प्रबन्ध ७—उपदेश कल्पवल्ली ८—ब्राह्मण मार्तण्ड ९—यतीन्द्र-विहार दिग्दर्शन १०—मारवाड़ का इतिहास ११—चांद का मारवाड़ी अंक १२—चांद का राजपूताना अंक १३—टाड राजस्थान १४—मारवाड़ का भूगोल और मारवाड़ का नवीन भूगोल।

जालोर का क़िला

'अरावली' राजस्थान का शिरोभूषण है। इसके पवित्र और सुदृढ़ आश्रय में असंख्य महीपतियों ने अपने जीवन की आनन्द-दायिनी घड़ियों का रसास्वादन किया है। न मालूम कितने इसकी अनुकम्पा से अपने वैभव को लात मार कर अकाल में ही काल कवलित हुए हैं। वास्तव में यह वीरों की खान है। इसी पर्वतमाला में ऐसी ऐसी विचित्र वस्तुयें निर्मित हुई हैं जिनकी उपमा संसार के अन्य भागों में मिलना असम्भव नहीं तो जटिल अवश्य है। पुरातत्व-वेत्ताओं को जितनी प्रचुर सामग्री यहां मिलती है, उतनी दूसरी जगह नहीं।

रणथम्भोर और चित्तौड़ जैसे शत्रु-मान-मर्दक दुर्ग भी, अपना उन्मत्त-मस्तक उठाये इसी की प्रोज्वल गाथा का कथन कर रहे हैं। यह तो रही अति प्रसिद्धि-प्राप्त दुर्गों की बात, बहुत से सुविख्यात ऐतिहासिक होते हुये भी जन साधारण की दृष्टि से परे हैं—जैसे मसधरा का जालोर कोर। हमें शिक्षक सम्मेलन जालोर की दया से ही इस सुअवसर का लाभ उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

हम अध्यापकगण के निश्चित कार्य-क्रम में स्थानीय इस क़िले को देखने का भी उल्लेख था। सच पूछिये तो बहुत से तो इसी अवसर की खोज में भी थे।

नियत दिन कार्य-क्रमानुसार, अध्यापक-वर्ग को एकत्रित करने के हेतु घंटिका टनटनाई गई। भला, मनवांछित को बिलम्ब कैसा। पलक मारते ही दर्शनार्थी एकत्रित हो गये और अग्रगामी की प्रतीक्षा करने लगे।

शिक्षित-समुदाय का उस प्रकार जाना भी बड़ा हो अवलोकनीय दृश्य था। सर्वप्रथम सी० टी० स्कूल जोधपुर के प्रिन्सिपल महोदय श्री आर० पी० श्रीवास्तव मय अपने विद्यार्थियों के जा रहे थे और उनके पीछे हम लगभग प्रतिष्ठित नागरिक भी साथ थे।

नगर की टेढ़ी मेढ़ी वीथिकाओं की बहार देखते हुए हम सब उस गगन-चुम्बी क़िले के चरणों में जा उपस्थित हुये। सब को एक आश्चय था। सब विचार मग्न थे कि क्या वास्तव में वहां भी कोई क़िला हो सकता है? शंका का केवल यही कारण था कि यह दुर्ग "छप्पन" की पर्वत श्रेणियों से इतना परिवेष्टित था कि सिवाय कहीं कहीं की चहार-दीवारी के और कुछ भी दृष्टि गोचर नहीं होता था।

क़िले के ऊपर चढ़ने को शिलायें ही सोपानों में परिणत की गई हैं। उन्हीं द्वारा टेढ़े मेढ़े पथ के पथिक बन हम सब चले जाते थे। न यह मालूम पड़ता था कितने चले आये और कितना और चलना शेष है। ठीक ठीक मील के रास्ते को पार कर यह बिल्कुल ऊँचा दुर्गम पथ है। दुर्ग के प्रमुख फाटक पर आ पहुँचे। यहाँ प्रवेश-पथ दिखाया गया और पीछे इसमें प्रवेश पाया।

भीतर पहुँचते ही हमारे आश्चर्य की सीमा न रही। परोक्ष की निराशा प्रत्यक्ष ही में आशा परिवर्तित देख सब दंग रह गये। क़िला क्या था, एक छोटा मोटा गाँव था। अन्तर केवल यही था कि वह जन-रव-पूर्ण और समृद्धि से युक्त होता है और यह ठीक इसके विपरीत था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस १२०० फुट ऊंची पहाड़ी पर ऐसे किले के बनाने में मनुष्य के इस साहस की भूरि भूरि प्रशंसा करनी पड़ती है। कहीं पर सुन्दर भवन शोभा दे रहे थे तो कहीं प्रकृति का तांडवनृत्य सा ही प्रतीत होता था।

सरकारी महलादि को छोड़ कर यहां ३ जैन मंदिर ३ वैष्णव मन्दिर और एक मसजिद भी प्राचीन काल की स्मृतियों को सजग कर रही थी सम्भव है समय समय पर जैन, वैष्णव और मुसलमानों ने इसका आश्रय ग्रहण किया हो।

पुराने महलों की कारीगरी देखते ही बनती थी। कोठारों की विचित्रता भी बड़ी आश्चर्यजनक थी। यहाँ पुराना घी, मोटी मोटी रोटियां, तेल और अन्न आदि मनुष्योपयोगी वस्तुयें चिर-संगृहीत थीं। कहते हैं कि युद्ध-मग्न योद्धाओं के लिये ही उन चीज़ों को तैयार किया गया था। अब तो इन सब के पास ठहरना भी अखरता है और इन सब ने विष का रूप ग्रहण कर लिया है।

बहुत सी प्राचीन तोपें अपने मुँह में शीशा भरे हुये पड़ी थीं। क्योंकि अब वे विशेष प्रयोजनोय नहीं रहीं। ठीक यही हाल पुरानी बन्दूकों और भांति भांति के अस्त्र-शस्त्रों का भी था सब व्यवस्थित रूप में रक्खे हुए थे।

मन्दिरों की कारीगरी भी बहुत ही आकर्षणीय थी। भारत का पुराना-काल एक दम आंखों तक छा जाता था। उपरोक्त मन्दिर अब भी नियमानुसार श्रीमान् महाराजाधिराज जोधपुर की कृपा से फलीभूत हैं। और समय समय पर यात्रीगण आकर स्वच्छन्दता पूर्वक पूजा पाठ करते हैं। वार्षिक मेला भी आयोजित होता है।

युद्धकाल में जालोर नगर के सभी नगर-निवासी ऊपर चढ़ कर शत्रु से त्राण पाते थे। क़िले का विस्तार भी इतना है कि वहां कृषि करके वे लोग अपना शान्ति पूर्वक भरण-पोषण करते रहते थे। उन्हें युद्ध आदि का कोई खटका ही नहीं रहता था।

इस क़िले के विषय में बहुत से ऐतिहासिक घटनायें भी घटित हुई हैं—जिनमें से कुछ का उल्लेख करना विषयान्तर उपस्थित न करेगा।

(१) वर्णित वस्तुओं से २ मील के फासले पर प्रातःस्मरणीय वीरमदेव जी सोनगिरि की चौकी है और पास ही उनकी इष्ट— भगवती का भी मन्दिर शोभित है। कहते हैं अलाउद्दीन की सदोदरा श्री वीरमदेव जी सोनगिरि पर मोहित हो गई थीं और प्राण रहते उन्हीं को वरने की दृढ़-प्रतिज्ञा भी कर ली थी। तदर्थ वीरम देव जी ने बादशाह से द्रव्य लिया और जगत विख्यात इस किले का निर्माण किया। पीछे से वीरमदेव जी युद्ध में काम आये और बादशाह की बहिन यवन होते हुये भी सती हो गई—किंवदन्ती है कि वह इनकी पूर्व दो जन्म में भी धर्मपत्नी रह चुकी थी।

(२) यहां के महाराज मानसिंह जी ने भी बगावतकाल में जोधपुर से हट कर यहाँ आश्रय लिया था और पीछे से वह जोधपुर चले गये। अति सूक्ष्मरूपेण इसके ऐतिहासिक तथ्यों की विवेचना की गई है। वैसे यदि वास्तव में इसके ऊपर क़लम उठाई जाय तो एक विस्तृत पोथा बन जाय। मेरे जैसे अल्प बुद्धि वाले के लिये इसका शतांश भी लिखना टेढ़ी खीर है।

समय काफी हो चुका था। दिनकर की अंतिम सांध्य-किरणों ने अपने वैभव की अवनति के साथ, क़िले की विक्षिप्तावस्था का एक अच्छा दिग्दर्शन कराया। उधर नीचे के नगर-दीपक भी सब को लौट आने की मूक सूचना दे रहे थे। अतः सब एक नवीन भावना के नीचे उतरे और पहुँचते ही जो सबसे अत्यावश्यक कार्य किया वह—चारपाइयों का सँभालना था।

भूपसिंह चूड़ामणि "विशारद"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अमरीका में फेसिस्ट राष्ट्रों की गुप्त तैयारियां

एक समय था जब संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अमरीका में मनरो नीति की घोषणा की थी। इसका फल यह हुआ कि जहाँ योरुप के राष्ट्रों ने अफ्रीका में मनमाना बटवारा कर लिया वहीं दक्षिणी अमरीका के तीन छोटे टुकड़ों (ब्रिटिश, डच और फ्रेंच गायना) को छोड़ कर वे इस नये महाद्वीप पर अपना अधिकार न जमा सके। यदि वे वहां सशस्त्र चढ़ाई करते तो पहले उन्हें संयुक्त राष्ट्र अमरीका से लड़ाई लड़नी पड़ती। इसके लिये वे तैयार न थे। पर अब हालत बदल गई है। ब्रेज़ील, युरुग्वे और अर्जेन्टायन्त्र न्यूयार्क की अपेक्षा लिस्बन (योरुप) से ६०० मील अधिक पास हैं। अतः लिस्बन से वहां पहुँचने में कम समय लगती है। कई वर्षों से फ्रांस और जर्मनी देश के हवाई जहाज़ अपनी लम्बी यात्रा को दो दिन में पूरा करके नियम पूर्वक दक्षिणी अमरीका को जाने लगे हैं।

औसत से इन देशों का एक जहाज़ प्रति दिन वहां के लिये छूटता है। एअर फ्रांस नामक कम्पनी ने पेरिस और ब्यूनाज़ायर्स के बीच में मुसाफिर और सामान लाने और ले जाने के लिये ५४ घंटे की यात्रा नियत कर ली है। जर्मनी और फ्रांस के अतिरिक्त इटली देश भी अपने हवाई जहाज भेज रहा है। इटली और जर्मनी के जो समुद्री जहाज़ ब्रेज़िल और अर्जेण्टायना को जाते हैं वे इङ्गलैंड, फ्रांस या संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हवाई जहाज़ों से कहीं अधिक तेज़, सस्ते और आराम देने वाले हैं।

ब्रेज़ील देश और भी कई बातों में योरुप की ओर झुकने लगा है। यह माना कि ब्रेज़ील को सब से अधिक आमदनी क़हवा से होती है और क़हवा का सब से बड़ा खरीदार संयुक्त राष्ट्र (अमरीका) है। लेकिन आजकल ब्रेज़ील में कपास की उपज बहुत अधिक बढ़ गई है। रुई की लगभग २७ लाख गांठें वहाँ हरसाल बाहर भेजने के लिये तैयार होती हैं। इङ्गलैंड ने अपनी मांग ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत देशों में मिलने वाले सामान से पूरा करने का निश्चय किया है। इस लिये ब्रेज़ील ने अपनी रुई को बेचने के लिये जर्मनी, इटली और जापान में बाज़ार तैयार कर लिया है। ब्रेज़ील से केला और दूसरे फल भी योरुप को सब से अधिक मात्रा में जाने लगे हैं। ब्रेज़ील से कुछ जस्ता भी जर्मनी को जाता है। फेसिस्ट राष्ट्र साधारण व्यापार के अतिरिक्त अपने राजनैतिक विचारों का भी वहां प्रचार करते रहते हैं।

अभी हाल में जर्मनी ने अपनी पूंजी भी ब्रेज़ील देश में लगानी आरम्भ कर दी है कहा जाता है कि लोहे (जो खानों में है और निकाला नहीं गया है) की मात्रा में ब्रेज़ील का संसार भर में चौथा स्थान है। ब्रेज़ील के इटाब्रिया (Itabria) प्रदेश में संसार को सब से अधिक समृद्ध लोहे की खान है। इस से लाभ उठाने के लिये जर्मनी की प्रसिद्ध थीसेन एण्ड क्रुप (Thyssen and krupp) नामी कम्पनी ने ठेका ले लिया है। कारेगो डी मोओ की खानों पर एक दूसरी जर्मन (Luxem burgische and hutten Akien gesellschaft) कम्पनी का अधिकार है। दूसरी जर्मनी कम्पनियां पारहिबा (Parahyba) की ताम्बे की खानों से तांबा और गोयाज़ की खानों से जस्ता निकाल रही हैं। माटो ग्रासो के जिस भाग में मिट्टी का तेल है वहां की साढ़े बारह लाख एकड़ ज़मीन कम्पनियों के हाथ में हैं ब्रेज़ील की जितनी खनिज सम्पत्ति पर जर्मनी का अधिकार है उसका यह केवल एक प्रारम्भिक अंश है। लुफ़्ट हान्सा नाम की प्रसिद्ध जर्मन हवाई कम्पनी ने दक्षिणी अमरीका में अपनी हवाई लाइनों का जाल सा बिछा दिया है। सिंडीकेटो कोंडोर नाम की इसकी सहायक जर्मन कम्पनी ब्रेज़ील के अधिक धनी भागों में ५००० मील तक अपने हवाई जहाज़ उड़ाया करती है। नैटाल में इस लाइन का ट्रान्स अटलांटिक लाइन से मेल होता है। वहाँ (नैटाल) से इस के हवाई जहाज़ रिओ डि जेनरो पोर्टो एलीगर, मांटी-विडिओ और ब्यूना ज़ायर्स को जाया करते हैं। इसके कुछ हवाई जहाज़ ब्रेज़ील को पार करके भीतर पश्चिम की ओर बोलिविया और एण्डीज़ की दूसरी ओर चिली और पीरू को जाते हैं। आगे चल कर हवाई लाइनें इक्वेडार और कोलम्बिया को पार करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काड्टा और लुफ्टहान्सा को हवाई लाइनों से मिल जायगी। इनका उद्देश्य कहां तक राजनैतिक है इसका पता अर्जेण्टाइना के एक पत्र-सम्पादक के इस कथन से चल सकता है कि दक्षिणी अमरीका में स्वस्तिक चिन्ह वाले जर्मन हवाई जहाज़ इतने अधिक हैं कि केवल व्यापार के काम के लिये इनकी आवश्यकता अगले सौ वर्ष तक न होगी।

अनुमान लगाया गया है कि ब्रेज़ील में पुराने जर्मनों के वंशज और नये आए हुए जर्मनों को मिला कर लगभग १० लाख होंगे। ये जर्मन बड़ी तेज़ी से यहां जर्मनी के व्यापार को बढ़ा रहे हैं। जर्मन क़हवे के बग़ीचों और कपास के बड़े बड़े खेतों में जर्मनी की हो बनी हुई खेती की मशीनें बिजली के मोटर काम में लाते हैं। जर्मन-पुतलीघरों में जर्मनी की बनी हुई बुनने वाली मशीनें हैं। सरकारी रेलों के लिये भी अधिकतर सामान जर्मनी से ही आने लगा है। जर्मनी का बना हुआ सामान संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बने हुए सामान से तीस चालीस फीसदी सस्ता बिकता है। १९३६—३७ में जर्मनी ने और देशों की अपेक्षा सब से अधिक सामान ब्रेज़ील को भेजा। संयुक्त राष्ट्र का नम्बर दूसरा हो गया। इङ्गलैंड का नम्बर यहां गिरते गिरते अर्जेण्टाइना के भी नीचे हो गया।

जर्मनी का व्यापार और राजनैतिक प्रभाव बढ़ाने के लिये बर्लिन में एक प्रचार विभाग खुला हुआ है। इस काम में गेस्टापो नाम की जर्मनी की जगत प्रसिद्ध गुप्तचर संस्था से भी सहायता ली जा रही है। दक्षिणी अमरीका में फैली हुई दूसरी और संस्थायें भी सहायता देती हैं।

दक्षिणी अमरीका में बिखरे हुये जर्मन लोग बंड, टर्नवेरेन, और जुगेंड क्लबों के सदस्य बनाये जा रहे हैं। वे स्वस्तिक झंडा-अभिवादन की सभायें करते हैं। निपुण जर्मन सैनिक उनको सैनिक शिक्षा देते हैं। इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये जर्मन व्याख्यान-दाता, स्कूल साहित्य, फिल्म, रेडियो आदि सभी लगे हुये हैं। जर्मन यहूदियों को छोड़कर जर्मनी ने अपने देश वासियों को पक्के ढंग से संगठित कर लिया है। जिन जर्मनों ने इस संगठन का विरोध किया उनका बहिष्कार किया गया, उनकी जायदाद को नुकसान पहुँचाया गया। उनके जर्मन नागरिकता के अधिकार छीन लिये गये और उन पर आक्रमण भी किये गये। हिटलर के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले अखबारों के दफ्तरों को जलाने की कोशिश की गई। इस सम्बन्ध में चार नाज़ी जर्मन एजेंटों पर मुक़द्दमा चला। जर्मन यहूदियों का जर्मनी से व्यापार सम्बन्ध तोड़ दिया गया। जर्मन सौदागरों ने जर्मन यहूदियों का यहां भी बहिष्कार किया। ब्रेज़ील की जिन दुकानों का कारबार जर्मनी पर निर्भर है उन्होंने भी यहूदियों का बहिष्कार किया। हरी कमोज़ वाले स्वयं सेवक सभी प्रकार से नाज़ी दल का समर्थन करते हैं।

स्थानीय जर्मनों को संगठित करने के बाद नाज़ी प्रचारकों ने ब्रेज़ील के मूल निवासियों में नाज़ी सिद्धान्तों को फैलाने का प्रयत्न किया है। ब्रेज़ील की शिक्षा-संस्थाओं में जर्मन प्रोफेसरों का जाल बिछा हुआ है। उनको जर्मनी से वेतन मिलता है। ब्रेज़ील के विद्यार्थियों, सैनिकों और जहाज़ी शिक्षा पाने वालों की टोलियों को बारी बारी से जर्मनी में भेजा जाता है इन से किसी तरह का किराया या खर्च नहीं लिया जाता है। जर्मनी में इनको राष्ट्रीय साम्यवाद या नाज़ी सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती है। ब्रेज़ील की रेडियो स्टेशनों को जर्मनी ने मुफ्त या नाम मात्र को मूल्य लेकर फोनोग्राफ रिकार्ड और रेडियो सेट दिये हैं। शार्टवेव फील्ड (लघु लहर के क्षेत्र) में वे जर्मनी का ही प्रोग्राम दुहराते हैं। ब्रेज़ील के अखबारों में लम्बे लम्बे विज्ञापन छपवा कर और कभी कभी सीधी आर्थिक सहायता देकर जर्मनी ने उनका मुंह बन्द कर दिया है। अब इन अखबारों में जर्मन सरकार (रैश) की नुक्ताचीनी नहीं होती है। ब्रेज़ील में पन्द्रह नाज़ी अखबार छपते हैं। वर्गास की घोषणा से ब्रेज़ील के गांवों में विदेशी भाषा के पत्रों का जाना रोक दिया है। इससे इन नाज़ी पत्रों का कुछ प्रभाव घट गया है। फिर भी ट्रान्स ओशन नामी जर्मन न्यूज़ (संवाद) एजेन्सी रेडियो द्वारा प्रति दिन १६ घंटे प्रायः मुफ्त ख़बर देती रहती है। खबर बांटने वाली एजेन्सियों को जर्मन से बड़ी आसान किश्तों पर आटोमैटिक रेडिओ टाइप रिकार्डिंग एपेरेस (रेडियो का स्वयं लेखक यन्त्र) दिया जाता है। इस नाज़ी प्रचार में इस बात पर ज़ोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाता है कि जर्मनी एक अत्यन्त खुश हाल देश है जहां बेकारी का नाम नहीं है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका हड़तालों, लुटेरों, लालचियों और बोल्शेविक लोगों का देश है। रिओ के जर्मन दूतावास के साथ एक संस्कृति सहायक है। हर हान्स होनिंग वान कासल (जो इस समय यह काम करता है) पहले साओ पालो में सीने की मशीनें बेचता था। ब्यूनाजायर्स के क्षेरिडाड नाम के समाचार पत्र का कहना है कि इस संस्कृति सहायक ने इन्टे ग्रेलिस्टा नामक जर्मन संस्था के लिये बहुत कुछ किया और उसे हथियार दिलवाये। उनके हरी कमोज़ वाले स्वयं सेवकों ने विरोधियों को दबाने में पुलिस की बड़ी मदद की। गत वर्ष के नवम्बर मास में बर्गास ने स्वयं अपनी सरकार को छिन्न भिन्न करने और प्रजा सत्ता का आखिरी चिन्ह मिटाने में इन हरी कमोज़ वाले स्वयं सेवकों से पूरी मदद ली। बर्गास की नई सरकार ने इनको सेना के साथ महल के सामने जलूस में शामिल किया और उनके नेताओं को सरकारी नौकरियाँ दीं। एक प्रकार से बर्गास ने समस्त नाज़ी कार्यक्रम को मान लिया। इससे बर्लिन-रोम-टोकियो धुरी और अधिक मज़बूत हो गई। आगे चल कर जब इन्होंने इटेलियन और जर्मन गुप्तचरों से मिलकर बर्गास की सरकार को उलटने की कोशिश की तब उनके हथियार छीन लिये गये। कासेल को देश छोड़ना पड़ा। जर्मन स्कूलों (जो एक प्रान्त में ही २००० से अधिक थे) को पुर्तगाली भाषा पढ़ाने के लिये बाध्य होना पड़ा। इन स्कूलों में स्वस्तिक झंडे के बदले राष्ट्र का झंडा लगाया गया। आगे यह भी नियम कर दिया गया कि इन स्कूलों में ब्रेज़ील नागरिक के अतिरिक्त और कोई दूसरा अध्यापक न हो सके। ब्रेज़ील में नाज़ी प्रभाव रोकने के लिए अमरीका ने अभी हाल में पूरी कोशिश की। अमरीका ने ब्रेज़ील को ६ करोड़ डालर का सोना दिया। इससे अमरीका की साख बढ़ गई और जर्मनी को यहां से कपास मोल लेने में कठिनाई पड़ने लगी। इस पर जर्मनी ने ब्रेज़ील को रूई न खरीदने की धमकी दी। और रुई का बड़ा आर्डर कोलम्बिया, पनामा और मध्य अमरीका को दिया। मई से अमरीका का व्यापार यहाँ बढ़ने लगा। इटली को बहुत समय से यह आशा रही कि ब्रेज़ील में इटली के इशारे पर चलने वाली सरकार स्थापित हो। पिछले ७५ वर्षों में इटली से लगभग १० लाख मनुष्यों से कुछ अधिक आ गये हैं। कहवा के बड़े बड़े बगीचे और कपास के बहुत से खेत इटेलियन लोगों के हाथ में हैं। बहुत सी मिलें और कारखाने भी इटलीवासियों के हाथ में हैं। कुछ इटेलियन लोग लकड़ी काटने का काम करते हैं। बाङ्को कमर्शियेल इटेलियाना नाम का धनी इटेलियन व्यापारी बैंक और बाङ्को इटालो ब्रेजीलीरो ब्रेज़ील की आर्थिक स्थिति का नियन्त्रण करते हैं। जर्मनी के छः या सात फुर्तीले जहाज़ों को छोड़ कर इटेलियन कम्पनियाँ सबसे सुन्दर और तेज़ जहाज़ दक्षिणी अमरीका के समुद्रों में यहां चलाती हैं। वे बहुत कम किराया लेती हैं। इटली के हवाई जहाज़ रियो और ब्यूनाजायर्स के बीच में पहले ही से चलते थे। अभी हाल में वे ट्रान्स अटलांटिक हवाई जहाज़ भी उड़ाने लगे हैं। इटली ने फौजी और प्रचार कार्य के लिये यहां सबसे अधिक हवाई जहाज़ भेजे हैं। १९३४ में इटली से २१ सैनिक हवाई जहाज़ यहां उड़कर आये। वे सब के सब यहां बेच दिये गये अभी हाल में बड़े गाजे बाजे के साथ इटली ने ३ हवाई जहाज ब्रेज़ील की सरकार को भेंट कर दिये। इटली यहां लड़ाई का सामान और लड़ाका जहाज़ बेचने की पूरी कोशिश कर रहा है। गत फरवरी में इटली को बनी हुई तीन पनडुब्बी नावें (सबमेरीन) यहाँ बेची गईं।

मसोलिनी की इच्छा है कि अमरीका में बसने वाले इटेलियन लोग सच्चे फेसिस्ट बनें। ब्रेज़ील में इटली वालों की जो बड़ी बड़ी दुकानें हैं। वे उन लोगों का बहिष्कार करती हैं जो फसिस्ट नहीं हैं। वे अपने नौकरों को इन्टेग्रेलिस्टा का सदस्य बनने के लिये बाध्य करती हैं। ब्रेज़ील में इटेलिन भाषा के कई अखबार छपते हैं। इटली वाले विज्ञापन छपवा कर और पैसे देकर फेसिस्ट कार्यक्रम को बढ़ावा दिलाते हैं। रोम प्रचार आफिस की ओर से अखबारों को मुफ़्त खबर भेजी जाती है। यह संवाद देने वाली कम्पनी प्रजासत्ता और संयुक्त राष्ट्र की निन्दा करती रहती है। रोम से शार्ट वेव ब्राडकास्ट प्रति दिन तीन बड़े स्टेशनों को भेजे जाते हैं। अर्जेण्टाइना और ब्रेज़ील की ब्राडकास्ट कम्पनियों से प्रार्थना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है कि वे फेसिस्ट प्रोग्राम (कार्य-क्रम) को उपयोग में लावें । इन्सटीस्यूटो यूनिवर्सिटारियो इटेलियानो संस्कृति सम्बन्धी सम्बन्ध बढ़ाने का प्रयत्न करती है। बहुत से इटेलियन प्रोफेसर (जिनको फेसिस्ट सरकार से वेतन मिलता है) यहां पढ़ाने के लिये भेजे जाते हैं। साओ पालो के सम्पत्ति-शास्त्र-विभाग के समस्त प्रोफेसर इटेलियन लोगों की ओर से दिये गये हैं। इटली में शिक्षा प्राप्त करने के लिये ब्रेज़ील के बहुत से विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। जो लोग फेसिस्ट सिद्धान्त से सहानुभूति रखते हैं उनको इटली की सैर करने के लिये सब खर्च मिलता है। उनको स्वयं मसोलिनो से मिलने की सुविधा दी जाती है। इटली की ओर से इस तरह का प्रचार कार्य दक्षिणी अमरीका के दूसरे देशों में भी हो रहा है।

ब्रेज़ाल में जापान का भी काफ़ी प्रभाव है। २ लाख जापानी जापान से आकर यहां बस गये हैं। जर्मन राजदूत की तरह जापानी राजदूत भी संस्कृति-सम्बन्ध बढ़ाने के लिये एक सहायक रखता है। बहुत से जापानी प्रोफेसर ब्रेज़ील की शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाते हैं। एक जापानी प्रोफेसर तो यहां अमरीकन इतिहास पढ़ाता है । पहले जापानियों के आने की रुकावट थी। लेकिन १९२८ के मई महीने से यह रुकावट दूर कर दी गई। यहां मज़दूरों की कमी है। अकेले साओपाला के खेतों में २ लाख मजदूरों की कमी है। जापानी मज़दूर बहुत ही योग्य सिद्ध होते हैं। ब्रेज़ील में खेतों की जो उपज होती है उसका २९ फी सदी जापान मोल ले लेता है। जापानियों के हाथ में रबर के बड़े बड़े बगीचे हैं। पारा नगर के पास वाला रबर का जापानी क्षेत्र १० लाख एकड़ से भी बड़ा है और फोर्ड के बगीचे से टक्कर लेता है। जापानियों के हाथ में ढोर चराने, धान, शक्कर, कहवा और केला की भी बड़ी बड़ी जागीरें हैं। ब्रेज़ील में कपास उगाने का कारबार नया है। इसका एक तिहाई काम जापानियों के हाथ में है। जापानियों ने यहां रेशम, चाय और धान का काम भी शुरु कर दिया है। यह चीजें दूसरे देशों में बेची जायँगी। याकोहामा स्पेसी बैंक और बैंक आफ तैवान (ये दोनों जापानी बैंक है) की ब्रेज़ील देश में कई शाखायें हैं। बहुत से जापानी लोग छोटी दुकानें रक्खे हुए हैं। वे इस प्रकार अपने देश के माल की बिक्री बढ़ाते हैं। एसोसिसाओ-सेन्ट्रल निप्पन बेज़ीलेरा नाम की जापानी संस्था संस्कृति सम्बन्ध बढ़ाती है। रुयुज़ो असामा जापानी कारबार बढ़ाने में निपुण है। जापान ने दक्षिणी अमरीका में अपना व्यापार बढ़ाने के लिये दस वर्ष की योजना तयार कर ली है। बहुत से जापानी सौदागर इस योजना को सफल बनाने के लिये समस्त दक्षिणी अमरीका और मध्य अमरीका में सफर करते हैं। जापानी सेन्ट्रल और साउथ अमरीकन इक्सपोर्ट (निर्यात) एसोसियेशन दक्षिणी अमरीका के प्रमुख व्यापारियों को अपने खर्च से जापान की सैर करने का निमन्त्रण देती है।

अर्जेन्टाइना में संयुक्तराष्ट्र अमरीका का माल ग्रेटब्रिटेन के माल से कहीं अधिक बिकता है। वैसे अर्जेन्टाइना और युरुग्वे दोनों ही में ब्रिटेन और इटली का प्रभाव है। गत शताब्दी में लगभग २० लाख इटेलियन अर्जेन्टाइना में जाकर बस गये हैं। इस समय अर्जेन्टाइना की समस्त जनसंख्या में एक तिहाई इटेलियन हैं। अर्जेन्टाइना के कुछ प्रमुख कुटुम्बों के नाम इटेलियन हैं! बहुत समय से इटेलियन लोगों ने यहां की राजनीति और कारबार में प्रमुख भाग लिया है। फेसिस्टवाद से वहां के इटेलियन लोगों में आक्रमणकारी एकता आ गई है। ब्यूनाज़ायर्स में कई बड़े बड़े दैनिक समाचार पत्र भी इटेलियन हैं। एक स्पेनिश भाषा का पत्र भी उनके हाथ में है। लैटिन संस्कृति की समानता ने इटेलियन प्रचार को बढ़ा दिया है। जर्मनी में गिरजाघरों पर जो अत्याचार हुये उस से अर्जेन्टाइना के लोगों में नाज़ी आन्दोलन के प्रति सन्देह होने लगा। लेकिन इटली के फेसिस्टवाद को वे धर्म का समर्थक मानते हैं! क्या इटली ने ईसाई फ्रांको को स्पेन में सहायता नहीं पहुँचाई है। इटली ने एबीसीनिया में मिशनरी भेजे हैं और इटली के गिरजा घरों को काफ़ी दान दिया है। धनी इटेलियन और १९३१ की सरकार की सहायता से अर्जेन्टाइना में लिजन सिविका (नागरिक सेना) में १५०००० सदस्यभरती किये गये। गार्डिया अर्जेन्टाइना की संरक्षक सेना में छोटी छोटी सात फेसिस्ट संस्थायें सम्मिलित हो गईं। प्रेज़ीडेन्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(राष्ट्रपति) जस्टो ने चुने हुए गवर्नरों के स्थान में फेसिस्टों से सहानुभूति रखने वाले गवर्नर नियत किये। अर्जेन्टाइना में फेसिस्टों को पूरी आज़ादी है। प्रजातन्त्र वालों को बहुत कम अधिकार हैं। यहां के शासक लोग हिटलर और मसोलिनी को योरुप का बचाने वाला समझते हैं।

अर्जेन्टाइना में लगभग १ लाख जर्मन रहते हैं। यह लोग ढोर पालने, इञ्जीनियरिंग, बैंक, डाक्टरी (दांत) और पढ़ाने के काम में लगे हुये हैं। कुछ वर्ष हुए, ह्यूगो स्टिन्स नामी एक जर्मन ने न्यूक्वेन प्रदेश में तेल के चश्मे वाले भाग मोल ले लिये थे। तेल का प्रदेश पम्पाज़ पेटेगोनिया होता हुआ टेराडेल फ्यूगो तक चला गया है। यह तेल जर्मन हवाई जहाजों के काम आता है। पहले रेल सम्बन्धी सब सामान अर्जेन्टाइना में ब्रिटेन से आता था। अब इस सामान का व्यापार जर्मनी के हाथ में चला जा रहा है। हाल में जर्मनी से ४० रेलवे इञ्जिन और पांच हवाई जहाज यहां आये। अर्जेन्टाइना हवाई सेना के अध्यक्ष को जर्मनी ने अपने खर्च से जर्मनी बुलाया और स्वयं हिटलर ने उसे जर्मन ईगिल का सम्मानित पद प्रदान किया।

जापानी लोगों ने अर्जेन्टाइना में मांस, नमदा (फर), क्वेब्राचो और कपास के कारबार में अपना रुपया लगाया है। अर्जेन्टाइना के उच्च सरकारी अफसरों ने जापानियों से अनुरोध किया है कि वे इन कामों में और अधिक रुपया लगावें। लेकिन कुछ मूलनिवासियों और यहूदियों ने इन नये फेसिस्टों का विरोध करना आरम्भ कर दिया है।

चिली देश में गत शताब्दी से जर्मन लोगों का प्रभाव बढ़ने लगा। कुछ जर्मन लोग आकर वाल्डिविया में बस गये। चिली के दक्षिणी भाग में इन्हें जमीन और दूसरी सुविधायें मिलीं। इससे वहां बहुत से जर्मन कुटुम्ब आ गये। हाल में यहां नाजी प्रभाव ज़ोर पकड़ने लगा। गत सितम्बर के नाजी विद्रोह में २०० मनुष्य मारे गये। चिली के व्यापार को हथियाने के लिये जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में घोर संघर्ष हो रहा है। ब्रिटेन इस व्यापारिक दौड़ में बहुत पिछड़ गया है। उसका तीसरा स्थान

हो गया है। क्लबों और दूसरी संस्थाओं ने यहां बसे हुये जर्मनों को बहुत संगठित कर दिया है। उन्होंने अपनी भाषा को सुरक्षित रक्खा है। उनके स्कूल अलग हैं। पीरू की प्रसिद्ध 'गिल्डर मिस्टर' नामी जर्मन कम्पनी ने शक्कर का कारबार पीरू से बढ़ा कर चिली तक कर लिया है। बड़ी लड़ाई के कुछ ही समय बाद क्रुप्प कारखाने के मालिकों ने चिली के लानक्वह्यू प्रान्त में ज़मीन मोल लेकर फौलाद और बारूद बनाने का कारखाना स्थापित कर दिया। पास ही जर्मन लोग बस गये। हाल में शोरे के कारबार में भी जर्मन लोगों ने अपना पैसा लगाया है। जर्मन लोगों ने काग़ज़ का एक बड़ा कारखाना खोला है। यहां उनके चमड़े के कई कारखाने हैं। ब्रिटेन की अपेक्षा जर्मनी के बहुत से मोटर यहां बिकते हैं। पर मोटर बेचने में जर्मनी का प्रथम स्थान है। रेलवे विभाग में भी जर्मनी की अधिकता है। हाल में जर्मनी के बने हुए सरकारी हवाई जहाज भी हो गये हैं। यहां के राष्ट्रपति ने जर्मनी और इटली से लड़ाई का सामान मोल लेने के लिये १० करोड़ पेसास (pesos) खर्च किये। सेन्टियागो से मेगेलेन्स तक पानी पर उतरने वाली हवाई नावों को मोल लेने के लिये जर्मनी में फिर १ करोड़ ६० लाख पेसास (pesos) खर्च किये गये। कुछ इटली के भी जहाज खरीदे गये। हवाई सेना के संचालक जनरल लोगों ने बहुत से इटेलियन को हवाई शिक्षा प्रदान करने के लिये बुलाया है। इटली के इशारे से यहाँ के राजनैतिक क्षेत्र में भी बहुत से काम चुपचाप हो जाते हैं।

पीरू देश में जर्मनी की अपेक्षा इटली और जापान का प्रभाव प्रधान है। योरुपवासियों में सब से अधिक संख्या पीरू में इटालियन लोगों की है। फेसिस्ट संगठन से अग्रसर हो कर इटलीवासी सैनिक राजनैतिक क्षेत्रों में भी बढ़ने में लगे हैं। सरकारी सहायता से फूल कर बांको इटेलियानों डी लीमा (लीमा का इटेलियन बैंक) पीरू देश में एक प्रधान बैंक बन गया है। इस बैंक के हाथ में पीरू देश का आर्थिक भाग्य इस हद तक पहुँच गया है कि इस बैंक का संचालक पीरू का वायसराय कहलाता है। लीमा, केलाओ और दूसरे शहरों की रोशनी, बिजली

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ट्रैमवे का काम भी इटेलियन लोगों के हाथ में है। इटालो पेरू आनो कम्पनी बिजली के सभी यन्त्र बेचती है। पीरू में रेडियो, शराब, शक्कर, कपास और लकड़ी का कारबार भी इटेलियन लोगों के हाथ में है। लीमा के चार दैनिक समाचार पत्रों को इटली का बहुत सा विज्ञापन मिलता है। धनी, जागीरदारों और पादरियों का एल कमर्शिओ नामो मुख पत्र फेसिस्टवाद का खुलमखुल्ला समर्थन करता है। बहुत से प्राइवेट स्कूल (जिन्हें सरकारो सहायता मिलती है) इटली वाले चलाते हैं। नेशनल केथलिक यूनिवर्सिटी भी फेसिस्टों की तारीफ में अक्सर व्याख्यान दिलवाती हैं। पीरू का फेसिस्ट प्रचार विभाग रोम की ही शाखा है। इस का संचालन इटेलियन करते हैं। वे अपना प्रचार इक्वेडार, कोलम्बिया और चिलो में भी बढ़ा रहे हैं। विद्यार्थी, सैनिक और पदाधिकारी इटेलियन या पीरू सरकार के खर्च से अक्सर इटली में शिक्षा और अनुभव प्राप्त करने के लिये जाते हैं। इटली से बहुत सा सामान भी खरीदा जाता है। कई बार इटली के सैनिक हवाई जहाज यहाँ उड़ कर आये। लीमा के पास पल्मास में इटेलियन लोग पीरू सरकार के लिये हवाई जहाज़ बनाने का बड़ा कारखाना खोल रहे हैं। इटेलियन (फौजी) स्वयंसेवकों की संख्या प्रायः सेना के सिपाहियों के वरावर हैं। इटली की बनी हुई तोपें और मशीनगनें देश के सभी भागों (खास कर इक्वेडार की सीमा के पास) पहुँचा दी गई हैं। पीरू में देस को बहुत कम स्वाधीनता है। जेल और फारेस्ट कन्सेन्ट्रेशन कैम्प कैदियों से भरे हुये हैं।

इटली के बाद पीरू में जापानियों का दूसरा स्थान है। पीरू देश में २२३०० जापानी हैं। योरुपीय लोगों की तरह यहां जापानियों को नाम लिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस लिये कुछ लोगों का अनुमान है कि यहां लगभग १ लाख जापानी हैं। बड़े बड़े बग़ीचों में काम करने के लिये क़ानून को तोड़ कर भी उच्च पदाधिकारी जापानियों को बुला लेते हैं। लीमा प्रान्त में रोटी और नाई की दुकानें दो तिहाई से अधिक जापानी लोगों के हाथ में हैं छोटी छोटी जितनी दुकानें जापानियों के हाथ में हैं उतनी किसी योरुपीय जाति की नहीं हैं। लारियों का ढांचा (बाडी) रबर, लोहे, और बिजली का सामान इन्हीं जापानियों के हाथ में हैं। चान्के प्रान्त में चिम्बोटी बन्दरगाह के सामने (जो पीरू में बहुत अच्छा बन्दरगाह है) कुल ३०,००० एकड़ ज़मीन खेती के योग्य है। इसमें १८००० एकड़ ज़मीन पर जापानियों का अधिकार है। मूल निवासियों में जापानियों ने इस प्रकार प्रचार फैला रक्खा है कि सदियों पहले पीरू देश में जापान के ही लोग आकर बस गये थे। अतः दोनों (जापानी और पीरू वासी) सगे भाई हैं। पीरू के सौदागरों को जापानी खर्चे से जापान की सैर कराई जाती है। जापान यहां से बहुत सी कपास आधी खाद और मिट्टी का तेल खरीदता है। लेटिका विद्रोह के समय जापान ने पीरू में लड़ाई का बहुत सा सामान बेचा। मशीनरी, बिजली का सामान, जवाहिरात, रंग और रसायन सम्बन्धी सामान बेचने में जर्मन लोग यहां आगे बढ़े हुये हैं। एरीक्विप (जो पीरू में तीसरे नम्बर का शहर है) में ६० फीसदी कारबार जर्मनों के हाथ में है। गिल्डर मिस्टर्स (जर्मन कम्पनी) के अधिकार में १ लाख एकड़ ज़मीन है। गन्ना उगाने और शक्कर तय्यार करने की दक्षिणी अमरीका में यह सब से बड़ी कम्पनी है। पीरू देश से जितनी शक्कर बाहर भेजी जाती है उसका ४२ फीसदी शक्कर यह अकेली कम्पनी भेजती है। जर्मन के अधिकार में यहां की जबरदस्त रेडिओ स्टेशन है। सुसज्जित हथियारबन्द जर्मन इस की रक्षा करते हैं। जर्मनों को यहां एक निजी बन्दरगाह (प्राइवेट पोर्ट) भी मिला हुआ है। पहले से जर्मन व्यापार यहां चौगुना बढ़ गया है। इस समय पीरू देश में जर्मन व्यापार ब्रिटिश व्यापार से कहीं अधिक बढ़ गया है।

इस प्रकार दक्षिणी अमरीका में कोई योरुपीय शक्ति सशस्त्र हमला करने की तो नहीं सोच रही है लेकिन किसी आगामी बड़ी लड़ाई के अवसर पर योरुप की शक्तियां दक्षिणी अमरीका से पूरा लाभ उठाने की कोशिश कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहन या बारबरदारी

एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की इच्छा मनुष्यों में सदा से रही है। पहले जब वे जाना चाहते थे तो वे पैदल जाते थे। उनके छोटे बच्चे जब चलते चलते थक जाते थे तो बाप उन्हें अपने कंधे पर बिठा लेता था। अक्सर उन्हें जंगल में होकर चलना पड़ता था। आरम्भ में कोई सड़क न थी। जब रास्ते में कोई नदी आ पड़ती तो बाप लकड़ी के लट्ठे पर सब को बिठा कर लकड़ी से खेता हुआ पार लगा देता था। जब हिरण या और कोई दूसरा जानवर मिल जाता तो बाप उसे मार कर अपनी स्त्री और बच्चों को भोजन लेकर आता। उस समय के प्राचीन लोग बहुत समय तक अपना बोझा अपने आप अपने सिर या पीठ पर ढोते रहे। पहाड़ी कठिन रास्ते में वे इस समय भी इसी तरह से बोझा ढोते हैं। पुर्तगाली लड़की बाज़ार ले जाने के लिये बर्तनों को इस प्रकार बांधती हैं कि उनके गिरने का डर नहीं रहता है। उसके हाथ खाली रहते हैं फिर भी वह अपने बोझे को बड़ी होशियारी से साधे रहती है।

पेलेस्टाइन में इस समय भी लोग अपना बोझ अपने आप ढोते हैं। इस स्त्री को देखो। यह अपने सिर पर भरी हुई टोकरी रक्खे है। मत्थे में झोली की रस्सी अटका कर अपने छोटे बच्चे को ले जा रही है। उसके एक हाथ में सुराही और दूसरे में दूध का बर्तन है। उस को ऐसा अभ्यास हो गया है कि सुराही से चलते समय एक भी बूंद नहीं छलकता है।

दुनिया के बहुत से भागों में मनुष्य बोझा ढोने का काम जानवरों से लेते हैं। यह जानवर इतना भारी भारी बोझा ढोते हैं जितना कोई मनुष्य नहीं ले जा सकता। भिन्न भिन्न

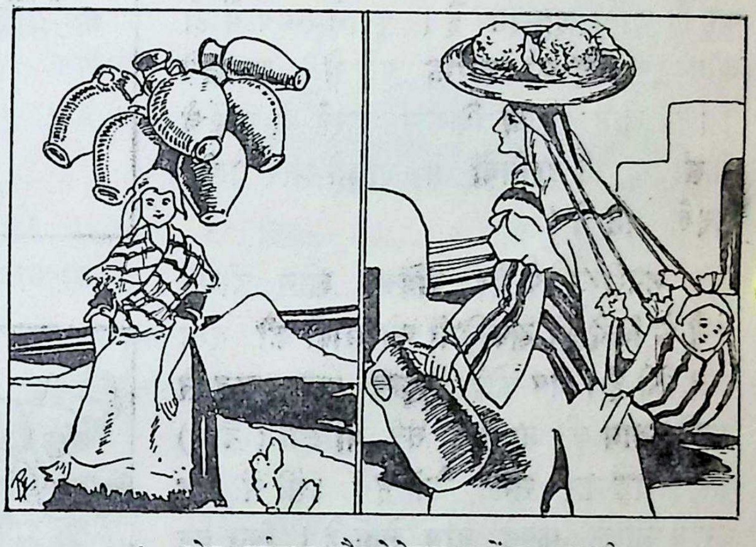

१—स्पेन, पुर्तगाल और पेलेस्टायन में बारबरदारी

भागों में भिन्न भिन्न जानवर बोझा ढोने का काम करते हैं। रेगिस्तान की बलुई ज़मीन में ऊँट बोझा ढोते हैं। किसी किसी काफिले में कई सौ ऊँट होते हैं। बोझा ढोने में गधा बड़ा पक्का होता है। कभी कभी वह अपने मालिक को भी अपनी पीठ पर बिठा लेता है। ऊँट बोझा लादते समय बहुत बलबलाता है। लेकिन वह रेगिस्तान में बड़े काम का होता है। उसका गद्दीदार पैर बालू में नहीं धंसता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बहुत देर तक बिना पानी के रह सकता है। वह इतना ऊँचा होता है कि खड़े खड़े उसपर बोझा नहीं लादा जा सकता। इसलिये वह बैठ जाता है। अगर उसके ऊपर इतना बोझा लादा जाता है जिसे लेकर वह नहीं चल सकता तो वह नहीं उठता है। जब कुछ बोझा उतार लिया जाता है तब वह उठकर चल देता है।

अगर कोई भारी चीज़ उठाकर ले जाई जावे तो बहुत जोर पड़ता है। उसको घसोट कर ले जाना आसान है। पुराने समय में ही लोग इस भेद को समझ गये थे। इसलिये वे जिन जानवरों का शिकार करते थे उन्हें वे किसी पेड़ की टहनियों में बांधते और घसीट कर ले जाते थे।

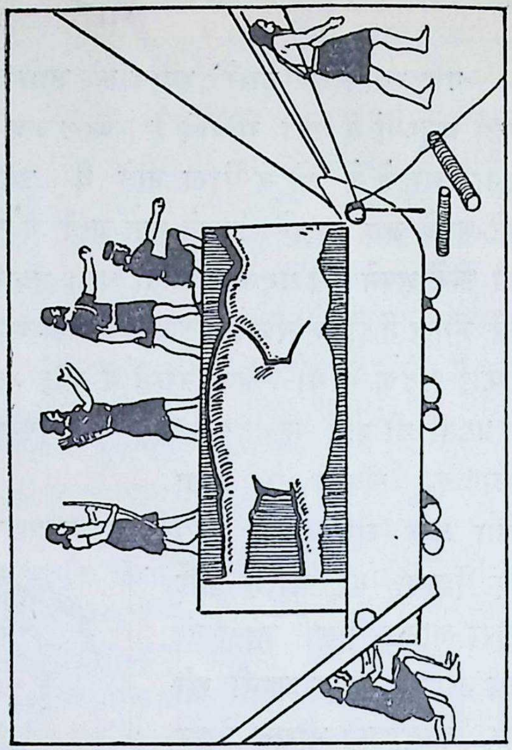

२—पहिये का विकास—बारबरदारी

अमरीका के रेड इंडियन लोग बोझा ढोने के लिये दो लकड़ियों को सीढ़ी की तरह बना लेते हैं। जब कोई कुटुम्ब एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है तब मां टेपी (डेरे) को उखाड़ कर समेट लेती है। इसी में वह घर वालों के कपड़े बांध लेती है। फिर वह इसको अपने कुत्ते की पीठ से बांध देती है। दोनों लकड़ियां इतने पास बंधी होती हैं कि वे जङ्गल की पग डंडी पर आसानी से घसीटी जा सकती हैं।

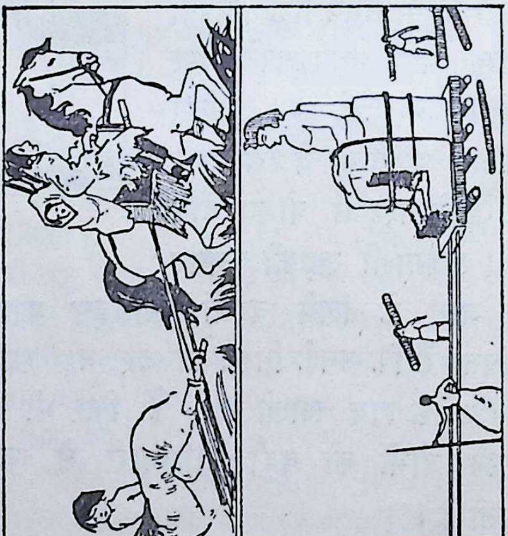

३—पुराने समय की बारबरदारी

गोरे लोगों के आने पर यहां घोड़े भी आ गये। इस चित्र में रेड इंडियन घोड़े पर सवार है। घोड़ा बोझा भी खींच रहा है। बोझे के ऊपर छोटा लड़का बैठा है। बोझा ऊपर नीचे उछलता है। इससे ऊपर बैठे हुए लड़के को बहुत धक्के लगते हैं। लेकिन लड़के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को इसमें आनन्द आता है। मां ने अपनी छोटी लड़की को अपनी पीठ से बाँध कर पीछे बिठा लिया है। अधिक उत्तर में बर्फीले प्रदेश के रहने वाले एस्किमो लोगों ने कुछ सुधार कर लिया। उन्होंने बोझा ढोने के लिये बिना पहिये की स्लेज गाड़ी बनाई। वे इस में कुत्ते जोतते हैं। सबसे अधिक बहादुर और होशियार कुत्ता नेता चुना जाता है। जिधर मालिक इशारा करता है उधर ही वह जाता है। स्लेज गाड़ी में कई कुत्ते जुतते हैं। वे बहुत तेज जाते हैं। उनके बाल बहुत बड़े होते हैं। जहां दूसरा पालतू जानवर न जा सके वहां यह कुत्ते पहुंच सकते हैं। आजकल कुछ कुत्ते बोझा ढोने और डाक ले जाने का काम करते हैं।

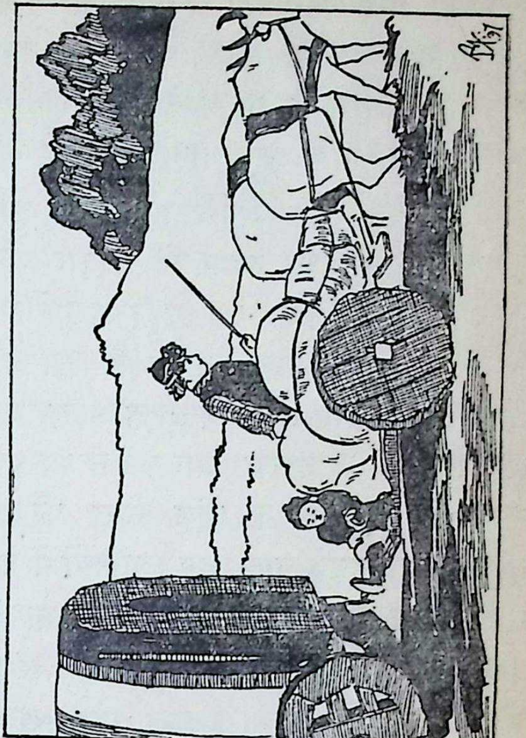

४—बारबरदारी

मिस्र देश में भारी बोझे को बहुत से आदमी खींचते थे। उसके गुटके लगे रहते थे।

मध्य एशिया के मंगोल लोग ठोस पहियों की गाड़ी में अपना सामान ढोते हैं। इनमें वे बैल जोतते हैं।

पुराने समय के आर्य, इरानी और ग्रीक लोग रथ पर चढ़ते थे। उनके रथ में बहुत बढ़िया और मज़बूत घोड़े जुतते थे। रथ बहुत क़ीमती होते थे। राजा और बड़े लोग ही उन्हें रख सकते थे। साधारण लोग दो पहिये या चार पहिये की बड़ी गाड़ी रखते थे। इसमें वे अपना सामान लाद कर घोड़े या बैल जोतते थे। घोड़े तेज़ चलते थे। बैल अधिक भारी बोझा ढो सकते थे। योरुप में मुसाफिरों के ले जाने के लिये खुली खिड़की वाली बड़ी घोड़ागाड़ी किराये पर चलने लगी। सामान गाड़ी की छत पर लादा जाता था।

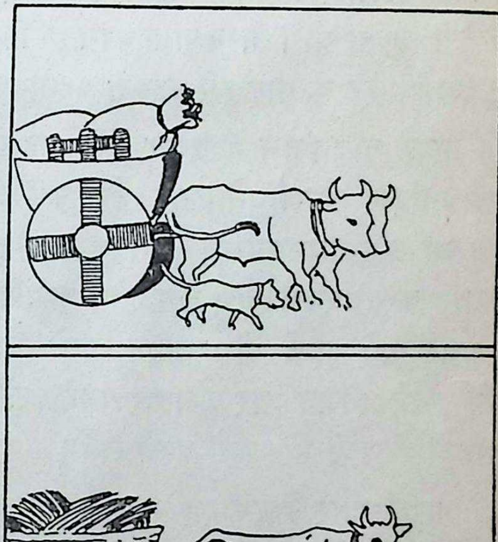

५—बारबरदारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसाफिर अन्दर बैठते थे। इसमें ऊँची नीची कच्ची सड़क पर मुसाफिरों को बहुत धक्के लगते थे। मंजिलों पर थके घोड़े छोड़ दिये जाते थे। ताज़े घोड़े फिर जोत लिये जाते थे।

जो गोरे लोग अमरीका में बसने आये वे एक स्थान से दूसरे स्थान को घरवार समेत सफर करने में बन्द बैल गाड़ी चलाते थे। इससे उनका सामान ठीक रहता था और उनपर रेड इंडियन लोग अचानक हमला नहीं कर सकते थे। जंगली जानवरों से भी रक्षा होती थी। इंगलैंड में पहले पहल कोयला बहुत मिला। इसके बाद जिन गाड़ियों में वहां घोड़े या गधे जुतते थे उनमें कोयले और भाप के ज़ोर से चलने वाला इंजिन लगने लगा। इस गाड़ी में सामने तांबे का बाइलर (डेग) लगता था। यह गाड़ी सिर्फ तीन मील फी घंटे की चाल से चलती थी। ताज़ा पानी भरने के लिये हर पन्द्रह मिनट के बाद इसे ठहरना पड़ता था।

इसके बाद इंजन में सुधार हुआ वह कई खुली गाड़ियों को खींचने लगा। लेकिन इंजिन का धुआं और चिनगारियां बराबर मुसाफिरों को तंग करती रहती थीं। कुछ लोग मुसाफिरों के आगे वाले डब्बे में सामान रखने लगे। धीरे धीरे इंजिन और जोरदार बनने लगे। गाड़ियों के डब्बे भी अच्छे बनने लगे।

पहली बार के बने हुए मोटर कार अजीब सूरत के थे। वे बहुत धीरे धीरे चलते थे और जल्द बिगड़ जाते थे।

कुछ लोगों ने जहाज़ बनाये। वे समुद्र में बहुत सा सामान और मुसाफिरों को लेकर चलते हैं।

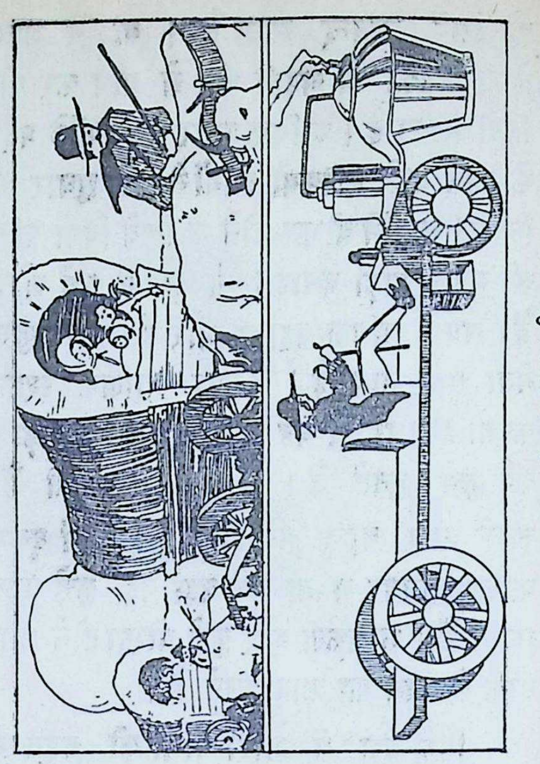

६—बारबरदारी

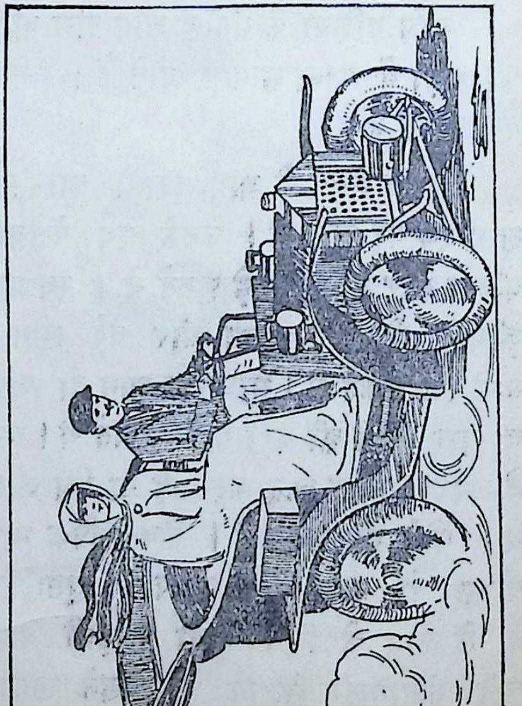

७—पुराना (या पहला मोटर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ़्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारखानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एबिसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ॥) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

भूगोल एटलस

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिलकुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० X ७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १॥) सजिल्द १॥।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं। पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें। मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्‌यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है। इसमें कई नक़शे और चित्र हैं। बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ॥)।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है। प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे। चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर)। इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नक़शे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं। अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नक़शे और कई डायाग्राम (खाके) हैं। मूल्य ॥) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113231

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेल्स (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एएटेएट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज है। मूल्य केवल ॥)

देश-निर्माता

इस ७२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिल्सुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नक़शा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। विहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113731

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़शे। बिहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।=) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं । उन विशेषांकों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ।।=)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

卐 भुवनकोष 卐

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ९०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बग़दाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चारभागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़्शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १।।।) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जहाज़ बहुत तेज़ चलते हैं। हवाई जहाज़ की मदद से मनुष्य उन दुर्गम भागों में

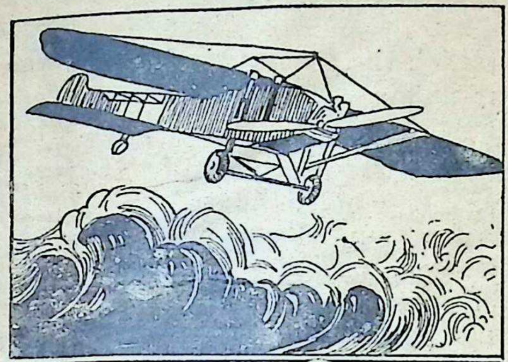

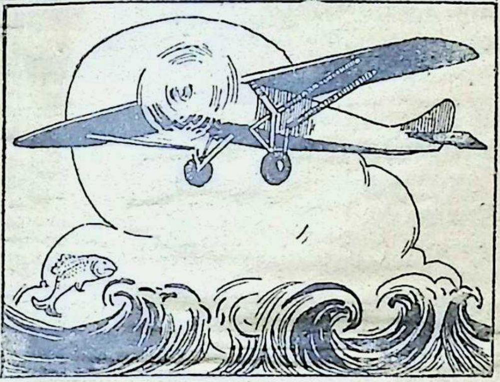

८—एक पंख वाला फ्रांसीसी हवाई जहाज़

पहुँचने लगे हैं जहां अबतक कोई मनुष्य नहीं पहुँचा था।

"भूगोल"-कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१९२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १५ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १५ वर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुए सूची-पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक़, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बलगेरिया, यूगोस्लेविया, हंगरी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, जर्मनी डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फिनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देशवासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका "भूगोल" कार्यालय, भूगोलसम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नक़शों का संग्रह करता रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेज़ी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें।

आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्राक्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों की बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तैयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तैयार हैं। आप उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तक-माला का आयोजन किया है। इसमें २०० पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी। पुस्तक चित्रों और नक़शों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। काग़ज़ कवर, छपाई सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ४०) होगा। इस सम्बन्ध में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशङ्कर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—रामनारायण मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol".**

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-
3rd page of the cover „ 12/-
4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 306, Jumuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar